

आचार्य चक्रधर जोशी

स्मृति-ग्रंथ

आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी : स्मृति-ग्रन्थ

प्रधान सम्पादक



मोहनलाल बाबुलकर

सम्पादक



हजारीलाल जोशी

सहायक सम्पादक



भास्कर जोशी
प्रभाकर जोशी

प्रबन्ध सम्पादक



सुधाकर जोशी

प्रकाशक



~~देवप्रयागी अकादमी के लिए~~ :—

आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी स्मारक समिति

देवप्रयाग, गढ़वाल (उ० प्र०)

ग्रन्थ — आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी स्मृति-ग्रन्थ

प्रधान सम्पादक — मोहनलाल बाबुलकर

सम्पादक — हजारीलाल जोशी

सहायक सम्पादक — भास्कर जोशी
प्रभाकर जोशी

प्रबन्ध सम्पादक — सुधाकर जोशी

प्रकाशन वर्ष — १९८३-८४

प्रकाशन सहायक — लक्ष्मीचन्द्र त्रिपाठी
जगदीश दीक्षित

संयोजन — सुन्दरलाल बाबुलकर
भैरवदत्त भट्ट

प्रकाशक — देवप्रयागी अकादमी के लिए :—
आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी स्मारक समिति
देवप्रयाग, गढ़वाल (उ० प्र०)

मुद्रक — पी० एन० भार्गव
भार्गव प्रिंटिंग प्रेस
११२७ कटरा, इलाहाबाद

सम्पादकीय

देवगति कालक्रम-नियति अपना कार्य करती रहती है, इस पर किसी का बस नहीं होता है। व्यक्ति केवल सोच सकता है, कार्य कर सकता है, परिणाम और फल दैवाधीन है। श्री मोहनलाल बाबुलकर, श्री भैरवदत्त भट्ट प्रभृति कुछ प्रबुद्ध, समाजसेवी, विद्वद-उच्चादर्श युक्त मानवसेवी मनीषियों की भावना थी कि पूज्य भाई जी—आचार्य पं० चक्रधर जोशी जी का अभिनन्दन किया जाय एवं उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जाये। प्रस्ताव हम लोगों के सामने रखा गया तो सहर्ष सहयोग का वचन मैंने, चि० सुधाकर आदि ने दिया। किन्तु मन की मन में ही रह गई और अचानक १६ अगस्त, १९८० की रात्रि में मसूरी में उनका हृदयगति रुक जाने से गोलोकवास हो गया। एक भयंकर आघात जिसने हजारों के दिल में अमिट वेदना की कसक छोड़ दी।

हजारों की आशायें, आकांक्षायें, अपेक्षायें कुम्हला गईं, मुरझा गई और वीरानगी, बेबसी बन गई। यही स्थिति अभिनन्दन की भावना की भी हुई। फलतः श्री भट्ट तथा श्री बाबुलकर के ही परामर्श से 'स्मृति-ग्रन्थ' के प्रकाशन के लिए एक कमेटी का मनोनयन कर, इस विचार को साकार रूप देने का प्रयास किया गया।

मैं स्वर्गीय भाई जी के प्रति स्नेह, आदर, श्रद्धा रखने वाले उन सभी व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य को सम्पादित करने में लेख, कविता, संदेश आदि भेजकर स्मृति-ग्रन्थ को साकारता प्रदान की हैं। मैं "मफतलाल ग्रुप्स" बम्बई तथा "मोदी इण्टर प्राइजेज", मोदीनगर का विशेष आभारी हूँ तथा उन सुहृदयों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने आर्थिक सहयोग दिया है।

अन्त में चि० प्रभाकर जोशी 'विहंग' जिसने सम्पादन में मुझे सहयोग दिया, सौ० अंजना सिंघी जो प्रेरणा देती रहीं और चि० सुधीर, सौ० आशा पंचभाई जो मार्ग दर्शन करते रहे, श्री भैरवदत्त भट्ट जिन्होंने कार्यारंम्भ किया और चि० सुधाकर जोशी, श्री मोहनलाल बाबुलकर जिनके सहयोग से ही यह सम्भव हो सका है एवं उन सभी के प्रति आभारी हूँ जो स्मृति-ग्रन्थ की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हज़ारीलाल जोशी 'स्नेही'
पत्रकार

वामन जयंती
१८-९-८३
वि० सं० २०४०
देवप्रयाग, गढ़वाल [उ० प्र०]

अनुक्रम

१—स्मृति-श्रद्धाञ्जलि

—भारत के विभिन्न प्रान्तरों से प्राप्त संवेदना-संदेश ।

२—काव्याञ्जलि

१—ज्योतिषविभाकराऽऽचार्यवर्यं — डा० शशिधर शर्मा वाचस्पति आचार्य एम० ए० डी० लिट् पंजाब विश्वविद्यालय (बावुलकर),
२—प्रशस्तिः — मुरलीधर शास्त्री,
३—आचार्य प्रवर — आचार्य राघवेन्द्र शास्त्री,
४—हा ! पण्डित प्रवर — मुरलीधर शास्त्री,
५—महामनामुनेः — ब्रजमोहन शास्त्री कोटियाल,
६—श्रद्धांजलि — रामविलास शास्त्री कोठीवाल,
७—गुरुचरणारविन्देषु — शैलेन्द्र नारायण कोटियाल, शास्त्री,
८—श्रद्धांजलि — कमल साहित्यालंकार,
९—काव्याश्रु — डा० जे० सी० भारतीय,
१०—अस्त हुआ जैसे ध्रुवतारा — डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरूण'
११—हे ज्योतिर्विद ! देव चक्रधर ! — मोहन भट्ठ,

३—व्यक्तित्व

१—आचार्य जी का संक्षिप्त वंश परिचय — विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा,
२—जीवन का घटनाक्रम — प्रस्तुति : केदारनाथ प्रभाकर,
३—विद्वान गुरु के सुयोग्य शिष्य — भक्त दर्शन,
४—देवप्रयाग — मुकुन्दीलाल बैरिस्टर,
५—चक्रधरस्य गमनात् गतवान् गढ़ गौरवः — भैरवदत्त धूलिया,

६–आचार्य चक्रधर जोशी : कुछ स्मृतियाँ — केदारनाथ प्रभाकर,
७–विद्या- विनय सम्पन्न साधक — डा० महावीर प्रसाद लखेड़ा,
८–धन्य हैं, ऐसे गुरु-शिष्य — महावीर सैनिक योगाचार्य,
९–पं० चक्रधर जी जोशी से मेरा परिचय — पं० हरिकृष्ण रेवाशंकर याज्ञिक,
१०–असाधारण व्यक्तित्व — बसन्तराव तुरोले,
११–अक्षर-स्मृति — कैलाशनाथ उपाध्याय,
१२–चिर-स्मरणीय रहेंगे — ति० गो० गोस्वामी,
१३–ज्योतिष का नक्षत्र अस्त हो गया — राधेश्याम कौशिक,
१४–मेरी श्रद्धांजलि — भजनसिंह सिंह,
१५–मौन-तपस्वी — तरुण विजय,
१६–संस्कृति और संस्कृत की बोलती आत्मा — कमल साहित्यालंकार
१७–गढ़वाल ने एक प्रतिभा खो दी — बी० डी० भट्ट
१८–सहृदय विद्वान — जगदीश चन्द्र पंत,
१९–दिव्य गुणों से विभूषित पुरुष — डा० कृष्ण कुमार,
२०–आचार्य जी के प्रथम दर्शन — डा० शिव प्रसाद डबराल,
२१–योग्य, विद्वान रत्न जाता रहा — चक्रधर बहुगुणा,
२२–आधुनिक ऋषि — नित्यानन्द मैठाणी,
२३–उनकी वाणी सुरक्षित है — ललिता प्रसाद नैथाणी
२४–आलोक पिण्ड ओ ! हम तड़पते शोक में — बचनसिंह वर्मा 'विमल'
२५–ज्ञान सिद्ध : कर्मयोगी — डा० ललिता प्रसाद पाण्डेय,
२६–आचार्य जी — सुरेन्द्रसिंह सजवाण,
२७–देवप्रयागी समाज — भगवतीचरण निर्मोही,
२८–पुण्य-स्मरण — सत्यनारायण शास्त्री बाबुलकर,
२९–प्रकाश और प्रसाद बिखेरती — डा० शशिधर शर्मा 'वाचस्पति'
३०–बेताज के बादशाह — कृष्णकान्त टोडरिया, देवप्रयाग,
३१–मैं पिताविहीन पुत्र हूँ — पात्तु (श्रीनारायण पालीवाल)
३२–मैं उन्हें भूल नहीं सकता — प्रेमलाल वैद्य,
३३–समभाव से पूजित — रामदयालु टोडरिया,
३४–त्रिविक्रमावतार — रघुनाथ प्रसाद शर्मा, वकील,
३५–महान बेटे को खो दिया है — रमेश शास्त्री महाराष्ट्र,

३६–साहूकारा पिशाच कर्म — सालिराम शास्त्री मोटा,
३७–साधक, अपने ध्यान में उनका दर्शन करते हैं — अमरनाथ शर्मा,
३८–चाचा जी — माखनलाल ध्यानी रानाकोट,
३९–महान उदारचेता मनीषी — डा० कृष्णधर शर्मा 'प्रवासी (बाबुलकर),
४०–करे तो कोई कमाल पैदा — सुन्दरलाल ध्यानी, रानाकोट,
४१–यह तो औरों का जीवन है — भैरवदत्त भट्ट,
४२–नर ही नारायण है — दयानन्द कोटियाल,
४३–उनकी उपलब्धियों पर समाज गर्व करेगा — प्रो० नरेन्द्र शर्मा,
४४–कोई कहता है, हम गरीबों··· ·· — विश्ववन्धु,
४५–अन्न, यज्ञ का प्रसाद — मदन मोहन, डंगवाल,
४६–बालां त्रिपुर सुन्दरी वन्दें — देवीप्रसाद पन्त,
४७–महामानव — राविज कोटियाल,
४८–समस्त क्षेत्र श्रीहीन हो गया — दीनानाथ पंचपुरी,
४९–अभी क्या है ? — दिव्य विरागी (मोहनलाल बाबुलकर),
५०–शायद कहीं से पुकार उठें — श्रीमती अंजना जितेन्द्र कुमार सिंधी,
५१–वे ऐसे थे — प्रभुदयाल चतुर्वेदी,
५२–उनकी याद में प्रतिमा बनें — रमाकान्त कोटियाल,
५३–एक विभूति कम हो गई है — सोहनलाल भट्ट,
५४–अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त — हरिप्रसाद कुकरेती,
५५–बहुमुखी प्रतिभा के धनी — श्रीलाल थपलियाल,
५६–चिरविदा से पूर्व — प्रभाकर चक्रधर जोशी,
५७–A Tribute to late Sri Chakradhar Joshi — Dhruba Narain Todaria.

४–कृतित्व

|

१–भेंटवार्ता-आचार्य चक्रधर जोशी — भेंटकर्ता : श्री नित्यानन्द मैठाणी,
२–विश्वपूजित परमहंस श्री रामतीर्थ ······ — आचार्य चक्रधर जोशी
३–श्रद्धा कुसुमाञ्जलिः — आचार्य चक्रधर जोशी,
४–गदावली — श्री निवास शास्त्री

५–समाज कल्याण संगठन के संरक्षक के रूप में, जनता के नाम आचार्य पं० चक्रधर जी जोशी का सन्देश — प्रस्तुति : भैरवदत्त भट्ट,
६–आचार्य जी के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय — हजारीलाल जोशी स्नेही

५–ज्योतिष-खण्ड

१–ज्योतिष — कृष्णदत्त भारद्वाज,
२–ज्योतिष के दो श्रेष्ठ दोष — डा० सूर्यप्रसाद गुप्त शास्त्री, वाराणसी,
३–मानव-जीवन पर ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव — आचार्य भास्करानन्द लोहानी,
४–मंगली दोष — पं० राधेश्याम कौशिक ज्योतिषाचार्य,
५–भारतीय ज्योतिष परम्परा की भूलें — भगवानदास मीतल,
६–श्रीकृष्ण जी की जन्म कुण्डली — पं० देवधर पाण्डेय, ज्योतिषाचार्य,
७–१६८२ का ज्योतिषीय दृष्टिकोण — पं० देवधर पाण्डेय ज्योतिषाचार्य,
८–आवश्यक स्थानों के अक्षांश-देशान्तर — शम्भू प्रसाद बहुगुणा ।

६–साहित्य-खण्ड

१–विकासोन्मुख गढ़वाली भाषा — कैप्टन शूरवीरसिंह पंवार,
२–हिमवन्त-प्रतिभा — शम्भु प्रसाद बहुगुणा,
३–केदार खण्ड में यक्ष पूजा — भास्कर भट्ट,
४–नाथ सम्प्रदाय — लक्ष्मीचन्द्र त्रिपाठी मुख्य निर्देशक, शि० प्र० वि०,
५–गढ़वाल में सांस्कृतिक जागृति — मुकन्दीलाल बैरिस्टर,

७–नक्षत्र वेधशाला-खण्ड

१–Astronomical Observatory of Devaprayag — K. N. Prabhakar,
२–देवप्रयाग स्थित नक्षत्र वेधशाला — तरुण विजय,
३–नक्षत्र वेधशाला, देवप्रयाग — हजारीलाल जोशी स्नेही एम० ए० (ट्रिपल) पत्रकार,

८–समाचार पत्रों से

१–समाचार पत्रों की नाम सूची
२–कुछ अन्य
३–शोक-सभाएँ/शोक प्रस्ताव

६–चित्रावली

आचार्य जी से सम्बन्धित कुछ फोटोग्राफ ।

।। श्री हरिः ।।

आचार्य पं० चक्रधर जोशी

श्री गणेशाय नमः । स्वस्ति श्री शुभ सं० १९४४ श० १८०९ चान्द्रेण मार्गशीर्षकृष्णाष्टम्यां तिथौ । आश्लेषा नक्षत्रे । सौरेण तुलार्क २४ प्रविष्टे । भौमेष्टम् ३।५७ श्री मुकुन्द दैवज्ञ महोदयानां जन्म ।

ता० ८-११-१८८७

९ र. बृ.
७
के. १४ बु. ८ ६ शु.
११ ५ मं.
चं.
१२ २ ४ श.
रा.
१ ३

श्रीशः पातु वः । श्रीशुभ सं० १९६६ श० १८३१ चान्द्रेण भाद्रपद शुक्ल वामन द्वादश्यां तिथौ । धनिष्ठानक्षत्रे २ पांदे । सौरेण कन्यार्कं ११ प्रविष्टे । भानाविष्टम् ३५।५४ श्री लक्ष्मीधर भट्ट गृहे जोशीत्युपाह्व चक्रधर भट्ट जन्मासीत् ।

देवप्रयाग

ता० २६-९-१९०९

२४ रा. १८ मं. ७ श. २८
नेप. २ १२
प्रो ४·३ ११
ल. १
०
४ १० च. २९
२९
७
२२
४ १८ ९
३०
५ बु. शु.
—
१० ६
८
र. बृ. ३ हर्शल. के. तुला
२७

—

आचार्य पं० चक्रधर जोशी स्मारक समिति, देवप्रयाग

संरक्षक मण्डल

(१) श्री गो० गोविन्दलाल तिलकाय नाथद्वारा

(२) श्री गो० ब्रजराम जो महाराज पीठाधीश्वर, अहमदाबाद

(३) श्री स्वामी कल्याणदेव महाराज (पद्मश्री) मुजफ्फरनगर

(४) श्री के० एन० मोदी, मोदीनगर

(५) श्री सेठ भूपेन्द्र कुमार मोदी, मोदीपुरम्

(६) श्री सेठ अरविन्द N. मफतलाल, बम्बई

(७) श्री सेठ मिहिर H मफतलाल, बम्बई

(८) श्री सेठ क्षेमांश प्रसाद जैन, बम्बई

(९) श्री सेठ कुदीलाल जी सेक्सरिया, बम्बई

(१०) श्री सेठ भाईलाल मणिलाल पटेल, अहमदाबाद

(११) श्रीमती विद्या देवी जोशी, वेधशाला, देवप्रयाग

(१२) श्री हजारी लाल जोशी 'स्नेही', देवप्रयाग

(१३) श्री सुधाकर जोशी, देवप्रयाग

(१४) श्री राम कुमार जोशी, देवप्रयाग

(१५) श्री गोविन्द प्रसाद कोटियाल, देवप्रयाग

(१६) श्रीमती आशासुधीर पांचभाई, देवप्रयाग

(१७) श्री जितेन्द्र प्रसाद शर्मा, देवप्रयाग

आचार्य पं० चक्रधर जोशी स्मारक समिति, देवप्रयाग

परामर्शदात्री समिति

(१) श्री केदारनाथ प्रभाकर, सहारनपुर

(२) श्री वाचस्पति गैरोला, पौड़ी

(३) श्री मुरलीधर शास्त्री, देवप्रयाग

(४) श्री वेंकटेश पण्डित, देवप्रयाग (हिमाचल)

(५) श्री तरुण विजय, पाञ्चजन्य, नयी दिल्ली

(६) श्री भक्तदर्शन (भू० पू० शिक्षा राजमंत्री) देहरादून

(७) श्री मधुकर भाई सालीसीटर, बम्बई

(८) श्री विट्ठलदास नारायणदास सेठ, बम्बई

(९) श्री वसन्तराव तुरीले, पूना

(१०) श्री के० के० मोदी, मोदीनगर

(११) श्री करसन महाराज जोशी, मद्रास

(१२) श्री नवनीत भाई शोधन, अहमदाबाद

(१३) श्री भय्या लाल शास्त्री, देवप्रयाग

(१४) श्री रघुनाथ भट्ट देहग्राम, गुजरात

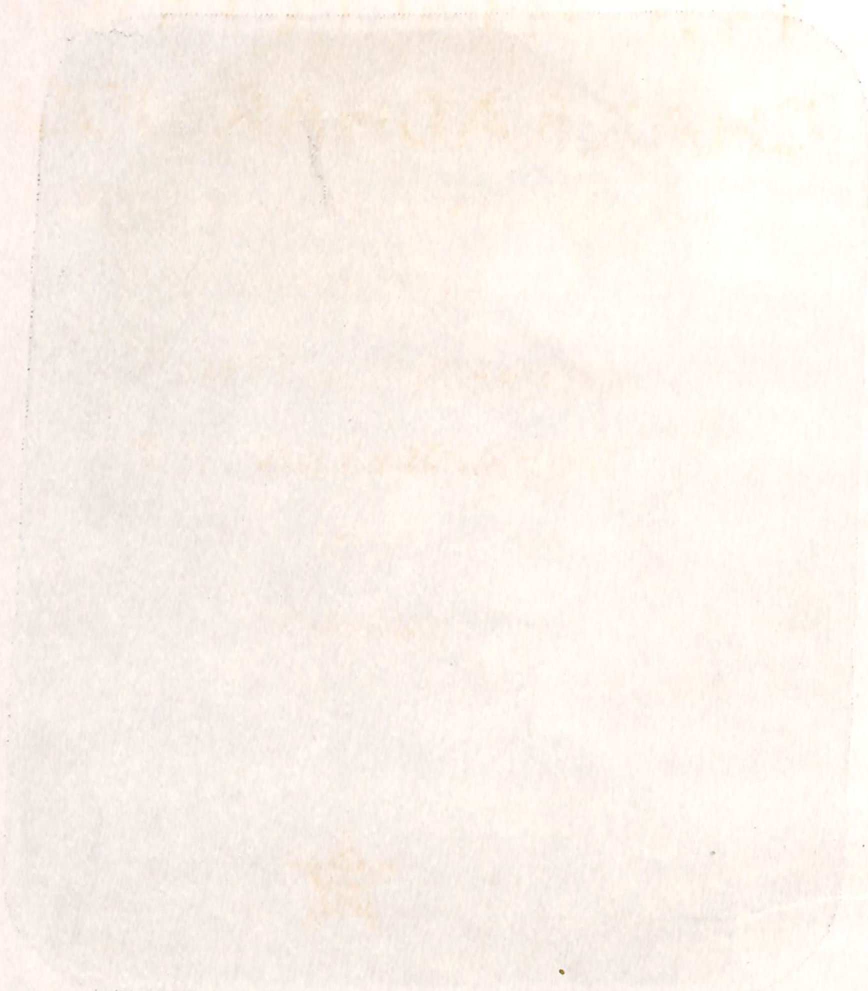
(१५) श्री भगवती प्रसाद निर्मोही, सिराला

(१६) श्री एल० के० ध्यानी, दिल्ली

(१७) श्री श्रीनारायण पालीवाल (पात्तु), देवप्रयाग



उड़ गया स्वर्णिम पखेरू छोड़कर निज गान भू पर
— पहाड़ी



IN MEMORY OF

LATE ACHARYA PANDIT

CHAKRADHAR JOSHI

DIRECTOR HIMALAYAN ASTROLOGICAL

RESEARCH INSTITUTE

OBSERVATORY

DEVAPRAYAG U. P.

WITH

REGARDS



MODI RUBBER LTD.

MODIPURAM

(U. P.)

IN MEMORY OF

Late Acharya Pandit Chakradhar Joshi

DIRECTOR ASTROLOGICAL RESEARCH INSTITUTE, OBSERVATORY DEVAPRAYAG, U. P.

WITH

Regards

K. N. MODI

Chairman Modi Enterprises Modinagar.

K. K. MODI

Vice-Chairman & President
Modi Enterprises Modinagar.

S. K. MODI

Vice-Chairman & President Modi Carpets
Managing Director Modi Speaning and
Weaving Mills, Modinagar.

आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी स्मारक समिति

देवप्रयाग, गढ़वाल उत्तर प्रदेश

❀

अध्यक्ष

श्री हजारीलाल जोशी स्नेही

एम० ए० (त्रय)

❀

उपाध्यक्ष

श्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा

एडवोकेट

❀

मन्त्री

श्री सुधाकर जोशी

❀

कोषाध्यक्ष

श्री सुभाष चन्द्र टोडरिया

❀

उपमन्त्री

श्री उमेश चन्द्र पालीवाल

❀

सदस्य

सर्वश्री दयानन्द कोटियाल, दीनानाथ पंचपुरी,
रामकुमार जोशी, मोहनलाल डँगवाल,
काशीनाथ प्रभाकर और श्री रमेशचन्द्र भट्ट

❀

संयोजन

श्री सुन्दरलाल बाबुलकर

श्री भैरवदत्त भट्ट

In Memory Of

Late Acharya Pandit
Chakradhar Joshi

DIRECTOR HIMALAYAN ASTROLOGICAL RESEARCH
INSTITUTE, OBSERVATORY
DEVAPRAYAG, U. P.

WITH

Regards



VIJAI LAXMI BEN, SHARDA BEN, ARVIND BHAI,
YOGENDRA BHAI, RASESH BHAI MIHEER
AND ALL MEMBERS OF MAFATLAL
FAMILY, BOMBAY.

भारत गोत्रप्रवरदीपिका

या

गढ़वाल देशीय श्रीनगर निवासिना पंडित
दिवाकरशर्म्म मैठाणी चतुर्वेदिना
सुसंगृहीता ।

स्वयम्

गढ़वाली प्रेस, देहरादून इत्यभिधेय यन्त्रालये मुद्रापिता च



श्री वीरविक्रमादित्य संवत्सरे १९९९ वैशाखमासे



प्रथमावृत्ती सहस्रनेकं प्रतयो मुद्रापिताः

सौजन्य---श्री नित्यानन्द मैठाणी, श्रीनगर गढ़वाल,
संप्रति, दूर दर्शन, लखनऊ !

धन्यं पुण्यं यशस्यम्

•

प्रातः स्मरामि बदरीश्वर पादपद्मं योगीश्वरान्तः करणस्थित मर्चनीयम् ।
यच्छ्री विरञ्चि वसुशेषमहेश चन्द्रादित्या महेन्द्रप्रमुखा विबुधा स्मरन्ति ॥

× × ×

प्रातर्नमामि शिरसा चरणारविन्दं नारायणस्य नरवेषधरस्य पुंसः ।
यत्सेवनाय हिमवातनिवारयन्तीं लक्ष्मीर्दधौ सुविपुलं बदरीशरीरम् ॥
प्रातर्भजामि वचसाक्षर ब्रह्मयोनिं गायन्ति वेदत्रिभवा भवपद्मजोद्याः ।
यन्नाम मन्त्रजपतां हर्तांकिल्विषाणां पुण्यं भवेत्प्रतिपदं विमला च वाणी ॥
प्रातः श्रयेत बदरीशपदारविन्दं संसारपारभवितुं तदलं श्रमेण ।
यत्पादपद्मनखनिःसृतब्रम्हवारि गंगाजल मखिललोकत्रयं पुनाति ।
स्नायात्पवित्रसलिले त्विह बह्नितीर्थे तापत्रयापहर-पञ्चशिलान्तराले ।
मोक्षाय यत्र तपसि स्थित तापनेन सन्तप्तत्रतोयपरिपूरित-तप्तकुण्डम् ॥
सेव्यं तपोवनमिदं बदरीवनाख्यं बह्मघनपापमपि नश्यति यत्र यातुः ।
कालात्प्रतिष्ठति चिरादघनाशहेतुः साक्षात्प्रमाणमिह ब्रह्मकपाल एषः ।

—प्रस्तुति : रामविलास शास्त्री ।

चतुर्थ-खण्ड

लेखक—श्री भक्त दर्शन

(६५) श्री चक्रधर जोशी

(निधन १६ अगस्त १९८०)

ज्योतिष शास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री चक्रधर जोशी देवप्रयाग के निवासी थे। २६ सितम्बर सन् १९०६ को इनका जन्म हुआ था। इनके परिवार में ज्योतिष की परम्परा थी। इनके पिता जी लक्ष्मीधर भट्ट का इनके बाल्यकाल में ही देहावसान हो गया था। तथापि श्री मुकुन्दराम बड़थ्वाल 'दैवज्ञ' तथा 'अभिनव बाराह मिहिर' से अध्ययन करने का इन्हें सौभाग्य मिला था। बाद में स्वाध्याय के द्वारा इन्होंने अपना ज्ञान और विस्तृत कर लिया था। इन्होंने देवप्रयाग में दो महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किये। इन्होंने "नक्षत्र वेधशाला" स्थापित करके उसमें अच्छे यन्त्रों तथा उपकरणों का संकलन किया। इसके साथ ही अपने पिता जी की स्मृति में इन्होंने 'श्री लक्ष्मीधर विद्या मन्दिर' के नाम से एक पुस्तकालय का निर्माण किया; उसमें अनेक हस्तलिखित ग्रन्थों के अतिरिक्त कई हजार अन्य पुस्तकों का इन्होंने संग्रह किया; उस संग्रह से अनेक शोधार्थी लाभ उठाया करते हैं। उपरोक्त दो महत्वपूर्ण कार्यों के अतिरिक्त इन्होंने स्वयं 'गदावली' और 'त्रिकाल संध्या' आदि कई ग्रन्थ रचकर प्रकाशित कराये; साथ ही अपने गुरु श्री दैवज्ञ जी की भी कुछ पुस्तकें प्रकाशित कराने में ये सफल हुए। दुर्भाग्यवश 'रत्नांजलि' आदि इनके कुछ ग्रन्थ अप्रकाशित ही रह गये।

देव प्रयाग तथा बद्रीनाथ पुरी में प्रतिवर्ष निवास करके फलित ज्योतिष में इन्होंने दक्षता प्राप्त की। शीत ऋतु में ये अक्सर बम्बई व अन्य बड़े नगरों में निवास किया करते थे। वहाँ मफ़तलाल ग्रुप के धनाढ्य व्यवसायी इनके प्रशंसक व सहायक हो गये थे। उनके सहयोग से इन्होंने देवप्रयाग में एक डिग्री कालेज के निर्माण का शुभारम्भ करा दिया था तथा एक 'प्राच्य-विद्या-संस्थान' की योजना पर कार्य कर रहे थे। साथ ही समाज कल्याण-संगठन, गढ़वाल मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन तथा सहारनपुर के ज्योतिर्विज्ञान संस्थान के भी ये संरक्षक थे।

ऐसे सदैव मुस्कराते रहने वाले फलित ज्योतिष के विद्वान से और भी आशायें थी कि १६ अगस्त सन् १९८० को मसूरी में हृदय गति रुक जाने से अकस्मात इनका देहावसान हो गया। विद्वान् और मनीषियों ने इन्हें "ज्योतिर्विज्ञानाचार्य," 'उदभट विद्वान्,' 'प्रकाण्ड ज्योतिष-शास्त्री' 'संस्कृत के महान साधक' 'प्रसिद्ध खगोल शास्त्री' 'गढ़वाल मण्डल के ज्योतिष शिरोमणि' आदि घोषित करके इनको श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित की। इनके सभी पुत्र-पुत्रियाँ सुयोग्य हैं; आशा है कि वे इनके चरण-चिह्नों पर चलने का प्रयत्न करेंगे।

स्मृति-श्रद्धाञ्जलि

वास्तु शिरोमणि[1]

पृष्ट १०१

इति श्रीमत्महाराजाधिराजा श्यामशाह गुरु शंकर कृतौ वास्तु-

वि०स० शिरोमणौ गृह प्रवेश प्रकरणं नामाष्टकम्। सं० १६७७

१६७७ आषाढ़ मास दिन २३ गते शुक्लपक्षे सोमवार वारे लिखितम्।

1677
57
———
1620 A.D.

(मूल प्रति से उतारा गया)

द्वारा—चक्रधर जोशी

नक्षत्र वेधशाला

देवप्रयाग

१७-१०-७३

१. सौजन्य—श्री कैप्टिन ठाकुर शूरवीरसिंह 'पंवार' इतिहासवेत्ता पुराना राज दरबार, टिहरी गढ़वाल।

स्मृति–श्रद्धाञ्जलि

□

आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी के असामयिक निधन पर, श्रीमती विद्यादेवी जोशी, श्री हजारी लाल जोशी, श्री सुधाकर जोशी, श्री प्रभाकर जोशी, श्री भास्कर जोशी, सौभा० अलका गोविन्द कोटियाल, श्रीमती वीणा जोशी, श्रीमती अन्जना जोशी तथा श्री रामकुमार जोशी के नाम प्राप्त संवेदना संदेश और श्रद्धाञ्जलियाँ अविकल रूप में प्रकाशित हैं—

उज्ज्वल रत्न

●

स्वर्गीय जोशी जी भारत के एक उज्ज्वल रत्न थे। उन्होंने ज्योतिष की विद्वत् परंपरा को आगे बढ़ाया। हमें नक्षत्र-वेधशाला और उनके विशाल ग्रन्थागार का अनुरक्षण करना है। उन्हें मैं अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

—भक्त दर्शन
भू० पू० शिक्षामन्त्री एवं सांसद
भारत सरकार।

स्नेही जोशी जी

●

जोशी जी का मेरे प्रति बहुत स्नेह था। उनकी सज्जनता एवं विद्वता की याद भुलायी नहीं जा सकती।

—सत्यनारायण टांटिया,
कलकत्ता।

Soul In Eternal Peace

●

We all join you in praying all mighty to rest his soul in eternal peace.

—Vijaya Laxmi Ben, Sharda Ben, Arvind Bhai, Yogendra Bhai, Rasesh Bhai, Miheer and all members of Mafat Lal family..............
Mafat Lal Groups, Bombay.

पूज्य जोशी जी के निधन से बड़ा आघात लगा।

—कन्हैयालाल अग्रवाल, मिठाईवाला
बम्बई।

Heartly condolence demise of Joshi Ji.

—Shri 108 Rawal Ji
Badri Nath Dham.

Friend's Shocked

●

Self and friends felt shocked from the news of the death of Chakra Dhar Ji.

—लालजी भाई हिन्दोचा व मित्र
पाण्डिचेरी।

दुःख हुआ

●

जोशी जी के निधन पर दुख हुआ। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें।

—१०८ श्री सतपाल सिंह रावत,
हंस सोसायटी, नई दिल्ली।

Un-timely Passing

●

Shocked and grieved at sudden un-timely passing of Joshi Ji.

—रजत कुमार अग्रवाल सौ० अमला बहिन,
जिलाधिकारी – चमोली।

ज्योतिष की क्षति

●

आचार्य जी के आकस्मिक निधन से देश के ज्योतिष विज्ञान को बहुत बड़ी क्षति हुई है।

—नन्द कुमार सोमाणी, बम्बई।

A Great Personality

●

Shocked hearing sad demise. A great personality lost for-ever.

—श्री १०८ ब्रकमेश जी महराज, दिल्ली।

बदरीश से

●

आचार्य जी के निधन पर समस्त देवप्रयागी समाज संवेदना प्रकट करते हुए, उनकी आत्मा की शांति के लिए भगवान बदरीश से प्रार्थी हैं।

—मनोहर कान्त ध्यानी;
मन्ती

Our heart felt condolence on sad demise of Chakra Dhar Ji.

—मफतलाल दीपिका बेन परिवार
बम्बई।

Irreparable

●

To us it is an irreparable loss. May God give you strength to bear.

—सुरेश बाबुलकर, इलाहाबाद।

Deeply shocked, accept our condolence.

—श्री भाईलाल मणीलाल पटेल,
अहमदाबाद।

Shocked to hear death of our beloved brother.

—रघुनन्दन ध्यानी, नेवल आफीसर,
लखनऊ।

Shocked to hear sudden demise of Pandit Ji.

—कुण्डोलाल, गोविन्दराम सेक्सरिया,
बम्बई।

Shocked, accept hearty sympathy.

—बिट्ठलदास, मथुरादास,
बम्बई।

Condolence, demise of Joshi Ji.

—ध्रुवनारायण कोटियाल और दीपक कोटियाल
बदरीनाथ / जोशीमठ।

Deeply heartfelt.

—सरदार सोहन सिंह, ऋषिकेश।

May God give eternal peace to the departed soul.

—भरतभाई भट्ट, देवास।

May his soul rest in peace.

—श्याम बाबू, देवास।

India Has-lost.

●

India has lost in him a paramount astrologer and a great scholar.

—सन्तोफवा सविता दीदी एवं मेहता परिवार,
बम्बई।

Heart felt condolence.

—शंकर घोष एवं मित्र, कलकत्ता।

Please accept heart felt condolence.

—श्री शामू भाई, अहमदाबाद।

Sad demise Joshi Ji.

—श्री भगवती प्रसाद सक्सेना,
पोस्ट मास्टर – बरेली।

Deeply grieved to hear sad demise of your father.

—सोहन दीक्षित एवं स्टाफ मेम्बर,
देवास।

We share your sorrow.

—दीनबन्धु एवं गौरीशंकर साह,
बम्बई।

Condolence Chakra Dhar Ji's death.

—प्रेमलाल बैद्य, बदरीनाथ।

A Great Loss

●

Grieved sad demise. A great loss of our society and Indian astrology.

—रघुनाथ भट्ट, देहगांव।

May his soul rest in piece.

—विष्णु प्रसाद मित्तल,
कोटा सिटी।

Extremely grieved demise of Acharya Ji.

—गोविन्द भाई सी० पटेल, बम्बई।

Deeply grieved.

—नारायण पटेल, देवास।

Accept my heart felt condolence.

—आर० बी० देसाई, बम्बई।

Grieved sad demise of your father.

—अमित साह, वम्बई।

My heart felt condolence; sad demise of Pandit Ji.

—अम्बालाल सी० पारेख, बम्बई।

Grieved on the death of Acharya Ji.

—मालवीय
मफतलाल सर्विसेज, नई दिल्ली।

Condolence on sad demise of Acharya Joshi.

—शैलेश महादेविया, बम्बई।

My heart felt sympathies to your family members.

—अजय के० लखनपाल, बम्बई।

My heart felt sympathies to your family members.

—जे० पी० बडोनी, लखनपाल प्रा० लि०,
बम्बई।

Loss is irreparable. My heart felt condolence.

—भीष्म कुकरेती, लखनपाल प्रा० लि०, बम्बई।

I am shocked to hear, his death is a great loss to all his friends. With sorrow.

—के० एन० मोदी, चेयरमैन, मोदी इण्टरप्राइजेज,
मोदी नगर।

Grieved to hear sad demise of our very close family friend. With sorrow.

—के० के० मोदी, वाइस चेयरमैन एण्ड प्रेसीडेन्ट,
मोदी इण्टरप्राइजेज, मोदी नगर।

आचार्य जी मान्य ज्योतिषी थे। हमारे परिवार से उनके सम्मानित घनिष्ठ सम्बन्ध थे। उनके निधन के समाचार से दुख हुआ। हम सबकी सहानुभूति आप सबके साथ है।

—सतीश कुमार मोदी, वाइस चेयरमैन एण्ड प्रेसीडेन्ट,
मोदी कार्पेट्स, मैनेजिंग डाइरेक्टर, मोदी स्पिनिंग
एण्ड वीविंग मिल्स, मोदी नगर।

ज्योतिष के क्षेत्र में स्वर्गीय पंडित जी जैसे खगोलवेत्ता की क्षतिपूर्ति भविष्य में सम्भव नहीं है। सारा विद्वत् समाज शोकग्रस्त है। यह विश्व-क्षति है। अपने किये गये कार्य के लिये वे सदैव स्मरण किये जायेंगे।

—स्वामी देव स्वरूपानन्द, फूलचट्टी, सेवाश्रम,
ऋषिकेश।

Very much shocked and grieved on the sad demise of Joshi Ji.

—श्रीमती यशवंती, हाथी भाई, बम्बई।

जोशी जी के आकस्मिक निधन के समाचार से बहुत दुख हुआ।

—जे० आर० सेक्सरिया, कलकत्ता।

परम पूज्य आचार्य जी के आकस्मिक स्वर्गवास से मेरे सारे परिवार को दुख हुआ। वे हमारे परम पूज्य गुरु थे। उन्हे हम सब लोग याद करते रहेंगे।

—भगवती प्रसाद खेतान, चर्चगेट, बम्बई।

'स्वतन्त्र भारत' में पूज्य गुरुदेव के निधन का दुखद समाचार पढ़ा। उनके उपदेश हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

—रघोत्तम शुक्ल, तहसीलदार, लखनऊ।

आचार्य जी ज्योतिष के प्रकांड पण्डित थे। देश को उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। '............
..............सुरसिंगार संसद के वे जनक थे। हमें उनके आदर्शों पर चलना है। यही श्रद्धाञ्जलि है।

—बाबू ब्रजनारायण, सुरसिंगार संसद,
बम्बई।

आचार्य जी के निधन के समाचार से महान वेदना हुई। वे उत्तर भारत के महान स्तम्भ थे।

—विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा, विट्ठल नाथ मन्दिर,
आगरा।

समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि आचार्य जोशी जी का निधन हो गया। उनके निधन से पार्वत्य प्रदेश को बड़ी क्षति हुई है।

—डॉ० शिवानन्द नौटियाल, विधायक, उ० प्र०।

आचार्य जी के निधन से दुःख हुआ। हम सब परिवार जनों की आपसे हार्दिक सहानुभूति है।

——चन्द्रभान, सूरजभान दरी वाले, आगरा।

आचार्य जी के आकस्मिक देहावसान का समाचार अन्तर्मन को दुखी कर गया। दैवी विपत्ति इतनी कठोर हो सकती है, ऐसा आभास न था। मेरे प्रति उनका पुत्रवत् स्नेह था।

—तरुण विजय, पाञ्चजन्य, नई दिल्ली।

"आचार्य चक्रधर जी जोशी के निधन से हमारे देश में ज्योतिष विज्ञान को अपूरणीय क्षति हुइ है।"

—श्रीकृष्ण सोमाणी, बम्बई।

पूज्य आचार्य जी अपने साथ नहीं हैं, ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता है। इस समाचार से स्तब्ध हो गया हूँ।

— करसनदास पुजारा, मफत लाल हाउस, बम्बई।

"मान्याः जोशिभ्रातारः! अवतार पितृपादानां आचार्य श्री चक्रधर जोशी महा भागानां निधनं श्रुत्वा भृशं स्तम्भितास्म।

—केशव शर्मा, संपादक 'दिव्य ज्योति', शिमला।

उत्तराखण्ड को महानतम विद्वान चली बसीन। इनू कर्मिष्ठ विद्वान, सज्जन, जनहितैषी व्यक्ति हूंणों दुर्लभ छ।

—शिव प्रसाद डबराल 'चारण' दोगड्डा (गढ़वाल)।

Grieved to learn the demise of Acharya Chakradhar Joshi. Please accept our heartfelt condolences.

—मणीलाल पटेल एण्ड कं०, करनजी पटेल स्ट्रीट बम्बई।

महाराज के अकस्मात् और दुःखद निधन का समाचार प्राप्त होते ही मन व्यथित हो उठा। वे केवल एक प्रकाण्ड विद्वान और धार्मिक पुरुष ही नहीं थे किन्तु हमारे परिवार में से ही एक थे। उनके निधन से बडी भारी हानि हुई है, जिसकी पूर्ति होना असंभव है।

—रमाकान्त कुलकर्णी, पुलिस उप महानिरीक्षक, बम्बई।

बम्बई के हिन्दी दैनिक पत्र नवभारत टाइम्स में आपके अदरणीय पति एवं देश के सुविख्यात विद्वान ज्योतिषाचार्य पं० चक्रधर जोशी का हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया है, यहाँ सभी को बहुत ही दुःख हुआ है।

——सचिव—गो० तिलकाय श्री १०८ गोविन्द लाल जी महाराज बम्बई।

तेरा पिताजी समाजकाहो ना देश को विभूति छा। यना महान पुरुष कभी-२ पैदा होदान। व्यक्तिगत रूप मा ओ मेरा वास्तव मा एक गुरु रूप आदर्श छा।

—ललित कृष्ण ध्यानी, अमेरिका।

प्रिय भागिनेय चक्रधर के निधन का समाचार पढ़कर अत्यन्त वेदना हुई। इस दुर्घटना से हम लोग बहुत पीड़ित हैं।

—डा० जे० सी भारतीय, लखनऊ।

तुम्हारे पिता जी ! श्री चक्रधर जी हमारे अनन्य मित्र थे। उन्होंने अपनी विद्या द्वारा लोक सम्मान की प्राप्ति की है। वे एक महान व्यक्ति थे। उनके बनाये स्थान को पूर्ववत् चलाना तुम लोगों का कर्तव्य है।

—ब्रह्मर्षि बालानन्द ब्रह्मचारी, देहरादून।

आचार्य चक्रधर जी से मेरा कई वर्षों से परिचय रहा है। ज्योतिष विद्या के वे प्रकाण्ड विद्वान थे। इस क्षेत्र में उनके द्वारा की गई सेवाएँ चिरस्मरणीय रहेंगी। प्राच्य विद्या के लिए एक संस्थान भी उन्होंने स्थापित किया और उसके विकास के लिए सक्रियता से अग्रसर थे। मेरी संवेदना स्वीकार करें।

—श्रेयांस प्रसाद जैन, बम्बई।

परम पूज्य आचार्य जी के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ।

—विश्वनाथ शुक्ल, प्रिंसिपल, बी० एस० एम० कालेज, रुड़की।

आज रविवार दि० २४-८-८० को आर्य राज्य परिषद् के साप्ताहिक अधिवेशन में पं० जी के निधन पर शोक व्यक्त किया गया।

—आर्य राज्य परिषद्, बरेली।

विश्वास नहीं होता कि पं० जी नहीं रहे······ वे सचमुच बहुत ही महान व्यक्ति थे।

—गिरधारी लाल वैद्य, सेक्सरिया चेम्बर्स, बम्बई।

········प्रातस्मरणीय भ्राताश्री के आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार मिलने पर स्तब्ध हो गया। इस असह्य वेदना से हम लोग अत्यन्त दुःखी हैं।······

—चक्रधर शर्मा, रिटा० मजि०, दिल्ली हाल-जोधपुर।

·········उत्तराखण्ड की पावन विभूति आपके पिताश्री पं० चक्रधर जोशी के आकस्मिक देहावसान से हमें हार्दिक दुःख हुआ।

हिमालय के विश्वविख्यात ज्योतिर्विद विद्वत् विभूति का सूर्य श्री चक्रधर जी जोशी सदा के लिये अस्त हो गया। इससे हमारे संस्कृत साहित्य की बड़ी अपूरणीय क्षति हुई है।

—स्वामी १०८ श्याम सुन्दर दास महाराज, गरीबदासी आश्रम, हरिद्वार।

आपके पिताजी पूज्य श्री चक्रधर जोशी के निधन से बहुत आघात लगा। वे बड़े ज्ञानी, विद्वान और बहुत ही नम्र स्वभाव के थे।

—शारदा बहन बाबू भाई शाह, बम्बई।

"We are deeply grieved to hear about the sudden death of your father Chakradhar Ji.

He was a very learned person and a gentleman to the core.

—महेन्द्र सी० पारेख, "पारितोष", बम्बई।

अकस्मात कल तार मिला, पढ़कर हृदय में भारी चोट हुई। उनसे मेरा ३० वर्षों से घर का सा सम्बन्ध था।

—शिवरत्न दवे, आस्ट्रोलॉजर, मद्रास।

आपके पिताजी के............अत्यन्त दुःख हुआ। मैं उनको कई बार याद करता रहा हूँ। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे।

—विष्णुदत्त शर्मा, होशियारपुर डि० को० यूनियन प्रिन्टिंग प्रेस।

"दैनिक जागरण" में श्रद्धेय जोशी जी के स्वर्गवास का समाचार पढ़ा, हम सभी स्तब्ध रह गये। श्रद्धेय जोशी जी एक महान विद्वान, कर्मठ योगी व निश्छल हृदय महापुरुष थे। उनकी वह सरल मुस्कान उनके सभी परिचितों को जीवन पर्यन्त याद रहेगी।

—डॉ० राजेश गोयल, ६/७५ आर्यनगर, कानपुर।

आचार्य जी भारत की योग्यतम विभूति थे और उनके स्वर्गवास से विद्वत् समाज में एक रिक्तता आ गई है, जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं।

—रामकृष्ण शर्मा, अधिशासी अभियन्ता,
सा० नि० वि०, कर्ण प्रयाग।

परम पूज्य गुरुदेव पण्डित चक्रधर जी का देहावसान हो जाने का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ है। गुरु जी के नाम और गुण इतने महान थे कि हम सब लोग उन्हे भूल नहीं पायेंगे।

--शान्तिलाल के० मेहता, मद्रास।

पूज्य पण्डित जी हम सब को छोड़कर इस संसार से चले गये हैं जो हम सबके लिये दुखदायक है।

--विश्वनाथ भाटिया, स्वामी रामतीर्थ सेवा सदन,
अमृतसर, पंजाब।

श्री चक्रधर जी जोशी के स्वर्गवास का तार मुझे आज आपकी तरफ से मिला। यह जानकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ।

--विपिन चन्द्र पी० पटेल, सोफेस पार्क, बम्बई।
[मफतलाल ग्रुप्स]

आचार्य जी ने अपना पूरा जीवन भारतीय संस्कृति के उत्थान के लिये एवं ज्योतिष शास्त्र और खगोलशास्त्र के लिए अर्पित किया था। उनके निधन पर शोक करना उचित नहीं है क्योंकि उन्होने तो अपना पूरा जीवन पूर्ण पवित्रता से व्यतीत किया था।

—हरिलाल ड्रेसवाला, स्वामी श्री प्रेमपुरी आश्रम ट्रस्ट, बम्बई।

अत्यन्त दुःख हुआ कि भारतीय ज्योतिष का एक नक्षत्र अस्त हो गया। आचार्य चक्रधर जोशी की ज्योतिष जगत को अविस्मरणीय सेवायें हैं।

—प्रो० के० ए० दुबे पद्मेश, ज्योतिष महाविद्यालय, कानपुर।
(सम्पादक—"ज्योतिष योग")

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि पूज्य आचार्य जी नहीं रहे।

—श्रीमती डी० ध्यानी, १६२ धर्मपुर, देहरादून।

वे ज्योतिष शास्त्र के प्रतिभावान विद्वान थे। महाराज श्री के साथ उनके निजी सम्बन्ध थे। भगवदिच्छा प्रबल है।

—सचिव, १०८ गो० ब्रजेश कुमार जी; तथा १०८ गो० ब्रजभूषण लाल जी,
कांकरौली पैलेस, बड़ौदा।

भारतीय दिव्यधरा के नित नव्य नक्षत्र माला और खगोल शास्त्र के उच्चतम अभ्यासी साधक और भारत के उद्योगपति और नेताओं को ज्योतिष विषय में मार्गदर्शन देने वाले पूज्य आचार्य श्री चक्रधर जी जोशी का निधन होने से अत्यन्त दुःख हुआ।—जय श्री मीरा अरविन्द।

—वैद्य बिहारीलाल शर्मा, बम्बई।

मुझे महान दुःख है कि आपके पिताजी श्री चक्रधर जी जोशी का निधन हो गया है।

—श्रीमती मनोरमा बेन जे० सरैय्या, बम्बई।

पूज्य आचार्य चक्रधर जी के असामयिक अवसान के समाचार से अत्यन्त दुःख हुआ।

—धर्मचन्द जे० वारोडिया, टाइमली बुक सेन्टर, बम्बई।

मुझको यह दुखद समाचार मिला। उनके अधूरे कार्य परिपूर्ण करना, यही आपका फर्ज है।

—विष्णु पटेल, देवास।

मैं अपने मन और हृदय की स्थिति नहीं कह सकता। उनकी आँखों से हम पर माँ अलकनन्दा और भागीरथी का प्रेम बरसता था, हम तो उस दृष्टि को तरसेंगे। नक्षत्र मण्डल में से एक चमकता सितारा अदृश्य हुआ। माँ सरस्वती की आँखें भीगी होंगी। किन्तु वे मर नहीं सकते, वे सदा अमर रहेंगे।

—प्रधानाचार्य, विरला विद्यालय, पोरबन्दर।

पूज्य आचार्य पण्डित चक्रधर जी जोशी के निधन के समाचार से अत्यन्त दुःख हुआ। किशन महाराज बेहोश हो गये।

—दयाराम कानजी, मद्रास।

I am deeply sorry to hear of your great loss. Please accept our condolence.

--महेन्द्र एवं सौ० पल्लवी पटेल, स्वस्तिक सोसायटी, अहमदाबाद।

परम पूज्य आचार्य श्री चक्रधर जी जोशी का हृदयगति रुक जाने से देहावसान के समाचार से अत्यन्त दुःख हुआ। वे ज्योतिष, नक्षत्र, ग्रहों के बड़े ही जानकार थे, इसीलिये देवप्रयाग में नक्षत्र वेधशाला की स्थापना का भार ग्रहण किया।

—गंगादास लक्ष्मीदास संघवी, अमरेली, (सौराष्ट्र)

बड़े दुःख के साथ पूज्य गुरु जी के देहान्त का समाचार सुनकर अत्यत्त दुःख हुआ। मेरे ऊपर उनकी बड़ी कृपा व प्रेम दृष्टि थी, मैं लिख नहीं सकता।

—बाबूभाई डी० कारिया, कोयम्बटूर।

श्री चक्रधर जी के स्वर्गवास से ज्योतिष जगत का, उत्तर भारत का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र सदा के लिए अस्त हो गया। जिस ज्योतिपुंज के ऊपर उत्तर भारत के ज्योतिषियों का अभिमान था वह पुंज लोप हो गया है।

—सत्येश्वरानन्द कैलाश चन्द पाण्डेय, हरिद्वार।

.........आपके पिता जी मेरे भी पिता जी जैसे थे। ज्योतिष के प्रखर पण्डित, अभ्यासी, के जाने से सभी को बड़ा दुःख हुआ है।

--बाड़ी भाई पटेल, मफतलाल बंगला, बम्बई।

.........आदरणीय श्री जोशी जी के स्वर्गवास का समाचार पा, यह साधु हृदय अत्याधिक व्यथित व दुःखित हो उठा। वे अपने असंख्य मानवीय तथा दैवी गुणों के कारण सबके हृदय में एक विशिष्ट प्रेम और आदर का स्थान रखते थे। वे सच्चे शब्दों में अजातशत्रु थे। वे आत्मिक दृष्टि से उच्चतम स्तर पर थे, और अभी भी हैं। प्रभु का जो पवित्र एवं परम शान्तिदायक—सामीप्य एवं एकत्व उन्हें लौकिक जीवनकाल में उपलब्ध था वही उच्चतम स्थिति पंचभौतिक काया त्यागने के बाद भी उन्हें प्राप्त है, इसमें सन्देह नहीं है।

—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, शारदाकुटीर, चरणपादुका (बदरीनाथ)।

आज आदरणीय महाराज श्री चक्रधर जी का निधन का समाचार जानकर अति आघात हुआ है।

—जयशंकर के० राजगौर, कान्चीपुरम।

ज्योतिष जगत की जाज्वल्यमान ज्योति श्री चक्रधर जी जोशी के निधन का समाचार सुनकर महान दुःख हुआ।

—ज्योतिर्विद् नागेन्द्रदत्त व्यास, वाणीभूषण पंचांग, भट्टोवाला (देहरादून)।

परम पूज्य आचार्य जी सेवाभावी, निःस्पृही,आदर्शवादी व्यक्ति थे।

—टी० माणिकलाल मेहता, दुर्गाशंकर जोशी, बम्बई।

.........थोड़े समय के लिए ऐसा मालूम पड़ा जैसे पहाड़ टूट पड़ा। घर में सबको बहुत दुःख हुआ।

—बाबूराजा डी० शाह, बम्बई।

पूज्य श्री चक्रधर जी के निधन से आघात लगा। हमारा परम-सौभाग्य था। यहाँ आने की कृपा की थी, जिससे हमें उनके दर्शन का लाभ मिला।

--श्रीमती शशिबाला, अहमदाबाद।

हमारे ऊपर की गुरु कृपा तथा छत्रछाया को आज भगवान ने छीन लिया। उनके सुहास्यवदन और प्रेम-अभाव से हम सब वंचित हो गये।

—सुधाकर के० टिकक, बम्बई।

.........फूफाजी को निधन को समाचार सुणीक अति दुःख हुआ।

—श्रीमती रजनी बड़थ्वाल, दिल्ली।

यह पढ़कर महान दुःख ह्वै कि जोशी जी स्वर्गवास ह्वेने। ईश्वर का नियम मा कुछ भी वश कैको नी चलदो।

--श्रीमती दुर्गा देवी खण्डूड़ी, पौड़ी।

एक ऐसी भोली मूर्ति जिनको देखने मात्र से दुःख दर्द मनुष्य का दूर हो जाये वह मूर्ति हम सबके बीच उठ गई है।

—डॉ० सुरेन्द्र ध्यानी, देहरादून।

जीजा जी के असामयिक और आकस्मिक निधन से हृदय को सहसा एक आघात लगा। हम तो बिल्कुल विस्मित और स्तब्ध हैं।—.......उनके पार्थिव शरीर के दर्शन नहीं कर सका।

—विशंभरदत्त बहुगुणा, शिक्षा अधिकारी, दिल्ली।

हम इस हृदय विदारक घटना से स्तब्ध एवं अत्यन्त दुःखी हो गये हैं।

--दीपक आर० भोंसले, देवास।

आचार्य जी हमारे वेदव्यास थे। जब भी उनकी अमृतवाणी याद आती है, मन विकल हो जाता है।

—नित्यानन्द मैठाणी, अकाशवाणी, नजीबाबाद।

भाई जी का आकस्मिक निधन से महान दुःख होई। ऊँको हमसे चिर विछोह असहनीय छ।

—रमेशचन्द्र बड़थ्वाल, मुकुन्द आश्रम, पौड़ीगढ़वाल।

आचार्य जी ऊँचे दर्जे के विद्वान, पंडित थे। उन्होंने ज्योतिष शास्त्र पर अनेक पुस्तकें लिखकर समाज की सेवा की है। उनकी वाणी कोमल थी, हृदय कोमल और विशाल था। प्रेम से भरा था। अपने आध्यात्मिक विचार वे हमको कभी-कभी सुनाते थे; अर्थ समझाया करते थे, हम उनको कभी भी भूल नहीं सकते।

—बसन्तराव तुरीले, पूना।

पूज्य पं० चक्रधर जी के निधन का समाचार जान कर बहुत दुःख हुआ।

—हरि भाई राच्छ, बम्बई।

………पूज्य जोशी जी के वैकुण्ठवासी होने का समाचार मिला, जिससे हृदय पर बहुत आघात पहुँचा।
—शिवशरण भट्ट, बाड़ागांव जोशीमठ।

पूज्य आचार्य जी के आकस्मिक निधन के दुःखद समाचार से बड़ा आघात पहुँचा है। उनके गोलोकवासी होने से देश में एक रत्न का अभाव हो गया है। अपनी विद्वता, सहृदयता, उदारता, त्याग और आचरण के कारण उनकी चिर स्मृति बनी रहेगी, और वे अमर रहेंगे।
—सुरेश जोशी, धुमाकोट।

………वास्तव में हमें श्री जोशी के निधन की सूचना प्राप्त होने पर बड़ा ही दुःख व आश्चर्य हुआ क्योंकि एक सप्ताह पहिले वे यहां पर आये भी थे।
—सीसमल गगनदास लोहे वाले, ऋषिकेश।

अचानक हृदय विदारक शोक समाचार सुनकर बड़ा आघात हुआ। श्रद्धेय भाई जी नहीं रहे, इस पर विश्वास नहीं होता।
—श्रीमती सत्यवती डबराल, उज्जैन।

I read the news of Acharyaji's sad demise in "Indian Express" with great shock.
—गौतम सिंह चौहान एडवोकेट, टिहरी।

पू० चक्रधर जी महाराज के देहान्त का समाचार सुनकर हम सबको बहुत धक्का पहुँचा है।
—एम० के० मेहता, मद्रास।

मुझे पेपर से ज्ञात हुआ कि सम्मान्य पं० गोलोकवासी हुये। बड़ी ही दुखदायी घटना हो गई। शास्त्री जी मुझे कनिष्ठ बन्धु ही समझते थे। अकल्पित हुआ बहुत प्रतिकूल घटना हुई।
—मधुकर शास्त्री पाठक, पूना।

आदरणीय जोशी जी का निधन से बड़ा दुःख होई। ऊँका निधन से उत्तराखण्ड और सारा देश की अपूरणीय क्षति होई।
—डॉ महावीर प्रसाद गैरोला, एडवोकेट, टिहरी।

बड़े दुःख के साथ………पू० गुरुजी महाराज आ० चक्रधर जी के देहावसान की सुनकर मन बहुत ही दुःखी हुआ। उनका मुझसे अथाह प्रेम था। इसके लिए मैं उनका जीवन भर आभारी रहूँगा।
—रघुनाथ प्रसाद मुनीम; मोदीनगर।

………आचार्य जी के ब्रह्म निर्वाण का दुःखद समाचार सुनकर अत्यन्त हार्दिक दुःख हुआ।
—भवानीदत्त जोशी, दयापुरी-मोदीनगर।

आपके पिताजी पूज्य पं० चक्रधर जी जोशी के निधन के दुःखद समाचार प्राप्त हुये, दुःख है।
—बाबूलाल केशवजी कोरडिया, बम्बई।

·········आपके पूज्य पिताजी आचार्य ज्योतिषी के निधन का समाचार विदित हुआ । अत्यन्त दुख हुआ ।

--मनहर लाल मट्टुभाई, बम्बई ।

आचार्य जी की मुझ पर बड़ी कृपा थी, वे महान व्यक्ति थे, महान विद्वान थे, महान पंडित थे तथा ज्योतिष के महान ज्ञाता थे । इनके निधन से देश ने एक महान व्यक्तित्व को खो दिया है ।

--जी दुआटे, ३५ सुभाषनगर, उदयपुर (राजस्थान) ।

गढ़वाल मण्डल मा पूज्य जोशी जी का निधन का समाचार से बड़ो भारी दुःख होई । यह महान क्षति पूरा भारत की होई ।

--शिव प्रसाद डोभाल, पौड़ी ।

I am grieved to read that your father Shri Chakradher Ji has passed away.

—पुरुषोत्तम, पाण्डिचेरी ।

Deep condolence on the sudden demise of Acharya Joshi Ji.

—जगदीश प्रसाद डंगवाल, टि० गढ़वाल ।

आदरणीय श्री जोशी जी का निधन का समाचार सुणीक बहुत ही दुःख होये ।

--वृजमोहन पाण्डेय, देहरादून ।

आपके पिताजी के निधन का समाचार पढ़कर बहुत दुःख हुआ ।

--वि० सूरि, ज्योतिष्मति, सोलन (हि० प्र०) ।

जीजा जी के दुःखद व असामयिक निधन का समाचार कल अखबार में पढ़कर अत्यन्त शोक हुआ ।

—श्री एवं श्रीमती सत्यप्रकाश शर्मा, बैंक मैनेजर ।

आदरणीय श्री चक्रधर जी महाराज का आकस्मिक निधन का समाचार मिला, हमें बहुत-बहुत दुःख हुआ और रहेगा । संसार में उत्तम मानव रत्न की कमी होती जा रही है ।

--कान्ति लाल कारिया, राजकोट ।

Please accept our heart felt Condolence at the sad demise of your father.

—भानु प्रसाद सी० मेहता, बम्बई ।

पिता जी के निधन का समाचार मुझे सूरत में मिला । सब समाचार किसन महाराज से मालूम हुआ और अत्यन्त दुःख हुआ ।

--मावजी भाई के० चह्वाण, मद्रास ।

आपके पिता जी का निधन का समाचार जानकर हमें बहुत ही दुःख हुआ । आपके पिता जी एक महान ज्योतिषी थे ।

—हरिलाल जगजीवनदास एवम् परिवार के लोग; बम्बई ।

......पूज्य चरण जीवन्मुक्त महामना गुरुदेव के महाप्रयाण का महान दुःखद समाचार सुनकर महान दुःख हुआ। धर्म का एक स्तम्भ टूट गया, गढ़वाल का सूर्य अस्त हो गया।

—गोपाल भट्ट पाण्डुकेश्वर (बदरीनाथ)।

आकाशवाणी तथा समाचार पत्रों से श्रद्धेय आचार्य जी के स्वर्गवास का समाचार सुनकर हम भौचक्के रह गये। 'ज्योतिष बोध' परिवार की ओर से हार्दिक संवेदना, पत्रिका परिवार के सदस्यों में एक सदस्य नहीं रहे, दुःख है।

—घनश्याम कौशिक, ज्योतिष बोध, सहारनपुर।

........I can realise the grief and share of irreparable loss you must be feeling, May God give you Courage.

—सतीश, मंसूरी।

बज्र के समान आघात करने वाले......समाचार से आघात लगा।

—बसन्त सिंह चौहान, बम्बई।

पूजनीय गुरूजी के निधन की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ।

—प्रेमसिंह पंवार, स्टैण्डर्ड मिल गेस्ट हाउस, देवास।

आज ही दौरे से लौटने के बाद श्री सतेसिंह नेगी से मालूम हुआ कि तुम्हारे पूज्य पिताजी आचार्य जोशी जी का निधन हो गया है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें।

—हेमवतीनन्दन बहुगुणा, नई दिल्ली।

.........पूज्य जोशी जी हमारे स्व० पिताजी के और हमारे परिवार के बहुत निकट थे। कई दृश्य आज भी मेरी नजरों के सामने आते हैं। ....वे सचमुच बहुत उच्च श्रेणी के विद्वान और आदरणीय महानुभाव थे।

—गौराङ्ग सी० शाह, बम्बई।

जोशी जी के निधन का समाचार पढ़कर, अपार दुःख हुआ। उनके निधन के कारण जो स्थान रिक्त हुआ है, उसकी पूर्ति होना असम्भव है!

—एम० के० अग्रवाल, कोसीकलां, मथुरा।

स्वर्गीय आचार्य जी साक्षात् धर्म के अवतार थे, जिन्हें राग-द्वेष का आभास स्वप्न में भी नहीं हुआ होगा। वे त्रिकालज्ञ थे, सिद्धपुरुष थे, गुरुभक्त थे, सरस्वती, लक्ष्मी के समान सहायक थे, अद्वितीय विद्वान थे। गढ़वाल समाज उनका शताब्दियों तक ऋणी रहेगा। उन्होंने अभूतपूर्व ग्रन्थालय का निर्माण कर गढ़वाल समाज को मोती चुनकर नवनिधियों का भण्डार प्रदान किया है।

—डॉ० प्रेमदत्त चमोली, मेरठ।

जोशी जी के निधन का समाचार सुनकर मैं अत्यन्त दुःखी हो गया। उनके विछोह ने आपके परिवार में ही नहीं अपितु समस्त ज्योतिष जगत में एक रिक्तता पैदा कर दी है।

—सुरेन्द्र सिंह सजवाण, "पत्रकार",
चेतना मिनरल्स कार्पो०, देहरादून।

मेरा लेखकीय जीवन ही उनके आशीर्वाद का फल है।

—प्रेमलाल भट्ट, गोल मार्केट, दिल्ली।

आचार्य जी के गुणों को याद करना और उनके द्वारा निर्देशित नियमों पर चलना तथा उनके द्वारा संचालित कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प ही उनके लिये उचित श्रद्धांजलि होगी।

—देवी प्रसाद गुप्त, अरण्यपाल, नैनीताल।

आचार्य पं० स्व० चक्रधर जी के आचार-व्यवहार और कार्य को यथावत् चलाते रहना ही वास्तव में उनकी सजीव स्मृति है।

—आनन्द शंकर व्यास, पञ्चांगकर्ता, उज्जैन।

पूज्य आचार्य जी का श्राद्ध-पत्र मुझे ६-८-८१ को करगत हुआ। अतः मैंने आज ही (एक दिन बाद) अपने मानस पुष्प उन्हें अर्पित किये।

—डॉ० शशिधर शर्मा, विभागाध्यक्ष संस्कृत, चण्डीगढ़।

पूज्य आचार्य पं० चक्रधर जी के वार्षिक श्राद्ध के अवसर पर दिवंगत आत्मा के लिए मेरा सादर अभिवादन स्वीकार करें।

—नन्द कुमार सोमाणी, बम्बई।

आचार्य जोशी जी बड़ा नाम छोड़ गये हैं। उनका प्रतिभाशाली व्यक्तित्व था। उनकी लेखनी में बड़ी ओजस्विता थी। उन्होंने इस दिशा में उत्तराखण्ड की जो सेवा की है वह उनके बड़े देशप्रेम का द्योतक था।

—गोविन्द प्रसाद नौटियाल, 'पत्रकार' नन्द प्रयाग, चमोली।

आचार्य चक्रधर जोशी महान व्यक्ति थे। वे ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनका विचार ज्योतिष विशेष रूप से फलित के सम्बन्ध में पूर्णतया सही होते थे। मेरा खुद का विचार-अनुभव के आधार पर यही है कि आमतौर से जो भी भविष्यवाणी वे करते थे वह शत-प्रतिशत सही होती थी। बल्कि शत-प्रतिशत सही निकलती थीं। मेरे लिये उन्होंने तीन बार तीन भविष्यवाणी की थी। वह सभी पूर्ण सही, सत्य निकलीं। उनके लिए ज्यादा लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।

—गणेश लाल माली, एडवोकेट, ३५ सुभाष नगर, उदयपुर
(भूतपूर्व सांसद, राजस्थान)

आचार्य जी तो हमारे संरक्षक थे। उनके दर्शन हुये थे देवप्रयाग में १९७८ में और फिर बम्बई में १९७९ में। उनका ज्ञान अपार था। उनकी आत्मा हमें कल्याण प्रदान करे।

—सुरेन गोयल, कायाकल्प मिशन, पूर्वी भाग,
वी. विहार, नई दिल्ली

[संकलनकर्ता—श्री सुधाकर जोशी, नक्षत्र वेधशाला, देवप्रयाग]

हृदय पर बहुत बड़ी आघात पहुँची। बूढ़ाजी/कू हमारा समाज मा त अपणु अलग व्यक्तित्व छयो ही, वो समूचा राष्ट्र की निधि छया।

—अरुण प्रकाश ध्यानी, बम्बई।

बड़ी दुःखद घटना छ । ऊ एक महान पुरुष छया, वो अमर छन ।

—रज्जन शैलेन्द्र कोटियाल, लोबिया ।

चाचाजी का व्यक्तित्व सारा देवप्रयागी समाज बल्कि सारा गढ़देश की गौरव की वस्तु छयी । एक दिव्य ज्योति अनायास ही ब्रह्माण्ड मा विलीन होई गयी ।

——वल्लभ कोटियाल, मोदीनगर ।

मानवीय नियम का अन्तर्गत् पूज्य गुरुदेव परम ब्रह्म की ज्योति मा विलीन होई गेन किन्तु वख से भी या दिव्यात्मा ज्योति को आलोक बिखेरली ही ।

—डा० कृष्णधर शर्मा, बाबुलकर ।

उनके सर्वतोभद्र जीवन के अन्त से देवप्रयागी समाज का एक और जाज्ज्वल्यमान नक्षत्र अस्त हो गया है । समाज अँधेरे और अधर में डूब गया है । वे सन्त थे । सन्तों का महापरिनिर्वाण भी सहज नहीं होता है ।

——मोहनलाल बाबुलकर, प्रयाग ।

तार मिले कि ताऊजी को स्वर्गवास हो गये, तार पढ़ोक अत्यधिक दुःख छ ।

—लीलाधर जोशी, शिलांग ।

फूफाजी का आकस्मिक मृत्यु के बारे में जानकर हार्दिक दुःख हुआ ।

——नलिन भट्ट, सतना (म० प्र०) ।

वो एक महान व्यक्ति छया व समाज मा भी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति छया । ऊँ की कमी कभी पूरी नी ह्वे सकदे ।

—सत्यप्रकाश भट्ट, बम्बई ।

हृदय को काफी धक्का लगा । जो कुछ हुआ उसकी क्षति-पूर्ति असम्भव है ।

—नवीन कोटियाल, मोदीनगर ।

ऊँका निधन से हमारा समाज की अपार क्षति होई, वांकी पूर्ति असम्भव छ ।

——नरेन्द्र शर्मा, दिल्ली ।

ऊँको त समस्त जीवन ही समाज का वास्ता अर्पित छयो । ऊँका आदर्श एवं सिद्धान्तों सण ग्रहण करां और ऊँका द्वारा प्रारम्भ कर्यां बहुजन हितार्थ कार्यों सण पूर्ण करन को प्रयत्न करां त, याही ऊँका प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होली ।

—चक्रधर शर्मा, मोदीपुरम् ।

आचार्य जी का निधन का समाचार मेरा वास्ता सत्य ही बज्राघात से कम नी छ । वू निसन्देह मेरा साहित्यकार का प्रेरणा स्रोत छया ।

——प्रेमलाल भट्ट, दिल्ली ।

Not only you have lost your father but our community also got bereaved of an illumination to the path of glory, which can never be gapped with.

--दीपक कोटियाल, जोशीमठ ।

देवप्रयाग नगर को दुर्भाग्य छ जै को एक चमकते तारो डूब गये । हृदय की वेदना व्यक्त करन का शब्द नी छन ।

--रघुनाथ प्रसाद वकील, बदरीनाथ ।

हमारा समाज को कुल दीपक बुझी गये ।

—आत्माराम, पंचभैया, बदरीनाथ ।

अच्छा आदमियों की कीर्ति हमेशा संसार मा अमिट होंदी और ऊ दिल से नी भुलाये जांदी ।

--जितेन्द्र प्रसाद कोटियाल, अजमेर ।

पूज्य ताऊजी को निधन व्यक्तिगत या परिवार की ही क्षति नहीं अपितु पूरे समाज की क्षति है ।

--गोपाल कृष्ण भट्ट, धुमाकोट ।

स्व० पूज्य मामाजी की ख्याति, यश पूर्णतया कायम रखना मा प्रयत्नशील रौणों ।

--मुरलीधर शास्त्री, बदरीनाथ ।

भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा परिवार को शक्ति प्रदान करे ।

—सनत कुमार भट्ट, सिरपुर कागज नगर ।

समाज की प्रतिष्ठा को एक बहुत बड़ा स्तम्भ गिरी गये । हम भी उतना ही बेचैन व दुःखी छवां ।

—विपिन चन्द्र भट्ट, सेन्चुरी रेयान, बम्बई ।

मामाजी का आकस्मिक निधन का समाचार सूनीक बहुत ही दुःख होई ।

--प्रेमलाल भट्ट, दिल्ली ।

ऊंका आकस्मिक निधन से जो "लॉस" होई वांकी पूर्ति होणे असंभव छ ।

--ओमप्रकाश भट्ट, लखनऊ ।

एक महान दुःख तथा वेदना को पहाड़ तुम्हारा ऊपर पड़ीगे ।

--दुर्गा प्रसाद टोडरिया, छिंदवाड़ा ।

समाज का एक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति का रूप मा समाज की या क्षति अपूरणीय छ ।

—राहुल पालीवाल, पोर्टब्लेयर ।

दुःखद समाचार से अत्यन्त दुःख होई ।

—बनवारी लाल जोशी, लैन्सडाउन ।

ऊँका निधन से समाज से ही ना बल्कि सारा देश से एक महान पुरुष उठी गयेन। यांकी क्षतिपूर्ति नी होई सकदे।

—सुन्दर लाल कोटियाल, मोदीनगर।

मामाजी का स्वर्गवास होये गये, बज्राघात लगे।

—श्रीधर शर्मा, सीतापुर।

ऊँको निधन एक परिवार विशेष की ही क्षति नी छ, अपितु सम्पूर्ण समाज की भी क्षति छ। जौंकी पूर्ति सद्यः सम्भव प्रतीत नी होंदी।

—चिरञ्जी लाल सयाना, चमोली।

हमारू समाज त अनाथ होई ही पर भारत की मूर्धन्य विभूति की अपूरणीय क्षति होई।

—बाबूराम कोटियाल, मेरठ।

देवप्रयाग की एक महान विभूति हमारा हाथ से निकलीगे। ऊँका महान कार्य हमसण हमेशा ऊँकी याद दिलोंतों रला।

—भगवती प्रसाद भट्ट, नैनीताल।

दुःखद घटना से बड़ो आघात लगे।

—गोविन्द भट्ट, शाहजहाँपुर।

पूज्य नानाजी का आकस्मिक निधन सूणीक बहुत दुःख होई।

—राजू, ऋषिकेश।

इनी महान विभूति की हम सभी सण अभी त अत्यन्त आवश्यकता छई। ऊँका वैभव एवं यश सण यथापूर्व बणाई रखल्या।

—रमाकान्त कोटियाल, हापुड़।

अभी त, हम समाज और देश सण ऊँकी बहुत आवश्यकता छई। एक महान नक्षत्र को विलय अत्यन्त कष्टप्रद छ।

—गंगाधर कोटियाल, बदरीनाथ।

मामाजी का देहान्त सूणींक दिल पर अति चोट आये।

—उद्धव नारायण, बदरीनाथ।

गुरुजी का निधन सूणीक महान दुःख होये। देवप्रयाग नगर अंधो हो गये और भारत की एक महान विभूति चल बसे।

—सुन्दरलाल कर्नाटक, ऋषिकेश।

देवप्रयाग को सूर्य अस्त होई गये।

—अवन्तिका प्रसाद बाबुलकर, बदरीनाथ।

अब ये अभाव की पूर्ति नी हो सकदे ।

—शशिधर कोटियाल, बदरीनाथ ।

महान दुःख होये । भगवान ऊँकी पवित्र आत्मा सण शान्ति प्रदान करू ।

—अमरनाथ शर्मा, बदरीनाथ ।

सारो नगर ऊँको स्वर्गवासी होण से अन्धो होई गये ।

—तुलाराम कोटियाल, बदरीनाथ ।

एक विभूति गये, सुन्न होई गो, वो देवपुरुष छा ।

—रामेश्वर कोटियाल, बदरीनाथ ।

सूणीक अत्यन्त दुःख होई ।

—केशवलाल भट्ट, नई दिल्ली ।

Sad and sudden demise with great shock.

—गोपीकृष्ण ध्यानी, हरिद्वार ।

समाचार सूणीक अत्यन्त दुःख होई ।

—प्रेमलाल जोशी, बदरीनाथ ।

अत्यधिक दुःख होये । ऊँका मरन से सारो समाज श्रीहीन होई गये ।

—रामनाथ, बदरीनाथ ।

स्तब्ध रही गयो अब यिना व्यक्तित्व का दर्शन बहुत समय बाद भी दुर्लभ छ न ।

—सत्यनारायण मेरठवाल, बदरीनाथ ।

पूज्य जोशी जी हमारा समाज और क्षेत्र का ही क्या अपितु हमारा देश का एक असाधारण प्रतिभाशाली महामानव छया ।

—रामदयाल टोडरिया, लखीमपुर ।

इना जैसा मनुष्य होणा बड़ा ही दुर्लभ होंदान । ऊँकी तपस्वी, पुण्यवान आत्मा को आशीर्वाद से तुम्हारा श्रेय होलो ।

—प्यारेलाल, पाँच भाई, कलकत्ता ।

गुरुवर्य आचार्य जोशी जी का निधन से देवप्रयाग को चमकतो सूर्य अस्त ह्वैगे ।

—सत्यनारायण, सुन्दरलाल शास्त्री, बाबुलकर, बदरीनाथ ।

सारा समाज को जाज्वल्यमान नक्षत्र सचमुच अस्त होई गये ।

—माधव कोटियाल, दिल्ली ।

वो देश की महान विभूति छया । —विश्वनाथ डबराल, बदरीनाथ ।

जोशी जी का जाण से हम सबू की कान्ति क्षीण समझेणी च । —बिहारीलाल चक्रवर्ती, बदरीनाथ ।

ऊँका प्रशंसनीय सद्व्यवहार और सामाजिक कार्यों की अमिट छाप त सार्वजनिक रूप मा अमिट रहली हो, यो सौभाग्य केवल कुछ चन्द महापुरुषों सणही प्राप्त होंद । —गोविन्दराम टोडरिया, लखनऊ ।

आँखों का सामणे अंधकार का सिवाय कुछ भी नजर नी औंदो । —अनिल कुमार जोशी, चनौदा ।

बहुत दुःख होये । —जयकरण नाथ जोशी, अम्बाला कैन्ट ।

समाज कू एक बहुत बड़ू सहारो उठीगे । —वीरेन्द्र कुमार भट्ट; नई दिल्ली ।

हम बड़ा दुःखी होयाँ । —गिरधारी लाल मेरठवाल, मेरठ ।

जोशीजी का निधन को दुःखित समाचार मिले । —सत्यनारायण पंचभैया, इलाहाबाद ।

सारो समाज त रोयो ही किन्तु जो ऊँका नाम-काम से ही परिचित छया स्योभी किंकर्तव्यविमूढ़ छ न । ऊँकी कतना ही देन छं न । —भगवती प्रसाद राजपुरोहित, बदरीनाथ ।

स्तब्ध रही गयां । गढ़वाल जनपद देवप्रयाग क्षेत्र अर समाज आज अपणा एक महान पुरुष खोंण से श्रीहीन होई गये । —गयाप्रसाद प्रसाद पंचभैया, बदरीनाथ ।

हमारे संरक्षक चल बसे और हम बेसहारा होई गयां । हमारा समाज को आश्रयदाता हमेशा का वास्ता बिदा होई गये । —भगवती प्रसाद ध्यानी, नरेन्द्र नगर ।

सारा समाज से सूर्य उड़ीगे । —सुन्दर लाल, केशवराम कोटियाल, बदरीनाथ ।

आचार्य जी का देहान्त से बहुत दुःख होये । —श्रीमती मीना चन्दोला, वाराणसी ।

मन बहुत क्षुब्ध छ । हमारा समाज की श्री हमसे हमेशा को चलीगे । ऊँको हर व्यक्ति का प्रति स्नेह हमेशा याद रहलो ।

—बाल गोविन्द कोटियाल, बदरीनाथ ।

वो समाज का स्तम्भ छया । ऊँका निधन से समाज मा एक रिक्तता आई गये ।

—शशि शंकर कोटियाल, लखनऊ ।

दुःख होये । हमारा परिवार को यो बज्राघात छ । ....सारा समाज ही ना देश की भी अपूरणीय क्षति छ ।

—माखनलाल ध्यानी बदरीनाथ ।

आघात लगे ।

—रामेश्वर पालीवाल, अहमदाबाद ।

आघात लगे ।

—माणिकलाल रैवानी, बदरीनाथ ।

जोशी/जी महाराज भारतवर्ष के रत्न थे । बड़े महान त्यागी, तपस्वी, विद्वान तथा उनकी प्रसिद्धि, नाम भारत में फैला हुआ है । वह गरीबों के लिये बहुत उदार, दयालु थे । उनकी सेवायें अपार रहीं हैं ।

—श्री १०८ स्वामी कल्याणदेव महाराज, "पद्मश्री"
मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

आचार्य पं० चक्रधर जी जोशी एक महान विद्वान उच्चकोटि के भारत के सन्त विचारों के व्यक्ति थे । ऐसे महान व्यक्ति भारत में बहुत ही कम पैदा होते हैं । उनकी सेवायें सारे देश के लोगों को हमेशा याद रहेंगी ।

—भगवती प्रसाद खेतान, चर्चगेट रेक्लेमेशन, बम्बई ।

पूज्य पंडित जी हमारा कीर्ति स्तम्भ छया और ऊँकी ख्याति हमारी निधि छई । कुछ समय से वो रुग्ण छया; हमारा भाग्य मा ऊँको इतना ही संयोग छयो । देवगति बलवान छ । अपणो क्या वश होई सकदो ।

—उमाचरण घिल्डियाल, कुलपति,
गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर ।

स्व० जोशी जी विविध भारतीय विद्याओं से विभूषित एवं महान पाण्डित्य के धनी थे । उनका आदर्शयुक्त जीवन सदैव प्रेरणा देता रहेगा ।

—डोरीलाल अग्रवाल, आगरा ।

उल्लिखित श्रद्धाञ्जलियों का संकलन—

श्रीमती सौ० अलका गोविंद कोटियाल एवं श्रीमती सौ० वीणा जोशी एम. ए. द्वारा किया गया है ।

काव्याञ्जलि

ज्योतिषविभाकराऽऽचार्यवर्य—

श्री चक्रधरजोशिनां प्रकाशधामाऽधिरोहणम्

—डा० शशिधर शर्मा "वाचस्पति"
आचार्य एम० ए० डी० लिट्
पञ्जाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

[१]

भूमण्डले भारतमस्ति पुण्यं
मूर्धाऽदसीयस्तुहिनाऽचलेन्द्रः ।
देवप्रयागो हृदयन्तदीयं
तस्याऽभवच्चक्रधरः स्वमेव ॥

[२]

भुवः प्रकामाऽऽभरणं नृरत्नं
स रत्नदेव्यास्तनयोबभूव ।
चकासिरे येन दिशः समग्रा
अग्र्यासनं यो नरहृत्सु लेभे ॥

[३]

कुलञ्च शीलं विनयो नयश्च
तस्मिन्नहम्पूर्विकयान्यवात्सुः ।
क्व ह्यीदृशी दिव्यरसप्रपूर्ति—
र्लभ्येत वासाय मनुष्यमूर्तिः ॥

[४]

न कीर्तिरस्य प्रतिघातमाप्ता
दिशासु नूनं चतसृष्वयीह ।
इतीव धाता चतुरक्षराख्यः
पुरा प्रतेने चतुरेण तेन ॥

[५]

गुरुः किमेषोऽ गुरुगन्धकीर्तिः
सरोरुहाऽक्षः किमु भार्गवोवा ।
धराऽवतीर्णः किमुताऽमृतांशु
रितीव तस्मिन् समशायिलोकैः ॥

[६]

सरस्वती श्रीश्च समानरागे—
ऽस्मिन्नित्यजोऽपि स्पृहयाञ्चकार ।
—यस्मै, परं यत्र न जातु भेदं
धनञ्चविद्याऽप्यथवा चकार ॥

[७]

शुभ्रं वपुः, शुभ्रमथो स्मितञ्च
वासोऽपि शुभ्रं, सुयशोऽतिशुभ्रम् ।
इत्थं स शुभ्राऽद्वयिमाऽपि बभ्रे
मुखाऽम्बुजे कृष्णमनन्तरायम् ॥

[८]

बालोंश्च बालाविधवा श्चभिक्षा-
दीक्षासुशिक्षाऽर्थिनएवमन्यान् ।
सभाजयामास गतश्रमोयः
स भाजनं याहृशमाननानाम् ॥

[९]

क्व तत् स्मितं मन्दयमन्द मिष्टं
क्व वाग्रसोऽसौ निजभावगर्भः ।
निजाऽपरेषां हृदयानि सिञ्चत्
शीलं क्व वा सम्प्रति शीलनीयम् ॥

[१०]

धनानि लभ्यानि, नवा दुराणा
रत्नाऽऽवलिः, किञ्चन काञ्चनं च ।
परप्रकर्षाऽतुलहर्षलाभो—
लभ्यो नवै चक्रधरस्तुभूयः ॥

[११]

प्रकाशपिण्डोपनिषत्प्रकाशे
निनाय यज्जीवितमेव सर्वम् ।
प्रकीर्य लोके सततं प्रकाशं
प्रकाशधामाऽधिरुरोह तत्सः ॥

———

प्रशस्तिः

—मुरलीधर शास्त्री

आन्ध्रप्रदेशे शुभं गौतमी तटे,
धान्यै युते कांकरवाड़ ग्रामे ।
कौण्डिन्य गोत्रे द्विजवर्य गेहे,
जातो हनूमान विदुषां वरिष्ठः ॥१

समाप्य विद्यां स्वगृहात् स्वदेशात्,
गङ्गातटे पुण्यमये सुतीर्थे ।
देवप्रयागे नगरी सुरम्यां,
समागतो राघव पूजनार्थम् ॥२

उद्वाह्य पत्नीं सुगुणां रमाञ्च,
तस्यां सुतौ द्वौ विदुषौ च जातौ ।
श्री बेङ्कटाख्यौ जयकृष्ण नाम्नौ,
सद्धार्मिकौ बुद्धिमतां वरेण्यौ ॥३

लज्जावती बेङ्कटराम पत्नी,
ह्यसूत सूनु द्वयमेव काले ।
लक्ष्मीधरश्चान्य खुशालिरामो,
दैवज्ञवर्य्यौ सुविचारदक्षौ ॥४

लक्ष्मीधरो ज्योतिषशास्त्रवेत्ता,
अजीजनद्वै निज ज्येष्ठ पत्न्याम् ।
कलावती श्रीधर धर्मपत्नी,
विज्ञां प्रसूज्ञीं मुरलीधरस्य ॥५

लक्ष्मीधरस्येव कनिष्ठ पत्नी,
श्री रत्नदेवी स्वनाम धन्या ।
भाद्रे शुभे 'वामन' जन्म काले,
सुतं सुरत्नं सुषुवे सुधन्यम् ॥६

जाते हि पुत्रे तु पिता सहर्षम्,
चकार तस्येव च जातकर्मः ।
शब्दार्थ विचक्रधरेति नाम्ना,
चक्रे स्वपुत्रस्य नामकर्मः ॥७

पितुस्सकाशात् खलु वर्णमालाम्—,
अधीतवान् चक्रधरोति शीघ्रम् ।
पुनः स्वविद्यां च कुलाऽऽगतावै,
अभ्यासयामास सुतीक्ष्ण बुद्धिः ॥८

मुकुन्ददैवज्ञ गुरोः समीपे,
विद्यां शुभां ज्योतिषिकीं समग्राम ।
अधीत्य जातस्त्वरितं सुबुद्धिः,
गुरोः प्रियश्चक्रधरो सुविज्ञो ॥९

औदार्य्य भावात् समदर्शितत्वात्,
श्रद्धास्पदत्वात् च जनप्रियत्वात् ।
प्राप्तः प्रसिद्धि सः कुशाग्रबुद्धिः,
त्रिविक्रमस्येव समः स्वकोर्त्यात् ॥१०

चकार तीव्रं सुतपस्तपस्वी,
सिद्धेषु पीठेषु महामनस्वी ।
अवाप्य सिद्धिः तपसः प्रभावात्,
पूज्योऽभवत् सर्वजनैः स्वदेशे ॥११

गोदावरी वृद्धिमती सुकाले,
सुधाकरारव्यं सुसुवे सुपुत्रम् ।
दिवाकरं चैव प्रभाकरं च—,
श्रीभाष्कराह्वं जनयत् च विद्या ॥१२

मुकुन्ददैवज्ञ कृताः सुग्रन्थाः,
तेषां सुभाष्यं सचकार धीमान् ।
गदावली वै स्वयमेव बुद्ध्या,
रम्या सभाष्या रचिता समग्रा ॥१३

देवप्रयागे नगरे सुपुते,
निर्मापयामास सुवेधशालाम् ।
सञ्जीकृतामाधुनिकैर्यन्त्रैः
सुखाय लोकस्य हिताय सम्यका ॥१४

संग्राहयामास स पुस्तकानि,
सहस्र संख्यान्ययुतानि तत्र ।
अन्वेषकानां हि सहायतार्थम्,
शास्त्राण्यनेकानि सुदुर्लभानि ॥१५

सम्पोषिता वै बहवोपि छात्राः,
दत्वा च वृत्तिं पठनाय तेन ।
उद्योगकेन्द्रेषु निजप्रभावात्,
जनाः नियुक्ताः बहवश्च तत्र ॥१६

विद्यालयेभ्यो बहुसंख्यकेभ्यो—
निर्माणकाले सददौ सहाय्यम् ।
तदाज्ञया वै धनिकाः प्रसिद्धाः,
दानं ददुः मुक्तकराश्च तत्र ॥१७

विद्वद्वरैर्भारतवर्ष देशे,
वैशिष्ठ्य पूर्णैश्च गुणैस्तदीयेः ।
प्रशासकैर्मन्त्रिगणैस्सदैव—
सम्मानितश्चक्रधरो महात्मा ॥१८

सप्तत्रिशून्ये नयने (२०३७) च वर्षे,
षष्ठ्यां शिते श्रावणके च मासे ।
हृद्रोग वेगात् सहसाह्यकाले—
दिवंगतश्चक्रधरो दयालुः ॥१९

ध्वस्तो दैवज्ञमेरु गुणिगण विपणी—
रत्नराशिर्विशीर्णाः,
ध्वान्तं सर्वजातं निखिलजन गणाः !
शोकतायेन तप्ताः ।
धैर्यं त्यक्त्वा रुदन्तस्तव विरह्य—
स्ताकीनाश्च सर्वे,
सायुज्यं ते रमेशं त्रिभुवनजनकं—
हार्दिकं प्रार्थयन्ति ॥२०

॥ आचार्यप्रवर स्व० श्री चक्रधर जोशी महोदयानां दिवंगति विषये श्रद्धाञ्जलिः समर्प्यंते ॥

—आचार्य राघवेन्द्र शास्त्री

हा ! माननीय जनमानसराजहंसः
हा ! लोकशोकभयसंशयहारि विद्वन् ।
हा ! कर्मनिष्ट ! सुकृतीजनगीतकीर्ते–
अस्मान् वियुज्य क्व च सम्प्रति सम्प्रयातः ॥१॥

आचार्यवर्य ? भवदीय वियोगवह्नि–
ज्वालाविशुष्क हृदयान्हृत चेतनान्स्वान् ।
मोहार्गला निगडितान् सहसैव हित्वा–
किं देवराजसदनाभिमुखं प्रयातः ॥२॥

श्रीमन्मुकुन्द चरणाम्बुजसेवया यः–
सज्ज्योतिषादि सकलं समधीत्य शास्त्रम् ।
सम्प्रेक्षणीय वपुषा यशसा गुणैर्यै–
राचार्य पूज्यपद मर्जितवान्समृद्धम् ॥३॥

यस्याम्दुतातिशय सौम्य गुणैरुदारै–
राकर्षिता गुणिगणा अलयोयथाब्जैः ।
स वै समर्हित जनैः स्पृहणीय कीर्तिः
कुलाप्यगाद्विरहतप्त जनान्विहाय ॥४॥

वस्त्रान्नदान परिपोषणतो यतीनां–
इष्टार्थं दान करणेन च याचकानाम् ।
त्वं पालकः बहुजना व्यथिता इदानीं–
त्वत्कीर्तिं सद्गुण गणान् कथयन्ति लोके ॥५॥

विद्यार्थिनः पठनकर्मणि निर्धना ये–
अध्यापिताः स्वसुतवत् वहवोऽर्थदानैः ।
सम्प्रत्यहो भवदनुग्रह वञ्चितास्ते–
कृत्वा गुणानुकथनं विलपन्ति सर्वे ॥६॥

कस्तोषयिष्यति जनान् रुचिराभिलापैः
को वाऽपनेष्यति मनोगत संशयान्नः ।
मौहूर्तिकानि गृहिणाञ्च विनिर्दिशेत्कः
कर्माणि चिन्तनपरा व्यथिता जनौघाः ॥७॥

स्वाधीत ज्योतिषफलावगतेःप्रसिद्ध्या–
विश्वास भूमिरभवज्जनमानषेसु ।
ते वै भवद्भिरहिता विषमस्थलेषु
यास्यन्ति तोषकरनिर्णय कर्तृकं कम् ॥८॥

यश्चात्मशोधनमनोरथ सिद्धि कामो–
बद्रीशधाम समुपेत्य तपश्चचार:
नारायणं परमदेवसखंनरञ्च
सन्तोष्यसिद्धिमगमत्परमां महात्मा ॥९॥

सम्प्राप्य योग्य पदवीं निजकर्मक्षेत्रे–
व्यस्तारयत् स्वमहिमान म कुण्ठितात्मा ।
पृथ्व्यां सदा सुगुण ख्याति व शादनेके–
सच्छ्लिष्ठिनश्चरणयोर्भवतां निपेतुः ॥१०॥

तेनाशु चाभ्युदयशैल पथाधिरूढो
वेलां विलोक्य पृथु निश्चितवान्स्वकार्यम् ।
नक्षत्रवेधभवनंसदनं श्रुतीनां–
निर्माय ग्रन्थ चयने व्यदधात्प्रयत्नम् ॥११॥

तत्पुस्तकालयगताः वहव सुविज्ञाः–
गायन्ति प्रोन्नत गुणान् तव देव शुभ्रान् ।
दृष्ट्वा सुदेहमुतमिष्टतमाञ्चवाणीम्
श्रुत्वा प्रभावितधियः पुलकाञ्चिताङ्गा ॥१२॥

सम्प्रत्यनेक मनुजावत भेक कल्पा–
स्वार्थैकसाधनपराःपरितोभ्रमन्ति ।
नेतापदञ्च बहुशस्तु कलङ्कयन्ति
देशं रसातलतलं नु नयन्ति मुग्धाः ॥१३॥

नाऽहं करोमि समतां भवतां सुबन्धो ?
तै र्नेतृभिः सह कदापि सुधा सुरावत् ।
क्व ब्रह्मकर्म निरतः शुचिसद्वरेण्यः
क्वो च्छृङ्खला चरण स्वैरगतिर्विमुग्धः ॥१४॥

किं केन मेऽपहृतमद्य क्व संस्थितोऽस्मिः
किं विस्मृतं किमिति त्वद् विरहाकुलत्वात् ।
हे आर्य ! ते भवन मौपवनं प्रविश्य—
तत्सर्वमेव बहुशून्यमिवावभाति ॥१५॥

अद्य व्रजन्ति यतयो भवनान्निराशा—
अद्यार्थिनोऽपि हृतयाचनया निराशाः ।
सच्छ्रेष्ठिनो विहृत कामतया निराशाः—
दैवज्ञकार्यविषये गृहिणो निराशाः ॥१६॥

शास्त्रेषु कार्य विषयेऽपि च शंकिता ये
ते चाप्यनिर्णयतया नितरां निराशाः ।
आजीविका विषयिणो भृतिमीक्षमाणाः
तेभ्योत्वदीय विरहात्महतो निराशाः ॥१७॥

आचार्य ! नास्ति भवदीय गुणावलीनां
पारं महोदधिरिवाति मनोहराणांम् ।
किं वर्णयामि लघुबुद्धि रहं मनीषिन्—
यस्योपकार कृतयः परितस्सुगीताः ॥१८॥

संख्यावन् ! परिवर्जितं हि भवता यत्पञ्चभूतात्मकं—
देहं तन्तु विनश्वरं सुविदितं सत्कर्मणां साधनम् ।
आत्मा पावन एव ते सुचरितैर्नित्य परो निर्मलः
कार्यं साधय नः सुरेन्द्रभवने तिष्ठन् मुदा सर्वदा ॥१९॥

इयं समर्प्यते भक्त्यां पद्यपुष्पाञ्जलिर्मया ।
मनोड़ा ग्रामवास्तव्यः राघवेन्द्रेण शास्त्रिणा ॥२०॥

———

हा ! पण्डितप्रवर

—मुरलीधर शास्त्री
देवप्रयाग ।

हा ! पण्डितप्रवर चक्रधरो महात्मा,
दैवज्ञ मौलिमणि शास्त्र विचार दक्ष ।
शून्यां विधाय नगरीं निज वेधशालाम्;
यातो भवानसमयेहिं सुरेन्द्र पुर्य्याम् ।।१

स्मृत्त्वा त्वदीय मुखमण्डल मन्दहासम्,
लोकोपकारक मति समभाव पूर्णाम् ।
हा ! मातुलस्तव वियोगज ताप तप्तो,
जातोहि शून्यहृदयो विमूढ़चेतो ।।२

जातावयं हि विरहेण त्वदीय सर्वे,
पक्षीव पक्षरहिताः धरणीतलेस्मिन् ।
हा दैव ! निर्दयपरेणत्वया कृतं किम्,
नीनोवलादसमये स्वजनस्य मध्यात् ।।३

पूर्तिःकदापि न भविष्यति पण्डितानाम्,
मध्ये भवादृश गुणी गुणपुञ्ज कीर्ते ।
हा ! हन्त ! हन्त ! किमिदं सहसाह्यकाले,
जातो महा कुलिशपातन दुर्विपाकः ।।४

इत्थं विदीर्णहृदयो मुरलीधरोऽहम्,
त्वद्भागिनेय नितरां तव विछोह तप्तः ।
याचे विभुं तव दिवंगतमात्मनेहि,
सायुज्य शान्तिमुभयं बदरीविशालम् ।।५

महामनामुनेः

—ब्रजमोहन शास्त्री कोटियाल

श्री नीलकण्ठस्य उपत्यकायां ऋषिप्रसूतिः गङ्गा सुशोभना ।
चक्राऽतिवेग भ्रमणायगायाः तटे विराजन हरिपादुकायाम् ॥
स साधुभावेन मुनिवत्तपश्चरन् अवाप्तसिद्धिरभवत् महामना ।
धराविभूत्याः निवसन् धरायां प्रतोलिकायां सितश्वेतछद्मनाम् ॥१॥

ज्योतिस्प्रभायाः विभजन धरायां क्रियाविशेषायभवन् महामति ।
शीताऽपवेगे निमस्जन् समाधौ, घनौघरूपेण तिमिरान्धकारम् ॥
अज्ञानभावं परिधर्षयन् मुखात् द्विजेभ्यःलोके अभवत्प्रसिद्धि ।
सुकोमला वाण्यापिदर्शयन् जनै अवाप्तकीर्तिरभवन् महामुनि ॥२॥

आचार्य रूपेण सुदीक्षिताजनाः अद्यापिगायन्ति नरे नरात्मुनिम् ।
मंत्रप्रभावेण महामुतामुनेः अलञ्चकार भुवि भारतेऽस्मिन् ॥
भवःविभूत्या हरिःकृपाया वाण्याविशेषाः मधुरारसाऽऽसन् ।
नासाज्जिताऽऽसीत् स्व निवास भूमि, अलञ्चकार भुवि भारतं महत् ॥३॥

देवद्विजाधिष्टित पादपीठं श्रीरामचन्द्रस्य तपस्थलीयम् ।
अलकापुरी स्रोतस जाह्नवीयं पुरा प्रसिद्धैः मुनिभिः प्रकाल्पितम् ॥
प्रयागमाह्व भूदेवतानां जन्मस्थलीयं समलञ्चकार ।
स्वे जन्मना तेन महात्मना स्वयं चकार नक्षत्रमपिवेधशालाम् ॥४॥

पञ्चत्वमापन्न रवि सौम्य प्राप्ते कर्काकमासे अहि षष्ठीयायाम् ।
दिनश्चचन्द्रस्य च मध्यरात्रौ वर्षे सुपुण्ये युग सहस्रकानाम् ॥
सप्ताधिके त्रिसंति वत्सरेस्मिन् स्वर्लोकवासे महामनामुनेः ।
बभूव भूलोक वियोगभाजः श्रद्धाञ्जलिमार्पित सादरं गुरुम् ॥५॥

श्रद्धाञ्जलिः

—रामविलास शास्त्री कोठीवाल

आरोहणं क्षितितलात्तवदेवकक्षे प्राक्कालतो विधिवशात् स्वजनोऽसहायः ।
शोकार्णवं गहनदुःखनिधिं तितीर्षु सलम्बनं कथमिया दथ कं च पृच्छेत् ॥
तातस्तवोज्वलप्रकाशविहीनदीना देवप्रयागनगरी गहने निशीथे ।
पथ्याकुला पततिलुण्ठतिलुप्तदृष्टिर्यष्टिं विनाविनिपतेदिव नेत्रहीनः ॥
विद्याविवेचनविचिलया त्वया यल्लक्ष्मीधरं स्वभवनास्थितज्ञानज्योति ।
अत्युज्ज्वला कृतवता विविधोपकारैःसन्तर्पितः स्मरति स्नेहमथैष लोकः ॥
स्मारं पुनःपुनरपि मृदुलं स्वभावं नैसर्गिकं हसितमाननपंकजं च ।
प्रेम्णाशृणोतदधुनाविधुनोतिलोकोयां यां भवात् समधुरां बदतिस्म वाचम् ॥
नंनम्यते सविनयैः स्मृतिपान्थ यर्हि गोलोककृष्णपदवी मकुतोभयं यत् ।
को मे मिलिष्यति प्रियमिति प्रष्टुमोहे सोर्ध्वानना दिविचरानथ वेधशाला ॥

गुरुचरणारविन्देषु श्रद्धाञ्जलिः

—शैलेन्द्र नारायण कोटियाल 'शास्त्री'

गढ़प्रदेशः स्वगौरवमयेतिहासविषये प्रसिद्धः एवाऽस्ति, पुनश्चाधुना इतिहासपृष्ठेषु दिव्यमूर्तेरेकस्याः जीवनांकनं प्रवेशमर्हति, एषा विशेषेणोल्लेखनीया वार्ताः अस्ति। पूज्य गुरुपादाचार्याः पंडित चक्रधरजोशी महाभागाः अस्य प्रदेशस्याद्वितीय विद्वांसः आसन्। तेषां पवित्रपदारविन्दैः देवप्रयागनगरी सनाथा आसीत्। ते सौम्यमूर्ति। ज्योतिस्तत्व-सरस्वती आसन्। देवप्रयागनगरी—यत्र भगवतः श्रीरघुनाथस्य प्राचीनमन्दिरं विद्यते, तस्यापरभागे, भगवत्याः भागीरथ्याः दक्षिणेतीरे दशरथाचलस्योपत्यकायां गुरुणां जोशीमहाभागानां 'नक्षत्र वेधशालाख्यं' विशालमतीवभव्यञ्च विद्यामन्दिरं विद्यते, यत्र बहुसंख्याया सुदुर्लभं साहित्यं व्यवस्थितरूपेण सज्जीकृतम्। भवनमिदं स्वरचनाविधानस्याद्वितीयम्। अस्याग्रभागे पूर्वस्यां दिशि देवदारुचन्दनाम्रवृक्षावां सुसज्जिता वाटिका वर्तते, तस्याञ्चैकस्मिन् भागे रमणीयं सरोवरं विद्यते, तत्रानवरतानिलेनोदधूयमानपरागचञ्चलवीचिषु सौभाग्यलक्ष्मीरिव रक्तवर्णा मत्स्याः स्फुरन्ति। पुस्तकालयस्योत्तरदिशि नवीनयेकं भवनं रचितमस्ति, तदुत्तरायणेति नाम्ना व्यपदिशते। एवं प्रकारेण गुरुणां तेषां सा वसतिः समग्रसाधनैः परिपूर्णा। इदं सर्वमद्यापि तत्रावलोकयितुं शक्यते, परन्तु यैः महाभागैरिदं संयोजितम्, ते तत्र न विद्यन्ते। अनया घटनया मानसे मौक्तिकवृष्टिर्भवति, तथा चैकानुपमा स्मृतिः अन्तःकरणस्य भावमय तारकाः तरङ्गयाति। न जाने कामतिप्रबलवेदनां मर्मस्थलस्य एषा यातनास्वरूपा-स्मृतिः पुनर्पुनरुज्जीवयति। वस्तुतः जगन्नश्वरम्, तथा चात्र सर्वेषां पदार्थानां विनश्वरत्वं निश्चितमेवाऽस्ति, तथापि लोचनयोः सा प्रियतमा प्रेरणामयी मूर्ति! या अस्मत्सकाशात् तथा दूरवर्तिनी संजाता, यथा नयनपथं नैवागच्छति,—स्वसन्निकर्षजन्य वात्सल्यात् यदा स्मर्यते, तदा मे मनः सहषा तेषां पूर्वापरमशोगीतिकां गायत् वेदनां शोढुं न क्षमते; किञ्च भावानां प्रगाढ़शय्यायामान्दोलितं भवति। सत्यं शमामि एतादृशी आत्मीयता आत्मशक्तिश्च अद्यावधि मया कुत्राऽपि नावलोकिता, यादृशी आचार्यवर्य्येषु वर्तते स्म। सततं प्रसन्नं तेषां मुखारविन्दं वीक्षणादेव अजस्रपीयूषधाराप्रपातेन अन्यानपि जनान् स्वर्गीयाऽलौकिकानन्दसन्दोहे प्रापयतिस्म। मया तेषां सान्निध्यस्यावसरो बहुधा प्राप्तः, येन मम चेतः तृप्तमेव तिष्ठति स्म। तेषां गाढ़वात्सल्यादहं कदाप्युन्मुक्तो न भवितुं शक्नोमि। तेषां महत्ता अद्यावधि मयि अन्तर्हिता आसीत् न चोद्भूताः, किन्तु स्मृत्यङ्कुरैरद्य ताः शाखा प्रादुर्भवन्ति।

ते दिवंगतात्मान! अस्य युगस्य त्रिकालदर्शि, वराहमिहिर आसन्। तेषां मन्दिरकपाटैरहर्निशमतिथयः साधुतया सत्कृताः रत्नस्वरूपैस्तैः रत्नाकरादाकरत्वस्य शिक्षा गृहीता, तनैव कारणेन ते गुणानामाकरश्चासन। यथा विष्णुः चक्रलक्षणस्तथा तेऽपि त्रिकालज्ञानचक्रलक्षणोपेताः, सरस्वतीव विद्यानिधिः शंकर इव निष्प्रपञ्चः, अविरत-कमलोदयदर्शनेन भगवतः श्रीपतेः अतिप्रियश्चासन्। एषां ज्ञानदृष्टिः शास्त्राणि विभिद्य पारंगता आसीत्। श्रीसमृद्धया तेषां भालपट्टः देदीप्यमानः, रूपसमृद्धया भ्रूलते धनुषाकृती, ज्ञानसमृद्धया लोचने विशाले, धर्मसमृद्धया कर्णविवरे मनोहरे, वाक्समृद्धया मुखारविन्दं पीयूषवर्षि, कर्मसमृद्धया बाहुदण्डौ मनोहरौ पादपद्मे च सक्षमे, गुणसमृद्धया च स्वभावः विनम्र आसीत्। अनेन प्रकारेण तेषां सम्पूर्णदेहवृक्षः सुसमृद्धश्चासीत्। तेषां मनसा-वाचा-कर्मणा विभक्तः स्नेहः सर्वेषा कृते तुल्यः आसीत्। तै सर्वे स्नेहपरमौषधिरसेन षिक्ता, इदमेव कारणं यन्ते "अजातशत्रु" आसन्।

गुरुप्रवराणां तेषां सम्पूर्णं जीवनं परिश्रमाणां नानाशृङ्खलाभिः सम्बद्धमासीत्, यतो हि ते कर्तव्यनिष्ठतां बहुमन्यन्ते स्म। तेषामाद्यन्तजीवने भगवतः श्रीबदरीशस्य कृपाविलासछलच्छाया आसीत्। तैः बदरीकाश्रमस्य पवित्र-तपोस्थल्यां यत्र भगवतो केदारेश्वर-नीलकण्ठस्य पादावतीर्णा ऋषिगंगा प्रवहति तत्र चरणपादुकास्थले बहुदिनानि यावत् कठोरसाधना कृता, एष वृत्तान्तः तेषां स्वरचित "त्रिकालसन्ध्या" नाम रचनया सुस्पष्टीभवति। अस्य पुस्तकस्य रचना तैस्तत्रैव कृता। एभिरन्यान्यपि पुस्तकानि रचितानि, यान्यद्य निखिले प्रदेशे सुदुर्लभानि। ते स्वयमेकं सुदुर्लभं रत्नमासन्। अस्माकं समक्षे तैः या रचना कृता, पुस्तकीया, संस्थासम्बन्धिन्यः, भवनसम्बन्धिन्यो वा ताः सर्वाऽपि स्ववैशिष्टयं रक्षन्ति।

पूज्यानां तेषां सामाजिक जीवनमप्यत्युज्ज्वलमासीत्। तेषु समाजस्य सर्वा मर्यादा समाविष्टा आसन्। ज्ञानवृद्धा अपि ते वयोवृद्धान् पूजयन्ति स्म। समाजस्य प्रतिकार्यं सामाजिकरूपेण आत्मानमुपस्थापयन्ति स्म। बहुभिर्वर्षैः समाजस्य प्रभावशालिनेतृत्वं तैस्स्वहस्ते गृहीतमासीत्। कतिपय वर्षपूर्वं तैः "समाज कल्याण संगठनस्य" स्थापनं संचालनञ्च कृतम्, अनेन संगठनेन समाजे नवीन चेतनायाः प्रगत्याश्च स्रोतः प्रादुर्भूतः, नवीन दिशायाः ज्ञानोदयञ्च बभूव। देवप्रयाग स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयस्य असंख्य छात्राणां हिताय तैः विज्ञानस्य भवनस्य स्थापना कारिता। कतिपय दिवसपूर्वमेव तेषां करकमलाभ्यां देवप्रयागे एव महाविद्यालयस्य शिलान्यासः संजातः, तत्रेदानीं निर्माणकार्यं चलति। पूज्यानां जोशी महानुभावानां कार्यकलापैः स्थानीयजनैः वाह्यजनैश्च पर्याप्तरूपेण प्रगतिः प्राप्ता। वेधशालायां स्थितस्य वृहद् पुस्तकालयस्य माध्यमेन जोशीमहोदयानां निर्देशेन बहुभिरभ्यर्थिभिः शोधकार्यं सम्पादितम्। एष पुस्तकालयः "लक्ष्मीधरविद्यामन्दिरेति नाम्ना प्रसिद्धः, तथा चास्य प्रदेशस्य अनुपमः, सुव्यवस्थितः, समृद्धः पुस्तकालयो विद्यते। आचार्य पूज्यपादगुरुभिः यथा परहिताय कृतम्, न तथा स्वहिताय। ते तथा शक्तिमन्तो यथा देशस्य महान्तो राजनीतिज्ञाः, प्रशासकाः, विद्वांसश्च तत्संकेतोल्लंघनकरणमपि पापमेव मन्यन्ते स्म, किन्तु तेषां सिद्धान्तः "ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः" इत्येवमासीत्। इदमेव कारणं यत् ते लब्धप्रतिष्ठितव्यक्तित्वस्य परिवेशे जीविता आसन्। अन्यत्किं कथायितुं शक्यते, तेषां जीवनं जनमनःसु प्रविष्टमासीत्। ते सर्वेषु दुःखेषु अस्माकं सान्त्वनां जनयति स्म, वयमबोधधियः तेभ्य किं दातुं शक्नुमः? किमपि न। यदि शक्नुमस्तर्हि भूयो भूयः स्वपुण्यानां श्रद्धाञ्जलिमेव। तच्चक्षुर्ग्राह्यं ज्योतिर्गतम्, वयमद्य तेषां चिरप्रवासेन अदर्शनेन उत्कण्ठया सुस्पष्टं किमप्यवलोकयितुं समर्थाः न स्मः, यतो हि ते समाजस्य ज्योतिश्चक्षुरासन्। तेषामभावे अद्य जनसमाजः अन्ध इव संजातः। समाजेन संयोजितेषु सर्वेषु समायोजनेषु तेषां हस्तः सिद्धिप्रदो भवति स्म; किञ्च तेषां वाणी "कामये दुःखतप्तानां प्राणि-नामार्तिनाशनम्" इत्याशीर्वादं ददाति स्म। स्नेहस्य गाढ़बन्धनैरनुबद्धानां तेषां विषये किमपि कथयितुं न शक्यते।

१९८० वत्सरस्य अगस्त मासस्य एकादश दिनाङ्के रात्रौ मया तेषां अन्तिमदर्शनं कृतम्। १२-८-८० दिनाङ्के मया अध्ययनाय हरिद्वारं प्रस्थातुं प्रस्तावः तत्समक्षे कृतः, प्रसन्नतया गुरुभिस्तैः स्वभाषया उक्तम्—"सुन्दर च नाती, अध्ययन और अनुशीलन निरन्तरकरन चयेंद, तू भोल कल्याण कामना मनौदूं प्रस्थान कर ले, हरिद्वार त संस्कृत की प्रचार प्रसार स्यलो च, वख अच्छा आदमियों का सम्पर्क मां रौण, और या चिट्ठी गरीबदासीय आश्रम मांग दे देणी।" अद्यापि तेषां मधुरवाग्विन्यासः स्मृतिपथे शब्दायते। यदाहं तान् तदाश्रुविमोचनेन सभ्यसमाजस्य परिहासपात्रं भवामील्याशङ्कया मनसि एव रोदिमि। किं करोमि, प्रकृत्याः अञ्चले विकसितानां पुण्यानां विकरणेन यथा भ्रमरः व्याकुलो भवति, इदं मनोऽपि तथैव मधुरस्मृतिनां कृते व्याकुलायते, नैष मनसो दोषः, अपितु प्रकृतेः परम्परा। मम मनः तेषां सज्जनानां चरणशरणमाश्रयति, येषां वात्सल्येनाऽहं श्रद्धाञ्जलि प्रदानार्हः कृतोऽस्मि। शमिति।

श्रद्धांजलि

—कमल साहित्यालंकार

स्मृतियों का धन लिये तुम्हारी यह धरती धनवान बनेगी,
विदुषी-धर्म परायण जननी, फिर तुम सा ही पुत्र जनेगी।
आना जाना नियम सृष्टि का, जो आता सो जाता है;
किन्तु विशेषी भाव लोक में, नाम अमर रह पाता है।
तुमने ऐसे काम किये जो, देवोपम तन से सम्भव थे,
साधारण प्रज्ञा वाले के, लिये नितान्त असम्भव थे।
पंचतत्व में सदा अदेही जातवेद यों कहता है;
जो इह नश्वर तन से साक्षी, अमर तत्व तक रहता है।
सामाजिक गुरु कला-विधाता, आध्यात्मिक ज्योतिषी प्रवर
कर्मकाण्ड के महामनीषी, बुद्धि योजना में रवि प्रखर।
अपनी ही शुभ कीर्ति-सुयस से, जगती तल में अमर हुए,
पञ्चैते देवतरवो कल्पवृक्ष, हरिचन्दन के भ्रमर हुए।

काव्याश्रु

—डा० जे० सी० भारतीय
सी-१०६५, गोदानिकुन्ज महानगर, लखनऊ

कुटिल कराल काल का प्रहार ऐसा हुआ ,
भारतीय ज्योतिष का पक्षधर चला गया ।
दीन दुःखियों का था मसीहा, गुरु गौरवी था ,
विविध गुणों का भव्य पक्षधर चला गया ।

करके अनाथ रघुनाथ की पुरी को वह,
देवप्रयाग का हा पक्षधर चला गया ।
रामलाल जी गये थे घाव भरने न पाये,
छोड़कर हमको प्रिय चक्र-धर चला गया ।

(२)

विज्ञ था, खगोल शास्त्री पण्डित मुकुन्द शिष्य,
वेधशाला का विधिज्ञ पक्षधर चला गया ।
साधु सन्त सज्जनों का गुणियों का सेवक था,
संस्कृति का सबल सु पक्षधर चला गया ।

दान-मान भागी, प्यारा सकल समाज का था,
त्यागी–अनुरागी–विद्या पक्षधर चला गया ।
छोड़ मथुरा को जैसे चक्रधर चला गया था,
गंगा तट छोड़ यह चक्र–धर–चला गया ।

(३)

यंत्र वेधशाला के खड़े हैं मुहँ बाये हुए,
पूछते विलख कहाँ चक्रधर चला गया।
पुस्तकों के पन्ने खुले बन्द पूछने लगे हैं,
कुछ तो बताओ कहाँ चक्रधर चला गया।

संस्था जो समाज के कल्याण हित स्थापित की,
पूछती है प्यारा कहाँ चक्रधर चला गया।
क्षुब्ध हो उठी हैं अलकनन्दा और भागीरथी,
पूछतीं महारथी वो, कहाँ चक्रधर चला गया।

शून्य में विलीन लौट आती टकरा के ध्वनि,
किसी को क्या ज्ञात, कहाँ चक्रधर चला गया।
लेगें श्रद्धा से सभी सदा तुम्हारा नाम।
पूर्ण करेंगे हम, उन्हें जोकि अधूरे काम।

अस्त हुआ जैसे ध्रुवतारा

—डा० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'
बी० एस० कालेज, रुड़की

देवभूमि–श्रृंगार चक्रधर ! सूना है संसार हमारा !
आप गये तो लगता ऐसा, अस्त हुआ जैसे ध्रुवतारा !!

सूरज ने अपना तेज दिया,
शीतलता चन्दा से पाई।
तुम गये धरा के दिव्यपूत,
गंगा की आँख छलक आई।

हर दिल में है आज उदासी, लुटा सभी कुछ प्यारा।
आप गये तो लगता ऐसा, अस्त हुआ जैसे ध्रुवतारा ।।

ज्ञान आपसे था गर्वित,
संस्कृति को दृढ़ आधार दिया।
जिसने भूले से दी नफरत,
उसको भी अमृत प्यार दिया।

ज्योति ज्ञान की दिखलाई, अज्ञान का था जब अंधियारा।
आप गये तो लगता ऐसा, अस्त हुआ जैसे ध्रुवतारा ।।

थे गंध आप बदरीवन की,
जिससे महका जग का आंगन।
बनकर साकार शिवं सुन्दर,
कर गये धरा को चिर पावन।

स्वीकारो वंदन देवपुत्र ! कहती नयनों की जलधारा !
आप गये तो लगता ऐसा, अस्त हुआ जैसे ध्रुवतारा ।।

हे ज्योतिर्विद् ! देवचक्रधर

—मोहन भट्ट एम० ए०, देवप्रयाग

देवप्रयाग के ज्योतिपुञ्ज ! हे सुरपथ के अनुगामी !
शत्-शत् प्रणाम अर्पण है तुमको, हे त्यागी निष्कामी !

जीवन व्यर्थ नहीं था तेरा इस पावन धरती में,
गूंज रहा जय-घोष तुम्हारा चहुँदिशि इस अम्बर में।
मुखरित यह साहित्य हो रहा सद्गुण का वर्णन कर,
धन्य हुई लेखनी तुम्हें यह भाव पुष्प अर्पण कर।

हे द्विज-अग्रणी आज तुम शान्तिलोक विश्रामी,
शत् प्रणाम अर्पण है तुमको सत्यव्रती-निष्कामी।

सब जन हित में रहती अनुरक्ति अशेष तुम्हारी,
मन्त्र सिद्धि थी-तुम्हें यही थी शिक्षा अनुपम न्यारी।
भौतिक सुख से ले विराग यों-योग साधना भायी,
मनसा-वाचा और कर्मणा शुद्धि दृष्टि थी पायी।

अधरों पर मृदु मुस्कान लिये-हे भक्ति-भाव विश्वासी !
स्वीकारें निजजन का प्रणाम, हे देवतुल्य सुखरासी !

शुद्ध चरित्र बनाकर अपना सबको भी सिखलाया,
अंधकार में प्राच्य ज्ञान संस्कृति का दीप जलाया।
निर्बल के संबल थे तुम—थे तृषितों के घन-सावन,
सत्यं—शिवं—सुन्दरं का था कर्मठ जीवन—पावन।

हे ज्योतिर्विद ! देव चक्रधर ! तुम्हें न हम विसरायें !
अभिलाषा है सदा तुम्हारे अनुपम गुण हम गायें !

व्यक्तित्व

आचार्य जी का संक्षिप्त वंश परिचय

—विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा

वर्तमाम आंध्र राज्य (दक्षिण भारत) गोदावरी (गोमती) नदी के पूर्वी भाग कांकरवाड़ ग्राम से वर्षों पूर्व श्रीकृष्ण भगवान के उपासक महान विद्वान, ज्योतिष, कर्मकाण्ड के ज्ञाता श्रीमान दामोदर भट्ट अपने स्वजनों को छोड़कर शास्त्रार्थ करते, ज्ञान—भक्ति की आनन्दमय चर्चा करते हिमालय के परम पवित्र क्षेत्र शान्ति की धरती उत्तराखण्ड में पधारे और यहीं स्थायी रूप से निवास करने लगे। तैलंग भट्ट, बेल्लनाटीय (बेल्लारू) कौण्डिन्य गोत्रीय थे।

बेल्लनाटीय, तैलंग श्री दामोदर भट्ट जी के श्री वासुदेव भट्ट महान पण्डित, लब्ध प्रतिष्ठ उदारमना पुत्र हुये। इनका श्रीमद् बल्लभाचार्य जी से परिचय हुआ। इनसे प्रभावित होकर उन्होंने इनको अपनी वंश परम्परा का पुरोहित श्री बदरीशक्षेत्र का मानकर सम्मानित किया। इनके पुत्र श्री हनुमान थे इनसे श्री व्यङ्कटराम तथा श्री जयकृष्ण भट्ट द्वय पुत्रों का जन्म मिला।

श्री व्यङ्कटराम भट्ट व जयकृष्ण भट्ट दोनों ही भाई परम मनीषी, उदारमना, सहृदक ज्योतिष कर्मकाण्ड के महान पण्डित, लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्ति थे। श्री व्यंकटराम जी का निधन अल्पायु में ही हो गया किन्तु श्री जयकृष्ण अपनी कुलपरम्परा की पाण्डित्यपूर्ण, औदार्य की ख्याति को बढ़ाते हुये सं० १९६६ के आश्विन शुक्ल ४ तक जीवित रहे। श्री जयकृष्ण भट्ट के ऊपर ही परिवार के भरण—पोषण, शिक्षा—दीक्षा के भार के अतिरिक्त कुल ख्याति की पताका को दक्षता से फहराने का गुरुतर दायित्व था, जिसका उन्होंने भली प्रकार निर्वाह किया।

आपने अपने अग्रज श्री व्यङ्कटराम के ज्येष्ठ पुत्र श्री लक्ष्मीधर को अपनी विद्याओं का स्वयं ज्ञान कराया और तत्कालीन अन्य संबंधी विद्वानों जिनमें चुथू ग्राम के श्री भट्ट भी हैं, से भी मार्ग दर्शन दिलाया। श्री पं० श्रीधर भट्ट भी उनके सहृदय विद्वान शिष्य रहे जिनके शील, आचरण व विद्वता से प्रभावित होकर उन्हें अपनी पौत्री 'कलावती' विवाह कर इनको ही सौंप दी तथा इनको ही पौरोहित्य कर्म का अपने परिवार का अधिकार दे दिया।

श्री लक्ष्मीधर जी के श्री चक्रधर, पृथ्वीधर दो पुत्र व अनेक पुत्रियां हुईं। श्री पृथ्वीधर का असामयिक निधन हो गया और महान आत्मा श्री चक्रधर जी अपने गुणों, व्यवहार, शिष्टता, सौम्यता, औदार्य, परोपकार, परायणता, विविध ज्ञान वैशिष्ट्य, ज्योतिष कर्मकाण्ड व सहृदयता एवं योग-भोग के समन्वय के कारण युग पुरुष रूप में प्रसिद्ध हुये। आचार्य श्री चक्रधर जी के ४ पुत्र—श्री सुधाकर, दिवाकर, प्रभाकर एवं भाष्कर तथा तीन पुत्रियां —श्रीमती अलका गोविन्द कोटियाल, श्रीमती आशा सुधीर पंचभाई तथा श्रीमती अंजना जितेन्द्र कुमार हैं।

जीवन का घटनाक्रम

—प्रस्तुति श्री केदारनाथ प्रभाकर

[ज्योतिषाचार्य पं० चक्रधर जी जोशी द्वारा स्व-वर्णित जीवन-घटना क्रम]

मेरे पितामह श्री स्वर्गीय पण्डित वेंकटराम जोशी एवं पिता श्री पण्डित लक्ष्मीधर जोशी कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष के मर्मज्ञ विद्वान थे। मेरा जन्म इसी परिवार में २६ सितम्बर, १९०९ को देवप्रयाग में हुआ। मेरी अल्पायु में ही मेरे पिताश्री का स्वर्गवास हो गया था। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन मैंने अपने गुरुदेव आचार्य पण्डित मुकुन्द देवज्ञ बड़थ्वाल (अब स्वर्गीय) से देवप्रयाग में ही किया था, क्योंकि वह अपने बाल्यकाल से ही मेरे पिता श्री स्वर्गीय पण्डित लक्ष्मीधर जोशी की सेवा में रह कर संस्कृत, ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड आदि विषयों का अध्ययन किया करते थे। संस्कृत एवं ज्योतिष में आचार्य तक की परीक्षा पास करने के पश्चात मैंने काशी, उज्जैन, तंजौर कांचीपुरम एवं पटना आदि नगरों में रह कर भी अन्य विषयों का अध्ययन किया।

इसी मध्य में बहुत काल तक भगवान बद्रीनाथ के चरणों में अर्थात् बदरीकाश्रम के निकट एकान्त स्थान में साधना करता रहा। वहीं से मुझे बम्बई जाने की सर्वप्रथम प्रेरणा हुई। बम्बई में फलित ज्योतिष के माध्यम से मेरी अनेक विशिष्ट व्यक्तियों एवं धनपतियों से मुलाकात हुई, जिससे मेरी निश्चित आय का साधन बन गया। तद् उपरान्त में कुछ काल के लिये विश्व कवि रविन्द्र नाथ टैगोर एवं योगिराज अरविन्द की सेवा में शान्ति निकेतन एवं पाण्डीचेरी में भी रहा। श्री माँ की मुझ पर असीम कृपा रही। श्री नाथ द्वारा एवं जगन्नाथपुरी के देव स्थानों में भी मैं कुछ काल तक रह कर, वहाँ पर सुरक्षित दुर्लभ ग्रन्थों के संग्रह एवं अन्य सामग्री का अध्ययन करता रहा।

स्वर्गीय दादा साहब श्री गणेशवासुदेव मावलंकर की सद्प्रेरणा से मैंने १० अगस्त, १९४६ को देवप्रयाग में नक्षत्र वेधशाला की स्थापना का शुभारम्भ अपनी स्वर्गीय माता जी श्रीमती रतना देवी जोशी जी के कर कमलों द्वारा अपने पूज्य गुरुदेव के संरक्षण में करवाया। इसी बीच बम्बई प्रवास काल में मुझे १० इंच लैंस की विशाल दूरबीन उपहार रूप में मिल गयी, जिसे मैं देवप्रयाग ले आया। वेधशाला के साथ-साथ मैंने अपने स्वर्गीय पिता श्री की पुण्य स्मृति में "लक्ष्मीधर विद्या मन्दिर" की स्थापना स्वयं की। इस समय इस पुस्तकालय में वैदिक एवं पौराणिक साहित्य के अतिरिक्त तन्त्र, ज्योतिष एवं आयुर्वेद से सम्बन्धित तीन हजार दुर्लभ पाण्डुलिपियों और अन्य अनेक विषयों जैसे भूगोल, कोष, इतिहास, संगीत आदि के संस्कृत एवं बंगला, गुजराती मराठी, अंग्रेजी एवं हिन्दी के लगभग अठारह हजार ग्रन्थों का संग्रह है।

मैंने ज्योतिर्विज्ञान के अध्ययन के लिये एक संस्था की स्थापना भी की, जिसका नाम है "दी हिमालयन एस्ट्रोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (आबजरवेटरी)"। पूज्य गुरुदेव इस संस्था के कुलपति हैं। मैंने रोग सम्बन्धी

ज्योतिष पर स्वरचित संस्कृत काव्य में एक अपूर्व ग्रन्थ "गदावली", पूज्य गुरुदेव की अमरकृति "ज्योतिष्तत्वम्" को हिन्दी में टीका कर उसे १५०० पृष्ठों के दो खण्डों में एवं स्वलिखत "तीर्थ यात्रा श्राद्ध पद्धति", त्रिकाल संध्या और "बद्री–केदार यात्रा पथ प्रदर्शिका" को इसी संस्था के तत्वावधान में प्रकाशित करवा चुका हूँ। मेरा लेखन कार्य एवं अध्ययन अभी भी चल रहा है।

विद्वान गुरु के सुयोग्य शिष्य

—भक्तदर्शन, अवकाश प्राप्त संसद सदस्य

आचार्य पं० चक्रधर जी की भव्य विशाल मूर्ति को देखकर मैं प्रथम भेंट में ही प्रभावित हो गया था। उनमें विद्वता के साथ विनम्रता थी, तथा कर्मकाण्डी ब्राह्मण होते हुये भी उनका जीवन सादगी पूर्ण था। तब उन्होंने अपनी स्व-प्रकाशित दो पुस्तकें—१–"गदावली" तथा (२) "त्रिकाल संध्या" की प्रतियां मुझे भेंट की थीं। उन्होंने मुझे यह भी बताया था कि स्वयं अपनी पुस्तकों से अधिक उन्हें अपनी 'गुरु जी' की पुस्तकें प्रकाशित करने की चिन्ता थी। उन्हें उस दिशा में कुछ सफलता भी मिली थी; लेकिन वे उस प्रगति से सन्तुष्ट नहीं थे; इसलिये वे मुझसे ही आग्रह करते रहे की केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय को ही स्वयं यह भार उठाना चाहिये। मैंने उन्हें अपनी तथा अपने मंत्रालय की सीमायें बता दी थी; अतः उन्होंने उसके बाद अधिक जोर नहीं दिया।

वे एक विद्वान पिता—स्वर्गीय श्री लक्ष्मीधर भट्ट जी के सुपुत्र थे और उन्हीं की देख-रेख में उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा पाई थी। फिर सौभाग्य–वश उन्हें स्वर्गीय श्री मुकुन्द राम बड़थ्वाल जी से संस्कृत तथा ज्योतिष की उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर मिला था। उनमें ईश्वर–प्रदत्त प्रतिभा थी। अतः योग्य पिता जो तथा सुयोग्य गुरु जी से अध्ययन करके उन्होंने अपने ज्ञान क्षितिज का विस्तार किया। बाद में स्वयं अपने परिश्रम से अपनी विद्वता में वृद्धि की। यद्यपि उनके गुरु जी ने कभी भी फलित ज्योतिष का सहारा नहीं लिया था, तथापि इन्होंने उस दिशा में भी अच्छी दक्षता प्राप्त की तथा ख्याति अर्जित की।

उक्त दोनों विद्वत्जनों से प्रेरणा प्राप्त करने के बाद, अन्य अनेक अच्छे कार्यों के साथ–साथ उन्होंने दो महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किये। (१) उन्होंने देवप्रयाग के बस–अड्डे तथा विश्राम–भवन के ऊपर काफी ऊँचाई पर "नक्षत्र वेधशाला" स्थापित करके उसमें अच्छे-अच्छे यंत्रों तथा उपकरणों का संकलन किया और (२) अपने पिता की स्मृति में "श्री लक्ष्मीधर-विद्या-मन्दिर" के नाम से एक पुस्तकालय तथा संग्रहालय का निर्माण किया। इस पुस्तकालय में उन्होंने अनेक हस्त-लिखित ग्रन्थों के अतिरिक्त कई सहस्र अन्य पुस्तकों का भी संग्रह किया। उक्त दोनों संस्थानों को देखने तथा उनसे लाभ उठाने के लिये समय-समय पर शोधार्थी वहाँ पर आया करते थे।

देवप्रयाग के तो वे परम उन्नायक थे ही । उनकी बलवती आकांक्षा थी कि उस पवित्र नगरी का अधिकतम विकास किया जाय। उनका बम्बई के सुप्रसिद्ध उद्योगपति मफतलाल ग्रुप पर गहरा प्रभाव था । वे प्रायः प्रति वर्ष जाड़ों में, कुछ समय तक वहाँ निवास भी किया करते थे; अतः उनकी प्रेरणा से उस 'ग्रुप' ने देवप्रयाग में एक डिग्री कालेज स्थापित करने के लिये पुष्कल धनराशि प्रदान की थी। आचार्य जी देवप्रयाग में एक 'प्राच्य-विद्या-संस्थान' की स्थापना के लिये भी प्रयत्नशील थे।

दिल्ली में लगभग बीस वर्षों तक एक संसद-सदस्य के रूप में रह लेने के बाद मैं पूरे छै वर्षों तक कानपुर रहा; और वहाँ से अवकाश ले लेने के बाद जब मैंने देहरादून में जमने का उपक्रम किया, तब मुझे आचार्य जी की फिर याद आई और मैंने उनके साथ दुबारा पत्र-व्यवहार प्रारम्भ किया और नवम्बर, सन् १९७८ ई० में एक दिन देवप्रयाग पहुँच ही गया । मैंने उन्हें पत्र के द्वारा अपने आगमन की पहिले ही सूचना भेज दी थी; अतः वे मेरी प्रतीक्षा में थे। और जब मैं देवप्रयाग के बस अड्डे से तीखी चढ़ाई चढ़कर उनके निवास-गृह पर पहुँचा, तब उन्होंने बड़े स्नेह के साथ मेरा स्वागत-सत्कार किया। उन्होंने तत्काल मुझे "नक्षत्र वेधशाला" तथा "श्री लक्ष्मीधर-विद्या-मन्दिर" का स्वयं अवलोकन कराया तथा विस्तार पूर्वक सब बातें समझाईं। जो कुछ मैंने वहाँ पर देखा, उससे मुझे बहुत हर्ष हुआ तथा यह आशा जाग्रत हुई कि आचार्य जी की संरक्षकता में वहाँ पर एक उच्च-स्तरीय शोध-केन्द्र की योजना को कार्यान्वित किया जा सकता है।

उन संस्थानों का अवलोकन कर लेने के बाद हम लोग बड़ी देर तक बातें करते रहे; और हम लोगों का वह वार्तालाप उनके गुरुवर श्री दैवज्ञ जी पर पहुँच कर रुक गया । मैंने इच्छा प्रकट की कि निकट भविष्य में हम दोनों व्यास घाट के समीप स्थित उनके 'मुकुन्दाश्रम' जाकर "दैवज्ञ" जी के दर्शन करें तथा उनकी उस तपस्थली से प्रेरणा प्राप्त करें; उन्होंने सहमति व्यक्त की थी।

फिर सुस्वादिष्ट भोजन कराने के बाद जब आचार्य जी ने अपने मधुर शालीनतापूर्ण हंसमुख चेहरे के साथ मुझे विदाई दी, तब इस बात का क्या आभास मिलना था कि यह मेरी उनकी अन्तिम भेंट होगी और वह कार्यक्रम यों ही समाप्त हो जायेगा। अक्टूबर, सन् १९७९ ई० में जब मैं देहरादून में रोग-शय्या पर पड़ा हुआ था तब अचानक मुझे यह दुखद समाचार मिला कि "दैवज्ञ" एवं "अभिनव बाराह मिहिर" की उपाधियों से अलंकृत श्री मुकुन्द राम बड़थ्वाल जी का अपनी साधना-स्थली में ३० सितम्बर को देहावसान हो गया है। फिर जब मैं अपनी पुस्तक—"गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां"—की छपाई में संलग्न था, तब यह जानकर बज्रपात सा हुआ था कि १६ अगस्त सन् १९८० ई० को मसूरी में आचार्य चक्रधर जोशी जी भी अचानक हृदय गति रुक जाने से दिवंगत हो गये हैं !! इस प्रकार से वह प्रिय योजना यों ही धरी रह गई ।

अतः मैंने अपनी उस पुस्तक में आचार्य जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय दे करके अपने कर्त्तव्य का कुछ पालन किया; और अब उनके लिये तैयार किये जाने वाले 'स्मृति ग्रन्थ' के लिये अपने भाव-भीने श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहा हूँ। पर नवम्बर सन् १९७९ ई० में उस दिन "नक्षत्र वेधशाला" में उन्होंने स्नेह तथा सादगी के साथ मुझें जो विदाई दी थी, उसकी याद मुझे लम्बे समय तक आती रहेगी !!!

———

देवप्रयाग

—मुकन्दीलाल बैरिस्टर

देवप्रयाग में कई लग्नशील देश भक्त, साहित्य सेवी और स्वदेश प्रेमी हुए हैं। मोहनलाल बाबुलकर बड़े उद्यमी साहित्य सेवी हैं जो हमेशा स्वदेश प्रेमी और स्वदेश सेवक गढ़वालियों की मृत्यु पर, उसकी स्मृति चिरस्थाई रखने का उद्योग करते हैं।

मुझे याद है जब मेरे मित्र और सहयोगी वृन्दावन ध्यानी २८ जनवरी १९६९ को स्वर्गवासी हुए तो बाबुलकर ने मुझे और श्री भैरवदत्त धूलिया से वृन्दावन की स्मारिका के लिये लेख मांगे थे। वृन्दावन ध्यानी, भैरवदत्त धूलिया और मैंने सन् १९२० में गढ़वाल में कांग्रेस स्थापित करने का प्रयास किया और कांग्रेस के सदस्य बनाये थे। वृन्दावन ध्यानी मुझसे सात वर्ष छोटे थे। वे साहित्य सेवी और जनता की सेवा में मुझसे आगे बढ़े हुए थे। काश, दैव उनको इतनी जल्दी हमारे बीच से न उठा ले जाता तो वे गढ़वाल और देवप्रयाग की बहुत सेवा कर सकते थे।

मोहनलाल बाबुलकर ने अपने पत्र में, जो मुझे आज ही मिला है, लिखा है कि आचार्य चक्रधर जोशी की स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। उन्होंने मुझे लिखा कि मैं भी स्मृति-ग्रन्थ के लिये कुछ लिखूं। साहित्यिक और धार्मिक दृष्टि से देवप्रयाग, बद्रीनाथ और केदार नाथ से भी आगे है। श्रीनगर, मोलाराम के सन् १७४३ में जन्म लेने के कारण आगे है। मोलाराम कवि कलाकार, इतिहासकार और दार्शनिक थे। जहाँ तक मेरा ख्याल है देवप्रयाग गढ़वाल में ही नहीं बल्कि, सारे भारतवर्ष में इसलिये आगे है कि रामचन्द्र सीता और लक्ष्मण की खोज में देवप्रयाग आये थे।

हिन्दू जाति के धार्मिक इतिहास में देवप्रयाग का विशेष स्थान है। भागीरथी और अलकनन्दा का यहाँ पर संगम है। यहाँ से गंगा हिन्दसागर की ओर बढ़ी।

मुझे यह मालूम हुआ है कि देवप्रयाग में कई हस्त-लिखित पुस्तकें हैं जो अच्छी तरह सुरक्षित हैं। मैं चाहूँगा मोहनलाल बाबुलकर जैसे साहित्य सेवी और अन्य विद्वान उनको खोज निकालें और उनको प्रकाशित करें। मुझे मालूम है कि मेधाकर शास्त्री कृत "रामायण प्रदीप" की मूल पाण्डुलिपि देवप्रयाग में मौजूद है, इस पुस्तक में गढ़वाल के इतिहास की बहुत सामग्री है। [बैरिस्टर साहब की पुण्य-आत्मा को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि पाण्डुलिपियों में छिपे इस पुराने इतिहास को हम उजागर करने की कोशिश करेंगे। दिनांक २५ जून १९८१]

चक्रधरस्य गमनात्, गतवान् गढ़ गौरवः

—भैरवदत्त धूलिया, सम्पादकाचार्य

पत्रं त्वदीयं लब्धं मे,
अद्य बाबुलकरो महान्
चक्रधर स्तुतौ किंचित्
लेखनाय महोदयः ॥१॥

व्यक्तिशो नाभि जानामि
लेखकं कवि पुंगवम्
जानामि तस्य लेखेषु
कविता छंदसि चादिसु ॥२॥

चक्रधरो महा विद्वान्
लेखकः कवि कोविदः
स्पष्टवादी महा प्राज्ञः
अकाले गतवान् दिवि ॥३॥

तस्य गमनतो मोहन्
गढ़ गौरव रूपकः
गनवान् पण्डितो विद्वान्
चक्रधारी गुणे बहुः ॥४॥

चक्रधरस्य गमनात्
गतवान् गढ़ गौरवः
गतानुगतिको लोकाः
इति ज्ञात्वा तुतोषतुः ॥५॥

स्मरामि ते महात्मा नं
चक्रस्य धारकं भुवो
श्रद्धाञ्जलिञ्च दास्यामि
विदुषे गढ़ सूनवे ॥६॥

आचार्य चक्रधर जोशी : कुछ स्मृतियाँ

—केदारनाथ प्रभाकर

"भाई चक्रधर, तुम्हारे जन्मकालीन ग्रहों को देख कर मैं यह विश्वास से कह सकता हूँ कि तुम्हारा भविष्य अति उज्ज्वल है और ज्योतिषशास्त्र में पारङ्गता प्राप्त करने के साथ-साथ तुम्हें देश व्यापी यश एवं कीर्ति भी मिलेगी।"

मई, १६३२ में मेरे पिता श्री पंडित गौरीनाथ राजज्योतिषी "अब स्वर्गीय" ने पण्डित चक्रधर जोशी "अब स्वर्गीय" की जन्मकुण्डली देखकर उपरोक्त भविष्यवाणी की थी। अखण्ड भारत के अविभाजित पंजाब के ऐतिहासिक नगर गुजरांवाला से भगवान बदरीनाथ के दर्शन करने अपने इष्ट-मित्रों सहित मेरे पिता-श्री, ऋषिकेश से पैदल यात्रा करते हुए देव-प्रयाग पहुँचे थे। चक्रधर जी उस समय लगभग २३ वर्ष के थे, उन्होंने पिता-श्री से पुण्यतोया अलकनन्दा और भागीरथी के पवित्र संगम पर श्राद्ध क्रिया का संस्कार सम्पन्न करवाया था। देवप्रयाग से प्रस्थान करते समय मेरे पिता-श्री ने चक्रधर जी की डायरी के एक पृष्ठ पर पेन्सिल द्वारा गणपति का एक रेखाचित्र बनाया और कहा :—

"गणेशजी का यह चित्र भविष्य में तुम्हें मेरी याद दिलाएगा।"

देश-विभाजन के बाद हम लोग सहारनपुर आ कर बस गये। फरवरी, १६५६ की बात है कि पण्डित बैजनाथ राजपुरोहित हमारे यहाँ आकर ठहरे हुए थे। प्रसंगवश देवप्रयाग का जिक्र आया तो मेरे पिता-श्री ने पं० चक्रधर जोशी का कुशल-समाचार पूछा तो वह कहने लगे कि भाई, चक्रधर तो इस समय बहुत प्रसिद्ध ज्योतिषी एवं गढ़वाल के प्रतिष्ठा-सम्पन्न विद्वान व्यक्ति हैं। उन्होंने देवप्रयाग में एक पहाड़ी पर ग्रह-नक्षत्र देखने के लिये एक वेधशाला भी बनवाई है और बम्बई एवं अहमदाबाद में उनकी बहुत ख्याति है। मेरे पिता-श्री यह सब सुन कर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने पण्डित बैजनाथ राजपुरोहित द्वारा २७ वर्ष पूर्व देवप्रयाग में परस्पर मिलन की घटना की याद जोशी जी को दिलायी। आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी ने सन्देश मिलते ही मेरे पिता-श्री को एक पत्र लिखा।

पण्डित चक्रधर जोशी का स्नेहयुक्त पत्र पढ़ कर मेरे पिता-श्री का हृदय गद-गद हो गया। उन्हें बदरीनाथ की पावन यात्रा और देव-प्रयाग में श्राद्ध क्रिया करने का दृश्य सभी एक साथ याद आ गये। इसी प्रेम में विभोर होकर उन्होंने पण्डित चक्रधर जोशी को एक पत्र लिखा जिसमें आगामी मेषार्क "वैशाखी" पर देवप्रयाग पहुँचने का संकेत भी दे दिया। उधर, आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी मेरे पिता-श्री से मिलने को इतने ज्यादा बेकरार थे कि वह मेषार्क तक इन्तजार करना नहीं चाहते थे। उन्होंने मेरे पिता-श्री की सेवा में एक और पत्र लिखा।

आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी एवं मेरे पिता-श्री का पुनर्मिलन शायद विधाता को मन्जूर नहीं था, क्योंकि

मेरे पिता-श्री जो उन दिनों गत तीन वर्ष से अस्वस्थ चल रहे थे इसी अस्वस्थता के कारण वह देवप्रयाग नहीं जा सके और अन्त में १ दिसम्बर, १९५९ को उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया।

अप्रैल, १९६४ की बात है कि मैंने एक पत्र चक्रधर जी की सेवा में देवप्रयाग भेजा। पूर्ण आत्मीयता से भरपूर चक्रधर जी के उपरोक्त प्रथम पत्र ने ही यह सिद्ध कर दिया कि वह हमारे परिवार के न केवल सदस्य ही हैं, बल्कि हमारे बड़े भी हैं। पत्र पढ़ने के बाद उनके दर्शन करने के लिए मेरे मन में तीव्र उत्कण्ठा जाग्रत हो गयी और मई, १९६४ में मैं देवप्रयाग जा पहुँचा।

मेरा परिचय सुनते ही उनकी आँखों में जल भर आया और मुझे अपने गले से लगाकर कहने लगे— "आज मैं तुम्हारे रूप में अपने स्वर्गीय भाई श्रद्धेय गौरीनाथ प्रभाकर जी की आत्मा को ठीक ३२ वर्ष बाद देख रहा हूँ।" मैं पुनः २५ मार्च, १९६७ की सन्ध्या को अपने दो मित्रों के साथ आचार्य जी से मिलने देवप्रयाग पहुँचा। आचार्य चक्रधर जी के छोटे भाई श्री हजारीलाल जोशी "स्नेही" की व्यवस्था में वेधशाला के अतिथि गृह में हमारा सामान रखवा दिया गया। उन दिनों होली का त्यौहार था और मौसम बहुत ही सुहावना था।

देवप्रयाग में हमारी नित्य प्रति प्रातः, सायंकाल और रात्रि में तीन बैठकें चक्रधर जी के साथ होती थी। एक बार चक्रधर जी हमें पाकशाला के ऊपर निर्मित देव स्थान और योग-साधन क्षेत्र में ले गये, जहाँ मन्त्र साधना और योग-साधना पर उनसे विस्तृत चर्चा हुई। ऐसे ही एक रात्रि को तो लगभग ढ़ाई बजे दूरबीन द्वारा ग्रहों के अवलोकन का आनन्द भी प्राप्त किया, जो जीवन में सदैव स्मरण रहेगा। सहारनपुर में वेधशाला एवं पुस्तकालय आदि बनवाने का संकल्प मुझे चक्रधर जी की वेधशाला को देख कर ही जाग्रत हुआ। चक्रधर जी सहृदय मनुष्य थे। जातीय भेद और ऊँच-नीच की घातक खाईं के आप विरोधी थे। अपने परिवार के लोगों के लिये वह जितना सोचते थे, उतनी ही चिन्ता उन्हें दूसरों के कल्याण को भी लगी रहती थी। अक्टूबर, १९७० में चक्रधर जी के स्नेहयुक्त निमन्त्रण पर मैं देवप्रयाग गया। वहाँ 'भृगु संहिता ग्रन्थ' की जब चर्चा चली, तो मैंने उन्हें कहा कि देवप्रयाग के किन्हीं पण्डित चण्डी प्रसाद जी की एक 'भृगु संहिता' जो कि हस्त लिखित है, लुधियाना में है। मैंने उसे लाला बाबूराम अग्रवाल (अब स्वर्गीय) के घर अपने स्नेही मित्र श्री विश्वनाथ भाटिया (अमृतसर वाले) के साथ देखा है। मेरी बात सुन कर चक्रधर जी बड़े हैरान हुये और कहने लगे— "हमें तो उस ग्रन्थ को गत कई वर्षों से तलाश है, लेकिन अब तक उसे ढूँढ़ने में हमें निराशा ही मिली है। आज आपके द्वारा उसका पूरा-पूरा पता ठिकाना सुन कर मैं गद-गद हो गया हूँ।" इसके बाद उनके और मेरे संयुक्त प्रयास से जनवरी, १९७५ में वह ग्रन्थ लुधियाना से देवप्रयाग पहुँच गया।

१९७३ के मार्च में मैं जब देवप्रयाग गया था तो मैं चक्रधर जी से युग सन्त स्वामी रामतीर्थ (१८७३-१९०६ ई०) के विषय में चर्चा करने लगा, क्योंकि सहारनपुर में ११ अप्रैल, १९७३ को मैं उनकी पुण्य स्मृति में एक आयोजन करने वाला था, जिसका उद्‌घाटन महामहिम श्री अकबर अली खान राज्यपाल उत्तर प्रदेश द्वारा सम्पन्न होना था। आपने इस सम्बन्ध में जहाँ युगसन्त स्वामी रामतीर्थ के देवप्रयाग-प्रवास काल के अनेक संस्मरण सुनाये, वहाँ अपने विशाल पुस्तकालय से स्वामी जी एवं उनसे सम्बन्धित विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा लिखित अनेक अप्राप्य एवं दुर्लभ ग्रन्थ तथा चित्र भी दिखाये। आपने मुझे अप्रैल में आयोजित होने वाले 'रामतीर्थ जन्म शताब्दी समारोह' के अवसर के लिये संस्कृत में एक श्रद्धाञ्जलि भी लिख कर प्रदान करने की कृपा की, जिसका एक छन्द यहाँ प्रस्तुत है, जो उनके व्यक्तित्व और संस्कृत भाषा पर अधिकार का प्रमाण है—

"आत्म ज्ञाननिधिं वगाह्य चिनुते यस्तत्वमुक्ताः शुभाताः
सर्वा व्यतरत् प्रफुल्ल हृदयो लोकेभ्य आनन्ददः ।
यो वै भारतवर्षं जंगम तनुर्भास्वद् विवस्वानिव
जीवन्मुक्त दशामवाप्य नितरां प्रामोदयन्मेदिनीम् ॥

फरवरी, १९७९ में मैंने उनसे देवप्रयाग में अपनी हार्दिक इच्छा व्यक्त करते हुए निवेदन किया—"आपके पूज्य गुरुदेव के द्वारा संस्कृत साहित्य एवं ज्योतिष जगत के लिए की गयी उनकी महान सेवाओं के उपलक्ष में मैं उन्हें आगामी 'वराहमिहिर समारोह' के अवसर पर संस्थान द्वारा सम्मानित कर अपने ऋषि-ऋण से उऋण होना चाहता हूँ। आप इसके लिए मेरा मार्ग-दर्शन करें।" इस पर चक्रधर जी बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि मैं इस विषय पर चिन्तन कर पत्र द्वारा तुम्हें सूचित करूँगा। यह उल्लेखनीय है कि १२ अप्रैल, १९७९ को सहारनपुर में पण्डित मुकुन्द दैवज्ञ जी को निर्माणाधीन 'रामतीर्थ हाल' में आयोजित पांचवे 'वराहमिहिर समारोह' के अवसर पर महामहिम डा० एम० चेन्ना रेड्डी (राज्यपाल उत्तर प्रदेश) द्वारा 'अभिनव वराहमिहिर' के अलंकरण से देश में पहली बार सम्मानित किया गया। पण्डित मुकुन्द दैवज्ञ जी की अनुपस्थिति में 'अभिनव वराहमिहिर' का अलंकरण उनके पट्ट-शिष्य आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी जी ने स्वयं राज्यपाल महोदय से ग्रहण किया, जो उस समय उत्सव के मुख्य अतिथि भी थे। श्रद्धेय पण्डित मुकुन्द दैवज्ञ जी भले ही इस आयोजन में वृद्धावस्था के कारण सहारनपुर नहीं पधारे, लेकिन इससे पूर्व ३ नवम्बर, १९६४ को वे अकस्मात ही संस्थान में दर्शन देने की कृपा कर चुके थे।

१९७९ की दीपावली के बाद मैं जब देवप्रयाग गया, तो उन दिनों चक्रधर जी देवप्रयाग में 'प्राच्य-विद्या-शोध-संस्थान' की स्थापना के सद्प्रयास में संलग्न थे। इससे पूर्व देवप्रयाग में उन्हीं के द्वारा और उन्हीं की सद्प्रेरणा से 'श्री रघुनाथ-कीर्ति-इण्टर-कालेज" को डिग्री कालेज में परिवर्तित करने का उनका संकल्प क्रियात्मक रूप से अभी चल ही रहा था। इस बार आपने मुझसे वेधशाला एवं 'श्री लक्ष्मीधर विद्या मन्दिर' के भविष्य के लिए चर्चा भी की। मैंने उन्हें सादर सुझाव दिया कि यहाँ की व्यवस्था को एक ऐसा सुदृढ़ रूप देने की कृपा करें, ताकि आपके जीवन की यह समस्त अमूल्य पूँजी भविष्य में भी न केवल सुरक्षित ही रहे, बल्कि जनहित के कार्य में भी इसका सद्प्रयोग हो सके। आपने मुझे बताया कि हमने अपने तीन सुपुत्रों (चि० दिवाकर, भास्कर एवं प्रभाकर) को अभी से ज्योतिष, कर्मकाण्ड एवं खगोल का अध्ययन करने में लगा दिया है। चक्रधर जी के बड़े लड़के चि० सुधाकर तो पहले से ही इन्जिनीयरिंग लाईन में अध्ययन करके उन दिनों ऋषिकेश में अपना निजी कार्य करने में संलग्न थे। उनका यह चिन्तन यथार्थ ही था। उन्हें अवश्यमेव ही एक वर्ष बाद होने वाली अपनी मृत्यु का आभास हो चुका था, क्योंकि ऐसी चर्चा उन्होंने मुझसे इससे पूर्व कभी भी नहीं की थी।

श्रद्धेय चक्रधर जी अब नहीं रहे। यह दुखद समाचार सुनते ही हमारे परिवार में शोक का वातावरण छा गया। राष्ट्रधर्मी पत्रकार श्री कन्हैया लाल मिश्र "प्रभाकर" को जब मैंने यह समाचार बताया तो कहने लगे—"आज हिमालय सूना हो गया है।" आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी भले ही अपने पंच भौतिक शरीर में अब नहीं रहे हैं, लेकिन वे यश रूपी शरीर के द्वारा अमर हैं और रहेंगे। वे ज्योतिष-जगत के एक ऐसे नक्षत्र थे, जिनके लिये डा० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' ने ठीक हीं कहा है—

देवभूमि-शृंगार चक्रधर, सूना है संसार हमारा।
हो गन्ध आप बदरीबन की,
जिससे महका जग का आंगन।
बनकर साकार शिवं सुन्दर,
कर गये धरा को चिरपावन।
स्वीकारो वन्दन देवपुत्र, कहती नयनों की जल-धारा ।।

विद्या-विनय सम्पन्न साधक

—डा० महावीरप्रसाद लखेड़ा
संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (अब स्वर्गीय)

पं० चक्रधर जोशी का निधन न केवल गढ़वाल के लिए, अपितु समस्त भारतीय ज्योतिर्विद जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। स्वर्गीय जोशी जी ने अपना सारा जीवन प्राच्य-विद्या, विशेषतः गणित एवं फलित ज्योतिष तथा खगोल-शास्त्र के अध्ययन और प्रचार के लिए समर्पित कर दिया था। मरण-पर्यन्त वे एकनिष्ठ भाव से इन विद्याओं का एक जिज्ञासु छात्र के रूप में अध्ययन करते रहे और इनके अध्ययन-अध्यापन के प्रेरणा-स्रोत बने रहे।

स्वर्गीय जोशी जी ने ज्योतिष का अध्ययन अपने स्वर्गीय गुरु पं० मुकुन्द राम बड़थ्वाल से किया था। सर्वविदित है कि स्व० बड़थ्वाल जी अपने समय के ज्योतिष के अप्रतिम विद्वान थे तथा इस शास्त्र पर इन्होंने अनेक गम्भीर ग्रन्थों का प्रणयन किया था। स्व० जोशी जी की गुरुभक्ति अपूर्व थी और आज के अध्येताओं के लिए आदर्श प्रस्तुत करने वाली हैं।

स्व० जोशी जी ने देव प्रयाग जैसे साधन-हीन स्थान में आधुनिक उपकरणों से युक्त वेधशाला की स्थापना कर यह सिद्ध कर दिया कि उत्कट विद्यानुराग के होने पर साधन अवश्य जुट जाते हैं। इस वेधशाला के साथ-साथ स्वर्गीय जोशी जी का ग्रन्थ-संग्रह उनके विद्या प्रेम का ज्वलन्त प्रतीक है। स्व० जोशी जी के संग्रह में लगभग बारह हजार मुद्रित ग्रन्थ और तीन हजार पाण्डुलिपियाँ हैं। एक व्यक्ति अपने विद्या-व्यसन और विद्या के प्रचार-प्रसार की तीव्र इच्छा से कितना कुछ कर सकता है; इसका यह एक प्रेरक उदाहरण है।

लगभग दो वर्ष पूर्व श्रीनगर में हुए क्षेत्रीय संस्कृत सम्मेलन में स्व० जोशी जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके पाण्डित्य के साथ-साथ उनकी विनयपूर्ण मधुर वाणी सुनकर मन में यही भाव जागा था कि जोशी जी जैसे कर्मठ, एकनिष्ठ, विद्या-विनय सम्पन्न साधक द्वारा आचार्य पद सचमुच ही अलंकृत हुआ है। प्राच्य-विद्या के समुन्नयन की उनकी योजनाओं को जानकर बड़ा हर्ष हुआ था और आशा थी कि वे अति प्राचीन काल से ही संस्कृत विद्या के केन्द्र गढ़वाल में प्राच्य-विद्या के पुनरुज्जीवन के लिए बहुत कुछ करेंगे। जोशी जी के निधन का समाचार सुनकर बड़ा आघात लगा। अपने उज्ज्वल व्यक्तित्व और भास्वर कृतित्व के द्वारा जोशी जी यशः शरीर से सदैव जीवित रहेंगे, इसमें तो सन्देह नहीं है, परन्तु वे प्राच्य विद्या के उन्नयन के लिए जो कार्य प्रारम्भ कर गये, उसको हम सब मिल कर आगे बढ़ा सकें तो यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। उनकी वेधशाला तथा ग्रन्थागार को केन्द्र बनाकर इस दिशा में बढ़ना हम सबका कर्त्तव्य है।

धन्य हैं, ऐसे गुरु-शिष्य

—महावीर सैनिक योगाचार्य
शिष्य प० पू० गुरु श्री रवि शंकर जी शर्मा

ज्योतिषशास्त्र एवम् नक्षत्र ज्ञान-विज्ञान का एक देदीप्यमान नक्षत्र अस्त हो गया। आज माँ सरस्वती के वरद् पुत्र स्व० आचार्य पंडित श्री चक्रधर जी जोशी की नश्वर देह निःशेष है। उनकी कृतियाँ उन्हें सदैव अमर रखेंगी। मेरे जीवन के वे पुण्य क्षण जो आचार्य श्री के सान्निध्य में बीते, वे मेरी अमूल्य धरोहर हैं और सदैव जीवन्त रहेंगी।

आचार्य श्री के परमोज्ज्वल व्यक्तित्व को समझने, परखने व लेखनी की सीमा में बाँधने में मैं, सर्वथा अक्षम हूँ, पर अपने परम् पूज्य गुरुदेव श्री रविशंकर जी शर्मा, रामगढ़ शेखावाटी (राजस्थान) के आदेश वश यह सब लिखने के लिए विवश हूँ।

वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, सुप्रतिष्ठित और महिमामय व्यक्तियों में किंचित मात्रा में प्रत्यक्ष या प्रच्छन्न रूप में अहम् भाव मिलता ही है पर इन महामानव को उनके सद्गुणों के भार ने इतना नम्र, इतना विनीत बना दिया था कि हर सामान्य व्यक्ति को उनके गरिमामय व्यक्तित्व में सहजता, अपनत्व, स्वाभाविक स्नेह, करुणा, प्रेम और आनन्द के निर्झर नजर आते थे। उनकी भाषा, उनका शब्द-चयन, व्यवहार और लेखनी में उनका यह स्वभाव सर्वत्र सबको बरबस मोह लेता था। 'विद्या ददाति विनयम्' को इतने निकट से उत्कृष्ट रूप में देखने का अवसर अत्यल्प ही प्राप्त होता है, ऐसे थे आचार्य श्री।

मेरे परम् पूज्य गुरुदेव श्री रविशंकर जी के बारे में मैं क्या लिखूँ? योग ही जिनका जीवन है, सर्वजो सिद्धियों को पाकर, बिसरा चुके हैं, जिनकी चेतना सदैव परम् चेतना में लीन है; जिन्होंने अपनी चेतना के किंचित से अंश को सप्रयास बहिर्मुखी बना रखा है—सत्पात्रों में योगोत्थान तथा जनमानस में सात्विक मानवीय भावनाओं एवं गुणों के विकास के लिए तथा सामाजिक-सांसारिक कर्त्तव्यों के वहन के लिए। अतः उनके बारे में लिख पाना अति कठिन है। जिनकी समस्त प्राण-शक्ति व चेतना सूक्ष्मतर धरातलों पर कार्यशील हैं, उनकी इन गहराइयों तक जा पाना, आचार्य श्री जैसे सत्पात्रों के ही वश की बात है। आचार्य श्री के विविध पत्र जो गुरुदेव को समय-समय पर प्रेषित किये गये हैं, के कुछ अंश आपके समक्ष रख रहा हूँ, जिनसे दोनों के घनिष्ट सम्बन्धों की जानकारी मिलती है।

१०. ६. ७९ के पत्र से

...आप श्री की दिव्य-छवि अक्षर ब्रह्म के रूप में देख कर चित्त गद्गद् हो गया।...आप श्री पूर्ण समर्थ हैं,

यह शरीर सर्वभाव से श्री चरणों में समर्पित है, योग क्षेम तो आप श्री के एक कृपा कटाक्ष मात्र से प्राप्त हो सकता है…

सस्नेह दर्शनेच्छु :—अनुचरश्चक्रधरः ।

७. ७. ७९ के पत्र से

"वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्"

देव,

अहर्निश स्मृति बनी रहती है । आप श्री की उदार और स्नेहमयी भावना ने, अन्तःकरण में स्थान बना दिया है, जिसे आपके रूप में, प्रभु की देन मानता हूँ…

बम्बई में जो मेरे ऊपर अनुकम्पा हुई, वह जीवन में इच्छित वरदान मिला, पूर्व संस्कार वश जीवन के वह क्षण धन्य क्षण सिद्ध हुए ।……

१९. ७. ७९ के पत्र से

…उपासना के आरंभ अन्त में श्री चरणों का ध्यान होता ही रहता है, मानो कोई देवी सूत्र बना हुआ है…

पात्रता दीजिये, जिससे ग्रहण कर सकूं ।

२७. ७. ७९ के पत्र से—

…प्रतिक्षण जीवन की शक्ति ह्रासोन्मुख हो रही है । इस देह से अब जीवन की कुछ ऊर्ध्व क्रियाएँ सिद्ध हो सकेंगी ?…क्या वहीं से जीवन शक्ति का संचार श्री चरणों के अमोघ सङ्कलपों द्वारा हो सकता है ? जैसा कि आप श्री जैसे महायोगियों द्वारा पूर्ण संभव है…

शुभसंकल्पों द्वारा वहीं से आत्म चेतना की जागृति और स्वस्थ वातावरण और सुन्दर स्वास्थ्य की प्राप्ति क्या संभव नहीं हो सकता ? "गुरोरालोक मात्रेण स्पर्शात्सम्भाषणादपि । सद्य संज्ञा भवेज्जन्तो दीक्षा सा शाम्भावी यता"……

पुनश्च :—क्या मैं ऐसा समझ सकता हूँ—

चित्तं वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्याः युवागुरूः ।
गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः॥

गुरुदेव व आचार्य श्री में लगभग ४० वर्ष का अन्तर था । गुरुदेव लगभग ३० वर्ष के व आचार्य श्री ७० वर्ष के.

जहाँ मौन ही व्याख्यान हो वहाँ मेरे जैसे अल्पज्ञ की समझ कहाँ तक साथ देगी । धन्य हैं ऐसे गुरु-शिष्य, उनकी आत्मीयता और उनके आपसी सम्बन्ध ।

स्व० आचार्य श्री को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि के साथ ।

पं० चक्रधर जी जोशी से मेरा परिचय

—पं० हरिकृष्ण रेवाशंकर याज्ञिक मुंबई
सम्पादक ज्योतिर्विज्ञान (गुजराती)
ज्योतिष पत्रिका (मराठी)

मेरा वास्तव्य महाराष्ट्र के पूना शहर में था। ज्योतिर्विज्ञान का प्रकाशन दिनांक ३-७-४७ को लोकमान्य तिलक के सेक्रेटरी और प्रसिद्ध पंचाङ्गकर्त्ता पं० रघुनाथ शास्त्री के करकमलों से हुआ।

एक दिन मैं और पं० रघुनाथ शास्त्री कार्यालय में ज्योतिष चर्चा कर रहे थे। सायंकाल का समय था। मेरे परम मित्र और पूना के गुजराती समाज के अनेक कार्यकर्ता पंड्या अंबे प्रसाद जी पं० चक्रधर जी को साथ लेकर आये और परिचय कराया। पूना में परिचय होने के बाद तो हमारा स्नेह सम्बन्ध बढ़ता ही गया। ई० सं० १९५८ में हम लोग कार्यालय बम्बई ले आये और सं० १९६४ में माननीय मोरार जी देसाई की अध्यक्षता में १८वाँ वार्षिक समारोह मनाया गया। इस समारोह में पचांग प्रकाशकों का सम्मान किया गया। इस समारोह के प्रधान अतिथि उद्योगपति श्री अरबिन्द मफतलाल थे और उन्हीं के साथ श्री चक्रधर जी आये थे। वे जब कभी बम्बई आते तो ज्योर्तिविज्ञान कार्यालय अवश्य पहुँचते ओर हमारे वार्षिक समारोहों में भाग लेकर हमें प्रोत्साहित करते थे। देवप्रयाग में ज्योति विज्ञान की विद्यापीठ स्थापित करने की पण्डित जी की इच्छा थी। परन्तु स्वाभिमानी स्वभाव और अयाचक वृत्ति होने के कारण उनका, यह स्वप्न पूरा न हो सका।

भारत में पं० चक्रधर जी जैसे बहुश्रुत विद्वान बहुत थोड़े ही हैं। इन्हें प्रसिद्धि का मोह नहीं था। शास्त्र की अराधना ही उनका मुख्य धेय था। पं० चक्रधर जी जैसे विद्वान की देह विलय की पुण्य तिथि में, ज्योति विज्ञान की ओर से मैं श्रद्धास्पद श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूँ। मेरी परमेश्वर से प्रार्थना है कि सरस्वती के वरद पुत्र चक्रधर जी का कार्य प्रगति पथ पर निरन्तर बढ़ता रहे।

असाधारण व्यक्तित्व

—बसन्तराव तुरीले

आचार्य पं० चक्रधर जी जोशी का व्यक्तित्व असाधारण था। मेरा उनसे परिचय १९४४ में योगीराज भैय्याजी जैसे महापुरुष के माध्यम से हुआ। आचार्य जी के ज्योतिष-विषयक दो मोटे ग्रंथों की छपवाई पूना में हो रही थी। आचार्य जी योगीराज भैय्याजी के साथ हमारे घर में ठहरते थे। इन दिनों उनसे हमारी अधिक बातें अध्यात्म पर ही हुआ करती थीं।

पूना प्रवास के समय पूना कई मूर्धन्य विद्वान आचार्य जी से मिलने मेरे घर आते थे और वे उनसे ज्योतिष के अनेकानेक संदर्भों पर चर्चाएं किया करते थे।

एक दिन योगीराज भैय्याजी किसी को बिना बताये रात में कहीं घर छोड़ के चले गए। हम सबको बड़ा दुःख हुआ। आचार्य जी के आंसू भर आये। उन्होंने प्रश्न कुण्डली से बताया कि वे उत्तर दिशा में गये हैं और दो दिन बाद वापस लौट आयेंगे और हुआ ऐसे ही।

आचार्य जी से मैंने एक बार पूछा, 'क्या आप पत्रिका से जो भविष्य कथन करते हैं वह पूरा-पूरा सच होता है? और उस पर पूरा विश्वास कर सकते हैं?' उनका जबाब था, "हम जब जन्म-पत्रिका से भविष्य कथन करते हैं, वह मानव की जो भी ग्रह स्थिति ज्ञात है उस पर से उसके परिणाम बताते हैं, लेकिन किन्हीं अज्ञात ग्रहों का या कोई अज्ञात स्थिति का प्रभाव हो तो भविष्य गलत होता है। इसलिए १०० प्रतिशत विश्वास रखना उचित नहीं।" यह उनका प्रामाणिक मत था।

घर में बहुत लोग अपनी जन्म पत्रिका दिखाने के लिए पंडित जी के पास आते थे। कभी-कभी योगीराज भैय्याजी कहते, "आचार्य जी इसका भविष्य बिना जन्मकुण्डली देखे मैं कथन करता हूँ, आप बाद में पत्रिका देखें कि वह ठीक है या नहीं? आश्चर्य की बात थी, जो भैय्याजी बोलते वह ही, पत्रिका से सही निकलता था।

मेरी स्वर्गीया पत्नी विमल, आचार्य जी को भाई मानती थी। उनमें भाई बहन का सा प्रेम था। उनका आपस में पत्र व्यवहार होता था। विमल के देहांत पर आचार्य जी ने पत्र द्वारा बहुत शोक प्रकट किया था। आचार्य जी के महानिर्वाण से मेरा जो वैयक्तिक नुकसान हुआ है वह कभी पूर्ण नहीं हो सकता है। उन्हें मेरे शतशत प्रणाम।

अक्षर-स्मृति

—कैलाशनाथ उपाध्याय, वाराणसी

ज्योतिषशास्त्र को नवजीवन देने वाले आचार्य प्रवर पं० श्री चक्रधर जोशी को कौन नहीं जानता, उनकी अक्षर-स्मृति की रूपवती सजीव वेधशाला देवप्रयाग गढ़वाल शाश्वत वन्दनीय है ही, उन चिरन्तम महाविभूति की स्मृति-पाण्डित्य में 'स्मृति-ग्रन्थ' का प्रकाशन होना ही चाहिए—एतदर्थ विश्व के सम्पूर्ण विद्वानों का निश्चय ही सहयोग बिन मांगे प्राप्त होगा, ऐसी आशा है। मेरी हार्दिक प्रत्येक सम्भव सहयोग एवं शुभकामनाएँ आपने साथ हैं। आपने मुझे भी स्मरण किया है, यह आपकी आत्मीयता है।

चिर-स्मरणीय रहेंगे

—ति० गो० गोस्वामी

स्व० पं० श्री चक्रधर जी जोशी भारत के प्रकाण्ड ज्योतिर्विद् विद्वानों में अग्रणी थे।

उन्होंने "ज्योतिस्तत्त्वम्" आदि ज्योतिष शास्त्र के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की टीका, अनुवाद, संपादन एवं प्रकाशन करने के अतिरिक्त ज्योतिष-विज्ञान के विकास के लिये देवप्रयाग में नक्षत्र वेधशाला की स्थापना कर ज्योतिष शास्त्र की अपूर्व सेवा की है।

उद्भट विद्वत्ता के साथ ही साथ उनका विनयपूर्ण सौम्य स्वभाव उनके निकट परिचय में आने वालों को सदैव स्मरण रहेगा।

वे ज्योतिष के उद्भट विद्वान् होने के कारण और उपर्युक्त अलभ्य पद के कारण इस पुण्यभूमि भारत में चिर-स्मरणीय रहेंगे।

ज्योतिष का नक्षत्र अस्त हो गया,

—राधेश्याम कौशिक ज्योतिषाचार्य

सम्पादक–ज्योतिष-बोध

आचार्य चक्रधर जोशी के नाम से गत बीसों वर्षों से परिचित था। उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा सुनता आ रहा था। परन्तु लगभग ग्यारह वर्ष पूर्व की बात मैं मुजफ्फर नगर स्थिय ज्योतिष-बोध कार्यालय में बैठा हुआ था। नीचे सड़क पर एक कार रुकी, कोई अपरिचित व्यक्ति ऊपर आए और बोले—आचार्य चक्रधर जोशी आपको नीचे याद कर रहे हैं। सुनकर मैं गद्गद हो गया। नीचे पहुँचा तो कार से नीचे एक सुन्दर भव्य मूर्ति को सामने खड़ा पाया। हृदय से लगाकर बड़े प्रेमपूर्वक मिले। मैंने ऊपर चलने के लिए आग्रह किया परन्तु उन्होंने बतलाया कि वे मोदी नगर से लौट रहे हैं और आज ही देवप्रयाग पहुँचना है। यह था मेरा उनसे प्रथम और कुछ मिनटों का साक्षात्कार। जिसमें पाया कि वे पूर्व जन्म के तपस्वी हैं जिन्होंने एक सुन्दर व्यक्तित्व, ब्राह्मण कुल में जन्म तथा अच्छी बुद्धि पाई है। इतने सरल कि मुझसे कहने लगे—आगे कभी ठहरूँगा अभी तो दर्शन ही करना चाहता था। आप समय निकाल कर देवप्रयाग आइएगा। जोशी जी अपने व्यक्तित्व की एक छाप मुझपर छोड़कर, जी० टी० रोड पर दौड़ गए।

जून ८० में ऋषिकेश में ठहरा हुआ था। एक शिष्य बोला मैं देवप्रयाग से आया हूँ और जोशी जी वहीं हैं। मैं देवप्रयाग पहुँचा। जोशी अपनी वेधशाला में ऊपर रहते हैं। मैं नीचे उनके पैतृक मकान से ठहर गया। रात्रि में वहाँ विश्राम कर जोशी जी के दर्शन की इच्छा लिए लगभग २००० फुट की ऊँचाई पर स्थित उनकी वेधशाला में जब पहुँचा तो उनको द्वार पर अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया। वे हाथ में हाथ डाले मुझे वेधशाला में ले गए। यह स्थान अलकनन्दा और भागीरथी के संगम पर स्थित है। यह आश्रम मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ऋषि-मुनी के आश्रम में पहुँच गया हूँ। वेधशाला में दो चित्र—एक उनके गुरुवर पं० मुकुन्द दैवज्ञ तथा दूसरा श्री गूजर मल मोदी का, लगे थे। पुस्तकालय को देखकर, उनके अध्ययनशील होने का आभास हुआ। दूरदर्शी यन्त्र से मुझे रात्रि में आकाश में ग्रहों को दिखलाया। यद्यपि इससे पूर्व मैं उज्जैन स्थित राजा जय सिंह द्वारा स्थापित वेधशाला देख चुका हूँ और जयपुर की वेधशाला भी देखी है परन्तु देवप्रयाग के ऊँचाई पर स्थित होने के कारण इस वेधशाला का अपना विशेष महत्व है।

देवप्रयाग में अपने त्रिद्विसीय प्रवास में मैंने जोशी जी को सरल, सहृदय, विद्वान और तपस्वी पाया। वहाँ राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी तथा मोदी जैसे बड़े अनेक धनी व्यक्ति रह चुके हैं। जोशी जी का मैंने आस-पास की गरीब जनता के प्रति मृदुल व्यवहार पाया है।

आभार प्रकट करते हुए ज्योतिष-बोध के जुलाई ८० में लिखा था—मुझे अलकनन्दा के तट पर जोशी जी की वेधशाला में बैठे हुए ऐसा आभास हो रहा था कि किसी ऋषि के आश्रम में बैठा हूँ। वे स्वभाव से सरल और

मधुर हैं। उनका पुस्तकालय एवं वेधशाला दर्शनीय हैं। मैंने वेधशाला के बारे में कुछ विवरण माँगे हैं। मिलने मिलने पर पाठकों के सम्मुख सस्तुत करूँगा।

एक दिन आकाशवाणी से मंसूरी में उनके स्वर्गवास का समाचार सुनकर भौचक्का रह गया। मेरे मुख से अचानक शब्द निकले--ज्योतिष-जगत का एक नक्षत्र तथा देवप्रयाग का सूर्य अस्त हो गया।

जोशी जी, महान विद्वान, सरल-सहृदय मानव-त्यागी, तपस्वी और जनसेवा में लीन आदर्श व्यक्ति थे। उनके निधन पर मैं व्यक्तिगत रूप से तथा ज्योतिष-बोध-परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मेरी श्रद्धांजलि

—भजनसिंह "सिंह"

गढ़वाल में आचार्य के गौरव पूर्ण पद पर प्रतिष्ठित सज्जनों में, उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की दृष्टि से, आचार्य चक्रधर जोशी का आचार्यत्व अविस्मरणीय है। मैंने उनके निकटतम सम्बन्धी, तथा अपने मित्र श्री वाचस्पति गैरोला के साथ दो-तीन बार, देवप्रयाग, उनकी वेधशाला में, उनका सत्संग प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। उनके घर पर ही, प्रथम बार ज्योतिष शास्त्र के प्रकांड पंडित स्व० मुकुन्द "दैवज्ञ" जी से भी भेंट हुई थी, जो वहां भी ज्योतिष-ग्रन्थों की रचना में रत थे। मैं इच्छा होते हुए भी, अधिक दिनों तक उन विद्वान-द्वय-मनीषियों का सत्संग प्राप्त नहीं कर सका। मुझे अभी भी याद है कि जब जोशी जी का नौकर—हमें भोजन करने के लिए बार-बार आग्रह कर रहा था, तो जोशी जी, परिश्रम पूर्वक खोज-खोजकर अपने संगृहीत दुर्लभ ग्रन्थों को मुझे दिखाने में व्यस्त थे। उनकी मधुर मुस्कान, आतिथ्य-सत्कार, बालकों का सा निष्कपट एवं सरल हृदय, उनका आकर्षक व्यक्तित्व, और दुर्लभ-ग्रन्थों का संग्रह तथा गढ़वाल में वेधशाला की स्थापना, प्रथम प्रयास था। उनकी प्रेरणाप्रद साहित्यिक सेवाओं के साथ, उनकी अनेक सार्वजनिक सेवायें सदैव स्मरण रहेंगी।

दुःख है कि अपने इन मनीषियों का उनके जीवनकाल में ही अभिनन्दन कर, हम गौरवान्वित नहीं हो सके। उनकी मृत्यु के उपरान्त हमारा यह सब करुणा-क्रन्दन, यह विलाप-प्रलाप, महत्वहीन है।

———

मौन तपस्वी

—तरूण विजय

सह-सम्पादक पाञ्चजन्य, दिल्ली

नक्षत्र वेधशाला में उनका कक्ष भांति-भांति के ग्रन्थों, विदेशी शोध पत्रिकाओं और पञ्चांगों से भरा हुआ था और ऐसे कक्ष में उनका सौम्य, धीर और विद्वत्ता को तेजोमय दीप्ति से मण्डित व्यक्तित्व एक अपूर्व दृश्य उपस्थित कर रहा था। औपचारिक परिचय के बाद उनसे बातचीत हुई। देश काल और फिर उनके अपने अनुसंधान के बारें में। उन्होंने अपना पुस्तकालय भी दिखाया। ऐसा वृहद् और विभिन्न विषयों पर प्रचीन अति दुर्लभ पुस्तकों से परिपूर्ण व्यक्तिगत पुस्तकालय संजो लेना उन सदृश व्यक्ति के सामर्थ्य की बात थी। इस पुस्तकालय में मैंने काफी समय बिताया। आचार्य जी इस बात से बहुत दुखी थे कि देश में ज्योतिष विद्या का निरन्तर ह्रास हो रहा है और इसे महज "चमत्कार विद्या" मान लिया गया हैं। उनका कहना था कि ज्योतिष एक शास्त्र है; विज्ञान है जो वस्तुतः खगोलीय अनुसंधान का बिषय है। लोगों ने ज्योतिष को पटरी पर बैठ कर चने, मूंगफली बेचने जैसा व्यापार बना दिया है। फल यह निकला कि ज्योतिष के घर-भारत में, इसका अनुसंधान और उन्नयन रूक गया है जबकि विदेशों में इसका बहुत सम्मान है। उनका कहना था कि यह एक विडम्बना ही है कि भारत में उच्चस्तरीय ज्योतिष गणनाओं के लिए विदेशी पञ्चाँगों का सहारा लेना पड़ता है। भारत में पहले ज्योतिषाचार्य स्वयं तारामण्डल का अध्ययन कर, स्थानीय समय के अनुसार अञ्चांग बनाते थे। इस परम्परा का सफल निर्वहन १४४२ शकाब्द तक (जब आचार्य गणेश दैवज्ञ ने गृहलाघव ग्रन्थ विरचित किया) हुआ। उसके बाद गणनाएं न तो उतनी सूक्ष्म होतीं थीं, और नहीं उतनी उच्चस्तरीय और शुद्ध। आर्यभट्ट व भास्कराचार्य की उज्ज्वल परम्परा में अब कांची काम कोटिपीठ के शंकराचार्य जी ने पञ्चाँग संशोधन किया है। आचार्य जी का स्पष्ट मत था कि ज्योतिषशास्त्र को राज्याश्रित होना चाहिए, तब ही ज्योतिष फल-फूल सकता है। विदेशों में ज्योतिष-शास्त्रज्ञों की शासन हर तरह से सहायता करता है। इसलिए उन्हें जीविकोपार्जन के लिए अपने स्तर से गिरने को बाध्य नहीं होना पड़ता है और वे अपना अधिकतम समय अनुसंधान में बिताते हैं।"

एक बार उनके बिषय में लिखा एक लेख देश के अनेक समाचार पत्रों में छपा। एक संवाद समिति (फीचर ऐजेंसी) द्वारा प्रसारित वह लेख संस्कृत पत्रिका गाण्डीवम् ने मुखपृष्ठ पर छापा और यहां तक कि नेपाल के एक पत्र ने भी उसका उपयोग किया। आचार्य जी ने सहज प्रसन्नता व्यक्त कर मुझे शुभाशीष दी। उनके भावों में आत्मप्रचार का संकेत नहीं मिला। क्योंकि जो जीवन भर आत्म प्रचार से विमुख रह कर मौन-तप करता रहा हों, वह अपनी यशोगाथा के प्रचार से संकोच तो करेंगा ही।

आचार्य जी का ज्ञान, प्रतिभा और अमूल्य अनुभव, भारतीय ज्योतिष-वेत्ताओं के किए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ईश्वर से प्रार्थना है उनकी विद्या के उत्तराधिकारी उनके, 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' कार्य को, आगे बढ़ाने में सफाल हों।

संस्कृति और संस्कृत की बोलती आत्मा

—कमल साहित्यालंकार

यशोकीर्ति शेष, दिव्य पुरुष, आचार्य चक्रधर जोशी के, जीवन में कई बार आविस्मरणीय दर्शन हुए। वे अपने परमाराध्य तपोमूर्ति गुरु आचार्य मुकुन्द जी के साथ नक्षत्र वेधशाला देवप्रयाग हिमालय के, सम्बन्ध में लखनऊ आया करते थे। मैं तब विधान भवन में सूचना अधिकारी था। वे जब भी डॉ सम्पूर्णानन्द जी से मिलने जाते तो मुझे साथ रखते थे। डॉ सम्पूर्णानन्द जी इन दोनों आचार्यों (शिष्य, गुरु) को बड़ा आदर देते थे। इनके द्वारा स्थापित 'नक्षत्र वेधशाला' की प्रशंसा किया करते थे। जब डॉ सम्पूर्णानन्द जी मुख्यमंत्री के रूप में गंगोत्री तीर्थ यात्रा पर आये, तब संयोग वश मैं टिहरी गढ़वाल में जिला सूचना अधिकारी था। जब हम लोग गंगोत्री यात्रा से लौटकर उत्तरकाशी पहुँचे तो आचार्य जोशी डॉ सम्पूर्णानन्द जी से अनुरोध करने आये कि लौटती बार देवप्रयाग में समय प्रदान किया जाय। डॉ साहब ने मुसकाते हुए कहा सो तो प्रोग्राम जैसा होगा देखा जायेगा परन्तु हिमालय को देखकर यह साक्षात्कार हो गया कि—

सौन्दर्यं ब्रह्मणो रूपं प्रकृत्यामनुवर्तते।
प्रकृतेनास्ति सौन्दर्यं स्वस्वरूपात्मकोगुण॥

हिमालयवासी सभी धन्य हैं। स्वामी तपोवनम जी की ओर डॉ साहब ने कहा ये केरल की विभूति योगी हैं, जब हिमालय में कहीं पहुँचे तो अपने से ही प्रश्न करने लगे:—कियमं तपनीयाद्रि किंवा रजत पर्वत, निःसंदेह आगे मैं भी, बहुत मोहित हो गया लौटने को मन नहीं था। आप अपने कवि कमल से पूछिए जो कहते हैं:—

इतनी सुन्दर प्रभु की रचना, प्रभु कितना सुन्दर होगा ?

आचार्य जी ने हिमालय पर संस्कृत में कई श्लोक सुनायें। लौटते हुए मैं जोशी जी को अपनी गाड़ी में देवप्रयाग तक लाया था। तब से आपक स्नेह मुझे मिलता रहा। मैंने १६-३-१६७१ को अपनी नई पुस्तक "चिन्तन के पल" १० अल्वा माऊन्ट रोड बम्बई भेजी तो आपने मुझे देवप्रयाग बुलाया किन्तु हां हन्त! अपनी अस्वस्थता के कारण मैं उनची इच्छा पूरी न कर सका जिसका मुझे दुःख है। उनके असामयिक निधन से देश की एक बड़ी क्षति हुई है। आचार्यवर अमर हैं। नक्षत्र वेधशाला उनको अमर कीर्ति है। मैं गढ़वाल के गौरवीय सपूत आचार्य चक्रधर जोशी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

गढ़वाल ने एक प्रतिभा खो दी

—बी० डी० भट्ट
कुलपति ग० वि० (श्रीनगर)

स्वर्गीय आचार्य पं० चक्रधर जोशी से मिलने का सौभाग्य मुझे केवल एक ही बार प्राप्त हुआ। सन् १९७५ की बात है। वे अस्वस्थ थे मैं उनसे कुछ विश्वविद्यालय के लिये बम्बई में धन जुटाने की योजना बनाना चाहता था। उस समय इस सम्बन्ध में चर्चा उच्चित नहीं होती। इसलिए मैंने उनसे गढ़वाल के ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के विषय में कुछ जानकारी चाही जो तत्काल मिल गई। जोशी जी की स्मरण शक्ति विलक्षण तथा उनका व्यवहार विनम्र एवं हृदयग्राही था। मेरी, उनसे दूसरी बार साक्षात्कार करने की उत्कट इच्छा पूरी नहीं हो पाई। उनके निधन से गढ़वाल ने एक बहुत बड़ी प्रतिभा खो दी। उनकी वेधशाला एवं पुस्तकालय उनको सदैव याद दिलाते रहेंगे।

सहृदय विद्वान्

—जगदीश चन्द्र पंत

आपका पत्र प्राप्त हुआ जिसमें आपने स्वर्गीय पंडित चक्रधर जोशी, नक्षत्र वेधशाला, देवप्रयाग, गढ़वाल के संबंध में मुझसे जानकारी चाही है। पंडित जी से मेरा सम्पर्क केदार जी के ही माध्यम से हुआ था। मैंने उन्हें एक सहृदय विद्वान की हैसियत से ही जाना जिन्हें भारतीय ज्योतिष का अगाध ज्ञान था और जो ज्योतिष विज्ञान की सेवा में निःस्वार्थ भाव से लगे हुए थे। विद्वानोचित नम्रता एवं शील उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी।

पंडित जी की स्मृति में जो आप स्मृति ग्रन्थ के प्रकाशन का आयोजन कर रहे हैं, यह बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है जिसके लिए मैं आपको अपनी शुभ कामनायें भेजता हूँ।

दिव्य गुणों से विभूषित पुरुष

—डा० कृष्ण कुमार
रीडर एवं विभागाध्यक्ष संस्कृत
गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल

सन् १९७९ के जनवरी मास के प्रथम सप्ताह के एक अति शीतल सायंकाल गढ़वाल मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन के आयोजन के लिये बुलाई गई बैठक में, विचार प्रस्तुत था कि सम्मेलन का अध्यक्ष कौन हो ? अनेक नाम प्रस्तुत हुए, जो विद्या, बुद्धि, पद, प्रतिष्ठा आदि की दृष्टि से अपने क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ट समझे जाते थे। परन्तु कोई भी नाम पूरी तरह से जंच नहीं रहा था। सहसा एक सज्जन ने आचार्य चक्रधर जोशी का नाम अध्यक्ष पद के लिए सुझाया। तुरन्त ही इस विषय में सारे विचार-विमर्श और विवाद पर पूर्ण विराम लग गया। अध्यक्ष पद के लिए जिन गुणों और विशेषताओं की कल्पना थी, वे सभी आचार्य जी में विद्यमान थे। इस सम्बन्ध में महाकवियों की यह सूक्ति भी—"न हि वसन्त्येकत्र सर्वेगुणाः" गलत सिद्ध हो गई।

आचार्य जी के प्रथम साक्षात्कार के पश्चात उनके दर्शन की आकांक्षा मेरे मन में निरन्तर बनी रही।

उनके किन गुणों का हम स्मरण करें। वे विवध विषयों–वेद वेदाङ्ग स्मृति-धर्म-शास्त्र, दर्शन, पुराण, व्याकरण तथा ज्योतिष के निष्णात्त आचार्य थे। धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उनकी ख्याति थी। संस्कृत भाषा के वे तो प्रकाण्ड पण्डित थे ही, इसके साथ ही उनका व्यक्तित्व सभी को वशीभूत करने वाला था। उपकारिक स्वभाव, मृदुवाणी, मन-वचन-कर्म का ऐक्य और सबके सुखी होने की कामना आदि दिव्य गुणों से, वे विभूषित थे। निर्धन से निर्धन व्यक्ति से लेकर बड़े से बड़े समृद्धिशाली धनिक और राजनीतिक नेता उनका परम सम्मान करते थे। उनका यश न केवल गढ़वाल जनपद में विस्तृत हुआ, अपितु समस्त भारतवर्ष में चर्चित था।

२१ जनवरी १९७९ को श्रीनगर में सम्पन्न होने वाले गढ़वाल मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन में आचार्य जी ने प्रस्ताव किया था कि संस्कृत और प्राच्य विद्याओं के विकास तथा उन्नति के लिए एक प्राच्य विद्या संस्थान की स्थापना गढ़वाल में होनी चाहिए। उनकी इस अभिलाषा तथा परामर्श का सभी ने अनुमोदन किया। इस संस्था की स्थापना के लिए आचार्य जी ने स्वयं पहल भी की। देवप्रयाग के अपने नक्षत्र-वेधशाला भवन में ही आचार्य जी ने इस संस्था को प्रारम्भ किया। प्राच्य विद्याओं के सम्बन्ध में उच्च अध्ययन और शोध इस संस्था के विशेष लक्ष्य थे। आचार्य जी स्वयं उस संस्था के संस्थापक, अध्यक्ष रहे और उन्होंने अध्ययन करने हेतु अपने विशाल पुस्तकालय की सुविधायें देना, स्वीकार किया था।

आचार्य जी के विशाल पुस्तकालय में अनेक मुद्रित तथा अमुद्रित ग्रन्थ हैं। ये ग्रन्थ अनेक प्रकार के अध्ययन के लिए सहायक हो सकते हैं। यह "वेधशाला" आचार्य चक्रधर जोशी का वास्तविक स्मारक है और उनके यश की सुरभि है। इसको प्रतिष्ठित करना ही आचार्य जी के ऋण से उऋण होना है।

आचार्य जी के प्रथम दर्शन

—शिवप्रसाद डबराल 'चारण'

आचार्य चक्रधर जी और उनके पूज्य गुरु श्री मुकुन्द जी से मैं बरसों पहले से परिचित था। उनके पुस्तकालय में मेरे प्रत्येक प्रकाशन को आग्रह पूर्वक स्थान दिया जाता था। पर मुझे उनके दर्शन का सौभाग्य सं० २०२८ से पूर्व नहीं मिल सका।

वेधशाला के आंगन में आचार्य चक्रधर अपने आसन पर विराजमान थे। उनके सन्मुख मेज पर अनेक ज्योतिषग्रन्थ तथा बंगला, मराठी, गुजराती एवं हिन्दी-संस्कृत के कई पञ्चांग थे। वे ज्योतिष गणना में व्यस्त थे। आचार्य जी के मुखमण्डल पर शान्ति, तेज, विद्वता, प्रसन्नता ओर गंभीरता की अलौकिक आभा विराजमान थी। मैंने उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने मृदुल स्नेहपूर्ण निरन्तर मुसकाती हुई, दृष्टि से मुझे देखा।

फिर तो हम दोनों घुल-मिलकर इतनी घनिष्ठता से बातें करने लगे मानो चिर-परिचित जन्म-जन्मान्तर के साथी, एक ही पथ के पथिक पहले रह चुके हों।

उन्होने अपना विशाल पुस्तकालय दिखाने के लिए पुस्तकालय के रक्षक श्री शास्त्री जी से कहा। शास्त्री जी ने मुझे दुर्लभ पाण्डुलिपियां दिखलाईं जिन्हें देखकर मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। उससे अधिक इस बात से कि शास्त्री जी ने उस दुर्लभ निधि का महत्व समझा था और इतनी कुशलता से, श्रम से, और तन्मयता से उसे संभालकर वेष्टनियों में रखा था, जितनी कुशलता से प्रकृति सेमल की फली में बीज की रक्षा करती है।

यहाँ मुझे "रामायण प्रदीप" पुस्तक की पाण्डुलिपि भी मिली। आचार्य जी ने अपने पूर्वजों के आगमन की गाथा सुनाई और भगवान् श्री वल्लभाचार्य के देवप्रयाग पहुँचने से सम्बन्धित श्लोक भी लिखाए। इन्हें मैंने 'गढ़वाल के इतिहास की नई सामग्री, में प्रकाशित किया है।

उनके पुस्तकालय में अनेक ताम्रपत्रों की प्रतिलिपियां भी मिलीं। पाण्डुकेश्वर के घन्टे का लेख तथा पलेठी के शिलालेखों की प्रतिलिपि भी वहां मिली।

उसी दिन से अचार्य जी मेरे असीम कृपालु अभिन्न मित्र हो गए।

उन्होंने अपना ग्रन्थ गदावली भी बड़े स्नेह से मुझे दिया। यह रोग-सम्बन्धी एक अनूठा ग्रन्थ है।

गोरखनाथ ने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ का संकट में; उद्धार किया था, आचार्य चक्रधर ने अपने गुरु मुकुन्दाचार्य के ग्रन्थों पर टीका लिखी एवं उनके प्रकाशन का प्रवन्ध किया जिससे मुकुन्दाचार्य के गूढ़-जटिल

ग्रन्थ हिन्दी पढे-लिखे एवं ज्योतिष-प्रेमियों के लिए सरस एवं सरल हो गए। गुरु-शिष्य के सम्मिलित प्रयास से रचित ज्योतिष-तत्व इस शती का ज्योतिष की महानतम रचना है, जिसमें सभी पूर्ववर्ती सिद्धान्तों, फलादेशो और निर्णयों का समावेश, एक ही ग्रन्थ-क्लेवर में किया गया है।

हमारे सम्मुख ये दो महान् गुरु-शिष्य अवतीर्ण हुए। गुरु का ज्ञान एवं शिष्य की निश्चल भक्ति का ऐसा युग्मक अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। वे महान् थे। उन्होंने अपने सम्मुख महान् लक्ष्य रखा और अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते हो गए। काल ने उनकी काया को छीन लिया किन्तु उनकी कीर्ति काल के लिए दुर्जेय हैं।

भागीरथी और अलकनन्दा के संगम पर उत्पन्न वह तपस्वी, वह विद्योपासक जो कार्य कर गया है, वह बना रहे, यही उत्तराखण्ड के संस्कृति-प्रेम की कसौटी होगी।

योग्य, विद्वान रत्न जाता रहा

—चक्रधर बहुगुना

देहरादून (अब स्वर्गीय)

मैं आज अपने मनोभाव बड़े दुःख के साथ स्वर्गीय ज्योतिषाचार्य श्री चक्रधर जी की स्मृति में व्यक्त कर रहा हूँ। देवप्रयाग की पुण्य भूमि में श्री ज्योतिषाचार्य पं० चक्रधर जी एक नम्बर के उद्भट विद्वान तथा प्रामाणिक ज्योतिषि थे। आपने ज्योतिष शास्त्र पर अच्छी गवेषणा की तथा एक सुसज्जित वेधशाला का निर्माण किया। इस वेधशाला से आकाश के नक्षत्रों का तथा उनकी गति-स्थिति का पंडितों, योग्य ज्योतिषियों को पूरा ज्ञान हो जाता है। यह वेधशाला भारत के गण्य-रत्नों में है। इसका सदुपयोग करना तथा इसके आधार पर ज्योतिष की शिक्षा देना ज्योतिषियों का कार्य है। आचार्य जी ने संस्कृत, ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्मशास्त्र आदि विषयों पर भी, बड़ा सुन्दर विवेचनात्मक प्रचार तथा विश्लेषण किया है। भारत से इतना योग्य विज्ञान रत्न जाता रहा है, इस क्षति पर हमें बड़ा दुःख है। परमात्मा उनको अनन्त शान्ति प्रदान करें, यही मेरी एकमात्र प्रार्थना है।

आधुनिक ऋषि

—नित्यानन्द मैठाणी

आचार्य चक्रधर जोशी आधुनिक देवप्रयाग के निर्माता थे। उन्हें देवप्रयाग के कण-कण से प्यार था। उनकी एक छोटी सी पुस्तिका 'उत्तराखण्ड यात्रा पथ पदर्शिका हाल ही में प्रकाशित हुई थी। इसमें उन्होंने उत्तराखण्ड की सुन्दरता को व्यक्त करने के लिए कई विद्वानों के विचार भी दिये हैं किन्तु सेंट निहाल सिंह के शब्दों को उद्धृत करके उन्होंने देवप्रयाग की महत्ता को और भी बढ़ा दिया है। इसमें बताया गया है कि प्राचीन काल से ही देवप्रयाग सन्त महात्माओं की तपस्थली रही है और वहाँ स्वयं ब्रह्मा तपस्या करने आये थे और इसी कार्य हेतु मर्यादा पुरुषोत्तम राम वृद्धावस्था में यहीं रहने लगे थे। अलकनन्दा और भागीरथी के पवित्र संगम पर समुद्र तल से ६४७ मीटर पर अवस्थित देवप्रयाग का डिग्री कालेज भी जोशी जी की ही देन है। आपने वर्ष १९७९ में गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर के तत्वावधान में प्राच्य विद्या अकादमी उ० प्र० की स्थापना देवप्रयाग में की। इस अकादमी का मुख्य उद्देश्य प्राच्य विद्याओं से सम्बन्धित विषयों के प्रति जन सामान्य की रुचि उत्पन्न करना तथा ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुविद्या में अनुसंधान की व्यवस्था करना था। इसके अतिरिक्त प्राचीन पाण्डुलिपियों के संग्रह संरक्षण, सम्पादन और प्रकाशन के साथ ही साथ उच्च अध्ययन और अनुसंधान करने वाले अध्येताओं के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करना भी था। इस प्राच्य अकादमी के प्रधान आचार्य चक्रधर जोशी थे। आचार्य जी ज्योतिर्विज्ञान के महान साधक थे।

स्व० आचार्य जोशी एक महान लेखक चिंतक और समाज सेवी थे। आप देवप्रयाग के "समाज कल्याण संगठन" के संरक्षक थे। इस संगठन के अन्तर्गत विधवाओं को सहायता दी जाती है। गरीब और अनाथ विद्यार्थियों की मदद की जाती है। रोगियों की आर्थिक सहायता का भी प्रबन्ध किया जाता है। आचार्य जी गरीबों को देखकर द्रवित हो जाते थे।

गत वर्ष देश में बाबा काली कमली वाला पंचायत क्षेत्र ऋषिकेश का शताब्दी समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। आचार्य जी बाबा काली कमली वाले से सम्बन्धित प्रकाशित तथा अप्रकाशित साहित्य में योगदान करते रहे। ज्योतिष काव्यों की रचना में इनके गुरू सबसे अधिक ख्याति मुकुन्द "दैवज्ञ" के नाम से कर चुके थे। अब तक उनके संस्कृत में ज्योतिष सम्बन्धी ४४ ग्रन्थ प्रकाश में आ चुके हैं। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि ज्योतिष में गुरू मुकुन्द "दैवज्ञ" के बराबर अभी तक किसी भी विद्वान ने इतने अधिक ग्रन्थों की रचना नहीं की है। भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र सहारनपुर द्वारा उन्हें 'अभिनव वाराहमिहिर की उपाधि से विभूषित किया गया था। यह भी आश्चर्य का विषय है कि इनके गुरू मुकुन्द दैवज्ञ फलित ज्योतिष को प्रधानता नहीं देते थे किन्तु आचार्य जी अध्ययन तो गुरू चरणों में करते थे और भविष्यवाणियों के करने में भी माहिर थे। आचार्य जी के वचन सटीक और

खरे निकलते थे। आचार्य जी ने पूना में अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन की अध्यक्षता की तथा सहारनपुर में अखिल भारतीय सम्मेलन की अध्यक्षता की। वे सहारनपुर में अखिल भारतीय वराहमिहिर स्मारक समारोह के मुख्य अतिथि भी रहे। इस समारोह का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डा० चेन्ना रेड्डी ने किया था। आचार्य जी सहारनपुर से निकलने वाली 'काल विज्ञान' एवं 'वेदचक्षु' पत्रिकाओं के मार्ग दर्शक भी थे। ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान तथा ज्योतिविज्ञान अनुसधान संस्थान के संस्थापक स्व० गौरीनाथ जी उनके घनिष्टतम मित्र थे। उत्तराखण्ड में संस्कृत के प्रसार और प्रचार में उनका सर्वाधिक योगदान रहा है। सन् १९७९ में २० तथा २१ जनवरी, गढ़वाल की प्राचीन ऐतिहासिक राजधानी श्रीनगर में श्री कल्यणेश्वर धर्मशाला में गढ़वाल मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन (विश्व हिन्दू परिषद) सम्पन्न हुआ था। आचार्य जी ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। आपका सार गर्भित अध्यक्षीय-भाषण संस्कृत भाषा में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता डा० महावीर प्रसाद लखेड़ा (अब्र स्वर्गीय) भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने भी संस्कृत में भाषण दिया। गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति श्री उमाचरण घिल्डियाल ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया था। आचार्य जी के दिवंगत होने पर बहुत सी पत्र पत्रिकाओं ने श्रद्धांजली छापी हैं। आचार्य जी सदैव हमारे बीच भारतीय संस्कृति के ज्योतिः पुंज के रूप में मार्ग दर्शक रहेंगे। उनका सारा जीवन साधना का जीवन था। एक विद्वान ने उत्तराखण्ड की यात्रा के पश्चात् उचित ही कहा "आचार्य चक्रधर जोशी सचमुच आधुनिक ऋषि हैं जिनकी अद्भुत वेधशाला दर्शनीय है" ऐसे ऋषि को मेरे शत-शत नमन !

उनकी वाणी सुरक्षित है

—ललिता प्रसाद नैथाणी
सम्पादक 'सत्यपथ'

आचार्य पं० चक्रधर जोशी से मेरी पत्राचार घनिष्टता रही हैं। एक दिन जब हम नजीबाबाद आकाशवाणी गये तो श्री नित्यानन्द मैठाणी जी ने बताया—आचार्य जी से हुई भेंट वार्ता सुरक्षित है। आचार्य जी तो चले गये तो भी उनकी वाणी सुनने–सुनाने को सुरक्षित है। यह भेंटवार्ता मसूरी में उनके निधन से कुछ ही दिन पहले रेकार्ड की गई थी। इस भेंटवार्ता की प्रतिलिपि मंगाकर उसे "स्मारिका" में अवश्य प्रकाशित कीजियेगा। "स्मारिका" के अन्त में आचार्य जी के कुछ चुने हुये लेख भी होने चाहिये।

हर्ष है कि अब आये दिन गढ़वाली विद्वानों की स्मृतियां सुरक्षित की जा रही हैं। इस दिशा में विगत वर्षों में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें, स्मारिकायें, विशेषांक और लेख प्रकाशित हुये हैं। यह क्रम जारी रहना चाहिये।

आचार्य जी की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये देवप्रयाग में उनकी वेधशाला तो है ही, मेरे विचार से देवप्रयाग महाविद्यालय के साथ भी आचार्य जी का नाम जुड़ना चाहिये। इस विद्यालय में संस्कृत, ज्योतिष और आयुर्वेद जो उत्तराखण्ड को अपने पुरखों से विरासत में मिला है—विषयों की शिक्षा अनिवार्यतः मिलनी चाहिये। इससे आचार्य जी के साथ उत्तराखण्ड का समाज जुड़ा रहेगा।

आलोक पिण्ड ओ ! हम तड़पते शोक में

—बचनसिंह वर्मा विमल, पौड़ी गढ़वाल

आचार्य दिवंगत हुए, गहरा आघात लगा । देवप्रयाग सांस्कृतिक सम्मेलन १६५६ की परम पुनीत वेला में उनसे परिचय हुआ । उनका सा मिलनसार स्वभाव दुर्लभ है, मुझे दो बार उनके सत्संग पूर्ण उदार आतिथ्य का सौभाग्य मिला । मैंने वेधशाला के यन्त्र देखे और पुस्तकालय का अभिदर्शन किया ।

गुरु जी की ललित लेखिनी से अंकित अक्षर आज भी मेरी पाण्डलिपि में स्वर्णाक्षर स्वरूपेण चमक रहे हैं । मुझे उस प्रेरणाप्रद शब्दावली से आज भी नूतन उमंग प्राप्त होती है । उन पावन ध्वनियों में मुझे दिव्यात्मा की प्रतिच्छवि दृष्टिगोचर होती है ।

श्रद्धाञ्जलि

आचार्य ! भव्य भाव, ज्ञानमय प्रभाव लेकर ।
मृदुल मधुर मुस्कान, मिलनसार स्वभाव लेकर ।।
दर्शनीय मुख कुंचित केश, कमनीय कलेवर ।
आए ज्योतिष की उज्ज्वल ज्योति लेकर ।
उड़े नक्षत्र विज्ञानी !
बसे सितारों के लोक में !
आलोक पिण्ड ओ !
हम तड़पते शोक में ।।

ज्ञानसिद्धः कर्मयोगी

—डॉ० ललिता प्रसाद पाण्डेय, देवप्रयाग

"कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना।" कालचक्र के परिवर्तित होते रहने से जगत् का संहार-सृजन और पालन आभ्यन्तर रूप से होता रहता है, अतः "परिवर्तिनि संसारे मृत को वा न जायते" जन्म-मृत्यु के पथ का अनुसरण सबको ही करना पड़ना है, किन्तु "कालो ही दुरतिक्रमः" काल गति में जब-जब धर्म की ग्लानि और अधर्म का अभ्युत्थान होता है तब दुष्कर्मकर्त्ताओं की वृद्धि एवं सत्कर्मियों की हानि होती है, दुर्जनों के दुस्साहस से सज्जन परिपीड़ित होते हैं, प्रकृति जरावस्था में प्रवेश कर जाती है। जगत् की ऐसी दशा देख परमात्मा स्वयं विविध मानवावतार धारण करता है और नवयुग के रूप में अवतरित होता हुआ स्वालौकिक क्रिया-कलापों से दुर्जनों द्वारा पीड़ित सद्समाज के आर्तनाद और करुण-क्रदन को विमोचित करता हुआ धर्म की रक्षा करता है, नवयुग-रूप पुरुष के आगमन से प्रकृति अपनी जरावस्था का त्यागकर नूतनावस्था में अपने पति नवयुग रूप पुरुष को मिलती है, नवयुग रूप पुरुष प्रकृति के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए शृङ्गार रूप में प्रकृति के साथ निवास करता है। स्व० आचार्य जोशी जी ऐसे ही युग के कालदृष्टा-कालविज्ञ युगपुरुष थे।

आचार्य जी के स्वभाव की परमोपादेयता थी कि वे अपने पास आये मनुष्यमात्र की मनोवृत्तियों का सद्यः अनुभव कर लेते थे। वे किसी को भी दुःखी नहीं देखना चाहते थे, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' ने उनकी वाणी में अमर स्थान प्राप्त कर लिया था। आचार्य जी के स्वभाव में--अद्रोह सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा, अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतत्प्रशस्यते" शील का लक्षण विद्यमान था। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना ने मानो उनके हृदय में ही जन्म लिया हो। स्व० आचार्य जी का स्वभाव अनुकरणीय था, उनकी पीयूसवर्षिणीवाणी ग्रहणीय थी। अनेक परिस्थितियों से घिरे मानव के उद्वेलित भावों को अपनी भाव-गम्भीर वाणी से शान्त करके अपने भावों के प्रति श्रोताओं की भावनाओं को उत्कंठित करने की उनके क्षमता थी। वे ज्ञानसिद्ध होने पर भी कर्मयोगी थे, द्विजों के भेद में— "ज्ञाननिष्ठा द्विजा केचित् तपोनिष्ठा नृपापरे स्वाध्यायेऽन्ये प्रवचने ये केचित् ज्ञाननिष्ठयोः" श्रीमद्भागवत ७।१।१।। वे अभेद रूप थे क्योंकि उनके द्विजों की ये केचित् नहीं अपितु सभी योग्यतायें विराजमान रहती थीं। स्वाध्याय ने तो उनका विश्राम का स्थान ले लिया था। एक दिन लेखक द्वारा यह पूछे जाने पर कि अहोरात्र अध्ययन एवं लोकदुःख निवृत्ति उपायों के खोज में ही आप तल्लीन रहते हैं तो क्या आप विश्राम नहीं करते! पूज्य आचार्य जी द्वारा उत्तर मिला—अध्ययन विश्राम ही तो है, याद रखिए! स्वाध्याय ही विश्राम है और उदारचित्त ही सम्पत्तियों का मूलमंत्र है। १४ अगस्त १६८० को उनके दर्शन हेतु संयोगवशात् मसूरी जाकर चरण स्पर्श करने के बाद लेखक ने उनकी वाणी में कुछ उपदेश सुनने की चेष्टा की तो उन्होंने सहसा कहा—मैंने अपने जीवन में उस सम्पत्तियों को संकलित करने का प्रयत्न किया जो लोक हितैषिणी हो और सज्जन एवं विद्वानों को उपयोगी हो उसकी उपयोगिता समझिये यही उपदेश है।

आचार्य जी के दर्शन एवं वचनों से मानसिक शान्ति सद्य प्राप्त होती थी, आध्यात्मिक बल बढ़ता था, भगवद्-भक्ति के प्रति निष्ठा होती थी। उनके कर्म एवं वचनों द्वारा जनमानस की प्राप्तोलब्धियाँ एवं समदर्शिता की भावना कैसे भूली जा सकती है। जातस्य हि ध्रुवो मृत्यूर्धुवं जन्ममृतस्य च तस्मादिपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि "श्रीमद्भगवत्गीता-२।२७।। वर्णित अंश से कुछ शान्ति-क्षान्ति का सहारा लेता हुआ मैं पुनः पुनः इस दिवंगत आत्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह अपने अनुयायियों को स्वालौकिक सद्बिचारों की अनुभूति प्रदान करती रहे साथ ही परमपिता से आग्रह करता हुआ कि इस दिवंगत विभूति को — न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम" श्रीमद्भ गी० १५।६।। विष्णुलोक में स्थान मिले, अपने इन्हीं श्रद्धाकुसुमों को अर्पित करता हूँ।

आचार्य जी

— सुरेन्द्रसिंह सजवाण, पत्रकार

ज्योतिषाचार्य पंडित चक्रधर जोशी का जन्म १६०६ में देवप्रयाग में एक कुलीन परिवार में हुआ था। उनका समस्त जीवन शास्त्रों की व्याख्या कर, मानव के दैनिक कार्यकलापों को प्रभावित कराने के लिए समर्पित रहा। वे उन मनीषियों में से थे जिन्होंने ज्योतिष शास्त्र को वैज्ञानिक आधार मानकर, ज्योतिष एवं मानव मात्र की सेवा की। जोशी जी भविष्य वाणियों के प्रकाशन के पक्ष में नहीं रहते थे। जब कोई उनसे भविष्य वाणियां पूछता था, तो वे शत प्रतिशत सत्य निकलती थीं। २५ अक्टूबर १६४७ को "भारत" में उनकी भविष्य वाणी प्रकाशित हुई थी, जिसमें उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि १२ नवम्बर १६४७ को आशाश में "गृह युद्ध" होगा। ठीक निर्देशित स्थान व निर्देशित समय पर "गृह युद्ध" हुआ था। १६६६ में भी श्री लाल बहादुर शास्त्री के निधन से पूर्व उन्होंने किसी राष्ट्रीय नेता के आकस्मिक निधन की भविष्यवाणी कर दी थी। आपातकाल से पूर्व जब मैं उन्हें मिला था तो देश की राजनैतिक स्थिति के बारे में पूछने पर उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि भारत में राजनैतिक शक्ति का केन्द्रीयकरण होगा, जिसमें शासकदल व विरोधी दल परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध मजबूत होंगे।

स्व० जोशी जी धार्मिक कट्टरपन के विरोधी थे। वे जहाँ आधुनिक सभ्यता के पक्षधर थे, वहाँ उस पर संस्कृति का नियंत्रण भी चाहते थे। वे छुआछूत जात-पात जैसे सामाजिक बुराइयों का विरोध करते थे। स्व० जोशी जी ने कई गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति दिलाकर उच्च शिक्षा का अध्ययन कराया। वेधशाला में उनसे भेंट के लिए आगन्तुकों का जमघट लगा रहता था। वे इतने सरल स्वभाव के थे कि डा० की सलाह की उपेक्षा कर, वे आगन्तुकों से सस्नेह भेंट करते थे। वे आजीवन जन कल्याण में लगे रहे।

देवप्रयागी समाज

—भगवतीचरण निर्मोही
देवप्रयाग

पुन्य सलिला भागीरथी और अलकनन्दा के तट पर बसा हुआ देवप्रयाग नगर उत्तराखंड के तीर्थस्थानों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इसी पवित्र स्थान से आगे भागीरथी-अलकनन्दा का नाम गंगा पड़ा है। देवप्रयागी लोग समय-समय पर अपनी सुविधानुसार गाँवों में बस गये हैं। पौड़ी गढ़वाल जिले में रणाकोट, बकरोड़ा, घयाणी, सेमन, पाली, नौगाँव, लोई, पोखरी, कोठी, चुरथू, सिराला, पावऊ, मुछियाली, गोरसू, पंडाली, वीराली, चमरोड़ा, कांडा, चवथ, तड़ी, नाई, सौड़, सौड़ आदि गाँवों में और जिला टिहरी में कोटी, पाली, कांडा, गढ़ी, भटकोट सामपुर, बैदगाँव, भुइंट, बैराई गाँव आदि गाँवों में तथा जिला चमोली के जैकंडी गाँव में इनके परिवार हैं, रणाकोट और कोटी में इनकी सम्पूर्ण बस्तियाँ हैं। अन्य गाँवों में ये फुटकर रूप में ही बसे हुए हैं, ये जहाँ कहीं भी हैं, भले ही उनकी वहाँ कई पीढ़ियाँ गुजर गई हों ये लोग देवप्रयागी नाम से ही जाने जाते हैं और इसी देवप्रयागी शब्द से इनकी प्राचीनता प्रतिलक्षित है।

गाँवों में बसे लोगों ने जमीन खरीद ली है और वे खेती का काम भी करने लगे हैं। उद्योग धन्धों की ओर भी इनका ध्यान आकर्षित हो चुका है। अधिकांश नवयुवक पढ़ लिखकर सरकारी नौकरियाँ करते हैं। जहाँ वे अपनी योग्यतानुसार बड़े छोटे पदों पर कार्यरत हैं। शायद ही कोई ऐसा विभाग हो जिसमें देवप्रयागी समाज के कोई न कोई व्यक्ति नौकरी न करते हों।

प्राचीनकाल से ही इस समाज में संस्कृत, ज्योतिष, कर्मकाण्ड विषयों के विद्वानों की कमी नहीं रही। पर जब अंग्रेजी भाषा का चलन चला, तो यह समाज भी उससे अछूता नहीं बचा, आज इस समाज में सैकड़ों ग्रेजुएट और अन्डर ग्रेजुएट हैं। यद्यपि समाज में आज भी आचार्यों; शास्त्रियों ज्योतिषियों और कर्मकाण्ड के विद्वानों की कमी नहीं है तो भी अंग्रेजी लहर ने संस्कृत की ओर से अधिकांश लोगों का ध्यान हटा दिया है। समाज के लिये यह स्वभावतः चिन्ता का विषय बन गया है।

देवप्रयाग में कई शिक्षण संस्थाएँ हैं। सबसे प्राचीन विद्यालय यहाँ का, श्री रघुनाथ कीर्ति संस्कृत महाविद्यालय ही है—जो अनवरत संस्कृत भाषा पढ़ाकर प्राचीन परम्परा की रक्षा करता चला आ रहा है।

देवप्रयागी समाज की अपनी पंचायत है, जो समाज के उत्थान के लिये सदैव प्रयत्नशील रहती है, इस पंचायत के सभी सदस्य हैं, चाहे वे देवप्रयाग में बसते हों या गावों में। समाज सुधार हो या राष्ट्रीय आन्दोलन में इस समाज के युवक सदैव आगे होकर इन आन्दोलनों में भाग लेते रहे हैं। कवियों, लेखकों, पत्रकारों की तो यह उर्वरा भूमि ही रही है। वर्तमान में कुछ युवक सुचारु रूप से समाज कल्याण केन्द्र चला रहे हैं, जिसमें अनाथों,

गरीब विधवाओं को सिलाई, कढ़ाई आदि की शिक्षा देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की जा रही है। कुछ साहित्यिक युवकों ने साहित्यिक संस्था स्थापित कर नये लेखकों और कवियों को प्रोत्साहन देना प्रारम्भ कर दिया है। सेवा के किसी भी क्षेत्र में समाज पिछड़ा हुआ नहीं है। प्राचीन काल से ही समाज में सभी विषयों के प्रकाण्ड विद्वान हुए हैं। स्व० चंडी प्रसाद बैद्य अपने समय के आधुनिक धन्वंतरि समझे जाते थे। स्व० रामलाल पंडित जिन्हें 'टोंडी' की उपाधि मिली थी, तर्कशास्त्र के अद्वितीय विद्वान थे, इन्होंने कई पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। स्व० लज्जाराम ध्यानी अच्छे कवि थे। स्व० सदाराम बादुलकर को 'कवि भारत' कहा जाता था। स्व० नरहरिशास्त्री की विद्वता की धाक चारों ओर जमी हुई थी। इनके लिखे कुछ ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित ही हैं। स्व० बैजनाथ शास्त्री जो इस समाज के प्रथम एम० ए० थे। इनकी अंग्रेजी में एक पुस्तक लिखी है, वह भी अप्रकाशित है। स्व० चन्दाप्रसाद कोटियाल ने परोपकार को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया था। स्व० गिरिजा शंकर सतभैय्या का श्री रघुनाथ कीर्ति संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्व० राधा कृष्ण शास्त्री जिला बोर्ड के मेम्बर रहे हैं। स्व० वृन्दावन ध्यानी की सेवाओं का उल्लेख उनके स्मृति-ग्रन्थ में आ चुका है। स्व० भगवानदास सतभैया ने 'कादम्बरी' का हिन्दी पद्यानुवाद किया है। स्व० कुशलानन्द शास्त्री व्याकरण (संस्कृत) के जाने माने विद्वान थे। स्व० सुन्दरलाल शास्त्री स्वतंत्रता संग्राम में पौड़ी जेल में शहीद हुए, स्व० विद्याधर डंगवाल स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे।

स्वतन्त्रता संग्राम में कई युवकों ने सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेकर सजा पाई और कारावास की यातनाएँ भोगी। इनमें देवप्रयाग निवासी तथा गाँवों के निवासी सभी युवक थे, जिन्होंने पौड़ी गढ़वाल जिले में सत्याग्रह किया। कुछ टिहरी की जेलों में रहे। अमर शहीद श्रीदेव सुमन का इस देवप्रयाग नगर से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा।

टिहरी की अहिंसक-जनक्रान्ति में देवप्रयाग निवासियों विशेषकर महिलावर्ग का जो योगदान रहा वह, अभूतपूर्व और चिरस्मरणीय रहेगा। वहाँ कुछ दिनों के लिये स्वतन्त्र सरकार ही कायम हो गई थी। इस सरकार के अपने मंत्री थे, अपने अधिकारी थे, फौज थी, पुलिस थी, खुफिया विभाग था और लगभग पन्द्रह दिन तक यह सरकार चली। कीर्ति नगर काण्ड के बाद अमर शहीद नगेन्द्र सकलानी और मोलूसिंह के पार्थिव शरीर जब आन्दोलनकारियों द्वारा टिहरी ले जाये गये तो, एक रात्रि देवप्रयाग में रखे गये और जनता ने उनके दर्शन कर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उसी दिन देवप्रयाग में नियुक्त टिहरी की फौज ने आत्मसमर्पण किया था। आन्दोलन की सफलता के बाद जब टिहरी राज्य का भारतीय राष्ट्र में विलय हो गया, तब देवप्रयाग की स्वतन्त्र सरकार ने भारत सरकार के अधिकारियों को तमाम हथियार का, जो टिहरी राज्य की फौज ने आत्म समर्पण के अवसर पर दिये थे, चार्ज दे दिया। किन्तु यह दुःख की बात है कि देवप्रयाग में हुए इस रोमांचकारी आन्दोलन का विवरण पूर्ण रूपेण कहीं भी लेखबद्ध नहीं हो पाया है। इसकी उपेक्षा ही हुई, मन्त्री कौन रहे? पदाधिकारी कौन रहे? किस प्रकार सरकार चली? महिला वर्ग का क्या योगदान रहा? टिहरी और कीर्तिनगर की स्वतंत्र सरकारों से देवप्रयाग की स्वतन्त्र सरकार के क्या सम्बन्ध रहे? इन सभी बातों का उल्लेख किया जाय तो एक पुस्तक ही तैयार हो सकती है, और इतिहास के पन्नो पर यह घटना अनोखी और रोमांचकारी अंकित हो सकती है। दोष हमारा ही है, जो विस्तृत रूप में आज तक इसे, लिख नहीं पाये हैं।

लेखकों की समाज में कमी नहीं है। समाज के कई विद्वान प्रवास में रह कर भी अनेकों ग्रन्थ, पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कर चुके हैं। शायद किसी का ध्यान समाज के संपूर्ण इतिहास लिखने पर कभी न कभी जायेगा ही।

हम सब भाई श्री मोहनलाल बाबुलकर के कृतज्ञ हैं जिन्होंने समाज की दिवंगत विभूतियों में से एक विभूति पर "वृन्दावन ध्यानी स्मृति-ग्रन्थ" के नाम से एक ग्रन्थ प्रकाशित किया है।[1] और अब स्वनाम धन्य स्वर्गीय आचार्य चक्रधर जोशी की स्मृति में एक ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे हैं। [2] आचार्य जोशी के निधन से देवप्रयागी समाज की एक अपूरणीय क्षति हुई है। मृत्यु अवश्यंभावी है तो भी उत्तम पुरुषों की जीवनी पर प्रकाश डालकर उसे चिरस्थायी बनाना भी, अपने आप में सेवा का एक महान कार्य है। आचार्य चक्रधर जोशी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न विद्वान थे। ज्योतिष पर उनका पूर्ण अधिकार था। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, गरीब अमीर सबसे समभाव से मिलना उनके चरित्र की विशेषता थी। आज जब उनकी भव्य और आकर्षक मूर्ति स्मृति में आती है तो बरबस आँसू टपक पड़ते हैं। उनकी स्मृति में कुछ लिखने को लेखनी रुक जाती है।

आज उदास है देवप्रयाग, उदास हैं वे लोग जो आचार्य से समय समय पर परामर्श लेने जाते थे और संतुष्ट होकर लौटते थे। कितनी वेदना नहीं होगी ऐसे व्यक्ति के निधन से जो विद्वान होकर भी निरभिमान हो, सर्व सम्पन्न होते हुए भी दीन दुखियों को सहायता देने वाला हो। उदास है नक्षत्र वेधशाला, उदास है उनका विशाल पुस्तकालय, उदास है वेधशाला जाने का पथ, और उदास हैं, हम सब। जनता का प्यारा वह चमकता सितारा भगवान को प्यारा हो गया। देवप्रयागी समाज की इस क्षति की पूर्ति निकट भविष्य में होनी सम्भव प्रतीत नहीं होती। कविवर श्री हरिऔध ने ठीक ही लिखा है—

"जो चमकते रतन धरा के हैं, उन्हें करते हो भोर का तारा,
मूढ़ पाते हैं आयु लोमश की, ढंग कैसा है आप का न्यारा",

आचार्य जोशी की आत्मा को भगवान शान्ति दे, यही हमारी उनको श्रद्धांजलि है। उनके पुत्र चिरायु हों, और अपने पिता के यश की वृद्धि करें, यही कामना है।

"ना घर तेरा ना घर मेरा, चिड़िया रैन बसेरा"

---

१. पं० वृंदावन ध्यानी स्मृति-ग्रन्थ उनके सुपुत्र पं० माखनलाल ध्यानी ने प्रकाशित किया था।

२. आचार्य पं० चक्रधर जोशी स्मृति-ग्रन्थ ~~देवप्रयागी [illegible]~~ आचार्य पं० चक्रधर जोशी स्मृति-ग्रंथ समिति द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पुण्य-स्मरण

—सत्यनारायण शास्त्री बाबुलकर
मुछियाली

कब आयेगा वह सुदिन जब हिन्दुओं की मृत श्राद्ध करने की बुर्जुआ पद्धति में क्रान्ति और सुधार आकर जीवित श्राद्ध करने की परम्परा प्रारम्भ हो और दिवंगत विभूतियाँ अपनी जीवित अवस्था में ही अधिक सम्मान पाकर अधिक हृद्वल पाकर इस अमूल्य जीवन को उत्साह से संजोये रखें और आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन कर सकें। ऐसी परम्परा की नींव रखने के लिए एक सुसंस्कृत और सुगठित समुदाय का समाज में, देश में उदय हो जिससे जीवित श्राद्ध की शृङ्खला का उदय हो। अन्य का उन गये हुए विभूतियों के प्रति हमारा श्रद्धा का संतर्पण मेरी दृष्टि में कोरी विडम्बना मात्र है। हम उनको आँके, तोलें कि उनके महान त्याग निधि कार्य पद्धति अचिन्तनीय चिन्तन और कृति हम सबके सम्मिलित प्रयत्न से पोढ़ीतर हैं। वे अपने स्वयं में एक संस्था हैं, देश हैं, लाइब्रेरी हैं। आचार्य जी की स्मृति में लगता है कि मेरा यह चिन्तन श्रद्धांजलि न होकर विद्रोह को उड़ेलना और चिन्तकों के सामने एक उलाहना हो गया है। जिन्होंने सबके लिए किया है उनका अपने जीवन में ही सबसे विनिमय स्वरूप कुछ चाहता अनैतिक नहीं है। विशाल देश की ओर दृष्टि न जाकर आचार्य जी की स्मारिका के परिप्रेक्ष्य में गढ़वाल और देवप्रयाग तक ही मेरी दृष्टि जा सकी है। विभूतियों के ओझल होने के बाद रोना धोना मेरी दृष्टि में औपचारिकता है और अपने मन का बोझ उतार शुद्ध संतुष्टि मात्र है। मनस्वी मनीषी आचार्य जी के जाने से अपूर्णनीय क्षति देवप्रयाग गढ़वाल ही नहीं वरन भारतवर्ष की हुई है। उन जैसे तथा उनके आराध्य गुरु आधुनिक वाराहमिहिर मुकुन्द दैवज्ञ यदि पर्वतीय अंचल को छोड़कर बाहर मैदान में पैदा होते तो देश की सर्वोच्च सम्माननीय उपाधि से विभूषित किये जाते और विदेश में जन्मते तो अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से भूषित होते। आचार्य जी अपने पीछे नक्षत्र वेधशाला जैसी महती कृति और सहस्रों पाण्डुलिपियों से सुसज्जित अमूल्य प्रकाशित-अप्रकाशित पुस्तकों के भण्डार का वृहद् पुस्तकालय छोड़ गये हैं जिसका राष्ट्रीय महत्व है।

साधारण मानवों से विशिष्ट विभूतियों का हृद्वल स्व और परचिन्तन में क्षीण हुआ रहता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। उनके से संवेदनशील सुकोमल हृदय को बल देने के लिए उनके प्रति कृतज्ञता श्रद्धा और सम्मान की खुराक उनके हृदय को देनी पड़ती है जबकि "वार्त्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे" के अनुसार वे विभूतियाँ अकाल ही काल कवलित हो जाती हैं। कुछ युवा विभूतियों के अपवाद को छोड़कर गढ़वाल के अधिक संरक्षक विशिष्ट स्मरणीय विभूतियाँ सांध्य बेला में हैं। इससे हमें समय पर ही सावधान होकर भेद-भावों को और आलोचनाओं-समालोचनाओं को भूलकर एकत्र होकर समय रहते ही कुछ सोच कर गुजरना है नहीं तो यह अक्षम्य भूल और तटस्थ उदासीनता हमें जीवन भर कुरेदती रहेगी। आचार्य श्री चक्रधर जी जोशी की अविस्मरणीय स्मृति को भावभीने शब्दों से शतशः नमन। आचार्य जी के साथ बीता समय उनके सान्निध्य में रहे, उनके जीवन प्रयोगों को और उनके जीवन कार्यकलापों तथा उनकी कृतियों के विषय में प्रकाश डालना ही वास्तविक श्रेष्ठ श्रद्धांजलि है।

प्रकाश और प्रसाद विखेरती वाणी के धनी

—डा० शशिधर शर्मा वाचस्पति,
आचार्य डी० लिट्, पंजाब विश्वविद्यालय ।

संस्कृत की प्रसिद्ध सूक्ति है—

'वदनं प्रसाद - सदनं
सदयं हृदयं, सुधामुचोवाचः ।
करणं परोपकरणं
येषां केषां न ते वन्द्याः ?'

जिनका मुख प्रसन्नता का आगार है, जिनका हृदय दया से परिपूर्ण है, जिनके बोल अमृत छिटकाते हैं और जिनकी देह परोपकार के लिए है, वे किनके वन्दनीय नहीं होते ?

आचार्य चक्रधर जोशी, इस सूक्ति के मूर्त उदाहरण थे। रत्नगर्भा हिमालय वसुन्धारा के वे एक अमूल्य लाल थे। उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होकर विद्या, वैभव और कीर्ति के अक्षय भण्डागार अर्जित किए और लुटाए। प्राचीन उदात्त परम्पराओं का उज्जीवन करने में उन्होंने अपना जीवन लगाया और भारतीय विद्या-वैभव की विशेषतः ज्योतिष की ज्योति से, देश को सुदीर्घ काल तक ज्योतिर्मय किया।

अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग दोनों में, आचार्यवर अपने प्रतिमान बहुत कुछ अपने आप थे। सिर पर स्निग्ध और घुंघराले बाल, विशाल आयत नेत्र, निसर्ग रक्तओष्ठ, दीर्घ भुजाएं; निर्मल कुन्द कलिकाकार दांत, लम्बा तगड़ा शुभ्र सन्नाह और सौम्य गति, उनको दूर से ही परिचित करा देती थीं। अपरिचित व्यक्ति भी उन्हें देखते ही प्रभावित हो जाता था। उनकी वाणी अत्यन्त आत्मीय, मधुर और परिष्कृत थी। शुद्ध संस्कृतमय होने के कारण उनकी वाणी बड़ी आकर्षक और प्रभावक लगती थी। अनायास समझ में आ जाती थी।

उन्होंने वैभव और मानकी चरम सीमाओं पर पहुँचने पर भी समीप या दूर के उनके सम्बन्धों और आत्मीयताओं में कभी रंचमात्र भी अन्तर नहीं आया।

आचार्य जी की विशाल हृदयता और सौजन्य की चर्चा करते लोग कभी अघाते नहीं थे। उनकी दृष्टि में ज्योतिर्विज्ञान का यह महान् नक्षत्र, धरती पर उतरा हुआ साक्षात् बृहस्पति था। वैसा ही शुभ्र और

भव्य वदन और भव्य देह !! वैसा ही सदा प्रसन्न हंसता हुआ मुख मण्डल और वैसी ही प्रकाश और प्रसाद विखेरती हुई मधुर वाणी। उन पर समाज का बड़ा ही भरोसा था।

वे पूर्णतः भगवद्-भावित और परम धर्म निष्ठ थे। वे लम्बी जुहार के बाद प्राप्त अपनी सन्ततियों को वे 'चन्द्रवदनी' के दर्शन और प्रार्थना का फल मानते थे। बदरिकाश्रम धाम में की गई दीर्घ आराधना ही उनके सुयश एवं वैभव में प्रतिफलित हुई। अपने पिताजी के नाम पर उन्होंने 'लक्ष्मीधर विद्या मन्दिर' का अचल स्मारक बनवाया। अपनी माता में उनकी निष्ठा एक अनुकरणीय थी। उनका यह सौभाग्य था कि उन्होंने त्याग तप और सन्तोष मूर्ति गुरु श्री मुकुन्दराम जी से त्रिस्कन्ध ज्योतिष शास्त्र के रहस्यों को प्राप्त किया था, जिनकी ज्योतिस्तत्त्वम् और 'मुकुन्दकोश, इत्यादि कृतियां विद्या के विभिन्न क्षेत्रों पर उनके अद्भुत अधिकार के कारण आज भी लोगों को आश्चर्य चकित कर रही हैं। आचार्य जी ने अपने गुरुदेव की खूब सेवा की और नियमित रूप से उनके योग क्षेम के प्रबन्ध के लिए भी प्रयास किया। उनके मूल्यवान ग्रंथों को प्रकाश में लाने का श्रेय पूर्णतः आचार्य जोशी जी को ही है। समाज के अनेक युवकों को उच्च शिक्षा और आजीविका दिलाने का भी उन्होंने प्रयास किया। उनके इस बहुमुखी व्यक्तित्व और सेवा का ही फल था कि उनके निधन पर प्रदेश ने इतना दुःख अनुभव किया जितना, पहले कभी नहीं किया था।

उनकी सहृदयता की बात मेरे एक सहाध्यायी मित्र ने बतलाई। मुम्बई में वे और आचार्य जोशी एक ही कमरे में रहते थे। मेरे मित्र एक बार रुग्ण हो गए, तब जोशी जी उनके लिए औषधि एवं फल लाए और सर्वतो भविन उनकी सेवा में जुटे रहे। उनका घर सदा ही साधुओं, अतिथियों और महात्माओं का आवास बना रहा है।

उनकी जो सबसे बड़ी विशेषता मैंने देखी वह यह थी कि वे समाज के प्रत्येक व्यक्ति के उत्कर्ष से प्रसन्न होते थे। मेरी उपलब्धियों पर वे असीम गौरव प्रकट किया करते थे और आगे पीछे उनकी चर्चा किया करते थे। समाज का आबाल वृद्ध (प्रत्येक) व्यक्ति उनके व्यवहार से यही अनुभव करता था कि वही उनका सबसे अधिक प्रेमपात्र है। वे अजातशत्रु थे और अपकारी निन्दक ने भी उनके व्यवहार में शायद ही कभी अन्तर पाया हो।

उनकी सहिष्णुता और शक्ति-सामर्थ्य भी कम नहीं थी। लम्बी बीमारी को उन्होंने हंसकर झेला। सामाजिक तो वे इतने थे कि समाज के आवश्यक कार्यों पर अवश्य पहुँचते थे। वे घरेलू व्यवहार में भी पूरे जागरूक थे। अपने निजी, या सार्वजनिक भवनों के निर्माण कार्य का निरीक्षण वे प्रायः स्वयं किया करते थे। पत्रों का उत्तर वे तुरन्त और अपने हाथ से देते थे। उनका हस्तलेख बड़ा ही रमणीय और स्फुट होता था। शुद्धता में तो उनके बनाए जन्मपत्र अपवाद सरीखे लगते थे। उनकी अभिव्यक्ति में वैदुष्य और मौलिकता थी। वे कुण्डली को "जनुर्लेखा" लिखा करते थे। शरीर की तरह ही हृदय भी उन्हें निर्मल और विशाल मिला था। मैंने जब उन्हें अपनी फलित ज्योतिष की रचना 'भावसारदीप' सुनाई थी तब वे कितने प्रसन्न हुए थे, इस बात को स्मरण कर हृदय आज भी गदगद हो जाता है।

जोशी जी के गुरुदेव (पं० मुकुन्दराम जी) ने अपना कार्यक्षेत्र हिमालय में ही सीमित रखा। उसकी सीमाओं का सीमित वियोग भी उन्हें न भाया। पर, जोशी जी ने अपना कार्य क्षेत्र सुदूर मुम्बई तक रखा। फलतः उनके प्रेरणादायी गुणों को प्रकाश में आने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने सम्पदा, सम्मान और श्री पाई, खूब पाई और सम्भवतः उस क्षेत्र में इतनी किसी ने नहीं पाई। मात्र महा धनिक प्रासादों में सुलभ वस्तुएँ उनके तपः पावन भवन

में आसानी से देखी जा सकती थीं। उनके प्रशंसकों में स्व० गोविन्दवल्लभ पन्त, राजेन्द्रबाबू, हरेकृष्ण मेहताब और मोरारजी भाई देसाई जैसे महनीय नाम जुड़े हैं। मफतलाल सङ्घ और मोदी सङ्घ तो मरणोपरान्त भी उनकी पावन स्मृति में पूर्ववत् सेवा रत हैं।

जोशी जी सच्चे अर्थ में एक संस्था थे, व्यक्ति नहीं। उनका पौरुष और उनकी उपलब्धियाँ उन्हीं की थीं और उन्हीं के साथ रहेंगी—

यत्र प्रादुरभूत्कथाऽद्भुतमिदं।
यत्रैव चाऽस्तं गतम्॥

यद्यपि उन्होंने लम्बी आयु भोगी, पर सांस्कृतिक जगत् को उनकी अभी भी बड़ी आवश्यकता थी। अब जिस बात की चिन्ता है वह यह कि नक्षत्र वेधशाला के लिए जर्मनी तक से मंगाई गई मशीनों का और ज्योतिषीय पाण्डुलिपियों का उस क्षेत्र में उपयोग बना रहे। यह कार्य नक्षत्र वेधशाला को एक वृहत् अनुसन्धान केन्द्र के रूप में विकसित करने से ही सम्भव है। समाज को और शासन को इस दिशा में ध्यान देना होगा तभी सारे देश की स्पृहणीय सांस्कृतिक सेवा, सम्भव हो सकेगी। आचार्य जी के प्रति यही, उनके योग्य श्रद्धांजलि होगी।

बेताज के बादशाह

—कृष्णकान्त टोडरिया
देवप्रयाग

मानवता की मूर्ति, समाज सुधारक, परहित चिन्तक स्वर्गीय पं० चक्रधर जी जोशी के विषय में, जैसो मेरी दृष्टि में थे, कुछ लिखने का साहस कर रहा हूँ। जोशी जी के पिता स्वर्गीय लक्ष्मीधर जी जोशी ज्योतिष के महान विद्वान थे उनकी सादगी व वात्सल्य प्रेम का आचार्य जी की बालबुद्धि पर बहुत प्रभाव पड़ा, किन्तु बचपन में ही उनकी मृत्यु से जोशी जी के ऊपर की छत्र-छाया उठ गयी। माता के अगाध स्नेह की छाप उनके व्यक्तिगत-चरित्र में स्पष्ट झलकती थी कि प्रत्येक व्यक्ति को किस प्रकार मिलते थे व प्रसन्न मुद्रा में किस प्रकार किसी का स्वागत करते थे। उनकी अपने माता-पिता के प्रति अगाध श्रद्धा थी, माता की आज्ञा का उन्होंने स्वप्न में भी उल्लंघन नहीं किया। यही थी उनकी महानता, जिससे वे समस्त भारत में पूजे जाने लगे। आचार्य पं०जोशी जी वल्लभ सम्प्रदाय को मानने वाले थे, वे सभी वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्यों के पुरोहित थे।

दैवज्ञ पं० श्री मुकुन्द राम जी ने आचार्य श्री चक्रधर जी जोशी को ज्योतिष का अध्ययन कराकर महान विद्वान बनाया जिससे आचार्य जी की प्रतिभा और ख्याति समस्त भारत को अपनी आभा से आलोकित करने लगी। वे जहाँ भी जाते बिना प्रचार के ही लोग उनकी कीर्ति सुवास का पान करने आ पहुँचते। प्रौढ़ अवस्था में प्रवेश करते

हो आचार्य श्री चक्रधर जी जोशी का यश भारतीय क्षितिज पर एक अपूर्व आभामय नक्षत्र की तरह चमकने लगा उनकी यश पताका हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तथा कश्मीर से आसाम तक फहराने लगी। आचार्य जी की महान सफलता का रहस्य, चरणपादुका में कठोर तपस्या है। कठिन तप के बाद आचार्य जी कर्मक्षेत्र में उतर पड़े समस्त भारत उनका कर्मक्षेत्र था। किसी पर भी कभी उनको क्रोध करते नहीं देखा गया। आचार्य जी महापुरुष थे, मैंने अपने जीवन में ऐसा व्यक्ति नहीं देखा था। वे हमारे बीच बेताज के बादशाह थे। स्व० आचार्य जी का सबसे महान कार्य उनकी नक्षत्र वेधशाला है। यह वेधशाला दर्शनीय है। यहाँ हस्तलिखित अनेक प्राचीन ग्रन्थ तथा सभी प्रकार की १० हजार पुस्तकों का संग्रह है, भृगुसंहिता भी इस पुस्तकालय में मौजूद है, अपने जीवन का काफी समय जोशी जी ने इसके निर्माण में बिताया व लगभग ३० वर्षों से जीवन के अन्तिम क्षण तक, यहीं निवास करते आ रहे थे।

व्यक्तित्व के धनी इन महापुरुष को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने भी सम्मान दिया। वे अपनी बदरीनाथ यात्रा में उनको अपने साथ ले गये। भारतीय संसद के अध्यक्ष श्रीमान मावलंकरजी तथा श्री मोरारजी देसाई व अनेक भारत के मंत्रियों व अनेक संसद सदस्यों से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। उत्तर प्रदेश के अनेक मंत्रियों को मैंने नक्षत्र वेधशाला में अपने भविष्य के बारे में जानने के लिये, चक्कर लगाते देखा है। भारत सरकार के उच्च अधिकारी प्रान्तीय सरकार व जिला प्रशासकों की बात ही क्या कहें! भारत के धनी सेठ मफतलाल व मोदीनगर के सेठ तो हमेशा उनकी आज्ञाओं की प्रतीक्षा करते रहते थे। वे आचार्य जी के अनन्य भक्तों में से थे।

आचार्य जी की गुरुभक्ति भी, पितृ व मातृ भक्ति से कम नहीं थी। गुरु की कई ज्योतिष की पुस्तकें आचार्य जी ने प्रकाशित करवाई जो नक्षत्र वेधशाला में उपलब्ध हैं। आचार्य जी ने इसके अतिरिक्त अनेक निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति दिलाकर उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्ति में समर्थ बनाया। नक्षत्र वेधशाला में सुबह से संध्या तक अनेक प्रकार के लोगों का दरबार लगा रहता था। वे सबको संतुष्ट करके भेजते। विद्वानों के अतिरिक्त यदा कदा विदेशियों को भी देखा जाता था। समाज कल्याण संगठन आदि संस्थायें उनसे प्रेरणा तथा सहायता पाती रही हैं। मधुमेह, रक्तचाप व अनेक बीमारियों के बावजूद उनके दैनिक कार्य या दरबार में कभी फर्क नहीं आया। अंतिम वर्षों में वे देवप्रयाग डिग्री कालेज तथा प्राच्य विद्या शोध संस्थान का निर्माण कराने में जुटे थे।

अकस्मात वज्रपात हुआ, बद्रीनाथ में मैं १९ अगस्त को आकाशवाणी से उनके स्वर्गीय होने का समाचार सुनकर शोक मग्न हो घंटों उठ ही नहीं सका। मसूरी स्वास्थ्य लाभ हेतु गये थे। हमारे समाज व देश का एक उदीयमान नक्षत्र सदैव के लिये विलीन हो गया। आत्मा, परमात्मा में मिल गयी। सेठ मोदी व अनेक स्थानों से उनके अनेक शिष्य उनके अन्तिम दर्शन व दाहक्रिया संस्कार में सम्मिलित होने, देवप्रयाग संगम पर उपस्थित हुये। नगर के वयोवृद्ध स्त्री-पुरुष तथा हजारों की संख्या में उपस्थित लोग, अश्रुधारा बहाते अपने पूज्य गुरु को माल्यार्पण कर रहे थे।

मैं पिता विहीन पुत्र हूँ

—पात्तु (श्रीनारायण पालीवाल)
देवप्रयाग

आचार्य श्री के प्रति भाव कुसुम अर्पित करने की चेष्टा कर रहा हूँ। अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने आचार्य जी के पांडित्य पर, पर्याप्त प्रकाश डाला है। मैं यहाँ आध्यात्मिक पहलू की ही चर्चा करूंगा। ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड को लोगों तक पहुँचाने के लिए उन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी को माध्यम बनाया। ज्योतिष में गणितीय सुधार हेतु तमिल, तेलुगु, और मलयालम भाषायी ग्रन्थों का अध्ययम किया और अक्षांश-रेखांश पद्धति, तथा निरयन गणित पद्धति में आवश्यक सुधार किये। ब्रह्माण्ड (सौर-जगत) का अध्ययन उन्होंने आधुनिकतम यन्त्रों द्वारा प्रारम्भ किया और षट्ऋतु आकाशीय स्थिति का अध्ययन कर, खगोल-विद्या में नवीन प्रयोग किये। आचार्य जी परमब्रह्म द्वारा निर्मित इस विशाल आकाश, नक्षत्र-ग्रहों और निहारिकाओं के प्रति निरन्तर जिज्ञासु रहे और एकान्त-क्षणों में आधुनिकतम दूरबीनों (टेलिस्कोपों) द्वारा इस दिशा में शोधरत रहे।

पूर्व जन्म के ऋषि, आचार्य जी का आत्मबल ही उनकी सफलता की, कुंजी रही है। आचार्य जी भारत के विद्वानों में विशेष सम्मानित थे। उनका उच्चकोटि के महापुरुषों और सन्तों से आजीवन सम्पर्क बना रहा। वे हर व्यक्ति से अपनत्व और आत्मियता से मिलते थे। विद्वान उनसे मिलते तो उनमें अपना ही आत्म बिम्ब पाते थे। सन्त-महात्माओं के लिए उनकी साधना स्थली के कपाट, हमेशा खुले रहते थे।

आचार्य जी तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र जैसे रहस्यमय ज्ञान को अपने अन्तर में छिपाये थे। इनमें लातानन्दा देवी के नव खण्डों का पूर्ण रहस्य भी था। इनसे आप बाह्य आपदाओं, प्रकृतिजन्य प्रकोपों का पूर्व आभास प्राप्त कर भविष्य-वाणी करते थे।

आचार्य जी आध्यात्मिक उन्नति हेतु नीलकण्ठ पर्वत की तलहटी में योग साधन तथा एकान्तवास करते थे। प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न करने के पूर्व ही, वे उसके प्रश्न को उत्तर सहित बता देते थे। उनमें यह एक अद्भुत और अद्वितीय आध्यात्मिक प्रतिभा थी। आर्थिक लाभ को महत्व न देकर वे निर्धन, व्याकुल, विधवा स्त्रियों और छात्रों की सेवा में जीवन भर संलग्न रहे। उनका विशाल पुस्तकालय, साहित्य प्रेमियों के लिए एक विशेष निधि है। उनके निधन से मैं स्वयंमेव को, उस पुत्र की तरह मान रहा हूँ जिसके पिता उसके जन्मकाल में ही, स्वर्गवासी हो जाते हैं।

मैं उन्हें भूल नहीं सकता

—प्रेमलाल वैद्य,
देवप्रयाग

आचार्य पं० चक्रधर जी जोशी पर्वतीय क्षेत्र ही नहीं अपितु संसार के ज्योतिर्विदों में लब्ध ख्याति थे। उनकी नक्षत्र वेधशाला देवप्रयाग में, भारत के हर हिस्से से आने वाले लोगों का तांता लगा रहता था। विदेशी भी अपनी शंकाओं के समाधान के लिए उनके पास आया करते थे। वर्ष में एक बार वे स्वयं दिल्ली, बम्बई, मद्रास, अहमदाबाद प्रभृति का अवश्य भ्रमण करते थे, जहाँ जिज्ञासुओं की भीड़ लगी रहती थी। ज्योतिष ही नहीं अपितु प्रत्येक विषय में उनकी गहरी पैठ थी। वे अवकाश के समय, स्वाध्याय में तल्लीन रहते थे।

वे सामाजिक-सांस्कृतिक और शैक्षणिक संस्थाओं से, सम्बद्ध थे। वे शिक्षा तथा समाज सेवा कार्य को राजनीति से अलग रखने के पक्षधर थे। उन्होंने सैकड़ों व्यक्तियों को छात्रवृत्ति, पुस्तकें, वस्त्र और अन्न-धन देकर सहायता की तथा उन्हें रोजगार भी दिलाया। मेरा जीवन बाल्यकाल से ही स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए समर्पित रहा। आचार्य जोशी जी से मुझे अध्यावधि प्रेरणा मिलती रही। उन्होंने मुझे हमेशा ढाढस बंधाया और सहारा दिया। अनेकों बार उनके सान्निध्य का अवसर प्राप्त होता था; वे विनोद ही विनोद में मेरी समस्याओं और अन्तर्द्वन्द्वों को हल कर देते थे।

समभाव से पूजित

—रामदयालु टोडरिया
देवप्रयाग

"यस्य कीर्तिरसः जीवति" के अनुसार आचार्य जोशी जी हमारे बीच हैं। वे मेरे बाल सखा थे। कुशाग्रबुद्धि, गुरुभक्त श्री जोशी जी उत्तराखण्ड की सीमाओं को लांघ आर्यावर्त में, अपनी सुरुचि औदार्य, अप्रतिम मेधा, ज्ञान, परिहितचिन्तन और आचरण के लिए प्रसिद्ध थे। मानव सेवा को समर्पित श्री जोशी जी ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड के कोश थे। वे अपने सद्गुणों और अपनी मधुर आकृति के कारण साधारणजन से लेकर, महान उद्योगपतियों, अधिकारियों, साधु-सन्तों तथा विदेशियों में समभाव से पूजित थे। वे ज्योतिष और कर्मकाण्ड के तो पण्डित थे ही किन्तु साथ ही खगोल, साहित्य दर्शन, इतिहास, संगीत, चित्रकला और भाषा आदि के भी मर्मज्ञ थे।

त्रिविक्रमावतार

—रघुनाथप्रसाद शर्मा, एडवोकेट
देवप्रयाग

आचार्य जी ने चरणपादुका (बदरीकाश्रम) में तप करके भगवद्स्वरूप का अलौकिक ज्ञान प्राप्त किया, जिसे आम व्यक्ति सिद्धि कहते हैं। अपने पूज्य गुरु "अभिनव वराहमिहिर" श्री मुकुन्द दैवज्ञ से आपने ज्योतिष विषयक ज्ञान के रहस्यों को समझा। "श्रद्धावान लभते ज्ञानं" वाक्य अक्षरशः उन पर खरा उतरता है। गुरु के प्रति नमन, श्रवण और सेवा आपमें पूर्णरूप से लक्षित थे।

ज्योतिर्विज्ञान के त्रिस्कन्ध—सिद्धान्त होरा और गणित में आचार्य जी निष्णात थे। मैं तो निसंकोच यह मानता हूँ कि विबुधजन कृत ज्योतिष शास्त्र धेनु है, दोग्धा अभिनव वराहमिहिर श्री मुकुन्द दैवज्ञ तथा वत्स श्री चक्रधर जोशी भोक्ता ज्योतिष शास्त्र के जिज्ञासु और महर्षियों द्वारा प्रदत्त ज्योतिष ज्ञान "ज्योतिस्तत्वम्" के रूप में अमृतमय दुग्ध है। ज्योतिष के अतिरिक्त उन्हें बहुविध शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान था।

आचार्य श्री जोशी जी यह मानते थे कि उपासना से ही निष्काम कर्म की भावना आती है तथा मानव कर्मबन्धन से मुक्त होता है। उनका मत था कि केवल ज्ञान मात्र शुष्क होता है—भगवद् भक्ति से वही ज्ञान सरस एवं मधुर हो जाता है। अपने परम प्रिय शब्द "अत्युत्तम" से किसी का भी विरोध किए बिना अपनी बात से सभी को सन्तुष्ट कर देते थे। वे कहा करते थे कि "ना" कहने से विरोध होता है। उसी बात को अपनी बुद्धि-विवेक द्वारा सही रूप में उसे हृदयंगम करा दें तो व्यक्ति प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हो जायेगा।

पूज्य पिता जी स्व० पं० श्री नरहरि शास्त्री मुझसे यदा-कदा कहा करते थे कि—"बामन द्वादशी के दिन जन्म लेने वाला यह चक्रधर त्रिविक्रम का अवतार है। यह कर्मनिष्ठ, बुद्धिमान, सर्वगुणयुक्त, विलक्षण और पराक्रमी व्यक्ति है।" वे वास्तव में त्रिविक्रम के समान परम पराक्रमी और सारे विश्व को नापने वाले थे। वे कहा करते थे—

अनन्याश्चिन्त यन्तोमां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योग क्षेमं वहा॥

महान बेटे को खो दिया है

—रमेश शास्त्री महाराष्ट्र
(चुर्यू) देवप्रयाग

स्वर्गीय आचार्य श्री चक्रधर जी जोशी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने से मुझे सदैव उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिलता रहा। वे एक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। उनके निवास स्थल पर हर समय विशिष्ट व्यक्तियों का मेला लगा रहता था। वे विद्वत्त सभाओं, राज्य सरकारों तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा ससम्मान आमन्त्रित किये जाते रहे। उनकी ज्योतिष शास्त्र पर रचित विविध पुस्तकों पर पुरस्कार प्रदान किये जाते रहे हैं। वे ज्योतिष और गणित के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनकी विद्वत्ता से भारतीय लोकसभा के तत्कालीन अध्यक्ष, स्व० मावलंकर जी अत्यधिक प्रभावित थे और वे उनका विशेष आदर करते थे। एक बार श्री मावलंकर जी की जन्म कुण्डली देख कर जोशी जी ने स्पष्ट लिख दिया था कि देश को आपकी सेवाओं की अमुक समय (निर्धारित) से, आवश्यकता नहीं होगी। वस्तुतः श्री मावलंकर जी उक्त निर्धारित समय पर ही संसार से चल बसे। इससे तत्कालीन केन्द्रीय नेताओं पर भी उनका प्रभाव पड़ा। देश के धनाड्य परिवार भी उनके प्रभाव से अछूते न रहे और वे निरन्तर उनकी सेवा में लगे रहे। स्व० जोशी जी का आज भी उनके परिवार के सम्बन्ध इन घरानों से पूर्ववत बने हुए हैं। देश के विद्वत् समाज को उनके निधन से अपार क्षति हुई है। उत्तराखण्ड तो चेतना-शून्य हो गया है। उत्तराखण्ड ने अपने एक महान बेटे को खो दिया है।

साहूकारा पिशाचकर्म

—सालिराम शास्त्री मोटा,
देवप्रयाग

श्री जोशी जी बाल्यकाल से ही गम्भीर-स्वभाव के थे, प्रत्येक बात को ध्यान से सुनते थे। बड़ों के प्रति श्रद्धाभाव रखते थे। आचार्य जी माँ की वाणी को देव आज्ञा रूप में मानते रहे।

उन्हें बचपन से ही पुस्तकें पढ़ने तथा संग्रह करने की आदत थी। पुस्तकों में महापुरुषों के जीवन चरित्र तथा चरित्र निर्माण आदि इनके प्रिय विषय थे। "ब्रह्मचर्य ही जीवन है", "दिव्य जीवन", "सफलता की कुञ्जी"

(स्वामी रामतीर्थ के अमेरिका के भाषणों का संग्रह) नामक पुस्तकें हमेशा साथ रखते थे। इन पुस्तकों का उन पर काफी प्रभाव पड़ा। मुझे भी उनसे काफी मार्ग दर्शन मिलता रहा और ज्योतिष-कर्मकाण्ड के भी वही मेरे श्री मुकुन्द दैवज्ञ के साथ, शिक्षक रहे।

आचार्य जोशी जी सात्त्विक भोजन तथा शारीरिक-मानसिक व्यायाम किया करते थे। वे जनता में ईश्वर भाव रखते थे, इसीलिए धनी-निर्धन सबसे मधुर व्यवहार उनके जीवन का अङ्ग था। उन पर व्यसन था तो—"विद्याऽभ्यसनं व्यसनं अथवा हरिपाद सेवनम्" ही थे।

"अभिनव वराहमिहिर" पं० मुकुन्दराम बड़थ्वाल के शिष्यत्व में जोशी जी ने अध्ययन किया और वर्षों के अध्ययन-मनन से फलित ज्योतिष के गूढ़ तत्वों की खोज की और इससे जनसाधारण को लाभान्वित किया। भारत के गणमान विद्वानों से सम्पर्क करके विचारों का आदान-प्रदान किया। आप वर्षफल, तांत्रिक नीलकण्ठी के षोडस योगों से भली-भांति परिचित एवं इत्थशालादि षोडश योगों के द्वारा प्रश्नफल निकालने में बड़े ही निपुण थे।

आचार्य जी ने अपने जीवन की एक घटना सुनाई थी कि उनके स्व० पिताजी श्री लक्ष्मीधर भट्ट के एक कर्जदार थे। मामाजी श्री रामरतन ने कर्जदार पर "वसूली" के लिए न्यायालय में उनके नाम से वाद प्रस्तुत किया। न्यायालय में उन्हीं के पास कर्जदार भी बैठा था। उत वक्त वे कर्जदार को भक्ष्य और वह उन्हें राक्षस के रूप में देख रहा था। ऐसी विचित्र मनःस्थितियाँ थीं। मन-मस्तिष्क में बड़ा ही अन्तर्द्वन्द्व था। विचार किया कि यह साहूकारा पिशाचकर्म है, जिससे कभी भी शान्ति नहीं मिल सकती। अतः न्यायालय से वाद वापस लेकर तुरन्त ही घर आके सभी कर्जदारों को भरपाई लिख स्टाम्प जला दिए और साहूकारा त्याग दिया। ऐसे उदार पुरुष थे आचार्य जी।

आचार्य जी स्वर्गादि लोक से आये हुए प्राणी थे। "स्वर्ग सितानां इह जीवलोके, चत्वारि चिह्नानि बसन्ति देहे। दान प्रसंगों मधुरश्च वाणी, देवार्चनं ब्राह्मण तर्पणं च" वाक्य उनके जीवन पर पूर्ण खरा उतरता है।

साधक, अपने ध्यान में उनका दर्शन करते हैं

—अमरनाथ शर्मा
सिराला

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" आचार्य-श्री, बचपन से ही बुद्धिजीवी और छात्रों में मेधावी छात्र थे। इन्हें कई भारतीय भाषाओं का पूर्ण ज्ञान था। स्वभाव के सरल प्रत्येक में समान भाव रखना, दयालु मनोविनोदी और हास्य प्रेमी थे। सन् १९२३ से ये गढ़वाल के सुप्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता श्री आचार्य मुकुन्दराम जी बड़थ्वाल "दैवज्ञ" जी के शिष्यत्व में रहे और इन्हीं से शिक्षा प्राप्त कर ग्रह, नक्षत्र और तारा मण्डल के गणित शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की।

आचार्य जी ने अपने अथक प्रयास से शान्ता नदी के तटवर्ती उच्च शिखर पर वेधशाला का निर्माण कर उसमें देश-विदेश की प्राचीन एवं अर्वाचीन पुस्तकों का विपुल भण्डार संचय किया।

सेठ श्री मफतलाल सेठ श्री मोदी इनके प्रमुख शिष्यों में थे। वे लोग इनके व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित थे। इन्होंने जोशी जी के सामाजिक कार्यों में काफी सहयोग दिया। जोशी जी ने स्कूलों, कालेजों, मठ-मन्दिरों, गरीब विद्यार्थियों को पूरा-पूरा अर्थ सहयोग इन धनियों से दिलाया। देवप्रयाग आर० के० इ० कालेज, डिग्री कालेज और आर० के० संस्कृत महाविद्यालय के उत्थान का श्रेय, श्री जोशी जी को ही रहा।

सन् १९६८ में भारत के राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद जब बद्रीनाथ यात्रा में आये थे, तब उस समय उन्होंने अपनी यात्रा में सर्वप्रथम जोशी जी को निमन्त्रित कर उन्हीं के साथ यात्रा सम्पन्न की। नेहरू जी के परिवार से भी आचार्य जोशी का घनिष्ठ सन्बन्ध रहा।

किन्तु विधि के विधान का किसी को क्या पता था कि जोशी जी संसार छोड़ देंगे। उनके निधन से ज्योतिष विज्ञान की भारी क्षति हुई है।

दि० १७ अगस्त दो प्रहर में इस दुःखद घटना का समाचार पावनपुरी बद्रीनाथ में जैसे पहुँचा कि सारी पुरी में सन्नाटा छा गया। उसी समय बद्रीनाथ के देवप्रयागी समाज ने पं० मुरलीधर जी शास्त्री की अध्यक्षता में एक शोक सभा की और तप्तकुण्ड, मार्कण्डेय शिला में खड़े होकर अपने पूज्यपाद ज्योतिष मार्तण्ड शिरोमणि आचार्य जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मेरी तरह उनके साधक अपनी योग साधना में उनका स्मरण करते हैं। एक दिन जब मैंने उन्हें स्मरण किया तो मेरी योग साधना में उनका कृतित्व, स्पष्ट मुझे अंकित मिला। मेरी तरह अनेक साधक आज अपने ध्यान में उनका दर्शन करते हैं। भगवान उन महान योगी की पुण्यात्मा को शान्ति प्रदान करें।

चाचा जी

—माखनलाल ध्यानी
रानाकोट

चाचा जी की वाणी की मिठास से सभी उनके अपने थे। एक सामान्य किसान से लेकर एक बड़े विद्वान तक चाचा जी के शिष्टाचार और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं था। वे लोगों की श्रद्धा के पात्र और प्रिय दोनों ही थे। उन्होंने सारा जीवन लोगों के बीच घिरे रह कर ही बिताया। वे अस्वस्थ ही क्यों न रहे हों तो भी अपने घर आये लोगों को उन्होंने कभी निराश नहीं किया। भारत के प्रसिद्ध उद्योग समूह "मफतलाल ग्रुप्स" के मनीषियों और भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री माननीय मोरारजी भाई देसाई की, चाचा जी पर अगाध श्रद्धा थी। वे चाचा जी को गुरुवत पूजते रहे हैं। स्वभाव से चाचा जी सरल, मृदुभाषी और व्यवहार में सहिष्णु थे। ज्योतिष के अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के चाचा जी अध्यक्ष रहे। इसलिए वे अपनी वेधशाला में हमेशा देशी और विदेशी मेहमानों से घिरे रहे।

चाचा जी जब तक जिये वे, अन्त तक जन-सेवा में लगे रहे। "मफतलाल ग्रुप्स" की सहायता से उन्होंने अनेक गरीब विद्यार्थियों, असहायों और अपाहिजों को आर्थिक सहायता दिलाई। देवप्रयाग में संस्कृत शिक्षा के प्रसार के लिए वे प्रयत्नशील रहे और समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों के वे मददगार रहे। चाचा जी कहा करते थे "भगवान का दिया है, सभी को सुलभ कराना चाहिए!" उन्होंने कभी अकेले भोजन नहीं किया। एक दो अतिथि उनके साथ अवश्य ही 'जीमे' हैं।

चाचा जी के सर्वतोभद्र जीवन के अंत से देवप्रयाग श्रेय और श्रीहीन हो गया है। एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नक्षत्र अस्त हो गया है। राष्ट्र के लिए चाचा जी का निधन एक अपूर्णनीय क्षति है। वे रानाकोट और देवप्रयाग के परिवारजन, बंधु-बांधव और देश तथा विदेश के बहुसंख्यक प्रशंसक समाज और मित्र मण्डली को शोक-संतप्त छोड़कर, गोलोकवासी हो गये हैं। चाचा जी आज हमारे बीच नहीं हैं, उनका स्नेह और आशीर्वाद सदा हमारे साथ रहेगा। श्रद्धानत मैं उन्हें अपनी, शोक-श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

महान् उदारचेता मनीषी

—डॉ० कृष्ण धर शर्मा
प्रवासी

हृषीकेश से मोटर द्वारा श्री बद्रीनाथ के लिये जब हम हिमालय की उपत्यका में, भागीरथी एवं अलनन्दा के संगम-स्थल पर अवस्थित देवप्रयाग के समीप पहुँचते हैं तो हमारी दृष्टि अनायास ही आकृष्ट करता है वृक्षों की झुरमुट में अपनी महत्ता को आवृत किये हुये सुधा-धवलित-शुभ्र-भवन-समूह, जो संभवतः अपनी स्वामी की ही महनीयता को समायित किये हुये हैं। यहां जो भी एक बार आया, उसे इसके अधिष्ठाता आचार्य प्रवर पूज्य श्री चक्रधर जी जोशी से जो अगाध-स्नेह एवं संरक्षण मिला उससे वह यहीं का हो गया तथा उसका हृदय सदैव इस महान् तीर्थ में आकर आचार्य जी के श्री-चरणों के दर्शन की आकांक्षा से परिपूरित रहने लगा।

रत्नों की निधि के रूप में ख्यात हिमाद्रि के इस छोटे से किन्तु सांस्कृतिक एवं धार्मिक गरिमामयी नगरी में ही जोशी जी का परिवार अत्यन्त वैदुष्य एवं चारित्य सम्बन्ध था। अतः लोक मानस में अत्यन्त समाहृत था।

इन्हें जन्मजात-प्रतिभा, विरासत में प्राप्त हुई। इस प्रतिभा को पूर्णता प्रदान की ज्योतिष-मनीषी पं० श्री मुकुन्द दैवज्ञ जी ने। यही नहीं, तत्कालीन विद्वान् पुरुषों, सर्वश्री नरहरि शास्त्री, पं० हरिशरण पालीवाल, कविरत्न श्री सदाराम बाबुलिया, पं वृन्दावन ध्यानी एवं श्री रामाश्रय पालीवाल का सान्निध्य एवं सहयोग भी उन्हें प्राप्त था। वे सदा ऐसे महापुरुषों की खोज में तत्पर रहते, जिनसे उन्हें यत् किञ्चित् भी ज्ञानाम्बु की उपलब्धि हो सके। देवप्रयाग में सौभाग्य से ऐसे महापुरुषों का आवागमन होता रहता और जोशी जी का भवन उनका आवास बनता रहता था। वे ज्योतिष के मूर्धन्य पण्डित थे किन्तु संस्कृत काव्यों एवं कर्मकाण्ड और प्राकृत, पाली, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं तथा साहित्य पर भी उनका असाधारण अधिकार था। वे सभी भाषाओं के मर्मज्ञ विद्वान् थे।

सम्पूर्ण भारत में उनके सहस्रशः शिष्य एवं प्रशंसक हैं जिनमें उच्च पदस्थ राजनयिक, अधिकारीगण एवं धनी वर्ग के लोग हैं। सामान्य जनों के लिये भी उनके हृदय में जो अतिशय करुणा और अगाध स्नेह था, वह उन्हें अतीव महान् बना देता है।

गुरुवर परम आस्तिक थे और घन्टों तक पूजन में तत्पर रहना उनकी दैनिक क्रिया का अंग था। उनके जीवन पर गान्धी जी का सर्वाधिक प्रभाव था और यही कारण था उनका सहज-अनुग्रह समान रूप से सबको प्राप्त होता था। स्वतंत्रता के आन्दोलन के समय उनका भवन देश सेवकों से भरा रहता और उन्हें आचार्य प्रवर से बहुविध सहायता प्राप्त होती थी।

ज्योतिष-शास्त्र के प्रति निष्ठा एवं प्रेम उनमें स्वाभाविक था और मुख्यतया इसी से उन्हें अनिर्वचनीय

प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी। वर्तमान में ज्योतिष में फैली विसंगतियों को दूर करने के लिये उन्होंने अनेक प्रयत्न किये। जोशी जी ने वर्षों तक श्री बदरिकाश्रम के चरणपादुका स्थान में साधना की। भगवती भुवनेश्वरी उनकी इष्ट थीं और देवप्रयाग से १८ मील दूर विख्यात शक्तिपीठ चन्द्रबदनी उनकी साधना स्थली थी। अतः जोशी जी को जहाँ भगवती शारदा का स्नेह प्राप्त था वहीं माँ लक्ष्मी का अनुग्रह भी था। उनका ज्ञान-वैभव अथवा सम्पदा स्व हेतुक नहीं प्रत्युत जन-जन के लिये प्रयुक्त थीं और उनका द्वार सदा सहायता के लिये खुले रहते थे।

देवप्रयाग में स्थापित 'समाज संस्थान' भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से प्रारंभ हुआ था जिसके द्वारा समाज के दुर्बल वर्ग के लोगों, निराश्रितों एवं विधवाओं को जीवन-यापन की सहायता प्रदान की जाती है। "श्री मफतलाल व्यापारिक प्रतिष्ठान" ने आचार्य जी की प्रेरणा पर ही देवप्रयाग में एक महाविद्यालय की स्थापना का संकल्प किया है। किन्तु हमारे दुर्भाग्य से आचार्य-प्रवर के जीवन काल में उनका स्वप्न साकार न हो सका। उनके असमय में ही गो-लोकवासी होने से यह संकल्प अधूरा रह गया है। उनकी आकांक्षानुरूप महाविद्यालय की पूर्ति ही, आचार्य-प्रवर श्री चरणों में विनम्र श्रद्धाञ्जलि होगी, कृतज्ञता ज्ञापन होगी।

करे तो कोई कमाल पैदा

—सुन्दरलाल ध्यानी
रानाकोट

१७ अगस्त, १९८० को अचानक हृदयगति रुक जाने से भारत भूमि के एक और सपूत श्री आचार्य चक्रधर जोशी के निधन का समाचार जब मुझे मिला तो ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो मेरे शरीर के ऊपर वज्रपात हुआ हो। अभी हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री वृन्दावन ध्यानी की अचानक हृदयगति रुक जाने से निधन होने का दुःख पूरी तरह मिट भी नहीं पाया था कि इसी बीच एक और दुर्घटना हो गई। स्व०श्री वृन्दावन ध्यानी मेरे बड़े भाई थे, आचार्य जी मेरी फूफी के एक मात्र पुत्र थे। देवप्रयाग में रहने पर भी उनकी बराबर हम लोगों पर निगाह लगी रहती थी। उनके अचानक निधन से मेरे परिवार की सारी कड़ी टूट कर बिखर सी गई है। आचार्य जी से सम्बन्धित कई भूली-विसरी बातें आँखों में घूम रही हैं। समझ में नहीं आता कि उनके सम्बन्ध में क्या लिखूँ। मुझे जब आचार्य जी के छोटे भाई तथा मेरे बड़े भाई साहब श्री वाचस्पति गैरोला ने आचार्य जी के सम्बन्ध में यह बताया कि वह एक श्रद्धांजलि अंक निकालने जा रहे हैं, तो सोचा कि उस महान् आत्मा के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि तभी सार्थक हो सकती है, जबकि देवप्रयाग के नागरिक खासकर देवप्रयाग का युवा वर्ग आचार्य जी के बताये मार्ग पर अग्रसर होंगे। तथा जो थाती वह छोड़ गये हैं उसके रख-रखाव की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर दृढ़ता से लेंगे।

एक बार मैंने आचार्य जी से पूछा था कि इस नक्षत्र वेधशाला के मुख्य कार्य क्या होंगे? तो उन्होंने बड़े दृढ़ शब्दों में कहा था—पंचांगों में जो अनेक प्रकार के मतभेद हो गये हैं, उनका गणित द्वारा एकीकरण करना तथा

ज्योतिष शास्त्र का प्रकाशन करना सम्मिलित हैं। यही नहीं, प्राचीन ग्रन्थों का उद्धार, व आधुनिक रूप से ज्योतिष शास्त्र पर गहरा अनुसन्धान का कार्य करना होगा। इसके पश्चात् तो आचार्य जी उक्त नक्षत्र वेधशाला में लीन हो गये। जिस साहस और लगन का परिचय उन्होंने दिया वह सर्वविदित है। विश्व साहित्य से भरा उनका "लक्ष्मीधर विद्या मन्दिर" भी कम महत्व का नहीं है। यह भी अपने में एक ही पुस्तकालय है, जिसमें प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ एवं अर्वाचीन, लगभग २२ हजार ग्रन्थों का विपुल चयन है। चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के लिखे हुए अनेक प्रकाशित ग्रन्थ भी यहाँ मौजूद हैं।

"दि हिमालय आस्ट्रोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट" के नाम से प्रकाशन विभाग भी चल रहा है जिसमें चार वृहद् ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

आचार्य जी ने गढ़वाल के सैकड़ों युवकों को तन-मन-धन से जोवन पथ पर चलने की असीम प्रेरणा दी, इस कार्य के लिए प्रति वर्ष १४ से २० हजार रुपये छात्रवृत्ति के रूप में इन युवकों को देते थे। सैकड़ों युवकों को रोजी-रोटी पर लगाया था। देवप्रयाग के तो करीब-करीब सभी युवकों को उन्होंने रोजी-रोटी पर लगाया है। यह क्रम उनका अन्तिम क्षण तक चलता रहा। दया की यह सौम्य मूर्ति आज भले ही हमारे बीच नहीं रही, और न रहा हिन्दू संस्कृति का वह हिमालय सा अडिग प्रकाण्ड पाडित्य। उनका दिया हुआ उच्च कोटि का साहित्य, उदारता, विशाल नक्षत्र वेधशाला, और इससे ऊपर वात्सल्य वह हमेशा हमारे बीच रहेगी।

कौन है जो इस नश्वर संसार से न जायेगा ? आखिर एक दिन तो चोला त्यागना ही पड़ेगा। पर इस नश्वर जगत में आकर हमने कुछ भी भला काम न किया तो कौन हमें आचार्य जी की भाँति याद करेगा ? आचार्य जी के लिए हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि जिस सेवा, तप, त्याग की भावना उनमें मौजूद थी उसका पूर्ण रूप से पालन करें। कहा भी तो है—

हुजूं में बुल - बुल किया चमन ने
किया जो गुल ने कमाल पैदा।
कमी नहीं कद्र दां की अकबर
करे तो कोई कमाल पैदा॥

....यह तो औरों का जीवन है....

—भैरवदत्त भट्ट
देवप्रयाग

१६ अगस्त १९८० का दिन। ज्योतिष के क्षेत्र में एक दुर्भाग्यपूर्ण दिन! उस दिन महान् ज्योतिष विज्ञ आचार्य चक्रधर जोशी हमेशा के लिए विदा हो गये! आचार्य जोशी महान् विद्वानों और सर्वगुण संपन्न महापुरुष थे। आचार्य जी के व्यक्तित्व में एक अद्भुत आकर्षण था। जो उनके सम्पर्क में आया वह उन्हें भूल नहीं सका। मुझे भी पाँच-सात वर्षों से उनके निकट सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

समदर्शिता आचार्य जी के व्यक्तित्व का एक महान् गुण था। धनी-निर्धन, वृद्ध-बाल सभी से उनका, समान व्यवहार था।

जीवन में समस्त सुविधायें प्राप्त होने पर भी उनका जीवन सरल और सादा रहा। प्रातःकाल उठते और नित्य कर्मादि से निवृत्त होकर प्रभु-चिन्तन में ध्यानावस्थित हो जाते। उन्होंने आजीवन खद्दर धारण किया और वे औरों को भी खद्दर अपनाने के लिए प्रेरित करते थे। विचित्र और दुर्लभ वस्तुओं को एकत्रित करने का उन्हें अत्यधिक शौक था।

'अतिथि देवो भवः' को मूलमन्त्र मानकर वे अतिथियों का पूर्णसम्मान करते थे। आचार्य जी जीवन पर्यन्त अध्ययनशील रहे। जो भी नवीन पुस्तक उनके पुस्तकालय को प्राप्त होती वे उसे हृदयंगम अवश्य करते। विभिन्न विषयों की पुस्तकें एकत्र करने का उन्हें बड़ा शौक-सा रहा। 'भृगुसंहिता' को प्राप्त करने के लिए उन्हें लुधियाना तक जाना पड़ा। बारहवीं शताब्दी की एक दुर्लभ पुस्तक प्राप्त करने के लिए उन्होंने तमिलनाडु के एक सुदूरवर्ती गाँव तक पैदल यात्रा की।

भविष्य के प्रति उनको पूर्वाभास हो जाता था। देश, काल, पात्रानुसार भविष्यवाणी करते थे, जो सत्य सिद्ध होती थी। व्यक्ति के चेहरे को ही देखकर, उसके भविष्य का अनुमान लगा लेते थे। ज्योतिष के माध्यम से उन्होंने कई समस्याओं का समाधान किया। अनेक रोगियों को वे "Medical Astrology" के आधार पर कष्टकारक ग्रहों की शान्ति का उपाय बता देते। उनके पाण्डित्य एवं विलक्षण प्रतिभा के कारण ही भारत के प्रमुख उद्योगपति उनके शिष्य बने। मोरारजी भाई के साथ उनका वर्षों तक घनिष्ठ संबंध रहा और श्री मोरारजी भाई के प्रधान-मंत्री पद को प्राप्त करने की भविष्यवाणी उन्होंने कई वर्ष पूर्व कर दी थी।

अनेक उपलब्धियों के अर्जन और सम्मान की प्राप्ति के पश्चात् भी, आचार्य जी अभिमान से कोसों दूर रहे।

परोपकार उनका उत्कृष्ट गुण था। अस्वस्थता और कार्याधिक्यता के कारण उनका शरीर अति दुर्बल हो गया तो भी वे जनसेवा में लगे रहते थे। डाक्टरों ने जब उन्हें लोगों से मिलना-जुलना बन्द करने की सलाह दी तो उन्होंने कहा—

"मेरा जीवन तो कभी का समाप्त हो चुका। यह तो औरों का जीवन है। इसलिए औरों का काम करने के लिए क्यों पीछे रहा जाय?"

देवप्रयागी समाज में ऐसा महामानव, आगे की पीढ़ी में क्या कभी फिर पैदा होगा?

नर ही नारायण हैं

—दयानन्द कोटियाल
गायलीपुरम्, देवप्रयाग

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता में (अ० ६ श्लोक ४० से ४५) अर्जुन को जन्मान्तरण विज्ञान के माध्यम से जीव (मानव) की निरन्तर पूर्णता की ओर गमन की प्रक्रिया बतायी है। आचार्य चक्रधर जोशी जी का जीवन भी, इस को चरितार्थ करता है। आचार्य जोशी जी के पूर्वजन्म में योगी पुरुष होने का गूढ़ रहस्य, वाराणसी के महान् योगी श्री सुधिरंजन भादुड़ी महाशय ने प्रकट किया था।

उद्भट्ट विद्वान् सिद्ध पुरुष स्वनामधन्य पं० चंडीप्रसाद वैद्य जी के सुयोग्य पट्ट शिष्य आचार्य दैवज्ञ मुकुन्द राम जी बड़थ्वाल के चरणों में बालक चक्रधर को विद्याध्ययन हेतु रखा गया। जोशी जी का बाल्यकाल मंत्र-स्तोत, पूजा-पाठ एवं निरन्तर कठिन विद्याध्ययन में व्यतीत हुआ। उन्होंने वैदिक साहित्य, तंत्र-शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, पुराणेतिहास, वैद्यक, दर्शन, भूगोल, संस्कृत-साहित्य, संगीत चित्रकला, परिहास आदि विषयों का विशेष रुचि लेकर गहन अध्ययन किया। विद्या-प्रेम जोशी जी की अनोखी प्रवृत्ति थी। अक्षरारंभ के साथ ही, ज्ञान के विस्तारण की उनकी ललक जागृत हो गयी थी।

बाल्यावस्था से ही पुस्तकों के प्रति एक लगाव होने के कारण, जोशी जी ने प्रत्येक पुस्तक-पंचांग को संग्रह करके, उसे पुस्तकालय का रूप देना प्रारंभ कर दिया था।

युवावस्था में वे देशाटन हेतु निकल पड़ते। वहाँ संप्रदायाचार्यों के बीच अपनी बुद्धिमत्ता और शास्त्र बल के कारण, पर्याप्त सम्मान अर्जित किया। अनेक बार भारत-भ्रमण किया। अनेक दिव्यात्माओं और सिद्ध पुरुषों से साक्षात् किया। उनमें ज्ञानार्जन की ललक इतनी थी कि कहीं कोई कागज देखा, ज्ञान की बात देखी तो संग्रह में रख ली। ग्रन्थ संग्रह में आचार्य जी की बुद्धि अति पटु और लचीली थी। इस सम्बन्ध में उनके क्रियाकलाप अति रोचक और श्लाघनीय होते थे।

अपनी अध्ययनशील प्रवृत्ति और देशाटन के फलस्वरूप उन्होंने मराठी, गुजराती, तेलुगु, तमिल, उड़िया, बंगला, अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं का अध्ययन किया। ज्योतिष के विशद् व अपार अध्ययन से इनको समुचित अर्थलाभ और यश:श्री मिली।

प्रौढ़ावस्था में आचार्य जी सिद्ध कोटि के महापुरुषों की पंक्ति में आ गये थे। क्यों न आते ? अनेक दिव्यात्माओं और सिद्ध पुरुषों का इन्हें आशीर्वाद जो प्राप्त था। उनके स्वर सें साक्षात् सरस्वती मुखरित होती थी।

आचार्य जी विद्या-प्रेमी थे वे अर्थ-प्रेमी नहीं थे। किंचित धन और विशाल धनराशि को वे समान रूप से ग्रहण करते थे। सेवा के समक्ष वे अर्थ को महत्त्व नहीं देते थे। धनी सज्जनों से अनेक निर्धन छात्रों को छात्रवृत्तियाँ तथा विधवाओं-निराश्रितों को आर्थिक सहायता दिलाने का क्रम उनका आजीवन चलता रहा। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण द्रष्टव्य है—

"कर्म (भाग्य) प्रधान है। नर ही नारायण बनता है। वे धन्य हैं जिनमें गुण अधिक और अवगुण कम है। प्रभु का अनुग्रह मानना चाहिए। ईश्वर, निरन्तर ऐसी दिव्य-विभूतियों का सृजन कर कृपा करते रहें।"

उनकी उपलब्धियों पर; समाज गर्व करेगा

—प्रो० नरेन्द्र शर्मा, मेरठवाल

स्वर्गीय जोशी जी की उपलब्धियों पर समस्त देवप्रयागी समाज अनन्तकाल तक गर्व करना रहेगा। शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किए वे बेमिसाल हैं। आप कई वर्षों तक रघुनाथ कीर्ति इन्टर कालेज, देवप्रयाग, की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रहे। उनके अनुरोध पर भारत के प्रमुख उद्योगपति श्री अरबिन्द मफतलाल ने कालेज के साइन्स ब्लाक का निर्माण किया। इसमें विज्ञान के अध्ययन की सुविधा का लाभ, इस क्षेत्र तथा आस-पास के इलाकों से आने वाले विद्यार्थियों को प्राप्त हुआ और आज उनमें से अनेकों विद्यार्थी सरकारी एवं निजी क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं, जोस्व० जोशी जी के सामाजिक कार्य के सजीव प्रमाण हैं। शिक्षा सुविधाओं की व्यवस्था के प्रति उनमें, अटूट लगाव था। देवप्रयाग में मफतलाल परिवार द्वारा डिग्री कालेज इसका प्रमाण है। समाज को सांस्कृतिक सम्पदा को अक्षुण बनाए रखने के लिए संस्कृत, कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष आदि विषयों को लोकप्रिय बनाने की उनकी हार्दिक इच्छा थी। इन विषयों के अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण एवं समुचित व्यवस्था प्रदान करने के लिए उन्होंने देवप्रयाग से थोड़ी दूर, दशरथाचल पर, एक पुस्तकालय तथा नक्षत्र वेधशाला की स्थापना की।

नक्षत्र वेधशाला के समृद्ध, पुस्तकालय का लाभ गढ़वाल विश्व विद्यालय में शोधकार्य कर रहे अनेक,

विद्यार्थी समय-समय पर उठाते हैं। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वे 'प्राच्य विद्या संस्थान' की स्थापना में संलग्न् थे।

जोशी जी विनोदी स्वभाव के थे। सरलता और सहजता उनके व्यक्तित्व की अनूठी विशेषताएँ थी। उनके निवास स्थान, नक्षत्र वेधशाला में मिलने वाले लोगों का तांता निरन्तर बना रहता था। देवप्रयाग में से गुजरने वाला प्रत्येक व्यक्ति जिनमें बुद्धिजीवी, राजनैतिक, व्यावसायिक एवं प्रशासक वर्ग के अतिरिक्त ग्रामीण जनवर्ग के लोग सम्मिलित थे, जोशी जी से मिलने नक्षत्र वेधशाला की चढ़ाई चढ़ना सहर्ष स्वीकार करते थे। कोई उनसे अपनी जन्मकुण्डली दिखलाना, तो कोई अपने व्यापार से सम्बन्धित प्रश्नों पर उनकी प्रतिक्रिया ध्यानपूर्वक सुनता। आने वालों का यह सिलसिला सुबह से संध्या तक चलता रहता। वे नित्यक्रम से निवृत होकर अपने कार्यालय में बैठ जाने, और मिलने वालों से भेंट एवं उनकी शंकाओं का समाधान, विनोद पूर्ण वातावरण में, तब तक करते रहते जब तक उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विद्यादेवी; यह कह कर वहीं बैठ नहीं जाती कि, दिन के २ बज गये हैं, अब भोजन कर लीजिए। भोजन के बाद थोड़े विश्राम के पश्चात् वे, पुनः शाम को वेधशाला की 'छतरी' में बैठकर लोगों से भेंट करते थे। जोशी जी का अधिकांश समय जन्मकुण्डलियों के निर्माण एवं घर में आए लोगों के साथ वार्तालाप करने में व्यतीत होता रहा है। अपने इस व्यस्त जीवन के बावजूद प्रतिवर्ष श्रावण के महीने बदरीकाश्रम में नीलकण्ठ पर्वत की तलेहटी 'चरणपादुका' में एक तम्बू में एकान्तवास में चिन्तन करने का उनका क्रम, काफी वर्षों तक चलता रहा इस एकान्तवास में उन्होंने कई पुस्तकों की रचना की जिनमें त्रिकाल संध्या, तथा गदावली विशेष उल्लेखनीय हैं।

स्नेहपूर्वक मुझे सम्बोधित किये उनके ये शब्द 'औ बेटा ठीक छै, बैठ' (आओ बेटा ठीक हो, बैठो)। आज भी मेरी स्मृतियों में सजीव हैं। रोज शाम को उनकी बैठक में थोड़े समय के लिए जाना मेरी एक दिनचर्या सी बन गई थी। समाज के वयोवृद्ध एवं संभ्रान्त व्यक्तियों का जमघट नित्य इनके घर में रहता था। समाज के मेधावी एवं होनहार विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था कराने में जोशी जी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

स्व० जोशी जी द्वारा स्थापित संस्थाएँ एवं उनके द्वारा किये गये कार्य हमारे समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। वे समाज के यशस्वी पुत्र और अमूल्य निधि थे। उनके निधन से जो रिक्तता उत्पन्न हुई है उसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है। आज जोशी जी भले ही हमारे बीच नहीं हैं तो भी उनके द्वारा स्थापित अनेक सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाएँ उनके नाम को अनन्तकाल तक अमर बनाए रखेंगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं उन्हें अपनी श्रद्धा के फल अर्पित करता हूँ।

कोई कहता है हम गरीबों को, कौन देखभाल करेगा

—विश्व बंधु
देवप्रयाग

सन् १९६७-६८ में मैं श्री रघुनाथ कीर्ति इण्टर कालेज में अंग्रेजी के प्रवक्ता पद पर कार्यरत था। एक दिन कुछ छात्रों एवं प्राध्यापकों ने दशरथ पर्वत की चोटी पर पिकनिक मनाने का कार्यक्रम बनाया। रास्ते में आचार्य जोशी जी की 'नक्षत्र-वेधशाला' पड़ती थी। बड़े दिनों से उनके दर्शनों की लालसा थी। अतः प्रथम उन्हीं के दर्शन किये। जोशी जी बड़ी आत्मीयता से हमसे मिले और वेधशाला के कार्यकलापों से उन्होंने हमें परिचित कराया। एक बड़ी-सी दूरबीन से दिन में ही कई तारों के दर्शन किये। उन्होंने हमें अपना विशाल पुस्तकालय भी दिखलाया।

मुझे इस ग्रन्थालय को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मन में भाव आये कि कहीं यह पुस्तकालय अमेरिका-इंगलैण्ड में होता तो न जाने कितने रूपों में इसका प्रकाशन हो गया होता? आचार्य जी का यह ग्रन्थालय देश को एक महान देन है जिसमें वेद-पुराणादि से लेकर रस-रसायन, कोष, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, इतिहास-भूगोल, जीवनी, पर्यटन-यात्रा, कला और संगीत विभिन्न विषयों के ग्रन्थ और पाण्डुलिपियां हैं।

जोशी जी के दर्शन दूसरी बार करने का सौभाग्य मुझे तब प्राप्त हुआ जब वे हमारे विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर पधारे। उनका व्यक्तित्व सूर्य के समान चमक रहा था। वे हमारे विद्यालय के अध्यक्ष एवं संरक्षक थे।

१४ वर्ष बाद साधु वेष में जब मैं साधना के लिए देवप्रयाग आया तो ज्ञात हुआ कि उन महात्मा का गोलोकवास हो गया है। यह जानकर एक सदमा सा लगा कि एक विभूति अब इस धरा पर नहीं रही। उन महात्मा का जीवन परमार्थ के लिए समर्पित था। यहां रहते हुए अनेक लोगों से संपर्क हुआ। कोई कहता कि जोशी जी के स्वर्गवास से हम तो अनाथ हो गये? कोई कहता उनके अधूरे छोड़े कार्य को कौन करेगा? कोई कहता वे होते मेरी नौकरी पक्की हो जाती? कोई कहता कि हम गरीबों को कौन देखभाल करेगा?" इन सबसे उनके महामानवत्व के दर्शन हुये। आज आचार्य जी नहीं हैं, किन्तु उनका कृतित्व मार्गदर्शन ही आशीर्वाद रूप में इस क्षेत्र एवं देश को प्राप्त है, तदनुरूप आचरण ही उनको वास्तविक श्रद्धाञ्जलि है।

अन्न, यज्ञ का प्रसाद

—मदनमोहन डंगवाल,
देवप्रयाग

१६ जुलाई ८१ गुरुपूर्णिमा को गुरूजी के चित्र के सामने "उत्तरायण" प्रखण्ड में बैठा सोच रहा था कि वह कैसा सुखमय समय था जब गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर जीवन का सुख मिलता था। सभी वर्ग के लोगों के साथ उनका हार्दिक प्रेम, विश्वबन्धुत्व, देश प्रेम की भावना; ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, मूर्ख-विद्वान आदि वर्ग भेद को मूलोच्छेद करने वाली वह महान आत्मा, क्या वास्तव में हमारे बीच नहीं रही ? कभी-कभी विश्वास ही नहीं होता।

"त्याग सबसे महान है" सिद्धान्त को वे हमेशा जीवन में प्रतिपालित करते रहे। निर्धन कन्याओं के विवाह तथा अन्य अनाश्रितों की वे आर्थिक सहायता करते रहे। किसी भी अतिथि को आचार्य जी, भोजन या जलपान किए बिना जाने नहीं देते थे। अन्न को वे "यज्ञ का प्रसाद" रूप में ग्रहण करने का आग्रह करते थे। गीता का यह श्लोक उनके रसोई घर में आज भी अंकित है।

"यज्ञ शिष्टाशिवः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पाया ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥"

आचार्य जी का जीवन—"यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः। चित्ते वाचि क्रियायाच साधुनामेक रूपताः" का मूर्तरूप था। जब वह कहीं भी जाते तो मार्ग में प्रत्येक व्यक्ति से योग-क्षेम पूछते, उन्हें आह्लादित करते थे।

अन्तिम प्रयाण से कुछ समय पूर्व कुछ विदेशी लोग प्रातः ही उनके पास नक्षत्र-वेधशाला में आये। अभी आचार्य जी का स्नान-भोजन भी नहीं हुआ था। संध्या के ४ बज गये थे। स्वास्थ्य भी दोषपूर्ण था। उन सज्जनों से ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों पर विचार-विमर्श चल रहा था। स्नान के लिए बुलाने पर—"स्नान-भोजन से प्रथम देश की प्रतिष्ठा है" उत्तर मिला। बाद को संध्या ७ बजे तक उन लोगों का अतिथ्य कर, सभी शंकाओं का समाधान कर विदा किया। थकान के स्थान पर अस्वस्थ होते हुए भी उनके चेहरे पर अनोखी शान्ति थी एवं आगतों के चेहरे पर श्रद्धावनत आश्चर्य।

बालां त्रिपुर सुन्दरी वन्दे

—देवीप्रसाद पन्त
देवप्रयाग

"श्री लक्ष्मीधर विद्या मन्दिर" में जोशी जी के स्वरचित तथा संग्रहीत ग्रन्थों को देखकर आभास हो जाता है कि इनका शैशव एवं यौवन कठोर अध्ययन एवं मनन में बीता होगा। इन्होंने वियावान जंगलों में रहकर, स्वाध्याय एवं साधनाएं की। इनकी स्मरण शक्ति बड़ी ही तीव्र थी। इनकी प्रवृत्ति थी कि जैसे ही कोई नवीन बात पढ़ी अथवा सुनाई दी वे शीघ्र उसे नोटबुक में अंकित कर दिया करते थे। किसी के जन्म-मरण पर पञ्चाङ्ग में उसी दिनांक प्रविष्ट के आगे समय, नाम, गांव सहित अंकित कर दिया, जिसे उनके संग्रहालय नक्षत्र-वेधशाला में देखा जा सकता है। गौरवर्ण, सुडौल शरीर, श्वेत उत्तरीय वाले जोशी जी मलयज अथवा कुंकुम से द्विरेखांकित भाल और उपनेत्र धारण किये हुये सुशोभित होते थे। प्रातः उठकर नित्यकर्म, संध्यावन्दन से निवृत होकर स्वाध्याय एवं जनहित के लिए अपनी गद्दी पर पद्मासन में आसीन हो जाते थे। छात्रों तथा तीर्थ यात्रियों की सहायता उनके जीवन का मुख्य अंग था।

आचार्य श्री अपनी गुरु भक्ति के लिए भी प्रसिद्ध रहे। "मुकुन्दस्य प्रतिज्ञे द्वे गंगा कोपं च न त्यजेत्" गुरु वाक्य को धर्म मानकर उन्होंने उसका जीवन पर्यन्त पालन किया। गुरु शिष्य परम्परा निभाते हुए जीवन के ७० वर्ष व्यतीत किए। जब वे श्रम अनुभव करते तो विश्राम के लिए अपनी लेखनी मेज पर रखकर बायें हाथ से हृत्कमल सहलाते हुए, दायें हाथ से कपालास्थितियों का विपीड़न करते, जृम्भित अवस्था में यही शब्द उच्चारित करते—"बालां त्रिपुर सुन्दरीं वन्दें" तथा "वन्दे श्री नारसिंह······ओड केदार-गङ्गाम्।"

हस्तलिखित पुस्तकों के बस्तों को बांधने के लिए उनका आदेश था कि—"इन्हें मित्रवत् खोलो और शत्रुवत बांधो।" अब उनकी स्मृतियां ही अवशेष रह गई हैं।

—

महामानव

—राविज कोटियाल
जार्जिया विश्वविद्यालय, एथेन्स

बचपन का जो समय मैंने देवप्रयाग में बिताया उसमें जिन व्यक्तियों का सान्निध्य मुझे मिला, उनमें श्रद्धेय जोशी जी का स्थान प्रमुख है। स्मृति के झरोखे से जब भी शैशव में झांकता हूँ तो पाता हूँ कि उस महामानव का अगाध आध्यात्मिक स्नेह और भौतिक वरद हस्त मेरे ऊपर रहा है। मुझे रोमांच हो आता है। कितना भाग्यशाली था मैं ?

वे पौर्वात्य दर्शन एवं भारतीय प्राच्यविद्या के जोवन्त स्वरूप थे। पिछले वर्षों में केवल तीन बार उनके दर्शन कर सका। पिता (श्री दयानन्द जी) के शब्दों में—"वे चले गये, मैं ठगा सा देखता रहा; ऐसे व्यक्ति न इधर हुआ और न हैं, आगे की भगवान जानें।"

समस्त क्षेत्र, श्रीहीन हो गया

—दीनानाथ पंचपुरी,
देवप्रयाग

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद आचार्य श्री जोशी जी के आकस्मिक निधन से मन खोया-खोया, भ्रमित सा रहता है। यह विश्वास नहीं होता कि वे हमें छोड़कर चले गये हैं। हमारी प्रेरणा के श्रोत थे, उनके जाने से समस्त क्षेत्र श्रीहीन हो गया है। अपने में उनका व्यक्तित्व कुछ भिन्न ही था। उनके द्वार पर आकर दुखी, वृद्ध, किशोर, युवा कोई भी हो, उनके दर्शन करके कृत-कृत्य हो जाते थे। वे सबसे प्रेम से मिलते, कुशल-क्षेम पूछते और आगंतुक की सेवा करते अघाते नहीं थे। प्रसंगवश स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा होती तो कहते, भाई जब कोई बहुत दूर से अपनी समस्या लेकर आता है, उसकी शंका का समाधान न करूँ तो उसे तो दुख होगा ही। मुझे स्वयं भी कर्त्तव्य न करने पर दुख होता है।"

अभी क्या है ?

—दिव्य विरागी (मोहनलाल बाबुलकर)
देवप्रयाग

अभी क्या है, को न तो कोई देख पाया है और न ही समझ पाया है। इस अभी क्या है ? ने हमें यह दूसरी बार ठगा है। पं० वृन्दावन ध्यानी समाज के एक प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति और व्यक्तित्व थे। हम लोग उनका अभिनन्दन करना चाहते थे। उनके लेखों का संग्रह इस अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित कर, उनके सुकृत्यों के लिए, सामूहिक रूप में कृतज्ञता प्रकट करना चाहते थे। लेकिन अभी क्या है ? के रहस्य ने उन्हें हम से अनायास ही छीन लिया और हम देखते ही, रह गये। जीवन में ऐसा पछतावा देवप्रयाग के प्रबुद्ध जनों को कभी नहीं हुआ। उनके निधन के बाद उनके सुपुत्र पं० माखनलाल ध्यानी के सुप्रयास से उन्हें 'पं० वृन्दावन ध्यानी स्मृति ग्रन्थ' प्रति समर्पित किया गया। उत्तराखण्ड में यह पहला अवसर और पहला स्मृति ग्रन्थ प्रति समर्पण समारोह था, जिसका आयोजन श्री बदरीनाथ जैसे पुण्य धाम में २३ जून १९७३ को किया गया। लेकिन पं० वृन्दावन ध्यानी का अभिनन्दन न करने की सरसराहट हमारे दिल-दिमाग में हमेशा बनी हुई है।

एक बार इस तरह के भय से हम मुक्त नहीं हो पाये थे कि साहस नहीं जुटा पा रहे थे कहने का अथवा सार्वजनिक रूप से घोषणा करने की। विगत सात-आठ वर्षों से आचार्य जी का स्वास्थ्य जिस तरह खराब हो गया था, उनकी इस अस्वस्थता के भय से कुछ कहने का साहस बार-बार सोचने पर भी हम जुटा नहीं पाये थे। 'समाज सुधार संस्था देवप्रयाग' के प्रमुख व्यक्ति श्री भैरवदत्त भट्ट से आचार्य पं० चक्रधर जोशी के अभिनन्दन की बात विगत दो वर्षों से चल रही थी। पिछले अनुभव और आचार्य जी की रुग्णता का भय हम पर छाया था। यद्यपि इस योजना के प्रारूप पर आपस में काफी पत्र व्यवहार हो चुका था, तो भी अभी ठहरो देवप्रयाग डिग्री कालेज बनने दो। आचार्य जी के सुकृत्यों की अपरिमित संख्या में देवप्रयाग डिग्री कालेज के साथ 'प्राच्य विद्या अकादमी' का नाम जुड़ने दो। फिर भव्य और दिव्य समारोह का आयोजन होगा। लेकिन अन्दर का भय न जाने बार-बार क्यों कचोटता रहता था। मैं श्री भैरवदत्त भट्ट को बार-बार टोकता रहा और फिर एक दिन आँखें मूंद कर भय को बिसारते हुए हम, आचार्य जी की वेधशाला पहुँच ही गये।

पिछले सितम्बर की बात है। देवप्रयाग से वेधशाला की चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते अनेक विचार आते रहे। कैसे कहें ? क्या कहें ? सभी के सामने कहें या अकेले में कहें ? फिर सोचा उनसे कहें तो क्या कहें ? यह कहने का कौन-सा तुक है। किसी के सुयशपूर्ण सुकृत्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के लिए, व्यक्ति विशेष से पूछना क्यों ? लेकिन सार्वजनिक रूप से इस तरह की घोषणा करने से पहले श्री भट्ट जी के विचार से आचार्य जी की अनुमति अथवा उन्हें जानकारी होना जरूरी थी। वेधशाला में आचार्य जी की दिव्यता प्रदीप्त थी। विद्युत प्रकाश से उनका प्रकोष्ठ जगमगा रहा था। उनके साथ बैठे थे देवप्रयाग डिग्री कालेज के श्री सुन्दर लाल शाह और एडवोकेट श्री रघुनाथ प्रसाद पंडित। श्री भैरव दत्त भट्ट और मैं जब अन्दर पहुँचे तो आचार्य जी की स्नेह मिश्रित वाणी मुखर हो उठी।

संक्षिप्त-सा नाम पुकारा उन्होंने हमारा। कितनी ममता और कितना स्नेह था उनकी वाणी में। मुझे पहली बार नौकरी के चक्कर में आचार्य जी के सान्निध्य से दूर रहने की मजबूरी पर क्षोभ हुआ। उनके मुस्कराते चेहरे की चित्ताकर्षकता ने हम लोगों को विस्मृत कर दिया। अपने आपको भूलकर हम, ज्ञान और बुद्धि के प्रकाश की चमक में खो उठे। चारों ओर ज्ञान ही ज्ञान भरा पड़ा था और ग्रन्थों के बीचों-बीच बैठे हुए श्री आचार्य जी, ज्ञान और विज्ञान की नवीनतम पुस्तकों और पत्रिकाओं से घिरे हुए। वे दिव्य रूप के पोषक थे। उनकी बैठक में एक अलौकिक भव्यता व्याप्त रहती थी। आने वाले इस भव्यता और दिव्यता की चमक में खो जाते थे। हर बार कोई न कोई नयी चीज उनकी बैठक में देखने को अवश्य मिलती थी। ऐसी भव्यता और दिव्यता में आचार्य जी के स्नेही स्वर की मिठास आने वाले को अपनत्व की समरसता प्रदान करती थी।

हम अन्दर-ही-अन्दर विचारों में डूबते रहे। एक दूसरे की ओर देखते अवसर की ताक में थे। लेकिन वही अदृश्यमय हमें दुविधा में डाले था। श्री सुन्दरलाल शाह ने डिग्री कालेज के विषय में जब कुछ निर्देश चाहे तो डिग्री कालेज की चर्चा के साथ ही आचार्य जी ने 'प्राच्य विद्या अकादमी' के पंजीकरण हेतु तैयार किये कागजों को मेरे आगे सरका दिया। दायित्व के निर्वाह की ऐसी अपूर्व आकांक्षा और निष्ठा थी उनमें। मैं कागजों को पढ़ता गया। वे लगातार मेरी ओर देखते रहे। मैंने पाया वे अत्यधिक भावुक हो उठे हैं, उनकी आँखों की चमक ने हम सभी को आत्म-विभोर कर दिया। वेधशाला, ग्रन्थागार और प्राच्य विद्या अकादमी-ज्ञान भी नित नवीन जुड़ती परम्परा।

आचार्य जी को इस ओर उन्मुख होते देख श्री भैरवदत्त भट्ट ने मुझे संकेत किया। मैंने डरते-डरते अपने मन की बात कह दी, "आपके ऋण से समाज उऋण नहीं हो सकता तो भी हम कृतज्ञ होंगे यदि आप सामाजिक दायित्वों के निर्वाह में, समाज के प्रबुद्ध वर्ग के प्रस्तावित अभिनन्दन का आग्रह स्वीकार करने की कृपा करें।"

मेरे कहने पर श्री सुन्दरलाल शाह के चेहरे पर मुस्कराहट और प्रसन्नता एक साथ झलक उठी। आचार्य जी आत्म-प्रशंसा से हमेशा दूर रहे हैं। हमारे प्रस्ताव को सुनकर कुछ पल वे निःशब्द रहे। दूसरे ही क्षण बोल उठे, अभी क्या है?

हमारे बार-बार के आग्रह करने पर वे किसी तरह कुछ बोलने से चुप हो गये। सभी के चेहरों पर सन्तोष झलक उठा। काफी देर हो चुकी थी अँधेरा घिरने लगा था। दूसरे दिन उनके साथ खाना खाने का सौभाग्य मिला। वे प्रसन्न चित्त थे। एक लम्बे समय के बाद उनके साथ बैठने का अवसर मिला था। ग्रन्थागार की पुस्तकों और पाण्डुलिपियों के लाल-लाल वस्त्रों को देखकर लौटने का मन नहीं करता था। लेकिन नौकरी करनी थी, वह भी ऐसी नौकरी जिसमें बौद्धिक विलक्षणता और प्रतिभा के लिए कोई स्थान नहीं था, लौटना पड़ा। चलने लगे तो वे वेधशाला के 'गेट' तक आये और उन्होंने स्नेह से मेरे कन्धों पर हाथ रख कर कहा था—भूलना नहीं अपनी पुस्तकें भेजना, फिर कब आओगे? मैं उनके चरण स्पर्श के लिए झुका तो उनका स्नेह और आशीर्वाद पाकर आत्मविभोर हो उठा। न चाहते हुए भी उनका सान्निध्य छोड़ना पड़ा।

अचानक १९-८-८० के आकाशवाणी के प्रसारण में आचार्य जी के आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार सुना तो चेतना शून्य हो उठी। जड़ता ने घेर लिया। न कुछ कहते बना न सुनते बना। एक रिक्तता सी छा गयी। उनका सारा जीवन चल-चित्र की तरह आँखों के सामने प्रतिबिम्बित होने लगा। न रुदन न आँसू, सिर्फ अभी क्या है? की काली छाया का भय आतंकित करने लगा। यह भय हमारी एक दूसरी महाविभूति को निगल गया और

हम देखते रहे, इन्तजार करते रहे, अभी क्या है का ? एक ऐसा इन्तजार जिसे कभी कोई न तो समझ पाया है और न ही जिससे कोई पार पा सका है। दिव्य बिरागी के दिल की बात दिल ही में रह गई। वे दिव्य और भव्य पुरुष वेधशाला और ग्रन्थागार के प्रति हमसे कर्त्तव्य के निर्वाह की उपेक्षाएँ करते हुए, महा प्रयाण कर गये। उन दिव्य पुरुष के अभिनन्दन की साध हम आज भी अपने दिलों में संजोये हैं। काश हमें अभी क्या है ? मायारूपी ठगनी ने न ठगा होता। भगवान की इच्छा है। स्वर्गीय पुण्यात्मा को दिव्य विरागी-केतकी का शत-शत प्रणाम।

शायद कहीं से पुकार उठें

—श्रीमती अंजना जितेन्द्र कुमार सिन्धी
देवप्रयाग

मुझे बचपन में ही पिताजी ने, देवप्रयाग से बाहर अध्ययन करने के लिए श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी भेज दिया था। पिता जी चाहते थे कि हम विभिन्न वातावरण में रहकर जीवन की वास्तविकताओं का नजदीक से अध्ययन, एवं अनुभव करें।

पाण्डिचेरी से लौटने के बाद मुझे उनके गोलोकवास तक, साथ रहकर उन्हें समझने और उनका प्यार पाने का सौभाग्य मिला। मैंने कभी भी किसी को उनसे असन्तुष्ट हुए लौटते नहीं देखा।

जब कभी मैं उन्हें एकान्त में घूमते हुए पाती तो, उनके पास बैठ जाती। ऐसे क्षण कभी ही; सौभाग्य से मिल पाते थे, क्योंकि वे हमेशा आगन्तुकों से घिरे रहते अथवा स्वाध्याय या लेखन में लीन रहते थे। "तस्यैव जीवनं श्लाघ्यं यः परार्थं हि जीवितः" यह उनका आदर्श था। कभी-कभी वे अपने जीवन की घटनाओं को लिपिबद्ध कर दिया करते थे। कहीं उन्होंने लिखा है कि कैसे वे मृगचर्म धारण कर दक्षिण भारत की याला करते रहे और अचानक कैसे एलोरा अजन्ता की विश्व प्रसिद्ध गुफाओं को देखने गये और वहाँ के साधु सन्तों से समागम किया। उन्होंने मुझे चरणपादुका (बदरीनाथ) में साधनाकाल के अनुभूत, दिव्य विचार (१९४५) पढ़ने को दिए, उन्होंने लिखा था-- "अध्यात्मिक साधना का मूल हिमालय है। हिमालय की कन्दराओं में तपस्वियों की तपोवह्नि-शिखा जलती रहती है। हिमालय की विराट सभा में सम्मिलित है—दीप्त आत्मा की अनिर्वाण वाणी, आत्मोपलब्धि का शाश्वत आह्वक और अनादिकाल की अनन्तत्यंजना। हिमालय के दर्शन से जीवन के अन्तःकरण के, अनन्त ऐश्वर्य का पता लगता है। इससे आध्यात्मिक जीवन का प्रवेश द्वार, चेतना का उन्मेष और अन्तर्जगत को देखने की नवीन भावभंगिमा की प्राप्ति होती है।" इस जीवन दर्शन पर वे मुझे कई बातें बताते और कभी मेरी जिज्ञासा शान्ति हेतु कोई पुस्तक पढ़ने दे दिया करते थे। "पाण्डिचेरी की स्नातिका" इस सम्बोधन से पिता जी मेरा परिचय देते थे।

मैंने उन्हें, विविध विषयों पर धारा प्रवाह साधिकार बोलते देखा है। चित्र कला और संगीत के भी वे अच्छे ज्ञाता थे। उनकी अंगुली पर बना गहरा निशान उनके सितार वादन के रियाज को प्रकट करता था। लेकिन आश्चर्य यह था कि किसी ने कभी भी उन्हें वाद्य बजाते नहीं देखा। बच्चों से वे मधुर, शिष्ट व्यवहार करते थे। गरीब हो

या अमीर "आइये" शब्द से सब का स्वागत करते थे। निर्धन छात्रों, विधवाओं, गरीबों और साधु-सन्तों को द्रव्य वस्त्र-कम्बल, अन्न आदि देकर सेवा करते थे। वे वीतराग तथा ईर्ष्या-द्वेष द्रोही थे। राग था तो त्याग से, दान से, शील से, औदार्य से, समत्व से और ईर्ष्या थी तो ज्ञान की, साधना की, कर्म की और द्वेष था तो गर्व से, अविनय से, अशौच से, अधैर्य से तथा कृपणता से।

कुछ वर्षों से वे काफी परेशान से थे संभवतः लम्बी बीमारी के कारण, फिर भी मैंने उनको कभी भी कर्मविमुख और हततेज नहीं देखा। जीवन के अन्तिम क्षणों में भी वे कार्य करते रहे। उनके लिए विश्रान्ति, चिन्तन के क्षण और चुपचाप काम करते रहने में ही रही है।

हम तीनों बहिनों को वे "छोरी" कहकर पुकारते थे। आज भी हमारे कान इस पुकार को सुनने को तरसते हैं, शायद कहीं से पुकार उठे।

कहाँ गये पिताजी ? कहाँ गये वे लोग ? वह वैभव ? वह उल्लास और वह चहल-पहल कहाँ गई ? सभी के अश्रु-पूर्ण-नेत्र कभी उत्तरायण (जहाँ वे बैठते थे) कभी वेधशाला (पुस्तकालय तथा यंत्र कक्ष) की ओर शून्य में उन्हें खोजते हुये इन प्रश्नों का उत्तर चाहते हैं। कभी लगता है कि उनकी डेस्क, पेन, पुस्तकें, बैठने की गद्दी भी उन्हें खोज रही हों। काश ! पिता जी को हम, लोगों से घिरे हुए और अध्ययन में लीन देख पाते ?

वे ऐसे थे

—प्रभुदयाल चतुर्वेदी
देवप्रयाग

"साधना से सिद्धि सुनिश्चित है। भौतिक क्षेत्र में साधनारत पुरुषार्थी, अभीष्ट मनोरथ पूरा कर लेते हैं। साधक जीवन-देवता की साधना करता है। वह अन्तरङ्ग एवं बहिरङ्ग दोनों पक्षों को समुन्नत बनाता है। व्यष्टि को समष्टि, अनेकता को एकता का रूप दे देता है। कथनी और करनी के भेद को समाप्त कर देता है। वह परहित चिन्तन कर, व्यवहार में अपने कार्य को परिणत कर देता है। जीवन के गूढ़-रहस्य को समझ लेता है। स्वान्तः सुखाय के साथ-साथ पर सुखाय की ओर उन्मुख हो जाता है। सत्यं, शिवम् सुन्दरम् का समन्वय कर, स्व-पथ का पथिक बन जाता है। अपनी वाणी, व्यक्तित्व एवं कर्म द्वारा समुदाय को प्रभावित करता है तथा प्रेरणा का स्रोत बनता है। वह मन, वचन, कर्म से समाज सेवा में अपने को समर्पित कर देता है। समर्पण की यह भावना मानव को उच्च पद पर आसीन कर देती है। ऐसा मानव कभी मरता नहीं है, उसे अमरत्व प्राप्त हो जाता है, भले ही उसका वह भौतिक शरीर पंच तत्व में विलीन हो जाय"—आचार्यवर जोशी, पं० चक्रधर जी ऐसे ही थे। वे प्रख्यात समाज सेवी, परोपकारी परम साधक, प्रसिद्ध ज्योतिषी, संस्कृत के विद्वान और अनेक पुस्तकों के रचयिता थे। "नक्षत्र वेधशाला" एवं विशाल पुस्तकालय जो एक शोध संस्थान भी है, उनके कीर्ति स्तम्भ हैं। देवप्रयाग में डिग्री कालेज की स्थापना उनके मनोभावों को व्यक्त करता है। समाज चिरकाल तक उनका ऋणी रहेगा। आज की युवा पीढ़ी उनके सपनों को साकार करने में सहयोग दें, यही उनका सबसे बड़ा स्मारक होगा।

उनकी याद में प्रतिमा बने

—रमाकान्त कोटियाल,
हापुड़

श्री जोशी जी ने देवप्रयागी समाज को एक नयी दिशा, नई प्रेरणा और नया पथ निर्देशित किया। आज हमारे समाज में शांति, भातृत्व और सहयोग का जो अभाव मुझे नजर आता है कि मानव-मानव से दूर हटता जा रहा है इन बुराइयों का समाधान आचार्य जोशी जी को याद करके, उनके व्यवहार को याद करके काफी सीमा तक दूर किया जा सकता है। हमारे समाज को उनकी वाणी तथा संदेश की बहुत आवश्यक है। वे न केवल एक ज्योतिषी थे बल्कि समाज सुधारक और उससे भी बढ़कर मानवता के सच्चे पुजारी थे। मैं जब कभी भी उनके पास गया तो मैंने पाया कि कोई भी व्यक्ति छोटा वड़ा, अमीर गरीब, ऊँचा नीचा, क्यों न हो वे सभी को समभाव से देखते थे और सभी का कार्य भी समभाव से करते थे। मैंने देखा कि वे एक साधारण, अपढ़ और दीन से भी वे बड़े मधुर ढंग से बातचीत करते थे और उसकी समस्या के समाधान में भी पूर्ण रुचि लेते थे। वे बड़े विनोद पूर्ण ढंग से बातचीत करते थे, उनकी इस महानता से मेरा हृदय गद्‌गद् हो जाता था। उनका जीवन एक आदर्श जीवन था। उनका सर्वस्व विलक्षण था।

इस तपोभूमि में शायद कोई ऐसा हो जो उनके जीवन इतिहास से परिचित न हो। उन्होंने अपने से शत्रुता को कोसों दूर रखा। उनका कोई दुश्मन नहीं था क्योंकि वह किसी से दुश्मनी का व्यवहार नहीं करते थे। देवप्रयागी समाज के इतिहास में उनकी बड़ी रुचि थी।

आर० के० इन्टर कालेज का चहुमुखी विकास उनकी ही छलछाया में हुआ। दिनकर की किरण का संस्पर्श पा मुकुलित कमल खिल उठा। टिन शेड के ढके सामान्य से कमरे भव्यता लेने लगे। पक्की छतें बनी और साइंस का नया ब्लाक बनकर खड़ा हो गया। इस छोटे से कस्बे में यह विद्या मन्दिर गढ़वाल की प्रमुख शिक्षण संस्था में परिवर्तित हो गया। जोशी जी में अद्‌भुत कार्य क्षमता थी। विनय, आत्मीयता एवं शालीनता उनका अद्‌भुत गुण था। उन्होंने कभी भी विद्यालय के आंतरिक मामलों में दखलंदाजी नहीं की। अध्यापक मंडल को वे पूर्ण मान देते थे, शायद ही कभी किसी को ऐसा अवसर मिला हो जिसने उनकी बातचीत में दम्भ का भाव पाया हो। उनके न रहने पर डिग्री कालेज का जो भार वे अपने ऊपर उठाये हुए थे उसकी क्षति पूरी होनी कठिन है फिर भी आशा है कि अन्य लोग जो आगे इस कार्य का उत्तरदायित्व उठा रहे हैं, जोशी जी के त्याग सेवा और उपकारों को ध्यान में रखते हुए कार्य करेंगे। इस नगर की शिक्षा प्रगति की इस समस्या को शीघ्रातिशीघ्र हल करना है जिसकी वे योजना बनाकर ही रह गये। डिग्री कक्षाओं का शुभारम्भ समय की आवश्यकता है और जोशी जी की आत्मा को चिरशांति प्रदान करने के लिए नितांत आवश्यक है। नगर की भावी पीढ़ी को प्रयाप्त शिक्षण सुविधाओं की प्राप्ती कराते रहने के लिए हम एकजुट होकर तन, मन, धन से तन्मयतापूर्वक लग जायें जिससे भावी पीढ़ी यह कहने का दुस्साहस न करे कि उन्हें

शिक्षण सुविधाओं से से वंचित होना पड़ा। ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक नगर में जहाँ पर आज तक बहुत कुछ हो जाना चाहिए था, नहीं हो पाया।

उनकी यादगार में देवप्रयागी समाज, समाज कल्याण या अन्य किसी संस्था के माध्यम से यदि उनकी दो प्रतिमायें एक देवप्रयाग तथा एक बद्रीनाथ में स्थापित की जायें, तो यह उचित ही होगा।

एक विभूति कम हो गई है

—सोहनलाल भट्ट
उत्तरकाशी

आचार्य चक्रधर जोशी जी का प्रभाव स्थानीय नहीं बल्कि राष्ट्रीय था। उनकी प्रसिद्धि सारे भारतवर्ष के महत्वपूर्ण मिल-मालिकों, उद्योगपतियों तथा शासन अधिकारियों व बुद्धिजीवियों में थी। जोशी जी गढ़वाल के ही नहीं बल्कि भारत के ज्योतिषियों में अग्रणी थे। इतनी प्रसिद्धि व वैभवपूर्ण होने पर भी वे जनसाधारण से स्नेहपूर्वक व्यवहार रखते थे।

मुझे भी आचार्य चक्रधर जोशी जी के सम्पर्क में आने का अवसर मिला था। वे काफी हँसमुख थे। उनकी वार्ता शैली की यह विशेषता थी कि वे जिस प्रकार के समाज, वर्ग, व नौकरी पेशा के बीच, तथा व्यक्तियों से सम्पर्क करते थे, उसी आधार पर वार्ता किया करते थे। तात्पर्य यह कि अगर कृषक है तो कृषक के परिवेश में और यदि प्राध्यापक या इंजीनियर है तो उसी के व्यवसाय विशेष से सम्बद्ध होकर। यह उनके लोक व्यवहार तथा विलक्षण बुद्धि का, महत्वपूर्ण पहलू था।

जोशी जी के निधन से भारत में एक विभूति कम हो गई है। उत्तराखण्ड में उनके स्थान की पूर्ति लगभग असम्भव सी है। यह क्षति अपूरणीय है।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ज्योतिर्विद

--हरिप्रसाद कुकरेती

आचार्य चक्रधर जोशी का उत्तरा-खण्ड के जोतिर्विदों में एक अनूठा स्थान था। अपने क्षेत्र में उनकी ख्याति देश-विदेश तक व्याप्त थी। उनके पिता ज्योतिर्विज्ञान के क्षेत्र में एक लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान माने जाते थे। पिता का बालक पर प्रभाव पड़ने के कारण ज्योतिर्विद्या के प्रति अभिरुचि का होना स्वाभाविक था। बारह वर्ष तक पिता के संसर्ग में विद्याध्ययन किया। इसके पश्चात् अपने गुरु अभिनव वराहमिहिर आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ से उन्होंने ज्योतिर्विद्या का ज्ञान प्राप्त किया।

जोशी जी ज्योतिष के गणित फलित विषयों के ज्ञाता होने के साथ, कर्मकाण्ड के भी विद्वान थे। अपने शंकाओं के समाधान के लिये सुदूर अंचलों से लोग उनके पास आया करते थे। उनका गम्भीर ज्ञान केवल अर्जन के लिये नहीं वितरण के लिए था।

आचार्य जोशी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों, राजनीतिज्ञों और धर्माचार्यों से उनका निकट का सम्पर्क रहा है। साथियों, मित्रों, विद्वानों अथवा शिक्षित, अर्द्ध शिक्षित व्यक्तियों से बातचीत करते समय वे किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते थे। श्री जोशी जी का विभिन्न संस्थाओं से सम्पर्क रहा है। वे सुयोग्य और मेधावी छात्रों को निरन्तर छात्रवृत्ति देकर प्रोत्साहित किया करते थे। श्री जोशी जी एक उच्चकोटी के दार्शनिक व लेखक थे, वैज्ञानिक तथा धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं में उनके कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

श्री जोशी जी ने देवप्रयाग में नक्षत्र वेदशाला और बहुमूल्य ग्रन्थाकार की स्थापना करके उत्तराखण्ड के अध्येता विद्वान शोधकर्ताओं के लिये एक परोपकार का कार्य किया है। अब पुस्तकालय में तीन सहस्त्र हस्तलिखित पत्रिकायें उपलब्ध हैं। लिपिकाल की दृष्टि से १५०० वर्ष पुरानी कृतियां हैं। यह पुस्तकालय उत्तराखण्ड में एक अनूठा प्रतिष्ठान है।

बहुमुखी-प्रतिभा के धनी

—श्रीलाल थपलियाल
ऋषिकेश

दिवंगत स्मरणीय भाई-चक्रधर जी के जीवन एवं व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लिखने में संकोच-सा हो रहा हैं। उनका असीम स्नेह-छोटे भाई का सा ममत्व, पारिवारिक-विश्वास, और आधिकारिक निर्देश-प्राप्त करने में उनके इतने समीप आ गया, इसका मुझे आश्चर्य है ?

आचार्य-चक्रधर जी जोशी का बहुमुखी व्यक्तित्व था। ज्योतिष और संस्कृत के तो वे मूर्धन्य विद्वान् थे। अपने पूज्य गुरु "मुकुन्द दैवज्ञ" के लिये उनके हृदय में अगाध श्रद्धा का भाव, हिलोरें लेता रहता था। उज्जैन के प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री सूर्यनारायणजी व्यास से भी उनका सम्पर्क बना रहा।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख उद्योगपति गूजरमल मोदी और उनके परिवार से उनके अविच्छिन्न-सम्बन्ध रहे और मोदी-उद्योग की विभिन्न इकाइयों का निर्माण उनकी राय के अनुसार ही हुआ। प्रसिद्ध-उद्योगपति "मफतलाल-ग्रुप" के परिवार से उनके अटूट सम्बन्ध रहे। जोशी जी उनके लिए हमेशा श्रद्धेय रहे और उनपर इस परिवार का असीम विश्वास रहा।

नक्षत्र-वेधशाला की बड़ी योजना उनके दिमाग में थी जिसे वे दशरथाचल में बनाना चाहते थे। राजनीति से प्रत्यक्ष न जुड़े रहकर भी उनके सम्बन्ध लोक-सभा अध्यक्ष माननीय श्री मावलंकर जी, सरदार बल्लभ भाई पटेल, मोरार जी देसाई, सम्पूर्णानन्द जी, चन्द्रभानु गुप्त, हेमवती नन्दन बहुगुणा, नारायण दत्त तिवारी और महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, तथा दिल्ली के सांसदों और विधायकों से थे।

पर्वतीय प्रदेश के संभ्रान्त प्रबुद्ध नागरिक उन्हें विशिष्ट सम्मान देते रहे हैं। उनका व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि आगन्तुक प्रभावित हुये बिना नहीं रहता था और यह प्रभाव सम्पर्क के साथ-साथ बढ़ता ही चला जाता था। छोटा हो अथवा बड़ा, सम्पन्न हो अथवा गरीब, उनका सभी के साथ समान व्यवहार होता था। हर व्यक्ति उनके सान्निध्य में अधिक से अधिक रहना चाहता था। इन्हीं शब्दों के साथ उनके श्री चरणों में मैं, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

चिरविदा से पूर्व

—प्रभाकर

जब मैं कार लेकर सांयकाल को देवप्रयाग पहुँचा तो वातावरण सहमा-सहमा, अति गम्भीर अनुभव हुआ। बाबा जी के कमरे में धीरे से प्रविष्ट हुआ। उनके रक्तहीन श्वेत मुख को एक टक देखता रह गया। इतना शिथिल सा पड़ा रक्तहीन शरीर।

मैंने उन्हें बताया कि मैं आप के लिए मोदी नगर से कार ले आया हूँ। प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा, ठीक किया। भाई रामकुमार जी आ पहुँचे थे। बाबा जी के शरीर पर एक दृष्टि डालकर वह साहस करके कह न पाये कि आप कहीं बाहर मत जाओ। पर बाबा जी का दृढ़ संकल्प, एक जिद। माँ भी मना करने लगी। पर फिर वह ही उत्तर, कुछ नहीं होगा, जो होगा देखा जायेगा। अचानक तख्ते से उठकर बैठ गये। मेरी ओर देखकर बोले, अब चल ही लेते हैं। मैंने सहमति में मात्र हाँ कर दी।

बाबा जी धीरे-धीरे घर के द्वार को पार कर आये। एक वेदनामय दृष्टि डाली। उत्तरायण खोलकर देखने की इच्छा हुई पर चाभी नहीं मिली। फिर मन ही मन प्रणाम किया और धीरे-धीरे उतरने लगे। कई शिष्य, संबंधी उन्हें विदा करने पहुँचे। बाबा जी ने एक बार सामने दिख रहे मर्यादा पुरषोत्तम भगवान राम, पतित पावनी गंगा को हृदय से प्रणाम किया। कार चल पड़ी, हम लोग मोदी भवन (ऋषिकेश) पहुँच गये। मोदी भवन पर मिलने-जुलने वालों की पंक्ति लग गयी। तीसरे दिन मसूरी के लिए चल पड़े। जब मसूरी निकट आई तो बाबा जी ने घनानन्द कालेज के पास कार रुकवा दी, मामा जी को बुलाने आदमी भेजा, मामा जी से स्नेहपूर्ण मिलन और कुछ स्नेह पूर्ण बातें। फिर कार दौड़ पड़ी। हम लोग मसूरी पहुँच गये।

मोदी भवन पर व्यवस्था थी। बाबा जी और माँ, रिक्शे में चले गये। पुस्तकों की अटैची खोली गयी। पर ये क्या ? न पंचाग, न कुण्डलियाँ, न कलम, न दवात। क्या सब घर ही भूल आये। असम्भव ! जीवन में प्रथम बार भयंकर भूल बिना कार्य के एक पल भी बैठना असम्भव। एकाध कुण्डली बैग में मिली। सेठ अरबिन्द भाई की नातिन की। जुट गये मनोयोग से फिर हास-परिहास, कई प्रसंग, कई ज्ञानप्रद वार्त्तालाप देर रात्रि तक सदैव की भाँति अध्ययन-मनन। फिर अचानक स्वास्थ्य में परिवर्तन सा प्रतीत होने लगा। श्वास प्रक्रिया में कठिनाई। माँ ने आकर बताया कि साँस लेने में कष्ट अनुभव कर रहे हैं। यथाशीघ्र उठें। चौकीदार दो मंजिल नीचे सोया होगा। जाकर उठाया, चौकीदार तत्पर और श्रद्धालु व्यक्ति था। शीघ्र ही डॉक्टर बुलाने चला गया। पर इस बीच स्वास्थ्य कुछ सँभल गया। थोड़ी राहत अनुभव हुई। कुछ देर बैठने के बाद, हम भी सोने चले गये।

अगले दिन एक पुराने परिचित मित्रा जो, मिलने के लिए भूटान से आये। स्वास्थ्य इत्यादि के बारे में भाई जी से ज्ञात किया। बोले अरे, जब साँस में तकलीफ होती है तो यहाँ काहे को रुके हो ? भाई, यहाँ से तो जल्दी से जल्दी घर चलना चाहिए। कल नहीं बल्कि आज ही वापस चलिए। सारा सामान बाँध दिया गया, बाबा जी विस्तर पर बैठ गये दीर्घ निःश्वास लेकर बोले, "मेरी आत्मा जाने के लिए स्वीकृति नहीं दे रही है, मेरी सारी मंत्र शक्ति समाप्त हो चुकी है।" जाना स्थगित हो गया।

४ बजे के लगभग अति बेचैनी थी। मैं डॉक्टर लेने चला-घर पर नहीं, अस्पताल में नहीं। कुछ देर बाद अचानक आ गये, देखा गम्भीर हो गये ! इंजेक्शन दिया और बाहर बैठ गये। अस्पताल ले जाना होगा। रात्रि के ७ बज रहे हैं, बाहर एकदम अंधेरा कोहरा। सेठ जुग्गीलाल कमलापत की भव्य कोठी खुलवाकर कम्यूनिटी हॉस्पिटल फोन किया। थोड़ी देर में एम्बुलेन्स कोहरे को चीरती हुई आ पहुँची। हम सभी किंकर्तव्य विमूढ़ थे।

किसी तरह बाबा जी को एम्बुलेन्स में लिटाया, उठ गये। सांस लेने में बेचैनी। एम्बुलेन्स हम सभी को लेकर चल पड़ी। किसी तरह अपने को संयत करते हुए बाबा जी को कमरे तक ले आये, अचानक पूछ उठे "कहाँ आ गये दिल्ली में ?" सभी आश्चर्य चकित ऐसा प्रश्न क्यों किया ? डॉक्टरों ने देखा रक्त की कमी। आक्सीजन दिया जाने लगा, ग्लूकोज चढ़ाया जाने लगा। माँ एक कोने में कुर्सी पर बैठ गई। कमरे में मैं और माँ ही रह गये। ठण्ड बढ़ती गई। माँ बैठी है मेज पर सिर टिकाये, बाबा जी ने अचानक पूछा "आ गया सुधा" फिर सो गये।

अर्द्ध रात्रि का समय डॉ० बार-बार आकर निरीक्षण करते। बाबा जी की सांस तीव्रगति से चल रही थी। साढ़े बारह बज गये, बाहर घोर अंधेरा, एकदम शान्ति अचानक सन्नाटे को चीरती हुई माँ की आवाज, डॉ० कम्पाउण्डर सभी दौड़े बाबा जी के शरीर से रजाई हटाई भयंकर तनाव हाथ-पैर फैले हुये भीषण व्यथा। डॉ छाती को रगड़ने लगा, हम सभी हाथ-पैरों को। माँ का कातर स्वर "क्या हो गया है, इन्हें ?" सभी मौन।

अचानक एक दीर्घ सांस, मुख विवर्ण, नेत्रों में तीव्र प्रकाश हुआ और कुछ क्षण सिर स्थिर हो गया। फिर एक ओर लुढ़क गया अपार शान्ति-अनन्त में। कम्पाउन्डर ने नब्ज टटोली। "दम निकल गया" इन शब्दों ने जैसे किसी पहाड़ी से गहरे समुद्र में ढकेल दिया। सारा शरीर निचुड़ सा गया। माँ, जीवन संगिनी जीवन में हर पल निकट, पीड़ा भरे शब्द, करुण क्रंदन-रोदन। मैं स्थिर, मूक ! क्या रोता क्या बोलता ? मैं चादर लेकर बरामदे के चक्कर लगाता रहा, क्या सोचता रहा स्मरण नहीं।

अंधेरी रात, सामने प्रकाश जलता हुआ प्रतीत होता था। माँ बोल उठी "देख तो रे, कहीं उठ तो नहीं रहे हैं, कुछ बोला तो नहीं उन्होंने" फिर सुबह हुई। भाई सुधाकर बुझा-बुझा रुआँसे से। मां का स्वर फूट पड़ा "देखो, सुधा आ गया" सभी का हृदय चीर दिया इन शब्दों ने।

पार्थिव शरीर को लेकर देवप्रयाग पहुँचे, चारो ओर स्तब्धता। हजारों नर-नारी अन्तिम दर्शनों को उमड़ पड़े। महा प्रयाण के इस पथ में फूल ही फूल बिखरे थे। ट्रक, मोटर, कारें, राहगीर सभी मूक खड़े अन्तिम श्रद्धावनत विदाई दे रहे थे। पार्थिव शरीर को भाई सुधाकर, चाचा हजारीलाल, भाष्कर, मैं, भाई रामकुमार, मदन भाई, आदि कंधा लगाये डण्डी पर बिठाये चल पड़े। सभी किंकर्त्तव्य, ठगे से। अलकनन्दा-भागीरथी के पवित्र संगम पर गतप्राण शरीर को स्नान करा उनको चिता में रख दिया गया। भाई सुधाकर ने अग्नि दी। अचानक ही बाबा जी का दायाँ हाथ अशीर्वाद की मुद्रा में उठ गया। सब के लिए मंगल कामना करता हुआ। गंगा की हिलोरें उठीं और उसने अपने वरद् पुत्र को आत्मसात कर लिया। अनन्त ब्रह्माण्ड में ध्वनि गूंज रही थी—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख भाग भवेत् ॥

A Tribute to Late Shri Chakardhar Joshi

—Dhruba Narayan Todaria

A respected and distinguished personality not only of Garhwal but a well reputed man of North India Shri Chakardhar Joshi passed away. Shri Joshi was born on 26-9-1909 and died on 16-8-80, at Mussoorie where he had gone for some rest.

Chakardhar Joshi was decedent of great astronomer Shri Vayankat Ram-Jaikrishan Bhatt and was youngest son of famous astronomer Shri Laxamidhar and Smt. Ratna Devi.

Earliest education of Shri Joshi was completed under the able guidance of his father Sri Laxmidhar and then under the able guidance of Guru Shri Mukund Davagya Barthwal. He look keen interest in astronomy and allied Subjects from his childhood. In 1946 he established "Nakchatra Vedhshala" near Devprayag. In his laboratory many costly and important instruments are available. Many of these instruments were imported by him. This Laboratory is suitable for research in astronomy. He had a big collection of books. He established Laxamidhar Vidyamandir library in his spacious residence. It is estimated that this library has a collection of 22000 books including costly scripts. Granths and scripts written on Bhojpatra. Some of the collections are 500-800 years old. The Library is rich in books on pharmaccology, arts, crafts, literature, history, maths, geography and biology etc. This library had been and is being used by many research scholars of India & abroad. He had written many books. He wrote books on medical astrology (Gadawali) Trikalsandhya elements of astronomy, etc. Besides this, his articles were published in many reputed journals and books of astronomy.

He had a number of followers especially among the rich. On his request Mafatlal group, Bombay donated a sum of Rs. 50,000 for construction of

building of R. K. I. K. Devprayag. Again the same business group donated capital for construction of Degree College at Devprayag. It was his a intention to start a school on "Prachya Vidya" where he could have given a new life to the diminishing old traditions, languanges and culture.

Shri Chakardhar Joshi was not only a intellectual but also a social worker. He was patron of "Social welfare Association Devprayag". This organisation has opened a children school and one school for ladies to impart education on tailoring & allied subjects. It also provides, financial assistance to widows, and poor enlightend students. He was a member of Advisory Board of Garhwal University. He was founder member and patron of "Sursingar Sansad" a famous Sangeet Sansthan of Bombay. May his soul rest in peace.

कृतित्व

आकाशवाणी के लिए

भेंटवार्ता आचार्य चक्रधर जोशी

—भेंटकर्त्ता : नित्यानन्द मैठाणी

विषय : ५—बदरी-केदार का महत्व तथा बाबा काली कमली वाले की समाज सेवा।

[यह भेंटवार्ता आचार्य पण्डित चक्रधर जी जोशी के असामयिक निधन के पूर्व बाबा काली कमली-शताब्दी समारोह के द्वितीय चरण जो ४ जून १९८० को भगवान बदरी विशाल के महाभिषेक से, श्री बदरीनाथ धाम में ५ जून १९८० से १२ जून १९८० को सम्पन्न हुआ की, समयावधि में ही "भारत गोल प्रवर दीपिका" के स्वनाम धन्य लेखक स्वर्गीय पण्डित दिवाकर शर्मा मैठाणी के प्रपौत्र श्री नित्यानन्द मैठाणी द्वारा आकाशवाणी के लिए "टेप" की गई थी। "नक्षत्र वेधशाला" के पुस्तकालय में उक्त "टेप" की पुनर्टेपित प्रति संग्रहीत, की जानी आवश्यक है ताकि आचार्यवर की पवित्र-दिव्यवाणी का श्रवण सम्भव हो सके। इस दिशा में; श्री नित्यानन्द मैठाणी का सहयोग, अपेक्षित है।]

मैठाणी : आचार्य चक्रधर जोशी जी, आज आप से मिलकर अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आप जैसे ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् हमारे इस केदारखण्ड में वास करते हैं, यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है। मैं सर्वप्रथम आप से यह पूछना चाहता हूँ कि केदारखण्ड में बदरीनाथ जी और केदारनाथ जी का किस प्रकार वर्णन किया है, कृपया बताएँ ?

आचार्य जोशी : यहाँ प्राचीन स्कन्ध पुराण, जो अष्टादश पुराणों में है, इसके चार भाग माने जाते हैं। केदार-खण्ड, रेवाखण्ड, काशीखण्ड और हिमाद्रिखण्ड। हिमाद्रिखण्ड में दक्षिण भारत, रेवाखण्ड में पश्चिम भारत और काशीखण्ड में पूर्व भारत और केदारखण्ड में उत्तर भारत का विशद् वर्णन किया गया है। उनके तीर्थों को विशेष महत्व दिया गया है। ऐसे इन खण्डों के अन्दर कई उप-खण्ड भी हैं। पर प्रधान केदारखण्ड में, समस्त हरद्वार से लेकर केदारनाथ का, केदारनाथ होते हुए बदरिकाश्रम तक, सब तीर्थों का सूक्ष्मतम् वर्णन किया गया है। क्योंकि केदारनाथ अपने यहाँ द्वादश ज्योतिर्लिंगों में बहुत महत्व रखता है जैसा कि "सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकाल ओंकारम मलेश्वरम्। परित्याम् बैद्यनाथं च डाकिन्यां भीम शंकरं। सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं द्वारकावने। वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रम्बकं गौतमी तटे। हिमालये तु केदारं घृष्णेशं शिवालये।" इस प्रकार जो द्वादश ज्योतिर्लिंग, जो भारत में हैं उसमें श्री केदार का बड़ा महत्व दिया गया है। तो केदारखण्ड में विशद वर्णन किया गया है।

रुद्रप्रयाग से दो मार्ग हो जाते हैं। यहाँ से केदारनाथ भगवान के दर्शन करते हुए यात्री फिर वापिस रुद्र प्रयाग आ करके, बदरीनाथ को जाते हैं।

मैठाणी : आचार्य जी, इसी सम्बन्ध में मैं आगे आपसे यह पूछना चाहता हूँ। जैसे कि आप अभी मुझे बता रहे थे भगवान श्री राम जब आये थे वे बदरिकाश्रम की यात्रा पर गये और इसी सम्बन्ध में आप कुछ बता रहे थे कि उन्होंने वहीं से ही भगवान केदारनाथ के भी दर्शन किये। कृपया इस सम्बन्ध में भी बताएँ।

आचार्य जी : इसमें एक आनन्द रामायण जो है महर्षि बाल्मीकि प्रणीत रामायण एक प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है। उसमें भगवान रामचन्द्र जी की उत्तर भारत यात्रा का बड़ा विषद वर्णन किया गया है। उसमें लिखा हुआ है कि जब गंगा द्वार से आगे यानि हरद्वार से आगे भगवान पधारे तो पहले देवप्रयाग में आए जैसे कि उसका इस श्लोक में वर्णन है। "गत्वा देवप्रयागं च अलकनन्दा तटेनवै। नर नारायणौ गत्वा दर्शनाय मुक्ति ब्रह्मणाम्, बदरिकाश्रमे रामः केदारशम् बिलोक्य सः। महापंथं ततो गत्वा ययोद्वन मानसं सर।" इससे स्पष्ट मालूम होता है कि भगवान देवप्रयाग होते हुए और फिर जो है बदरिकाश्रम पधारे। और बदरीनाथ से ही उन्होंने भगवान केदारनाथ जी के दर्शन किये वहाँ स्वयं गये नहीं। इस श्लोक से ही यह प्रतीत होता है कि वहाँ से महापथ होते हुए वह मानसरोवर को पधारे। ऐसा इसमें स्पष्ट वर्णन किया गया है।

मैठाणी : गोस्वामी तुलसीदास ने भी विनय पत्रिका में ऐसा ही कुछ वर्णन किया है। इस सम्बन्ध में भी बताएँ।

आचार्य जोशी : हाँ तो इसमें, विनय पत्रिका में संवत् १६८० में जो तुलसीदास जी का जीवनकाल समाप्त माना गया है, इसके पूर्व ही जब गोस्वामी तुलसीदास जी बदरिकाश्रम यात्रा पर पधारे थे तो उन्होंने अपनी विनय पत्रिका में जो सातवाँ पद है, उसमें बदरिकाश्रम का बड़ा ही सुन्दर और बड़ा सुरोचक और एक भौगोलिक स्थिति के सहित उसमें वर्णन किया गया है। जिसमें कि उसका आदि पद है। "नौमि नारायणंनरं करुणायनं घ्यान पारायणं ज्ञान गम्यम्" इत्यादि इस प्रकार से उसमें और ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला और लक्ष्मण झूला से आगे होते हुए कठिन मार्ग जिसको कि अभी भी मदभंग और चितभंग बड़े दुर्गम पर्वतों को पार करते हुए—

मैठाणी : इसका अर्थ यह है कि..............क्षमा कीजिये मैं बीच में कह रहा हूँ—

आचार्य जोशी : जी हाँ—

मैठाणी : कि जो रास्ता आज है, बदरीनाथ जी जाने का, वह रास्ता उस समय नहीं था।

आचार्य जोशी : नही था। वो प्राचीन मार्ग जो है, जिसमें कि तुलसीदास जी, प्राचीन गोस्वामी तुलसीदास जी पधारे और उसके साथ ही अपने उनके पूर्व बल्लभाचार्य जी महाप्रभु बल्लभाचार्य जी जो हैं, उसी मार्ग

से पधारे थे जो कि बल्लभ सम्प्रदाय के आचार्यों के प्रवर्तक शुद्धाद्वैत प्रवर्तक माने जाते हैं। उस वखत प्राचीन मार्ग वहीं से होता हुआ वहाँ पर आज भी श्रवण का स्थान माना जाता है। यहाँ पर जो है दशरथ जी ने श्रवण कुमार पर जो है शब्द भेदी बाण मारा था और वहीं उनको श्राप दिया गया था। उस स्थान पर आज भी यहाँ पर मौजूद है और वह श्रवण नाथ का स्थान माना जाता है। और वही परंपरा शुरू करके उधर से मार्ग शुरू करके देवप्रयाग हो करके आगे बदरीनाथ यात्रा को पधारते थे। कि उससे स्पष्ट हो रहा है कि विनय पत्रिका के उनके सातवें पद से गोस्वामी तुलसीदास जी के—

मैठाणी : आचार्य जी अब अगला प्रश्न मैं यह पूछना चाहता हूँ कि देवप्रयाग में जब यात्री यहाँ पर आ करके स्नान करते हैं तो बदरी नारायण की यात्रा करते हैं केदारनाथ जी की यात्रा करते हैं तो इस स्थान का यहाँ पर क्या महत्व है थोड़ा सा हमें बताइये।

आचार्य जोशी : सबसे प्राचीन ऐसे सनत कुमार संहिता वगैरह में इसमें प्राचीन नाम देवप्रयाग का इसे सुदर्शन क्षेत्र इसको कहते थे। इसमें प्राचीन उसमें जो लिखा हुआ है सनत कुमार संहिता में कि भगवान आदि नारायण ने जब सृष्टि का आरम्भ किया तब ब्रह्मा जी को आदेश दिया कि तुम सृष्टि का आरम्भ करो। उन्होंने कहा भगवन चारों तरफ जल है मैं कहाँ पर बैठ कर तपस्या करूँ? उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र उनको दे करके उसमें बैठ कर ब्रह्मा जी ने सृष्टि के निर्माण के लिये तपस्या की। ऐसे उससे मालूम होता है कि उससे पहले देवप्रयाग का प्राचीन नाम सुदर्शन क्षेत्र था और यहीं पर उन्होंने पहले-पहल सृष्टि के आरम्भ का संकल्प किया और यहीं से सृष्टि का आरम्भ होता है। जिससे कि आज जो है संगम पर ब्रह्म कुंड-वशिष्ट कुंड नामक प्राचीन कुंड हैं जो कि ब्रह्मा जी का कुंड है और उनके बाद वशिष्ठ जी का है। क्रम से सृष्टि का जो आरम्भ हुआ वैसे ही जो है उसका यहाँ पर उसका आज भी वर्णन मिलता है। और प्राचीन हिमवत् खंड जो है, जो कि स्कन्द पुराणान्तर्गत ही यह खंड माना जाता है। जो कि केदार खंड पशुपति नाथ लाइब्रेरी, नेपाल में महाराज के यहाँ जो है आज वो सुरक्षित है। वो ग्रन्थ जो है, वो प्रकाश में भी आ चुका है। जिसका नाम हिमवत् खंड है। उसमें स्पष्ट लिखा हुआ है बहुत अब भौगोलिक वर्णन—

साह्येवऽलकनन्दा च तथा भागीरथी पुनः।
तासां सुसंगम तीर्थं देवप्रयाग मुच्यते॥

ऐसे उसमें देवप्रयाग का बड़ा विशद वर्णन और बहुत ही सूक्ष्म रूप में उन श्लोकों में वर्णन किया गया है। जिसमें कि उन्होंने देवताओं के लिये देवत्व प्राप्त करने के लिये ऐसा उन्होंने कहा है—

प्रकर्षेणामरास्तत्र ह्यायाताः स्नातकाः पुनः।
गच्छन्ति त्रिदिवं यस्मात् देवप्रयाग मुच्यते॥

ऐसा उन्होंने केदारखंड हिमवत्खण्ड के अन्तर्गत—

भक्त ! देवप्रयागेऽच स्नानं कुरु यथाविधि ।
तत्र स्नानाच्च कालान्ते ध्रुवमिन्द्रो भविष्यसि ॥

ऐसा उन्होंने हिमवत् खंड में श्लोक है । ऐसे तो केदारखण्ड में १५ अध्याय में देवप्रयाग का वर्णन किया गया है जो कि बहुत बड़ा विस्तृत है । शुकदेव ने हिमवंतखण्ड के जो कि नेपाल में पशुपति नाथ लाइब्रेरी में सुरक्षित है फिर जहाँ सुरक्षित है प्राचीन ग्रन्थ उसमें ये जो श्लोक मैंने आपसे कहे हैं उसी मद्दे में श्लोक देवप्रयाग के विषय में कहे हैं ।

मैठाणी : आचार्य जी जैसा कि आप जानते ही हैं, यह वर्ष बाबा काली कमली वाले पंचायत क्षेत्र ऋषिकेश के शताब्दि समारोह का वर्ष भी है । और इस सम्बन्ध में ऋषिकेश बदरी नारायण तथा अन्य स्थानों पर विविध कार्यक्रम भी चल रहे हैं । कृपा करके बाबा के पावन चरित्र के सम्बन्ध में दो शब्द कहने का कष्ट करें । जिससे कि यह पता लग जाए कि बाबा ने बदरी और केदार जाने वाले यात्रियों की कितनी महान् सेवा की थी ।

आचार्य जोशी : बाबा काली कमली वालों के नाम से भारत में प्रसिद्ध महापुरुष विशेष करके उत्तराखंड में बदरीनाथ-केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री में जिनको आज हमारे यहाँ बच्चा-बच्चा भी जानता है, उनका संक्षिप्त परिचय मैं थोड़ा सा यहाँ पर दे रहा हूँ क्योंकि उनका इस वर्ष में शताब्दी महोत्सव होने जा रहा है । सन् १८३१ ई० में पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत एक छोटे से गाँव गुजरांवाला में आपका जन्म हुआ था और भगत नाम से आप पहले घर में, तब जाने जाते थे । ये अपनी छोटी सी उम्र में बाहर चले गये थे । फिर इनको घर वापिस लाया गया आखिर दूसरी बार १८६३ में काशी में जाकर के सन्यास ३२वें वर्ष में ले लिया । फिर १८६४ में ऋषिकेश होते हुए समस्त उत्तर भारत की उन्होंने यात्रा की, अनेक बार की । फिर १८६५ से १८७५ तक उनकी महान् सेवा यह थी कि जब यात्री जो है पैदल मार्ग लक्ष्मण झूला से चलता था और वहाँ से लक्ष्मण झूला से आगे गरुण चट्टी फिर फल चट्टी उसके आगे एक विजय नामक चट्टी थी जो कि दो ढाई मील की कड़ी चढ़ाई थी भयंकर चढ़ाई थी तो यात्री जो हैं उसमें बगैर पानी के बेहोश हो जाते थे तो वहाँ पर महाराज श्री काली कमली वाले ने स्वयं एक अपनी छोटी सी कुटी बनाकर जहाँ से गंगा एक मील नीचे पड़ती थी अपने कंधों में गंगाजल पिलाना और उनको संतृप्ति देना यह उनकी जो बात है हमारे इतिहास में प्रसिद्ध है । उन्होंने १८६५ से १८७५ तक अनवरत् इस प्रकार की जल-सेवा विजय चट्टी में की जिसे कि आज भी वहाँ का बच्चा-बच्चा हमारी तरफ सब जानते हैं और इसी मध्यकाल में वो भारत के अन्य लोगों में उनकी इस महान् सेवा को देख करके उनकी आज्ञा से फिर वहाँ धीरे-धीरे करके उत्तराखण्ड की यात्रा में सदाव्रत और कहीं-कहीं धर्मशालाएँ जहाँ पर बहुत ही कठिन और यात्रियों को कष्ट होता था वहाँ खुलीं । विशेष करके बदरीनाथ में केदारनाथ में, गंगोत्री में, यमुनोत्री में और फिर मार्ग में अनेक धर्मशालाएँ उनकी आज्ञा से खोलीं जो आज भी जन सेवा और साधुसेवा में निरत हैं । उस महापुरुष का शताब्दी

महोत्सव जो आज हो रहा है और उसमें भारत के बड़े-बड़े विद्वानों से ले करके बड़े-बड़े धनी सब बदरीनाथ में इकट्ठे हो रहे हैं और उनके द्वारा उनका ऐसा प्रचार होना एक बहुत ही अच्छी बात हुई थी और जो कि होनी चाहिए थी और उनके उत्तराधिकारियों ने जो इस समय मौजूद हैं खास करके बलदेव सहाय जी ऋषि जी जिनका महान् प्रयत्न था जो कि उन्होंने इस कार्य को बड़े अच्छे रूप में दे करके और इसको सम्पन्न किया। इसके लिये वह भी धन्यवाद के पात्र हैं।

मैठाणी : आचार्य जी, आपने बाबा जी के बारे में तो इतना बताया ही लेकिन देवप्रयाग में भी तो उनकी एक धर्मशाला है। कृपया इस सम्बन्ध में भी प्रकाश डालें।

आचार्य जोशी : देवप्रयाग में उनकी बहुत बड़ी धर्मशाला करीब पचास वर्ष पूर्व से यहाँ पर है। पहले यहाँ पर बड़े-बड़े महात्मा लोग और बड़े-बड़े यात्री लोग और सब ठहरा करते थे किन्तु अब मार्ग से कुछ दूर होने की वजह से उसका इतना उपयोग नहीं हो पा रहा था। हमने उनके उत्तराधिकारियों से प्रार्थना की, विशेष करके कलकत्ता की समिति से हमने उनसे निवेदन किया कि हमारे यहाँ पर डिग्री कालेज चल रहा है। उसके लिये स्थान नहीं है। हमारी प्राच्य विद्या संस्थान अकादमी जो यहाँ चल रही है उसके लिये भी स्थान नहीं है। तो आप कृपया तब तक जब तक हमारी बिल्डिंग बनती है इसके उपयोग के लिये हमें दे दीजियेगा तो उन लोगों ने सेठ टांटिया जी ने, श्री सत्य नारायण टंटिया जी ने खासकर के हमको एक रुपये मासिक पर अपना स्वामित्व दे दिया और वो आज भी हमारे कार्यों में योग दे रही है। इसके लिये वे बड़े धन्यवाद के पात्र हैं। यह बहुत बड़ी विशाल धर्मशाला है। इसमें कम से कम ५००-१००० यात्री ठहर सकते हैं और वहाँ आज भी ठहरने की सुन्दर व्यवस्था है। उन्होने फिलहाल हमको इस रूप में दे रखी है कि हमारे डिग्री कालेज को और प्राच्य विद्या अकादमी के आफिस के लिये इस्तेमाल हो रहा है जिसके लिये हम उनको बार-बार धन्यवाद दे रहे हैं।

मैठाणी : आचार्य जी, आपने बदरी-केदारनाथ जी के महत्व के संबंध में जो मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये उसके लिये, हम आपके आभारी हैं। धन्यवाद !

विश्वपूजित परमहंस श्री रामतीर्थं योगीश्वराणां पादपद्मयोः सादरं श्रद्धाञ्जलिरियम्

—चक्रधर जोशी

या व्यासादिसुभारतीय पुरुषैः स्वान्ते समालोचिता
यस्या दिव्यछटां विलोक्य परमानन्दा-स्पदा योगिनः ।
तां ज्योतिं परमात्मनश्चितिकलां प्राभासयद् विष्टपे
ख्यातिं भारत भारतेर्विहितवान् विश्वे समस्ते तु यः ॥

आत्म ज्ञाननिधि वगाह्य चिनुते यस्तत्त्वमुक्ताः शुभाः
ताः सर्वा व्यतरत् प्रफुल्लहृदयो लोकेभ्य आनन्ददः ।
यो वै भारतवर्ष जङ्गमतनुर्भास्वद् विवस्वानिव
जीवन्मुक्त दशामवाप्य नितरां प्रामोदयन्मेदिनीम् ॥

तस्यास्यामवनौ शताब्दि समये पुण्ये महत्युत्सवे
सस्नेहं समुदं समर्प्य सुधिया श्रद्धांप्रसूनानि वे ।
वारम्बारमनेकशो गुणगणान्संस्तुत्य सहृद्धये
तं योगीशमनन्त बोध विभवं श्री रामतीर्थं नुमः ॥

एवं पदप्रसूनानि श्रद्धयाहं समर्पये
बदरी क्षेत्र निलयो भट्टश्चक्रधरः सुभन्ति ॥

नक्षत्रवेधशाला ॥ सं २०३० विक्रमी मार्गशीर्ष ॥ ता. २५-११-१९७३ देवप्रयाग

श्रद्धा कुसुमाञ्जलिः

—चक्रधर जोशी

वन्दे योगीश्वरं श्रेष्ठं, कृष्णकम्बलधारिणम् ।
कारुण्यपूर्ण-हृदयं विशुद्धानन्दस्वामिनम् ॥१॥
येन चाकिञ्चनेनापि, स्वात्मशक्त्या प्रयत्नतः ।
उत्तराखण्डतीर्थानां यात्रायां वीक्षकष्टताम ॥२॥
उद्घाटितान्यनेकान्यन्नसत्राणि योगिना ।
स्थाने-स्थाने निर्मिताश्च धर्मशालाः सुशोभनाः ॥३॥
यत्र सर्वे समीचीना व्यवस्था यात्रिणां कृते ।
सर्वे तस्य महत्कार्यं प्रशंसन्ति मुदान्विताः ॥४॥
अद्य समीताश्च वयं, तत् शताब्दि महोत्सवे ।
श्रद्धाभापूर्यहृदये स्मरामस्तत् गुणवलीः ॥५॥
आधुनापि च सुच्छायः संस्थावृक्षः सुशोभितः ।
शाखाप्रशाखाभिरसौ, सन्तापं हरते नृणाम् ॥६॥
लभन्तां बहु विश्रामं, इममाश्रित्य, यात्रिणः ।
सिञ्चेयुर्धनिकाश्चैनं, पुण्यवन्तो, महाशयाः ॥७॥
इत्येवं प्रार्थयते, लक्ष्मीधरपण्डितात्मजो, नित्यम् ।
देवप्रयागवासी जोशी श्री चक्रधर भट्टः ॥८॥

गदावली

—निवास शास्त्री

ब्राह्मण पर एक ऋषिऋण होता है, क्योंकि आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय कर प्राप्त हुई व्युत्पन्नता से राष्ट्र को उसे भी लाभान्वित करना चाहिये। फलतः वह उसी भावना से सन्दर्भ रचनाकर ऋषिऋण से आनृण्य प्राप्त करता है।

पण्डित प्रवर आचार्य चक्रधर जी जोशी ने उसी आर्ष परम्परानुसार पद्धति का पालन करते हुये गदावली का प्रणयन किया है।

विषय की दृष्टि से यह ग्रन्थ ज्योतिर्विदों के लिये सर्वथा नवीन है क्योंकि ज्योतिष ग्रन्थों में ग्रहज रोगों का यत्र-तत्र अत्यल्प वर्णन है, किन्तु इस ग्रन्थ में विशदता से रोगोत्पत्ति ग्रहस्थिति, ग्रहगति, ग्रहदृष्टि, ग्रहसम्पात से कही गई है, वात, पित्त, कफ या जीवाणुवों से नहीं।

भाषा की दृष्टि से यह उनके प्रौढ़ पाण्डित्य की स्फटिक शिला है। विविधि छन्दों के समावेश के साथ भाषा की प्रवाहवद्धता एवं प्राञ्जलता लेखक की कवित्व शक्ति एवं रचनाचातुर्य्य की घोषणा स्पष्टतः करती है—

यथा— क्रूरेक्षिते हिमकरे धनगे मृतीशे
शान्तेऽङ्गपे समदपेऽसृजि साहि सौ रौ
कन्दर्पगे जनुषियस्य स पाण्डुशोफ–
दद्रू प्रमेह मुखरोग निपीडितः स्यात्

हिन्दी भाषा में अद्यतन प्रचलित शब्दों का समावेश कर आचार्य जी ने उन ज्ञानिम्भन्य जनों का उत्साह वर्द्धन किया है जो शब्द ज्ञान से शून्य हैं, जैसे :—

"मुकुन्द नाम्नां विदुषां गुरूणां
शिष्टि पुनीता हृदये निधाय" में 'पुनीता' को।

अन्यथा संस्कृत में यह पूतां होता है।

किन्तु इस ग्रन्थ का प्रचार अत्यल्प हुआ है, फलतः यह विद्वज्जन समक्ष नहीं आया। आशा है बसके प्रचार कार्य पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

समाज कल्याण सङ्गठन देवप्रयाग के प्रथम संरक्षक के रूप में जनता के नाम आचार्य पण्डित चक्रधर जी जोशी का

संदेश

प्रस्तुति : भैरवदत्त भट्ट
देवप्रयाग

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत् ।।

महानुभाव,

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है, समाज में पनपता है और समाज की शुभ कामनाओं से ही प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। वह समाज द्वारा निर्मित अनेक संस्थाओं से लाभ उठाकर अपनी भौतिक तथा आध्यात्मिक प्रगति करता है और समाज के साथ ही अपनी जीवन लीला पूरी कर लेने के बाद अन्त में समाज के कन्धों पर ही इहलोक से प्रस्थान कर जाता है। यही नहीं समाज अपने हृदय में इतिहास के रूप में हर महापुरुष की याद संजोये रहता है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य पर समाज का सबसे बड़ा ऋण होता है, इस ऋण से मुक्त होने का एक मात्र उपाय है "समाज सेवा"। वर्तमान युग के व्यस्त जीवन में हर व्यक्ति समाज सेवा का कार्य नहीं कर सकता है, तो भी यदि वह अपने तन-मन और धन में से किसी एक का भी एक प्रतिशत समाज हित में लगाता रहे तो, वह सच्चे रूप में समाज सेवी बना रहेगा।

दूसरों से मानवोचित, व्यवहार करते हुए समाज को उन्नतशील बनाने में सहायता देना, हर नागरिक का कर्त्तव्य है। तभी अपने साथ, मनुष्योचित व्यवहार की मांग उसका अधिकार है। इस मत को यदि हम आज के समाज से विवेचना करें तो हमें समाज में अधिकारों की माँग अधिक सुनाई देती है। कर्त्तव्यों की ओर झांकने के लिए कम ही लोग तैयार मिलेंगे। हमारी प्राचीन संस्कृति की प्राण सामाजिक मर्यादाएँ टूट रही हैं। यदि इन मर्यादाओं को टूटने से न रोका गया तो हमारे सामाजिक जीवन में भी पश्चिम की तरह अशान्ति छा जावेगी।

आज अर्थोपार्जन की आपा धापी मची हुई है। कमजोर और निराश्रित लोगों को सहारा देने की चिन्ता किसी को नहीं है। क्या आप जानते हैं कि समाज से उचित स्नेह तथा पोषण न मिलने के कारण ही इस वर्ग के बच्चे आगे चलकर समाज से बदला लेने के लिए सामाजिक ढाँचे को चरमरा देने वाले असामाजिक कुकृत्यों में लग जाते हैं ?

अतः समाज के सभी लोगों को मेरी सलाह है कि समाज की मर्यादाओं को टूटने मत दीजिए, जो लोग बहुत आगे बढ़ गये हैं वे उनको भी सहारा दें जो पीछे छूट रहे हैं। अकेले चलोगे तो दिग भ्रमित हो सकते हो, समाज के साथ चलोगे तो विपत्ति आने पर समाज तुम्हारा साथ देगा।

समाज सेवा एवं समाज कल्याण का कार्य अकेले सरकार के ऊपर ही नहीं छोड़ देना चाहिए। मेरे विचार से सरकार सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से इस कार्य को अधिक कुशलता के साथ करा सकती है। समाज कल्याण संगठन संस्था स्वयं में एक प्रयोग है। मेरा तो यह विचार है कि हर गाँव, हर नगर में इस प्रकार की संस्थाएँ खुलनी चाहिए तथा इन संस्थाओं को आर्थिक सहायता देने हेतु हर जिले के मुख्यालय में एक जिला 'समाज कल्याण संगठन' खोला जाय। किन्तु देखना यह भी है कि इन संस्थाओं को चलाने हेतु "कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्" की विचार धारा के कितने लोग समाज में उपलब्ध होते हैं। ये संस्थाएँ दलगत राजनीति धर्म तथा जाति से ऊपर उठकर एक सच्ची लोक कल्याणकारी संस्थाएँ बनें। ये पोषक और पोषित दोनों हों। इनका जो कोष हो उसकी तुलना हम उस जलपात्र से कर सकते हैं, जिसमें से आवश्यकता पड़ने पर हम अपने पात्र से जल ले लें, समय आने पर हमें जल उपलब्ध हो जाय, पुनश्च समाज कल्याण के पात्र का जल लौटा दें। सहायता कार्यों में यह भी ध्यान रखा जाय कि व्यक्ति की सामाजिक समानता को ठेस न लगे। अतः व्यक्ति तथा व्यक्तियों को जो राहत दी जाय उसे गोपनीय रखा जाय तो श्रेयस्कर होगा।

आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व इस स्थान पर गढ़वाल भ्रातृ मण्डल की ओर से गढ़वाल विद्यापीठ की स्थापना की गई थी, जो पल्लवित हो रही है। आधा शताब्दी के बाद इस क्षेत्र के कुछ समाज सेवियों ने "समाज कल्याण संगठन" की एक नवीन सामयिक संस्था को जन्म दिया है, अस्तु मेरा नागरिकों से निवेदन है कि वे अधिक से अधिक संख्या में, इस संस्था के सदस्य बनकर, इसे शक्ति दें।"

दिनांक १७-३-७४

आचार्य पं० चक्रधर जोशी
नक्षत्र वेधशाला
देवप्रयाग-गढ़वाल

आचार्य जी के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय

—हजारीलाल जोशी 'स्नेही'
एम० ए० (त्रय) पत्रकार, देवप्रयाग

ज्योतिस्तत्वम्

४३ प्रकरणों में विभाजित यह ग्रन्थ ज्योतिषशास्त्र में अनुपमेय है। इसमें—पंचांग प्रकरण संकलनादि, ग्रहस्पष्टीकरण, राशिशील, ग्रहशील, ग्रहावस्था, ग्रहदान, संक्रान्ति, पंचांगसाधन, गोलर, अष्टकवर्ग, सुदर्शन प्रकरण, रश्मि, दशा, स्त्रीजातक, शुभाशुभ, मुहूर्त, वर्ष (तांत्रिक), निषेक, लग्नेष्ट शुद्धि, सूतिका, कारक, तनुभाव प्रकरण, धनभाव, सहजभाव, सुखभाव, पंचमभाव, शत्रुभाव, जायाभाव, आयुभाव, भाग्यभाव, कर्मभाव, लाभभाव, व्ययभाव, भावसारांश, ग्रहराशियुति, योग, जन्मपत्र्यादिलेखन, प्रश्न परीक्षा परिणाम, वृष्टि, अर्घ (तेजी-मंदी), प्रकीर्ण इन ४३ प्रकरणों में ज्योतिषशास्त्र के गम्भीर विषय का प्रतिपादन सरलतम ढंग से किया गया है; जिसके सम्यक् अध्ययन से व्यक्ति इस शास्त्र के सूक्ष्माति सूक्ष्म रहस्यों का ज्ञान और आधुनिक सभी उपाधियों की प्राप्ति के योग्य बन जाता है। डॉ० गिरधारीलाल गोस्वामी जी का पी० एच० डी० के लिए स्वीकृत शोधग्रन्थ इसका प्रमाण है।

इस ग्रंथ में लगभग ८ हजार मूल श्लोक हैं, जिनमें ज्योतिषशास्त्र के २५० ग्रंथों का सार निहित है। पूर्वार्द्ध एवम् उत्तरार्द्ध—दो भागों में विभाजित यह ग्रंथ—सिद्धान्त, संहिता और होरा स्कन्धत्रयी में विभक्त ज्योतिषशास्त्र के रहस्यमय आलोक का निदर्शन कराता है। सिद्धान्त भाग में ज्योतिषशास्त्र के व्यवहार में आने वाले गणितमात्र, प्राचीन अर्वाचीन अनेक प्रणालियों द्वारा इष्टकाल संशोधन एवं सूक्ष्मतक गणित द्वारा ग्रहों का स्पष्टीकरण किया गया है।

होरा विभाग में राशिशील, ग्रहशील से लेकर द्वादशभावों की सूक्ष्मतम विवेचना में ५ हजार श्लोकों का समावेश किया गया है, जो कि ज्योतिषशास्त्र के फल-विभाग में एक क्रान्तिकारी कार्य है। फलातेशान्तर्गत् यह एक अनूठा, अद्वितीय एवं अनुपमेय कार्य है।

संहिता विभाग में वृष्टि और समर्घ (तेजी-मंदी) का विस्तार से विवेचन, व्यापार जगत के रहस्यों की जानकारी व्यापारी वर्ग के लिए विशेषकर लाभप्रद है। इसको समझकर, व्यवहार में लानेवाला व्यापारी, उद्योगी कभी भी असफलता का मुंह नहीं देख सकता है। इस प्रकार इस ग्रन्थ की महानता स्वयं सिद्ध है।

त्रिकाल सन्ध्या

इसमें यजुर्वेद को मुख्य रूप से आधार मानकर गायत्री का जप, संध्यावन्दन (प्रातः, मध्याह्न, सायं) करने वालों के लिए उसकी विधि, मंत्र, भेद समझाये गये हैं। कोई भी जिज्ञासु इसको पढ़कर संध्योपासना

कर सकता है। इसके अतिरिक्त इसमें श्री सूक्तम्, पुरुषसूक्तम्, पुष्पमंत्राः आदि का भी समावेश कर आचार्य ने और भी उपयोगी बना दिया है।

गदावली

जैसा कि नाम से ही ज्ञात हो जाता है कि यह ग्रन्थ 'गद' अर्थात् 'रोग' विषय से सम्बन्धित है। होरा विभाग के अनेक अंगों में 'जातक' मुख्याङ्ग माना गया है। इसके अनन्त भण्डार में भृगु संहिता, सत्य संहिता, कुवेर संहिता, रावण संहिता, छाया संहिता प्रभृति अनेक संहिताएँ नंदीनाड़ी, सहदेवनाड़ी आदि अनेक बड़ी ग्रन्थ पाराशर होराशास्त्र, बृहज्जातक, जैमिनीय सूत्र, धारावली, जातकाभरण जातकपारिजात, जातकतत्वम्, सर्वार्थ चिन्तामणि ज्योतिस्तत्वम् प्रभृति इनके जातकग्रन्थ उपलब्ध हैं, और अनेकों लुप्त हो गये हैं। 'गदावली' इसी जातक ग्रन्थावली परम्परा में एक उपलब्धि है। इसमें ज्योतिष और आयुर्वेद का सम्मिश्रण है। मूलतः संस्कृत में लिखी गई किन्तु बोध गम्य बनाने के लिए हिन्दी में भी अनुवाद किया है। इसमें ग्रहों के द्वारा पैदा किए गये विभिन्न रोगों से उत्पन्न होने वाले रोगों का वर्णन है। जिस प्रकार एक वैद्य, डॉक्टर नाड़ी ज्ञान अथवा आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साधनों के द्वारा मानव-शरीर का विश्लेषण कर रोग का पता लगाते हैं, ठीक उसी प्रकार ज्योतिष का ज्ञाता इसके अध्ययन से ग्रहों की जन्म कालिक एवं वर्तमान गोचर-स्थिति से अध्ययन कर, रोग का निदान कर सकते हैं। यथा—

"ज्ञानभेडरीक्षतेऽङ्गेशे रोगो गुद समीपके।
अर्द्धाङ्गे वा रिपौ मन्दे वा भार्की पादरोगवात् ॥ पेज २१

अर्थात्-लग्न का स्वामी यदि बुध की राशि वा मंगल की राशि में हो और वह शत्रु ग्रह से दृष्ट हो तो गुदा के समीप में अथवा अर्द्धाङ्ग में रोग होता है। षष्ठ स्थान में शनि हो अथवा शुक्र शनि हों तो पाद रोग वाला होता है। और भी—

"पूज्य पण्डितदैत्येज्यैः पञ्चतास्थान संस्थितैः।
त्रिदोष कारकास्तेस्युर्हायने घनसम्मितो ॥ पेज ३६

अर्थात्-गुरु, बुध और शुक्र ये तीनों अष्टम् स्थान में स्थित हों तो १७वें वर्ष में त्रिदोष जन्य रोग हो जाते हैं।

इस सम्बन्ध में निम्न सम्मतियां भी विचारणीय हैं—

डा० कैलास, उपमंत्री-लोकस्वास्थ्य विभाग-बम्बई—

.........पं० श्री, चक्रधर जोशी की लेखन शैली भी अनोखी है। "गदावली" के अध्ययन के बाद जान पड़ा कि पण्डित जी ने ऐसे गहन विषय को कितनी सुन्दरता से सरल ही नहीं बनाया अपितु साधारण जनता भी इस विषय में किस प्रकार रस ले सके, इसका भी ध्यान रखा है। मेरी मान्यता है कि पुस्तक को आयुर्वेद की पाठ्यक्रम की पुस्तकों में ले लेना चाहिए जिससे कि होने वाले वैद्य इस विद्या से रोगी को लाभ पहुँचा सकें।

आयुर्वेदाचार्य पं० रामगोपाल शास्त्री-प्रिंसिपल-पुनर्वसु-आयुर्वेद महाविद्यालय, बम्बई—

"आयुर्वेद और ज्योतिषशास्त्र का निकटतम सम्बन्ध है। युतिव्यपाश्रय के समान ही दैवव्यपाश्रय चिकित्सा का महत्व भी आयुर्वेद महर्षियों ने स्वीकार किया है। आयुर्वेद के संहिता ग्रन्थों में अनेक स्थलों पर ग्रहशान्ति आदि का वर्णन मिलता है। गदावली नामक पुस्तक की रचना कर वैद्य समाज के लिए इस विषय पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करने का मार्ग प्रस्तुत कर दिया है। मैं चाहता हूँ कि इस पुस्तक को आयुर्वेद के पाठ्यक्रमों में स्थान दिया जाय जिससे आयुर्वेद के छात्र इस विषय से भली प्रकार परिचित हो सकें।"

डॉ० के० के० डोले, एम० एस-सी०, पी० एच० डी० फर्ग्यूसन कालेज, रसायन शास्त्र प्रोफेसर, पूना —

'Acharya Chakradhar Joshi has done great service to the science of Astrology by presenting this valuable treatise on such an important subject as the "Medical Astrology." The present treatise, "Gadavali" is a section of Jatak dealing with the influence of the planets, Nakshtras and stars on human psycology. It deads with the diseases affecting the human body and their co-relation with astronomical phenomena. A very minute and detailed discussion is presented by Acharya Chakradhar Shastri and he must be complimented for the lucid and precise treatment of the subject. Hence the prediction of bodily diseases and ailments will aid the diagnosis and treatment of the diseases. Jyotishacharya Chakradhar Joshi must be congratulated on present such a useful work to astrologers and the public.

बदरीनाथ धाम यात्रा गाइड—

प्रसिद्ध उद्योगपति मफतलाल ग्रुप्स, बम्बई वालों के आत्मीयतापूर्ण आग्रह पर उनकी उत्तराखण्ड के श्री केदारनाथ-बदरीनाथ प्रभृति प्रसिद्ध तीर्थों की यात्रा को सरल-सहज बनाने, आवश्यक जानकारी के लिए मार्ग निर्देशन हेतु, आचार्य पं० चक्रधर जी जोशी ने श्री हरिद्वार-देवप्रयाग से लेकर समस्त मार्ग का विस्तृत विवरण-रेलमार्ग, बस मार्ग, पैदल मार्ग, डाकखाना, तारघर, चिकित्सालय, डाक बंगले-धर्मशाला, स्थानों की दूरी, प्राप्त साधन आदि इसमें देकर सभी श्रद्धालु यात्रियों, देश-दर्शनार्थियों के लिए उपयोगी बना दिया।

सेण्ट निहालसिंह के शब्दों को देकर तो उन्होंने इसमें चार चांद लगा दिए। स्वयं अपने हाथों बनाया गया यात्रा मार्ग का नक्शा, उसकी सुस्पष्ठता, संकेत चिह्न तो उनके ज्ञान व आर्ट की भी विरलछटा छिटकाते ही हैं, बहुमुखी प्रतिभा का ज्ञान भी कराते हैं।

यह गाइड 'हैण्डबिल' इतना उपयोगी एवं आकर्षक है कि उसको सर्व सुलभ बनाने, मार्ग दर्शन हेतु मफतलाल ग्रुप्स बम्बई ने उसे छपवाकर पुण्य लाभ अर्जित किया है।

तीर्थ यात्रा विधान पद्धति—

भारतवर्ष में अनादिकाल से यात्रा का पवित्र-पावन विधान चला आ रहा है। वैदिक काल में महर्षियों द्वारा अनेक तीर्थों की शोध और रचनायें हुईं; मन्वन्तरकाल से पुराणकाल तक तथा रामायण-महाभारत में अनन्त तीर्थों का वर्णन मिलता है। प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थों के मिश्रण से समस्त देश ही तीर्थ बन गया है।

सर्व प्रथम तीर्थ यात्रा को जाने वाले व्यक्ति को मनोबल का सम्पादन करना चाहिए, उसके लिए सत्य, क्षमा, इन्द्रिय निग्रह, सर्वप्राणिमात्र पर दया, प्रियवादिता, ज्ञान और तप, इनका आचरण परमावश्यक है।

तीर्थ में पहुँचकर धार्मिक अथवा देश दर्शन भावना से प्रत्येक व्यक्ति को विधान पूर्वक आचरण तथा कर्म करने चाहिए। जैसे कि कुतुपकाल (मध्याह्न और अपराह्न के बीच) में श्राद्ध कर्त्तव्य है, इसे पितृयज्ञ भी कहते हैं। यह विधिवत होना चाहिए, यदि यह कर्म विधिवत न हो तो उसका कुछ भी फल प्राप्त नहीं हो सकता। विधि संक्षिप्त हो अथवा विस्तृत, किन्तु होनी चाहिए विधानानुरूप। इसी उद्देश्य को लेकर आचार्य पं० चक्रधर जोशी ने इस पुस्तक का संपादन कर प्रकाशन किया है।

इसमें लघु और विस्तृत दोनों ही पद्धतियाँ दी गई हैं। तीर्थ में जितने कर्त्तव्य हैं, प्रायश्चित से लेकर हेमाद्रि महासङ्कल्प, दशविधस्नान, तर्पण, श्राद्ध, सुफल पूजन तथा विभिन्न दानादि सब इसमें विधिवत् दिए गये हैं।

तीर्थों में किए गये कर्मों-दानों के अतिरिक्त भी इसमें महालय श्राद्ध, घरों में किए जाने वाले दान, प्रेतपिण्ड श्राद्ध, पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, मंत्र पुष्पम्, पवमानसूत्र तथा आशीर्वाद मंत्रों का भी समावेश कर दिए जाने से यह प्रत्येक ब्राह्मण पुरोहित वर्ग के लिए विशेष उपयोगी ग्रन्थ बन गया है।

स्व० आचार्य जी का "शिलालेख अध्ययन पद्धति" लेख पुरातत्व संस्कृति, इतिहास, भाषाविज्ञान आदि दृष्टिकोणों से बड़ा ही महत्वपूर्ण एवं सारगभित है। सन् १९५८ में नवभारत टाइम्स के संपादक श्री हरिशंकर त्रिवेदी ने आग्रहपूर्वक इसे मंगा कर प्रकाशित किया। "नवभारत टाइम्स" के ही २४-८-५८ के रविवारीय अंक में प्रकाशित लिपि सम्बन्धी "चार्ट" भी पुरातत्व, भाषाविज्ञान की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज जब कि हमारी सांस्कृतिक विरासत का इतिहास खण्डहरों, दुर्गम क्षेत्रों, भूगर्भ में समाया हुआ है। कई महत्वपूर्ण दस्तावेज, शिलालेख (अभी पढ़े नहीं जा सकने से) इस सांस्कृतिक धरोहर को रहस्य बनाये हुये हैं, इस दृष्टि से इन लेखों का बड़ा महत्व है।

इसी प्रकार 'कालगणना के सिद्धान्त' वाला लेख खगोल शास्त्रियों, ज्योतिषियों, पुरातत्व, इतिहास, भूगोल के अन्वेषकों, विद्यार्थियों के लिए अति महत्वपूर्ण है।

हस्तरेखा का साधारण-प्रारम्भिक, किन्तु आधिकारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनका "आपका हाथ, उसकी बनावट तथा उसके चिह्नों का परिचय" नामक लेख भी सभी के लिए उपयोगी है। इसी प्रकार संस्कृत-भाषा के अध्येताओं के लिए "गढ़वाल मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन" (श्रीनगर-गढ़वाल) में पढ़ा गया उनका अध्यक्षीय भाषण भी प्रेरणा-प्रद है।

इसके अतिरिक्त उनके द्वारा प्रेषित अभिनन्दन पत्र, उनके लिखे संदेश, वक्तव्य, विभिन्न विषयों-क्षेत्र में किए गये कार्य, उनके बनाये चित्र उनकी बहुमुखी प्रतिमा, विद्वता, क्षमता और देश के प्रति अनन्य निष्ठा के पूर्ण परिचायक हैं।

ज्योतिष-खण्ड

ज्योतिष

—कृष्ण दत्त भारद्वाज
सी० ४/२७ सफदर जंग ऐंक्लेव
हौज खास, नई दिल्ली ।

ज्योतिष वह विद्या अथवा शास्त्र है जिसमें ज्योति की चर्चा की गई है। ज्योति शब्द का अर्थ है चमकने वाला। "द्योतत इति ज्योतिः"[1]। आकाश में चमकने वाले पिण्डों में सूर्य, सौर परिवार के ग्रह, उनके उपग्रह एवम् नक्षत्रावली उल्लेख योग्य हैं। अन्तरिक्ष में विद्युत् एवम् भू-मण्डल में अग्नि भी ज्योति के ही रूप हैं। स्वल्प प्रकाशवान् खद्योत को भी ज्योतिरिङ्गण कहा गया है। ज्योति के समस्त भेदोपभेद दार्शनिक दृष्टि से तेजस्तत्त्व के विलास हैं।

ज्योतिष्मान् द्रव्यों में मरीचिमाली भुवन-भास्कर सूर्य सर्वाधिक प्रकाशवान् दृग्गोचर होते हैं। अतएव इन्हें कण्व-नन्दन महर्षि प्रस्कण्व ने 'देवं देवत्रा' (ऋग्वेद १.५०.१०) अर्थात् प्रकाशवानों में सर्वाधिक प्रकाशवान् कहा है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने सूर्य को अपनी विभूति कहकर इन्हें गौरव प्रदान किया है—'ज्योतिषां रविरंशुमान्' (श्रीमद्भगवद्गीता १०·२१)।

कल्प के प्रारम्भ में ही विधाता ने विश्व के जीवों की सुख-सुविधा के लिये सूर्य और चन्द्र की रचना कर दी थी 'सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्व मकल्पयत्' (ऋग्वेद १०.१९०.३) ये दोनों ज्योतियाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव का ध्यान आकर्षित करती रही हैं। उदय होते सूर्य से आरोग्य-लाभ के लिये वैदिक मन्त्रों के जप की बड़ी महिमा है। उदाहरणार्थ बृहद्देवता—नामक अपने ग्रन्थ में महर्षि शौनक ने कहा है कि—

"उद्यन्नद्येति मन्त्रोऽयं सौरः पाप-प्रणाशनः ।
रोगघ्नश्च विषघ्नश्च भुक्ति-मुक्ति-फल-प्रदः ॥"

अर्थात् उद्यन्नद्य इत्यादि मन्त्र सूर्य-देव की उपासना में प्रयुक्त होता है। यह पापों को नष्ट करने वाला, रोगों को दूर करने वाला और विष के प्रभाव को निर्मूल करने वाला है। यह सांसारिक भोगों को तो देता ही है,

---

१. द्युत दीप्तौ भ्वादिगणीयो धातुः + इस् ।
द्युतेरिसिन्नादेश्च जः। (उणादि-सूत्रम् २६७)

आमुष्मिक कल्याण अर्थात् मोक्ष को भी देने वाला है। यह मन्त्र अपने पूर्ण रूप में इस प्रकार है :—

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥
(ऋग्वेद १.५०.११)

इसके आगे जो दो और मन्त्र हैं उन्हें भी इसके साथ मिलाने से तृच (तीन ऋचा) बन जाता है। उसका जप परम हितावह है।

सूर्य का आधार ध्रुव है, और ध्रुव तारावली-विग्रह शिशुमार के पुच्छ-भाग में अवस्थित है। शिशुमार के आधार स्वयं भगवान नारायण हैं। श्रीमन्नारायण उस शिशुमार के हृदय-प्रदेश में विराजमान हैं—

(१) आधारभूतः सवितुर्ध्रुवो मुनिवरोत्तम।
ध्रुवस्य शिशुमारोऽसौ सोऽपि नारायणात्मकः।
(श्रीविष्णुपुराण २.९.२३)

(२) केचनैतज्ज्योतिरनीकं शिशुमार-संस्थानेन भगवतो वासुदेवस्य योग-धारणायामनुवर्णयन्ति। यस्य पुच्छाग्रेऽवाक्शिरसः कुण्डलीभूतदेहस्य ध्रुव उपकल्पितः।

(श्रीमद्भागवतम् ५.२३.५)

महर्षि गार्ग्य ने चार मन्त्रों में २८ नक्षत्रों के नाम दिये हैं। 'सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु' से ये मन्त्र प्रारम्भ होते हैं और 'आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु' (अथर्ववेद १९.७.२-५) पर समाप्त होते हैं जिनमें कृत्तिकादि भरण्यन्त नक्षत्र गिनाये गये हैं। महर्षि ने अग्रिम सूक्त में अर्थात् अथर्ववेद के १९ वें काण्ड के ८ वें सूक्त में उक्त नक्षत्रों की मंगल-कारिणी भावना भी व्यक्त की है—

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयँश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु॥
अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे।
योगं प्रपद्ये क्षेमं च क्षेमं प्रपद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥

इसी प्रकार महर्षि वसिष्ठ ने भी ग्रहों के द्वारा कल्याण-कामना की है—

(१) शं नो दिविचरा ग्रहाः॥
(२) शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा॥
(अथर्ववेद १९.९.७ तथा १०)

हमारे सातों दिनों के नाम ग्रह-सप्तक के आधार पर रखे गये हैं, और बारहों महीनों के नाम नक्षत्रानुसारी

हैं। उदाहरणार्थ, चित्रा नक्षत्र जिस महीने की पूर्णिमा में होता है वह चैत्र कहलाता है[२]; और विशाखा नक्षत्र जिस महीने की पूर्णिमा में होता है वह वैशाख कहलाता है इत्यादि। इस प्रकार यह नाम-करण ज्योतिः शास्त्रानुकूल है।

समयापर-पर्याय काल अनन्त है। सूर्य और चन्द्रमा की गतिविधि पर दृष्टि रखकर इस महाकाल के अनेकानेक खण्ड-काल ज्योतिर्विदों ने बनाए हैं जिनके अन्तर्गत मन्वन्तरों एवं युगों की भी गणनाएँ विद्यमान हैं। लौकिक साहित्य में प्रायः सर्वत्र ज्योतिश्चर्चा (वर्ष, मास, पक्ष दिन आदि के रूप में) निहित है। निम्न उदाहरण संकेत-रूप से माननीय हैं।

(१) भगवान् श्री राम की जन्म-वेला का उल्लेख करते हुए महर्षि वाल्मीकि का वचन है—

ततश्च द्वादशे मासि चैत्रे नावमिके तिथौ।
नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु॥
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह
प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम्।
कौसल्याऽजनयद् रामं दिव्य लक्षणंसंयुतम्॥

(रामायणम् १.१८.८–१०)

(२) भगवान् श्रीकृष्ण के प्रादुर्भाव का वर्णन करते समय महर्षि वेदव्यास जी की उक्ति है—

अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः।
यर्ह्येवाऽजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रह तारकम्॥

(श्रीमद्भागवतम् १०.३.१)

(३) दिलीप-नन्दन महाराज रघु के जन्म के समय का निरूपण करते हुए कवि-कुल-गुरु कालिदास ने लिखा है—

ग्रहस्ततः पञ्चभिरुच्चसंस्थै—
रसूर्यगैः सूचित - भाग्य - सम्पदम्।
असूत पुत्रं समये शची - समा
त्रिसाधना शक्तिरिवार्थमक्षयम्॥

(रघुवंशम् ३.१३)

प्राचीन ज्योतिर्विद विद्वद्वर्ग नभोमण्डलीय ज्योतिष्पिण्डों के सूक्ष्म परिज्ञान के लिये भव्य भवनों का निर्माण किया करते थे। भारत की राजधानी दिल्ली के दक्षिणाञ्चल में विद्यमान वर्तमान महरौली का नाम मिहिरावली था। यहां मध्य युग में नक्षत्रों की गतिविधि के निरीक्षणार्थ २८ भवन थे, और उनके समीप मिहिर अर्थात् सूर्य का

२. सास्मिन् पौर्णमासीति (पाणिनि की अष्टाध्यायी ४.२.२१)
चैत्री पौर्णमासी अस्मिन्निति चैत्रो मासः।
चैत्री + अण् = चैत्रः॥

मन्दिर था। दिल्ली और जयपुर आदि नगरों के मान-मन्दिर भारतीय ज्योतिष परम्परा के अनुयायी अनुसन्धित्सुओं को उनके अनुसन्धान-कार्य में यथेष्ट पुष्कल सहायता देते रहे हैं।

धार्मिक जनता के प्रायः समस्त व्रतों और उत्सवों के पर्व ज्योतिषशास्त्र के आधार पर मनाये जाते हैं। पाणि-ग्रहण-विषयक एक उदाहरण से यह विषय स्पष्ट हो जाता है—

"उदगयन आपूर्यमाणे पक्षे पुण्याहे पाणिं गृह्णीयात् त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु स्वातौ मृगशिरसि रोहिण्यां वा"

(पारस्कर-गृह्यसूत्रम्)

प्राचीन ज्योतिषियों ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से आकाशीय ज्योतिष्पिण्डों की गति का उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त कर लिया था। एक राशि में चन्द्रमा की अल्पकालीन स्थिति से लेकर सप्तर्षियों की अतिदीर्घकालीन स्थिति तक उनके लिये कर-तला-मलकवत् हो गई थी।

ऋग्ज्योतिष-नामक वेदाङ्गज्योतिष प्रतिपादक ग्रन्थ से लेकर अद्यावधि सहस्रों ग्रन्थ-रत्न गणित-जातक-ताजिक-मुहूर्त्त-प्रभृति विषयों पर निर्मित हुए हैं जो इस विद्या की महिमामयी माला में सुशोभित हो रहे हैं। वे एतद्देशीय मेधावियों के सार्थक चिन्तन का विशद परिचय दे रहे हैं।

नभस्तलीय सूर्यादि ज्योतिषियों का प्रभाव भू-मण्डल पर निरन्तर होता रहता है। मानव का मन भी इससे अस्पष्ट नहीं है। ग्रहों का प्रभाव द्विविध है—शुभ एवं अशुभ। अशुभ की निवृत्ति के लिये शास्त्र में अनेक उपाय निर्दिष्ट हैं जिनमें ग्रहों की आराधना, उनके रत्नों का धारण, मन्त्रों का जप तथा दान-विधि मुख्य हैं। नवग्रहों की पूजा का विधान बहुत प्राचीन है। महाराज जनक के राजगुरु महर्षि याज्ञवल्क्य ने (जिन्होंने भगवान आदित्य से बृहदारण्यक उपनिषद् प्राप्त किया था[३]) अपनी स्मृति में इसका उल्लेख किया है—

यस्य यस्य यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत्।
ब्रह्मणैषां वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥
ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रायाः पतनानि च।
भावाभावौ च जगतस्तस्मात्पूज्यतमा ग्रहाः ॥

(याज्ञवल्क्य स्मृति, आचाराध्याय १२.३०७, ३०८)

सूर्यादि ज्योतियों की समीचीन आराधना से मनुष्य अशुभ-निरसन करके अपने उस मन को भी निस्तमस्क बना लेता है जो उसकी अपनी आन्तरिक ज्योति है—"यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योति रन्तरमृतं प्रजासु" (यजुर्वेद ३४.३)। ॐ शम्॥

---

३. ज्ञेयं चारण्यकमहं यदादित्यादवाप्तवान्।

(याज्ञवल्क्यस्मृति, प्रायश्चित्ताध्याय ४.११०)

ज्योतिष के दो श्रेष्ठ योग

--डॉ० सूर्य प्रसाद गुप्त 'शास्त्री'
वाराणसी

भृगु संहिता योगावली खण्ड में ज्योतिष के बहुत से योग वर्णित हैं, किन्तु ज्योतिष शास्त्र के प्रमाणित प्रधान योग एक मात्र दो ही हैं। प्रथम सूर्य योग द्वितीय चन्द्र योग है। मानव के जीवन पर इन श्रेष्ठ योगों का प्रभाव अवश्यम्भावी है।

प्रथम सूर्य योग

(क) वासी योग—चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई भी ग्रह या कई ग्रह सूर्य से बारहवें स्थान में बैठे हों तो वासी योग होता है। प्रभाव—वासी योग में जन्म लेने वाला मानव अपने कार्य में कुशल होता है। यदि सूर्य से बारहवें भाव में शुभ ग्रह हो तो जातक प्रसन्न, निपुण, गुणी, चतुर और विद्यावान होता है। पारिवारिक सुख, प्रसन्न चित्त, यश प्राप्त करने वाला, शत्रु-विजयी एवं आनन्दित रहता है। यदि सूर्य से बारहवें में पाप ग्रह हो तो जातक अधिकतर अपने निवास स्थान से दूर रहता है। जीवन में भयंकर भूल करने के कारण दुःखी, मन में सदैव बदला लेने, रक्त पात एवं लूट मार करने की दूषित भावना रहती है। उसके चेहरे से क्रूरता का प्रदर्शन होता है। यदि पाप ग्रह एवं शुभ ग्रह का मिश्रण हो तो मिश्रित फल जानना चाहिये।

(ख) वेशि योग—चन्द्रमा के अलावा कोई भी ग्रह या कई ग्रह सूर्य से दूसरे भाग में हों, तो वेशि योग होता है। प्रभाव—वेशि योग में जन्म लेने वाला सौम्य चेहरे वाला, आनी वाणी से प्रभावित करने वाला, चतुर, धनी, अनेकों भोग-भोगने वाला, जनता का नेतृत्व, कार्य में दक्ष एवं श्रद्धा का पात्र होता है। वह शत्रु हन्ता एवं लोक प्रसिद्ध होता है। अशुभ ग्रहों से प्रभावित कुण्डली वाला व्यक्ति दुष्ट, संगतिरत और कुचक्री होता है। वह आजीविका के लिये परेशान एवं अपने दुष्ट कर्म से कुख्यात होता है।

(ग) उभय चरिक योग—यदि किसी कुण्डली में सूर्य से दूसरे एवं बारहवें घर दोनों ओर ग्रह बैठे हों तो उभयचरिक योग होता है। यदि दोनों ओर शुभ ग्रह घेरे हों, तो सहन-शील, न्याय प्रिय, निपुण और वादी-प्रतिवादी को समान रूप से देखता हुआ निष्पक्ष निर्णय देता है। वह पूर्ण वलिष्ट, स्थिर, अविचलित एवं पुष्ट ग्रीवा वाला होता है। अशुभ ग्रहों से घिरा हुआ सूर्य होने से मानव पापी, कपटी, झूठा, पराधीन एवं दरिद्र होता है। मिश्रित ग्रहों का घेरा होने से मिश्रित फल को प्राप्त होता है।

द्वितीय चन्द्र योग

चन्द्र का विचार गोचर, आयु निर्णय इत्यादि में शत-प्रतिशत सही-सही फलदायक होता है।

(क) सुनफा योग—जिस कुण्डली में सूर्य को छोड़कर और कोई ग्रह चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर हों, तो सुनफा योग होता है। प्रभाव—सुनफा योग वाला मानव अपने श्रम से धनी एवं प्रसिद्ध होता है। वह चतुर कार्य-कर्त्ता और समाज एवं कुटुम्ब में भी सम्मानित होता है।

प्रत्येक ग्रह से बनने वाला सुनफा योग

मंगल—बलिष्ठ एवं पराक्रमी होता है। वाणी दृढ़ एवं कठोर होती है और सभी से विरोध करने वाला होता है।

बुध—जातक संगीत, चित्रादि कलाओं में इच्छा रखने कला होता है। ऐसा धार्मिक एवं सामाजिक अन्ध-विश्वास को मानने वाला, काव्य का रचयिता या उसमें रुचि रखने वाला, धीमान, सुन्दर तथा सभी का भला करने वाला होता है।

बृहस्पति—कई भाषा का ज्ञाता, विद्या द्वारा प्रवीण, कृषि-कर्त्ता, सद्‌गुण सम्पन्न, धनी, अच्छे परिवार वाला होता है।

शुक्र—सुन्दरी का स्वामी, स्व-गृह वाला, सजावट प्रिय, वाहन सुख पूर्ण प्राप्त करने वाला, राज्य वर्ग में उन्नति करने वाला, चतुर एवं कामी होता है।

शनि—जातक बुद्धिमान, मुखिया, सदस्य, धनी, राजनीतिज्ञ, सौम्य व्यवहार वाला, भेद पूर्ण तथा मलीन आचार से प्रभावित होता है।

(ख) अनफा योग—चन्द्रमा से बारहवें भाव में (सूर्य को छोड़कर) यदि कोई ग्रह हो तो अनफा योग होता है। प्रभाव—सुडौल शरीर वाला, दूसरों को आकर्षित करने वाला, समाज में सम्मानित, नम्र, सुशील, सद्‌गुणी तथा विचारवान होता है। शौकीन, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, सदैव प्रसन्न चित्त रहता है।

मंगल—चौर कर्मकर्त्ता, अभिमानी, युद्ध में कुशल, दूसरे के धन को हरण करता है।

बुध—संगीत प्रेमी, काव्य चित्रादि में भी रुचि रखता है। भाषण कला, राज्य वर्ग से लाभान्वित होता है। सुन्दर, स्वस्थ शरीर, भाग्यशाली एवं अपने कार्य को प्रसिद्ध करने वाला होता है।

गुरु—बुद्धिमान, संघर्षों से न डिगने वाला, काव्य क्षेत्र एवं राज्य पक्ष में शनैः शनैः अग्रसर होता है।

शुक्र—प्रेमी, अपने अधिकारी को प्रसन्न रखता है। जीवन का पूर्ण आनन्द माँगता है।

शनि—धनी, प्रसिद्धवक्ता एवं जनता को अपने पक्ष में करने में चतुर होता है। वाहन-सुख एवं सुन्दरी सुख का भागी होता है। गुणवान, पुत्रवान एवं जीवन की सभी समस्याओं को सरल विधि से सुलझाने वाला होता है।

(ग) दुरधरा योग—चन्द्रमा दोनों ओर ग्रह से घिरा हो तो दुरधरा यानी दुर्धरा योग बनता है। प्रभाव—ऐसा जातक प्रसिद्धि, पराक्रम और सम्मान प्राप्त करता है। यह योग कुल १८० प्रकार के बनते हैं। चन्द्र योगों का वृहत्-

वर्णन मेरे "शित्र संहिता" नामक ग्रन्थ में देखें। जो श्री बड़ा गणेश पुस्तकालय के ०६३—१६१ बड़ा गणेश वाराणसी से प्रकाशित है।

(घ) केमद्रुम योग--कुण्डली में यदि चन्द्रमा के दोनों तरफ कोई भी ग्रह न हो तो केमद्रुम योग बनता है। प्रभाव – सदैव गन्दा, दुःखी, गलत कार्य करने वाला, सम्पूर्ण जीवन में परेशान रहता है। सन्तान कष्ट भोगी, स्त्री भी चिड़चिड़े स्वभाव वाली होती है। ऐसे लोग लम्बी आयु वाले होते हैं। केमद्रुम भंग योग चन्द्रमा के साथ कोई ग्रह बैठा हो, यह देखता हो तो केमद्रुम योग भंग होता है। चन्द्रमा को शुभ ग्रह के दिखने से केमद्रुम योग भंग हो जाता है। इस प्रकार से सर्व विदित है कि शास्त्रीय प्रमाणित ये केवल दो ही सर्वश्रेष्ठ योग है।

मानव जीवन पर ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव ?

—आचार्य भास्करानन्द लोहनी

आधुनिक युग में अज्ञानता वश ज्योतिषशास्त्र अपनी जन्मभूमि भारत में ही एक उपेक्षित विषय हो रहा है जब कि पश्चिमी जगत में इसका उत्तरोत्तर प्रसार-प्रचार एवं विकास हो रहा है और नित नये अन्वेषण हो रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में गत कुछ वर्षों से फलित ज्योतिष को विधिवत् विज्ञान की मान्यता भी प्राप्त हो गई है और वहां कई विश्वविद्यालयों में इसकी शिक्षा दी जा रही है। भारत में उपेक्षा का एक कारण यह भी है कि कुछ धूर्त अनाधिकारी एवं अशिक्षित लोगों ने इसे ठगी का साधन बना रखा है। दूसरी ओर यहां शोध एवं संशोधन की प्रकिया लगभग लुप्त है।

अन्तरिक्ष के ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव मानवों एवं पृथ्वी के जन-जीवन पर क्यों और कैसे होता है—इस विषय पर अनेकों पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। कुछ वर्षों पूर्व विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री नेल्सन तथा नार्लीकर सप्रमाण पृथ्वी के जीवधारियों पर ग्रहों नक्षत्रों के प्रभाव को सिद्ध कर चुके हैं। इन प्रभावों को बहुत कुछ प्रत्यक्ष तथा स्पष्ट देखा जा सकता है। कमल तथा सूर्यमुखी के पुष्पों तथा कतिपय अन्य पेड़ पौधों पर सूर्य चन्द्रमा का प्रभाव हर कोई स्पष्ट देख सकता है। यदि आप समुद्र के किनारे रहते हों, या समुद्र देखा हो तो ज्वार-भाटे के रूप में समुद्र पर चन्द्रमा का प्रभाव आपने देखा होगा। जो चन्द्रमा समुद्र के पानी में १४ से २४ मीटर तक ऊँची लहरें पैदा कर सकता है तो क्या वह मनुष्य की भावनाओं में ज्वार-भाटा पैदा नहीं कर सकता ? पागलों पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट देख सकते हैं, जिस रात को पूरा चन्द्रमा होता है उसका पागलपन बढ़ जाता है और २५ दिन भले रहने वाले पागल भी पूरे चन्द्रमा के दिन अधिक पगला जाते हैं। न्यूयार्क में इस सम्बन्ध में जो परीक्षण और अनुसन्धान हुये हैं उनसे इस बात की पुष्टि हुई है कि पूर्ण चन्द्रमा होने पर पागलों के रस, रक्त नसों, मन-मस्तिष्क तथा तापमान में विशेष परिवर्तन होता है। इससे सिद्ध है कि चन्द्रमा व अन्य ग्रहों का प्रभाव पृथ्वी के जीवधारियों पर अवश्य पड़ता हैं। इंगलैण्ड में हुए परीक्षणों से यह भी सिद्ध हुआ है कि मछलियाँ समुद्र में अपना आने-जाने का मार्ग चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार निश्चित करती हैं।

सीपोयाँ, घोंघे और मोतियों के खोल उसी समय अपना मुँह खोलते हैं तथा खाना प्राप्त करते हैं—जबकि चन्द्रमा ठीक उसी देशान्तर रेखा के ऊपर से गुजर रहा हो।

वास्तव में मानव शरीर या पृथ्वी का कोई भी चर-अचर पदार्थ उन्हीं पंच महाभूतों से बना है जिन पंच-महाभूतों (तत्वों) से ग्रह-नक्षत्रों एवं ब्रह्माण्ड की सृष्टि हुई है। अतः "यथा ब्रह्माण्डे तथा देहे" एवं "पिंडोऽयं पंच भौतिकः" के सिद्धान्तानुसार भी ब्रह्माण्ड के प्रत्येक पिण्ड का एक-दूसरे पर एवं उसके चराचर पर प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है। अमेरिका तथा ब्रिटेन के भूगर्भशास्त्रियों का कहना है कि यदि पृथ्वी पर बृहस्पति ग्रह का प्रभाव न होता तो इसका पूरा उत्तरी गोलार्ध हमेशा हिमाच्छादित, जनविहीन रहता। लेमोण्ट डोहर्टी वेधशाला के वैज्ञानिक डा० जेम्स मेज का कहना है कि बृहस्पति की गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी को अपनी ओर खींचती है, जिसके कारण पृथ्वी की कक्षा में एक लाख वर्षों के अन्तर से परिवर्तन होता रहता है। यदि बृहस्पति ग्रह पृथ्वी की कक्षा तक में परिवर्तन कर सकता है तो क्या पृथ्वी के चराचर पर उसका प्रभाव नहीं होता होगा ? ब्राउन विश्वविद्यालय के डा० हेज और डा० जौन एम्ब्राई तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के डा० निकोलस जे० शैकलटन ने 'साइंस' पत्रिका में ठोस प्रमाण प्रस्तुत करते हुए यह सिद्ध किया है कि पृथ्वी तथा सौर-मण्डल के अन्य ग्रहों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। यहाँ तक कि थोड़े-थोड़े समय से सौर-मण्डल के प्रत्येक ग्रह की कक्षा में बार-बार अस्थायी परिवर्तन भी होता रहता है।

ज्योतिष शास्त्र में पृथ्वी के चराचर पर ग्रहों के इसी प्रकार के प्रभाव की मान्यता है, किन्तु यह प्रभाव प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर न होने [सूक्ष्म होने से] इनकी भौतिक दृष्टि से पुष्टि नहीं होती थी और जन-साधारण ही क्या कुछ उच्चशिक्षित लोगों में भी यह भ्रान्त धारणायें हैं कि ज्योतिष शास्त्र कपोलकल्पित एवं अन्ध-विश्वास मात्र है, लेकिन अब विज्ञान के द्वारा इन सूक्ष्म प्रभावों की पुष्टि हो चुकी है और यह सिद्ध हो चुका है कि यह शास्त्र विज्ञान सम्मत है, लेकिन इस विज्ञान का, इस शास्त्र का सही-सही विश्लेषण होना आवश्यक है, यह कार्य-विद्वान ही कर सकता है।

भारत के सुप्रसिद्ध रडार तथा रेडियो विशेषज्ञ श्री सी० पी० जोशी जी ने अपने बीस वर्षों के अध्ययन अनुभव तथा अनुसंधान के आधार पर इन सूक्ष्म प्रभावों का विश्लेषण इस प्रकार किया है—किसी भी प्रभावोत्पादक कारण का स्थूल रूप से दिखाई देना आवश्यक नहीं है और कई सूक्ष्म प्रभाव गुप्त रूप से भी दूसरे माध्यमों के द्वारा प्रक्रिया कर सकते हैं। कुछ शताब्दी पूर्व हमें पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण तथा भू-चुम्बकत्व जैसे महान् तथ्यों का भी ज्ञान नहीं था और इसी प्रकार हमें उन विशालकाय नक्षत्रों का भी ज्ञान नहीं था जो दूरदर्शक यंत्रों से तो नहीं दिखाई देते पर जिन्हें अब "रेडियो ज्योतिष" से देखा जा सकता है। वैज्ञानिक साधनों की वृद्धि के द्वारा ही हमें उपरोक्त तथ्यों का पता चला और इन्हीं साधनों तथा उपकरणों की सहायता से पृथ्वी पर ग्रहों के प्रभाव पर भी प्रकाश पड़ने की संभावना है। दूरदर्शक यंत्रों के आविष्कार के पश्चात् खगोल ज्योतिष के बड़े-बड़े सिद्धान्त समझ में आये और बाद में जब बड़ी-बड़ी वेधशालाओं में तीव्रगामी ग्रहों तथा नक्षत्रों की गति पर विचार किया गया तो न्यूटन का सिद्धान्त भी इस काम के लिये अपर्याप्त सिद्ध हुआ। इसी लिये तीव्रगामी वस्तुओं के भार में परिवर्तन को समझाने के लिये आइनस्टाइन को अपना सापेक्षवाद का महान् सिद्धान्त बनाना पड़ा जो गुरुत्वाकर्षण के सूक्ष्म प्रभावों को भी पूर्णतया सिद्ध कर सकता है। इससे यह स्पष्ट है कि विज्ञान की प्रगति ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्तों की भी पुष्टि कर सकती है।

सूर्य तथा ब्रह्मांड के अन्य भागों में प्रतिक्षण ऐसी महत्वपूर्ण घटनायें होती रहती हैं जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पृथ्वी पर प्रभाव पड़ता रहता है। सूर्य की स्थिति, सूर्य के ज्वालामुखों का उतार चढ़ाव, ग्रहों की विशेष स्थिति, ग्रहण, उल्कापात तथा ब्रह्मांड रश्मियों की उत्तेजना आदि के कारण पृथ्वी के वायुमंडल में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं, जिनका रेडियो संचार, भू-चुम्बकत्व, ऋतु परिवर्तन आदि पर काफी प्रभाव पड़ता है। यदि इन परिवर्तनों से जीवधारियों पर भी प्रभाव पड़े तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

हमारा सौभाग्य है कि हमारे ऊपर हमारी सुरक्षा के लिये वायुमंडल का एक विस्तृत आवरण है जो हमें ब्रह्मांड में होने वाली दुर्घटनाओं के विनाशकारी प्रभाव से बचाता है। यदि यह नहीं होता तो उल्कापात तथा संहारकारी किरणों के प्रकोप से पृथ्वी पर चन्द्रमा की भाँति जीवन असंभव हो जाता। परन्तु हमारी रक्षा करने की क्रिया में हमारे वायुमंडल को कई प्रकार के प्रहार सहने पड़ते हैं और इस प्रक्रिया में उसमें व्यापक परिवर्तन होते रहते हैं। सूर्य तथा अंतरिक्ष से आने वाली किरणों के आघात से पृथ्वी के वायुमंडल के ऊपरी भाग का "आयनीकरण" हो जाता है—वह विद्युन्मय हो जाता है। इस प्रकार जो २०० मील गहरा आवरण बनता है उसे "आयोनोस्फियर" कहते हैं।

पृथ्वी से बाहर जाने वाली रेडियो तरंगों को "आयोनोस्फियर" एक दर्पण की भांति परावर्तित कर देता है और इसी के कारण पृथ्वी पर दूर तक रेडियो संचार सम्भव होता है। चूंकि रेडियो तरंगों का दूर तक पहुँचना आयोनोस्फियर के परावर्तन पर पूर्णतया निर्भर है इसलिये आयोनोस्फियर के परिवर्तनों का रेडियो संचारण पर तुरन्त असर पड़ता है। आयोनोस्फियर एक ऐसा माध्यम है जिसके परिवर्तनों का ज्ञान हम रेडियो तरंगों की शक्ति को नाप कर प्राप्त कर सकते हैं और इस तरह से हमें उन सूक्ष्म प्रभावों का भी पता चल सकता है जो ग्रहों के द्वारा पृथ्वी या उसके आयोनोस्फियर पर हो रहे हैं।

पृथ्वी पर सभी कुछ सूर्य के ऊपर निर्भर है इसलिये सूर्य के प्रभावों की सूची बनाना अनावश्यक है पर रेडियो विज्ञान द्वारा हमें कई ऐसे सौर-प्रभावों का ज्ञान है जो साधारणतया दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। आयोनोस्फियर में सूर्य के प्रभाव से दैनिक, मासिक, वार्षिक तथा एकादशवर्षीय परिवर्तन होते हैं जिनका रेडियो संचारण तथा भू-चुम्बकत्व पर विशेष प्रभाव पड़ता है। सूर्य की सतह से निकलने वाली लपटों के सक्रिय प्रकाश से तो कभी कभी आयोनोस्फियर में ऐसे तूफान आते हैं कि पृथ्वी पर रेडियो संचार बिलकुल स्थगित हो जाता है। सूर्य ग्रहण का भी आयोनोस्फियर पर पूरा प्रभाव पड़ता है और आश्चर्य की बात तो यह है कि प्रकाश के ग्रहण के अतिरिक्त सूर्य से आते हुए अदृश्य परमाणुओं के कारण एक दूसरा ग्रहण भी आयोनोस्फियर में अपना प्रभाव दिखाता है।

चन्द्रमा के प्रभाव तो समुद्र के ज्वार-भाटा इतनी अच्छी तरह दिग्दर्शित कर देते हैं कि और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है पर बताना असंगत न होगा कि आयोनोस्फियर में भी २८ दिन के चान्द्रमास के अनुसार घटाव चढ़ाव होता है।

कुछ वर्ष पूर्व तक आयोनोस्फियर पर अन्य ग्रहों के प्रभावों का कोई भी ज्ञान नहीं था, पर हाल ही में एक वैज्ञानिक, श्री नेल्सन, की खोजों ने इस विषय पर बहुत प्रकाश डाला है। उन्होंने इस बात का पता चलाया कि

ग्रहों की किन पारस्परिक स्थितियों का सम्बन्ध आयोनोस्फियर के तूफानों से होता है। इस बात का पता चला कि जब (सूर्य को केन्द्र मानकर) बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति तथा शनि के बीच ०, ९०, १८० या २७० अंशों का अन्तर होता है तब आयोनोस्फियर में परिवर्तन होने के कारण रेडियो संचार में बाधा पहुँचती है। और आयोनोस्फियर के प्रायः सभी तूफान उस वक्त आते हैं जब दो से अधिक ग्रहों की पारस्परिक स्थिति उपरोक्त प्रकार की हो।

रेडियो विज्ञान द्वारा प्रेषित इन वैज्ञानिक तथ्यों को पाठकों के सामने रखकर हम बिना किसी हठ के उनसे इस बात पर विचार करने का अनुरोध करेंगे कि क्या यह तथ्य हमें इस बात को स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं करते कि पृथ्वी के ऊपर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है और उनकी पारस्परिक स्थिति का उससे भी अधिक प्रभाव पड़ता है ? इसलिए इन दोनों बातों को ज्योतिष शास्त्र में जो महत्व दिया गया है वह शायद निराधार न हो और शायद भविष्य में इन विद्युतीय तथा चुम्बकीय प्रभावों का मनुष्य के शरीर और मन से कोई संबंध निकल आये क्योंकि ये दोनों भी अब विद्युतधारा से चलने वाले यंत्र माने जाते हैं।

मंगली दोष

—पण्डित राधेश्याम कौशिक ज्योतिषाचार्य

भौतिक शरीर के लिये स्वास्थ्य और अर्थ के पश्चात् दाम्पत्य जीवत अनुकूल होना अनिवार्य है। इन तीनों बातों में सभी का सुलभ होना बहुत कम पाया जाता है और एक में भी कमी आने पर मानव पथ भ्रष्ट होकर संसार से घृणा करने लगता है अथवा संसार से पृथक् होकर अध्यात्मवादी बन जाता है। उपर्युक्त बातें पंचम, नवम् स्थान बलवान होने से ठीक रहती है। मंगल, शनि बलवान तथा पंचम सप्तम्, नवम् स्थान बलवान होने से मनुष्य तीनों सुखों को प्राप्त करता है वरना जीवन में एक न एक वस्तु का अभाव बना रह जाता है। यहाँ हम मंगली दोष पर विचार करेंगे—

लग्ने व्यये च पाताले या मित्रे चाष्टमें कुजः।
कन्या वै मृत भर्ती, स्याद्भर्ती भार्या हनिष्यति ॥

वर, अथवा कन्या के जन्म लेने में प्रथम में बारहवें, चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम् स्थान मंगल होने से मंगली कहलाते हैं। कन्या के मंगली दोष पति के लिये तथा पति का मंगली होना पत्नी के लिये हानिकारक है। उच्चराशि का मंगल श्रेष्ठ मंगली है। स्वगृही मंगली स्वाभाविक मंगली है। मित्रराशि का मंगली भी सदा मंगली होता है। नीच राशि का मंगली दोष विशेष हानिकारक है। शत्रुराशि का मंगली स्वाभाविक हानिप्रद है। नीच राशि का मंगल यदि अष्टम् अथवा बारहवें स्थान पर हो तो विशेष अनिष्ट फल देता है। लग्न का मंगली स्त्री के साथ-साथ स्वयं को भी कष्ट देता है। चतुर्थ स्थाम का मंगली पत्नी को रोग का भय देता है। सप्तम स्थान का मंगली पति-

पत्नी दोनों के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। अष्टम मंगली पुरुष के हो तो, पत्नी का नाश और स्त्री के हो तो पुरुष को हानि देता है। बारहवें मंगली भी अष्टम मंगली की भाँति पुरुष के हो तो स्त्री के लिये तथा स्त्री के हो तो पुरुष के लिये कष्टदायक है।

यामित्रे च यदा सौरिलग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमें द्वादसे चैव भोमदोषो न विद्यते॥
—ज्योतिष सर्व संग्रह

जिनके जन्म लग्न में सप्तम, प्रथम, चतुर्थ, अष्टम् एवं बारहवें शनि स्थित हो तब मंगली दोष निवारण करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि दाम्पत्य जीवन के लिये ज्योतिष ग्रन्थों में मङ्गल और शनि को ही प्रमुख क्यों माना है ? वैसे तो विवाह सुझाने के सम्बन्ध में सूर्य चन्द्रमा तथा वृहस्पति को वर कन्या की राशि से देखना चाहिये अन्य ग्रहों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। वास्तव में विवाह आदि से शुक्र ग्रह का भी घनिष्ठ सम्बन्ध है परन्तु यहां तो केवल वर के लिये सूर्य, चन्द्रमा तथा कन्या के लिये चन्द्र वृहस्पति राशि से शुभ स्थान देखा जाता है।

मेरे विचार से सूर्य आत्माकारक, चन्द्रमा मन का स्वामी तथा वृहस्पति का जीवन पर आधिपत्य है। दाम्पत्यसूत्र में बंधना तीन शक्तियों पर निर्भर है :—आत्मा, मन, जीव। इन तीनों का एक सूत्र में गुंथने का नाम दाम्पत्य जीवन है। अतएव इन तीनों को प्रमुख माना गया है। अब प्रश्न उठता है कि मङ्गली दोष में मङ्गल को भक्षक तथा शनि को रक्षक क्यों माना जाता है। मङ्गली क्रूर, तपस्वी ग्रह है। मङ्गली दोष होने पर मनुष्य हठी, क्रोधी, रक्त दोषी, विघ्नकारक होता है जो गृहस्थ में विष का काम करते हैं। और मङ्गल की टक्कर का ग्रह केवल शनि ही है जो लौह तत्व का स्वामी है। इसी कारण मंगल दोष से उत्पन्न विकार का हरण शनि ही करता है। मैं तो यह कहूँगा कि पंच भौतिक शरीर के लिये मङ्गल तथा शनि ग्रह का अनुकूल होना अनिवार्य है। तभी गृहस्थ जीवन शान्ति पूर्वक चल सकता है अन्यथा मनुष्य सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शुक्र सबल होने से कितना भी सुन्दर, विद्वान्, पुरुषार्थी, ज्ञानी, श्रेष्ठ मानव क्यों न हो यदि मङ्गल और शनि दो ग्रह सबल होकर उचित स्थान पर न हों, तो मनुष्य के जन्म लग्न में प्रतिकूल होने से, सब सुख धूल में मिल जाते हैं।

मङ्गल लग्न में स्थित होकर सुख स्थान, स्त्री स्थान तथा मृत्यु स्थान को देखने से शरीर में पीड़ा, स्त्री के लिये हानिकारक होता है। चतुर्थ स्थान मङ्गली दोष होने से स्त्री स्थान, कर्म स्थान लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है। जितना शुभ ग्रह देखता, शुभ फल करता है उतना ही क्रूर पापक ग्रह देखकर अशुभ फल करता है। इसी भाँति सप्तम स्थित मङ्गली दोष लग्न को दसम् तथा कुटुम्ब स्थान पूर्ण दृष्टि से देखकर हानि देता है। अष्टम स्थान का मङ्गली दोष लाभ स्थान कुटुम्ब स्थान पुरुषार्थ स्थान को देखकर हानि देता है। पुनः व्यय स्थान स्थित मङ्गली दोष को सबसे निकृष्ट दोष पुरुषार्थ, रोग तथा स्त्री स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखकर जीवन में दाम्पत्य जीवन को विशेष रूप से कष्ट देता है देखा गया है। इसके अतिरिक्त जिन मनुष्यों की कुण्डली मंगल छठे, दसम्, दूसरे पंचम स्थान स्थित होता है वह भी शरीर, कुटुम्ब सन्तान के लिये शुभ नहीं होता है क्योंकि रोग स्थान स्थित होकर भाग्य,

व्यय तथा शरीर स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखने से अनिष्टकारक देखने में आया है। दूसरे स्थान मंगल होने से धन, कुटुम्ब में हानि, मृत्यु स्थान देखने से गुप्त शत्रु से भय, भाग्य को देखने से उन्नति में विघ्न डाल देता है। पंचम स्थान स्थित मंगल बुद्धि को भ्रामक, सन्तान को कष्ट, विद्या में विघ्न, गुप्त रोगों से पीड़ित और अपव्यय बना देता है। दसम् स्थान स्थित मंगल मन में अशान्ति, शरीर से तपस्या, राज्य भय, माता तथा सन्तान सुख में विघ्नकारक बन जाता है।

यदि मंगल के पास उसका मित्र व्यय शुभ ग्रह स्थित हो या उसको देखता हो तो गृहस्थ जीवन में अपने दोष से मुक्त होकर शान्ति प्रदान करते हैं। मंगल के मित्र ग्रह सूर्य, चन्द्रमा वृहस्पति हैं। इन्हीं के साथ रहकर या इनकी दृष्टि से मंगल शान्त होता है।

पुरुष के यदि कर्क का मंगल लग्न में या मेष व मंगल चतुर्थ स्थान स्थित होकर अपनी नीच राशि सप्तम को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तथा सप्तमेव चन्द्रमा, छठे बारहवें, आठवें स्थान स्थित हो और पंचम स्थान शनि भी स्त्री स्थान को देख रहा हो तो निश्चय ही ऐसे योग के मनुष्य का दुभार्या योग होता है। इसका उपाय लिखना यहां अप्रासंगिक न होगा—इसका एक मात्र उपाय यह है कि ऐसे मनुष्य का विवाह शीघ्र न कराकर अधिक आयु में होना चाहिये अथवा किसी ऐसी कन्या से होना चाहिये जिसका ऐसा ही निकृष्ट योग बन रहा हो तभी दाम्पत्य जीवन सफल होगा। जिन मनुष्यों के नीच राशि का मंगल सप्तम व बारहवें स्थान स्थित होकर निकृष्ट मंगली दोष बना रहा हो, उसकी शादी ऐसी ही कन्या के साथ जिसके नीच राशि या शत्रु राशि का मंगल अष्टम, बारहवें, स्थित हो तभी ठीक रहेगा। यदि कन्या के ऐसे ही योग से वैधव्य योग बन रहा हो तो उसे किसी विधुर से शादी करने पर शान्ति मिलेगी।

यदि कटु मंगली दोष के कारण आरम्भ जीवन में विधुर योग स्थित हो तो उस मनुष्य का अधिक आयु की कन्या या विधवा से विवाह करना समुचित है।

सामान्यतया देखा जाता है कि कन्या के कितना भी मंगली दोष या षष्टेश सप्तम, अथवा सप्तमेश अष्टम वैधव्य योग स्थित हो परन्तु उसके माता पिता कुमार अवस्था का बर खोज कर विवाह करने के इच्छुक रहते हैं भले ही उनको बाद में कष्ट हो परन्तु मैं ऐसे माता-पिता को सलाह दूंगा कि वे ज्योतिष विद्या से लाभ उठायें। इसके अतिरिक्त स्त्री का कारक शुक्र है यदि पुरुष या स्त्री के शुक्र ग्रह किसी शत्रु ग्रह से दृष्ट या उसके साथ ही स्थित हों तो यह भी जीवन में मतभेद कर देता है जैसे यदि शुक्र के साथ मंगल हो तो निधन हो जाता है। मंगल दृष्टि सप्तम भाव मनुसागरी व जातका भरण में वृहस्पति तथा शुक्र का एक स्थान स्थित होना शुभ कहा गया है। परन्तु मेरे अनुभव में वृहस्पति शुक्र का एक स्थान स्थित होना दाम्पत्य जीवन में बाधक होता है। मानव जीवन में शरीर सुख, धनवान बनने के पश्चात् यदि गृहस्थ जीवन दुखी हो जाता है चाहे स्त्री रोगी हो या क्रोधी, चरित्रहीन, कहने का तात्पर्य यह है कि वह प्रतिकूल आचरण करके गृहस्थ को नर्क तुल्य बना देती है। ऐसे व्यक्ति स्त्री से असन्तुष्ट होकर कुमारगी बन जाते हैं, आत्महत्या तक कर बैठते हैं। इसी प्रकार यदि कन्या का सप्तम स्थान बलवान न हो मंगली दोष से युक्त हो, यदि वृहस्पति शुक्र के साथ हो अथवा पापक क्रूर ग्रह सप्तम भाव को देख रहे हों या स्थित हों तो स्त्री को दुष्ट पति के द्वारा अशान्त जीवन कर देते हैं। कोई भी कार्य सुमति से नहीं करते। ऐसे वर कन्या को ग्रहों के योगों के लिये दान आदि उपाय से शान्ति प्राप्त हो सकती है। परन्तु परम शान्ति तो एक दूसरे के ग्रहों के योगों

के मिलान से प्राप्त होना ही सम्भव है। उदाहरणार्थ एक कन्या के मंगली दोष तथा बृहस्पति शुक्र एक स्थान का दोषी था उसके माता-पिता ने एक विधुर से उसका विवाह कर दिया अब तक उनका जीवन सुख से चल रहा है।

मंगल अष्ट ग्रहों के साथ

यदि मंगल के साथ सूर्य हो तो अति क्रूरता आकर भौतिक शरीर को हानि पहुँचाता है। मंगल के साथ चन्द्रमा का होना शास्त्रों में श्रेष्ठ योग कहा है। यदि ये दोनों अष्टम बारहवें स्थान को छोड़कर अन्य स्थान में हो तो धन, भूमि सुख देते हैं। मंगल के साथ बुध होना बुद्धि, वाणी, साहित्य से आर्थिक लाभ देता है। मंगल के साथ वृहस्पति भी अधिकांश दोषों को दूर करने में समर्थ है। मंगल के साथ शुक्र का होना कामी, रक्तदोष देने वाला तथा गृहस्थ जीवन के लिये हानिकारक है। मंगल शनि के साथ भयंकर रोग जैसे अर्श से पीड़ित रखता है। मंगल के साथ राहु कुसंगति कर विक्षप्ति बना देता है। मंगल के साथ केतु अर्धाङ्ग जैसे रोगों से ग्रस्त कर देता है।

कई जातको का मंगली वृहस्पति शुक्र साथ होने से स्त्री मरने पर उनको दूसरा विवाह करना पड़ा। बृहजातक में ग्रहों की अवधि बताते हुए मंगल की अवधि २८ वर्ष को लिखी है।

जन्म लग्न में मंगल जैसा भी शनि अशुभ फल देने वाला होता है उसका जीवन में २८ वर्ष की आयु तक का समय है। मेरे विचार से इससे दो गुने समय अर्थात ५६ वर्ष की आयु तक में भी यह कभी-कभी हानि कर बैठता है ऐसा मेरे अनुभव में आया है। लगभग सभी मंगल व्रत, मूँगा ९ रत्ती का २८ या ५६ रत्ती स्वर्ण तांबे मिश्रित धातु की मुद्रिका में सूर्य अँगुली में ग्रहण करना बतलाया है तथा गेहूँ, चना, गुड़, लाल कपड़ा, दान करना बतलाया है। मेरे विचार से यदि मंगली मनुष्य तांबे के पात्र में खान-पान करे तथा रात्रि के समय लाल वस्त्रों का प्रयोग करे तो लाभप्रद रहेगा।

भारतीय ज्योतिष परम्परा की भूलें

—भगवानदास मीतल
भृगुज्योतिष पुस्तकालय
नया बाजार, मथुरा

प्रिय पाठक वृन्द,

भारतीय ज्योतिष की परम्परा में बहुत सी त्रुटियाँ हैं। इन सबमें से कुछ बातें मैंआपके सम्मुख रख रहा हूँ।

प्रथम—विंशोत्तरी दशाओं की जो मान्यता समस्त भारत के कोने-कोने में व्याप्त है, यह सर्वथा निर्मूल और निस्सार है—मैंने लगभग ८ ग्रन्थ फलित ज्योतिष पर लिखे हैं।* इन ग्रन्थों के आधार पर भारत के हजारों विद्वानों के अद्वितीय प्रशंसापत्र उच्चतम भावनाओं से भरे हुये मुझे प्राप्त हो चुके हैं और मैं लाखों जन्म कुण्डलियों का अवलोकन कर चुका हूँ। अतः इस आधार पर मैं यह बता देना चाहता हूँ कि, जिन स्त्री पुरुषों को जीवन में अच्छे से अच्छे ग्रहों की दशा व अन्तर दशायें आती हैं किन्तु वे लोग जीवन भर गरीब ही बने रहते हैं और अनेकों उपाय करते रहने पर भी वे उन्नति नहीं कर पाते हैं और दुख तथा असफलताओं से ही टकराते रहते हैं। दूसरी तरफ, जिन व्यक्तियों को बुरे से बुरे ग्रहों की दशा व अन्तर दशायें आती रहती हैं वे लोग जीवन भर भाग्यवान और धनाढ्य बने रहते हैं तथा प्रायः उन्नति के मार्ग पर सफल होते रहकर सुख भोगते हैं। जिन व्यक्तियों को मारकेश की दशायें आती रहती हैं वे नहीं मरते हैं, और जिनको मारकेश की दशायें नहीं आती हैं वे मर जाते हैं। अतः इसका उत्तर यह है कि जिन व्यक्तियों के जन्मकालीन ग्रह प्रायः बलवान होते हैं—उन लोगों को प्रायः सदैव ही उन्नति, सुख और सफलतायें मिलती रहती हैं—और जिन व्यक्तियों के जन्मकालीन ग्रह प्रायः कमजोर होते हैं उन लोगों को प्रायः सदैव ही भाग्य में कमजोरी प्राप्त होती रहती है और थोड़ा-थोड़ा अच्छा-बुरा समय सभी लोगों पर आता रहता है। इसका कारण यह है कि जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव दो प्रकार से होता रहता है। एक तो, जन्म के समय में—जन्म कुण्डली के अन्दर जो-जो ग्रह, जिस प्रकार का अच्छा बुरा स्वभाव लेकर बैठा है, उन सबका अच्छा बुरा फल, समस्त जीवन में, जीवन के दाहिनी तरफ अकाट्य रूप से सदैव रहता है और जो ग्रह पंचांग गति के अन्दर आकाश में परिवर्तनशील चलते, बदलते रहते हैं, उन सब ग्रहों का परिवर्तनशील फल—लग्नगोचर के आधार पर—हर एक प्राणी के बाईं तरफ अच्छा बुरा फल होता रहता है।

दूसरा विषय यह है कि, लड़के लड़कियों के विवाह सम्बन्धों में, जो ३६ गुणों के द्वारा विदमिलाने का तरीका चलता आ रहा है यह भी सर्वथा निर्मूल और निस्सार है क्योंकि जन्मकुण्डली के अन्दर—लड़का हो या लड़की, यदि उनका सातवाँ स्थान दोषी नहीं है अर्थात् सातवें स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह हो—वह लग्न से छठे-आठवें-बारहवें-दूसरे किसी भी स्थान में नहीं बैठा है और सातवें स्थान का स्वामी किसी भी नीच राशि में नहीं बैठा है, किसी भी अन्यत्र स्थानों का स्वामी कोई भी ग्रह—नीच होकर सातवें स्थान में नहीं बैठा है, सातवें स्थान पर राहु या केतु कोई नहीं बैठा है तथा सातवें स्थान का स्वामी कोई भी सूर्य से अस्त नहीं है या शून्य अंश नहीं है या सातवें

स्थान पर कोई भी ग्रह--छठे-आठवें-बारहवें--घरों में से किसी घर का स्वामी तो नहीं बैठा है या किसी भी ग्रह की सातवें स्थान पर नीच दृष्टि नहीं है तो ऐसी सूरत में--किसी भी लड़के-लड़की की कुण्डली में ३६ गुणों में से एक भी गुण चाहे अनुकूल न हो फिर भी इन लड़के लड़कियों का पति-पत्नी का आपसी सम्बन्ध सुखदायक रहेगा और उपरोक्त आधारों में से यदि ग्रह स्थिति इसी प्रकार की बनी हुई है तो ३६ गुणों के अनुकूल होने पर भी उनका पति पत्नी का आपसी सम्बन्ध दुखदायक रहेगा और उपरोक्त ग्रह दोषों से जो रहित कुण्डली है चाहे वह मंगली है या सादा है उन लोगों का गृहस्थ दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठ रहेगा।

तीसरा विषय यह है कि नाम राशि पर या जन्म राशि पर—ग्रहों का अच्छा बुरा प्रभाव कुछ नहीं होता है बल्कि केवल जन्म लग्न पर ही अच्छा-बुरा फल होता है। इसी के अन्तर्गत शनि की साढ़ेसाती का—राशि पर बुरा प्रभाव होने की बात सर्वथा गलत है क्योंकि शनि लग्न से छठे-आठवें-बारहवें घरों में जब-जब आता है या शनि जब कभी मेष का होकर नीच राशि में चलता है, तब-तब वह कष्टदायक रहता है, अन्यथा ठीक रहता है। उदाहरण के तौर पर समझिये कि—भूतपूर्व राज्यपाल श्री सम्पूर्णानन्द जी की मेष लग्न थी और नाम राशि कुम्भ थी, किन्तु सन १९६२ से लेकर सन १९६६ तक की पांच सालों में शनि मकर राशि और कुम्भ राशि पर चला था जो कि नाम राशि से, शनि की साढ़े साती मानी जाती है किन्तु इन्हीं पांच सालों में आप राजस्थान के गवर्नर रहे थे क्योंकि मकर का शनि राज्य स्थान में, स्वक्षेत्री चला था और कुम्भ का शनि लाभ स्थान में स्वक्षेत्री चला था इसलिये उच्च कोटि की सफलता प्राप्त हुई थी। किन्तु ज्योंही शनि अप्रैल १९६६ में—मीन का होकर लग्न से बारहवें चला, त्योंही १५ दिन के अन्दर उनको अपना पद छोड़ देना पड़ा और वह अपने निज स्थान बनारस को चले गये तथा उन्हें मानसिक, दैहिक, आर्थिक तीनों प्रकार के कष्ट सहन करने पड़े। अतः उपरोक्त तीनों प्रकरणों में भारतीय ज्योतिष की परम्परा में भारी भूल चलती चली आ रही है। पंडितजन लड़के लड़कियों की खूब विद मिला देते हैं फिर भी उनका दाम्पत्य जीवन बिगड़ जाता है और दुखः भोगना पड़ता है।

पंडितजन अच्छे ग्रहों की दशाओं पर जब उत्तम भविष्य बता देते हैं किन्तु जब उनका विपरीत फल होता है तो यही सोच लेते हैं कि या तो हमने सोचने समझने में कहीं भूल की है या जन्म कुण्डली में कोई गलती गणित करने में रह गई होगी, किन्तु यह कोई भी पंडितजन नहीं सोच पाते कि, जब जन्म के–जन्मकालीन नवग्रहों का फल सदैव बराबर होता रहता है और आकाश मार्गी ग्रहों का फल उतार-चढ़ाव का सदैव होता रहता है तो फिर यह जन्म के नक्षत्र में से १२० वर्ष का निकाला हुआ पुंछाला क्या काम कर सकता है। इसी प्रकार से—विंशोत्तरी दशायें हों या अष्टोत्तरी दशायें हो या योगनी दशायें हों यह सभी चीजें बेकार हैं। अतः मनुष्य के जीवन पर—जन्मकालीन नवग्रहों का फल और आकाशमार्गी नवग्रहों का फल सदैव ही जन्म लग्न के ऊपर होता रहता है।

---

*लेखक की सुविख्यात निम्न पुस्तकें, इस दिशा में विशेष उल्लेखनीय एवं पठनीय हैं—

१.	विशाल भृगु संहिता पद्धति—	मूल्य	(बीस रुपया)
२.	विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियाँ—	मूल्य	(आठ रुपया)
३.	अखंड भाग्योदय दर्पण—	मूल्य	(सात रुपया)
४.	शरीर सर्वाङ्ग लक्षण—	मूल्य	(चार रुपया)

श्रीकृष्ण जी की जन्मकुण्डली तथा आयु के सम्बन्ध में मतभेद

—देवधर पाण्डेय, बी० ए०, ज्योतिषाचार्य
बापूनगर, जयपुर

	३		१	
४. वृ		२ चं		१२ के
	५ सु बु		११	
६ रा		८		१० मं
	७ श शु		९	

श्रीकृष्ण जी की जन्मकुण्डली
हरिवंश पुराण के अनुसार

	३		१	
४ वृ.		२ चं.		१२ रा.
	५ सू.		११	
६ के.		८		१० मं.
	७ श शु		९	

श्रीकृष्ण जी की जन्मकुण्डली
महाज्योतिर्निबन्ध के अनुसार

यह तो निर्विवाद है कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म अमान्त मास की गणना से श्रावण कृष्ण अष्टमी को और पूर्णिमांत मास की गणना से भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को अर्द्धरात्रि के समय रोहणी नक्षत्र में हुआ था। उत्तर भारत में पूर्णिमान्त मास माना जाता है, इस कारण श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भाद्रपद कृष्ण पक्ष में मनायी जाती है।

जन्म-तिथि तथा समय के बारे में कोई मतभेद न होते हुए भी उस काल की ग्रह स्थिति के बारे में विभिन्न मत हैं और इन मतों के आधार पर श्रीकृष्ण की जन्मकुण्डलियां भी अलग-अलग हैं। यद्यपि वृष लग्न का चन्द्रमा सब में समान रूप से दर्शाया जाता है, जन्मपत्रिकाओं में श्रीकृष्ण जी की जन्मकुण्डली लिखी जाती है, वह हरिवंश पुराण के अनुसार होती है। किन्तु जोतिष के महान ग्रन्थ 'रणवीर महाज्यौतिर्निबन्ध' में वर्णित जन्मकुण्डली इस से कुछ भिन्न है। 'एस्ट्रालाजिकल मेगजीन' के सम्पादक तथा दक्षिण भारत बंगलौर के ज्योतिर्विद वेंकटरमन ने अपनी पुस्तक 'नोटेबल हौरस्कोप्स' में श्रीकृष्ण के जन्म की तारीख ईसा पूर्व १९ जुलाई ३२२८ में बताई है।

इसके मतानुसार उस वर्ष श्रीमुख नामक संवत्सर था। रमन की पुस्तक में दी हुई जन्मकुण्डली हरिवंश पुराण के अनुसार बनाई गई जन्मकुण्डली से बहुत भिन्न है।

	३		१	
४ मं. रा.		२ च.		१२
	५ सू बृ		११	
६. बु.		८ श.		१० के.
	७		९	

श्रीकृष्ण की जन्मकुण्डली
श्री रमन के अनुसार

आयु का प्रश्न

श्रीकृष्ण के जन्म समय की तो केवल ग्रहस्थिति के सम्बन्ध में मतभेद हैं, किन्तु उनके देह त्याग की तिथि तथा समय का तो कहीं स्पष्ट उल्लेख ही नहीं मिलता। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे देश में महापुरुषों की केवल जयन्तियां अर्थात् जन्मोत्सव मनाने की ही परम्परा है। 'कीर्त्तिर्यस्य स जीवति', इस उक्ति के अनुसार महापुरुष अमर माने जाते हैं। मृत्यु को तो गीता में केवल पुराने वस्त्र बदलने के समान कहा गया है। रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, महावीर जयन्ती, बुद्ध जयन्ती आदि सब जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाती हैं।

जब श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण की तिथि का ही पता नहीं है तब यह कहना तो और भी कठिन है कि उन्होंने कितने वर्ष की आयु में मानव लीला संवरण की।

रमन के अनुसार श्रीकृष्ण ने १२५ वर्ष की आयु में शरीर त्याग किया। किन्तु यह मान्यता संदेहास्पद है। श्रीकृष्ण का जन्म द्वापर के अन्तिम चरण में हुआ था और कलियुग के प्रारम्भ में उनका देहावसान हुआ। जन्म के समय सृष्टि संवत १,९५,५८,७९,८९४ था और कलियुग का आरम्भ अब से ५०७० वर्ष पूर्व अर्थात् सृष्टि संवत १,९५,५८,८०,००१ में हुआ। इस हिसाब से श्रीकृष्णजी की पुर्णायु १०७ वर्ष होती है। इसकी पुष्टि में एक और प्रमाण भी विचारणीय है। महाभारत युद्ध कलियुग के आरम्भ से ३६ वर्ष पूर्व हुआ था और उसमें वीरगति को प्राप्त हुए गुरु द्रोणाचार्य की आयु उस समय ८५ वर्ष थी। यदि श्रीकृष्ण की आयु कलियुग के आरम्भ में १२७ वर्ष मानी जाय तो महाभारत युद्ध के समय उनकी आयु १२७—३६=९१ वर्ष की होनी चाहिये। इसका अर्थ यह होता है कि वह द्रोणाचार्य से भी ६ वर्ष बड़े थे। इसके विपरीत तथ्य यह है कि श्रीकृष्ण तथा उनके समवयस्क अर्जुन दोनों द्रोणाचार्य से बहुत छोटे थे। अतः यदि द्रोणाचार्य तथा श्रीकृष्ण की आयु में २० वर्ष का भी अन्तर माना जाय तो श्रीकृष्ण की पूर्णायु १०७ वर्ष के ही लगभग होनी चाहिये।

इतिहास तथा ज्योतिष के विद्वानों से हमारा अनुरोध है कि वे गवेषणा तथा अनुसंधान के द्वारा निश्चित रूप से यह पता लगाने का प्रयत्न करें कि श्रीकृष्ण के जन्म समय पर वास्तविक ग्रहस्थिति क्या थी और उन्होंने कितने वर्ष की आयु में इस लोक से प्रस्थान किया।

१९८२ का ज्योतिषीय दृष्टिकोण*

—पण्डित देवधर पाण्डेय ज्योतिषाचार्य
जयपुर

विदेशी ज्योतिषियों ने सन् १९८२ में विश्व का नाश, प्रलय, आदि की भविष्यवाणियां कर जनता में गम्भीर भय पैदा किया था। उनका कहना था कि सन् १९८२ फरवरी माह में सभी ग्रह सूर्य की ओर तथा पृथ्वी दूसरी ओर ७० से ९२ अंश का कोण बनावेगी। ज्योतिषीय गणित की दृष्टि से ऐसी ग्रह स्थिति लगभग १७९ वर्ष बाद आती ही रहती है। सन् १८०२ में भी ऐसी ग्रह स्थिति आई थी पर घटना क्रम ऐसा कुछ नहीं था। विदेशी ज्योतिषियों ने प्रलय, विश्वनाश, नरसंहार आदि की आशंका प्रकट की थीं। लेकिन यह भय निराधार था।

कुछ विदेशी और उनकी चहेती अंग्रेजी पत्र पत्रिकाओं ने नौ ग्रह योग के नाम से, सनसनीखेज समाचार प्रकाशित किये थे। कहा है कि सन् १९८२ में समसूत नौ ग्रहों की एक राशि में युति हो रही है, इससे पृथ्वी के कई भागों में भूकम्प के शक्तिशाली झटके आवेंगे जिसके फलस्वरूप बड़े पैमाने पर नरसंहार होगा। इस सम्बन्ध में सर्व प्रथम इस बात पर विचार करना है कि क्या वास्तव में नौ ग्रहों को युति होगी ? इन तथा कथित नव ग्रहों का योग का समय दीपावली के दिन १५ नवम्बर १९८२ दिन सोमवार की सायंकाल ८ बजे बताया गया है। ज्योतिष की गणनानुसार नौग्रहों का योग ही एक कपोल कल्पना थी जो सत्य नहीं थी। मोटे तौर से यदि हम देखें तो १५ नवम्बर १९८२ सोमवार को सूर्यादि ग्रहों की स्थिति निम्न प्रकार थी :—

सूर्य—तुला राशि में २९ अंश

चन्द्रमा—तुला राशि में २९ अंश

बुध—तुला राशि में २७ अंश

गुरु—तुला राशि में १७ अंश

शनि—तुला राशि में ५ अंश

मङ्गल—धनु राशि में १७ अंश

शुक्र—वृश्चिक राशि में २ अंश

राहु—मिथुन राशि में १२ अंश

केतु—धनु राशि में १२ अंश

* यह लेख १९८२ में प्राप्त हो गया था। कुछ अपरिहार्य कारणों से स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशित न हो सका। जन-साधारण के लिए यह लेख अब भी बहु-दृष्टि से उपयोगी और ज्ञानवर्धक है। अतः ज्योतिषीय दृष्टिकोण और उपयोगिता की दृष्टि से इसे प्रकाशित किया जा रहा है।

अगर हम यूरेनश नैपच्यून और प्लूटों को भी देखें तो वह भी क्रमशः वृश्चिक राशि पर १० अंश, धनु राशि पर एक अंश, और तुला राशि पर ४ अंश है। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शनि केवल पाँच ग्रहों का योग होता है। अगर आप सायन से भी देखें तो भी उपर्युक्त पाँच ग्रहों का योग होता है नौ ग्रहों का नहीं। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट हैं कि वस्तुतः १९८२ में नौ ग्रहों का योग था ही नहीं। भारतीय ज्योतिष में पंच ग्रही योग को फलित ज्योतिष में बहुत शुभ माना है। अर्थात् जिस व्यक्ति के जन्म पत्र में उपरोक्त पाँच ग्रहों का योग हो वह राज्य मान्य, धनी-मानी, चतुर तथा न्यायाधीश होता है। तब नेचुरल ज्योतिष में इसका फल विपरीत कैसे होगा? १९८२ के इस पंचग्रही योग के सामान्यतः ७५ से १०५ तक देशान्तर रेखा पूर्व, भारत, बंगलादेश आदि में तथा १०५ से १३५ देशान्तर पश्चिम कैलिफोर्नियां आदि देशों में अति वर्षा तथा तूफान से कुछ क्षति ही सम्भव थी किन्तु प्रलय, विश्वनाश और नरसंहार आदि भयानक विनाश की कल्पना निराधार थी। यह व्यर्थ का आतंक उत्पन्न करता है।

ग्रहों की युति या प्रतियोग से अधिक वास्तविक चिन्ता का कारण था ग्रहों की शृङ्खला। सन् १९८२ में चार सूर्य ग्रहण और तीन चन्द्र ग्रहण, कुल सात ग्रहण पड़े। उस शताब्दी के केवल तीन बार एक ही वर्ष में सात ग्रहण पड़ें हैं अथवा पड़ें थे।

१—१९१७ में चार सूर्य ग्रहण और तीन चन्द्र ग्रहण कुल ७ ग्रहण थे।

२—१९३५ में पाँच सूर्य ग्रहण और दो चन्द्र ग्रहण कुल ७ ग्रहण थे।

३—१९८२ में चार सूर्य ग्रहण और तीन चन्द्र ग्रहण कुल ७ ग्रहण पड़े।

इस प्रकार १९८२ की स्थिति ठीक सन् १९१७ जैसी ही थी। जब प्रथम विश्वयुद्ध हुआ था। दूसरी बार १९३५ में द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए संसार, दो पक्षों अथवा गुटों में स्पष्ट रूप से विभाजित हो गया था और युद्ध के बादल घिरने शुरू हो गये थे। अतः उक्त ग्रह स्थिति बड़ा स्पष्ट संकेत देती थी कि सन् १९८२ में या तो तृतीय विश्वयुद्ध की सी स्थिति बनेगी अथवा विश्व में भीषण उत्पात होंगे। दुर्घटनाएँ तथा महामारी की स्थिति बन जायेगी। इससे जन जीवन अत्यन्त व्यग्र एवं अशान्त हो जावेगा। यह ग्रहण शुभ ग्रहों की राशियों पर होने से, तथा वृहस्पति जैसे शुभ ग्रह की दृष्टि से तथा भारत का वृहस्पति कारक ग्रह होने से, अधिक अनिष्ट की आशा भारत में नहीं थी। फिर भी स्वतंत्र भारत को वृषभ लग्न तथा कर्क राशि है अतः भारतीय शासकों और जनता को अत्यन्त तनाव पूर्ण समय से गुजरना पड़ा था।

आवश्यक स्थानों के अक्षांश-देशान्तर

—शम्भु प्रसाद बहुगुणा
लखनऊ

मध्यवर्ती हिमालय के इतिहास ज्योतिष के लिये अक्षांश देशान्तरों की आवश्यकता आधुनिक युग में घड़ियों से समय देखने के चलन के कारण हो चली है। सूर्योदय, सूर्यास्त व लग्न मान अवधि हेतु भी ये आवश्यक हो चले हैं, समय के साथ स्थानों की स्थिति में तथा जाँचने के तरीकों में परिवर्तन हो जाने से भिन्न मान आते हैं। इसलिये कुछ स्थानों के दो, तीन, चार तक मान भी दिये हैं। आवश्यक स्थानों के आगे टिप्पणियां भी दी गयी हैं। अक्षांश भू-मध्य रेखा से उत्तर और देशान्तर ग्रीन विच से पूरब हैं। एक मिनट देशान्तर भेद से चार मिनट समय भेद हो जाता है। और लग्न औसत हिसाब से चौबीस घण्टे में तीन मिनट छप्पन सेकिण्ड पीछे खिसकता जाता है। आरम्भ संक्रान्ति से होता है।

स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
१—अगर खाल		३०.१३.००	७८.२०.२०	
२—अगस्त्य मुनि		३०.२५.३०	७९.०१.३०	
३—अजमेर (रा०)		२६.२७.००	७४.३८.००	
४—अनुसूया देवी		३०.२८.१५	७९.१७.००	
५—अफजल गढ़		२९.२४.००	७८.४१.००	नगीना तहसील में।
६—अमृतसर	(अ)	३१.३८.००	७४.५३.००	(लहदी)
	(ब)	३१.३७.००	७४.४८.००	
७—अम्बाला		३०.२१.००	७६.५०.००	
८—अयोध्या		२६.४८.००	८२.१९.००	
९—अलमोड़ा ५७९२'	(अ)	२९.३७.३०	७९.४०.२०	अकबर के समय रामचन्द्र = रुद्रचन्द्र ने बसाया, १८०८ ई० में एक हजार घर थे, खतयारा = आलय नगर रुद्रचन्द्र १५६५-१५९७ ई० लक्ष्मणचन्द्र चम्पावती से = लक्ष्मीचन्द अलमोड़ा १५९७ ई० १६२१ ई०।
	(ब)	२९.३६.००	७९.४६.००	
	(स)	२९.३५.००	७९.४४.००	

स्थान		अक्षांश ० ′ ″	देशान्तर ० ′ ″	टिप्पणी
१०–अलवर (रा)		२७.३४.००	७६.४०.००	
११–आगरा	(अ)	२७.००.००	७८.१३.००	
	(ब)	२७.११.००	७८.००.००	
	(स)	२७.१०.००	७८.००.००	(ग)
१२–आदिबदरी		३०.९.००	७९१६.१०	
१३–इन्दौर		२२.४४.००	७५.५०.००	अहल्याबाई जन्म १७२५ राज्याधिकार १७६७ ई० मृत्यु १८.८.१७९५ ईसवी १७८५ ईसवी में केदार मंदिर पुनः निर्माण
१४–इलाहाबाद=प्रयाग		२५.२८.००	८१.५०.००	
१५–उज्जैन		२३.९.००	७५.४३.००	
उत्तरकाशी=बाड़ाहार				श्रीनगर से बीस मील
१६–उदयपुर [रा.]		२४.३५.००	७३.४३.००	
१७–उखीमट्ठ		३०.३१.००	७९.०६.००	
१८–ऋषीकेष		३०.०६.२०	७८.१८.१०	
१९–कर्णप्रयाग	अ	३०.१५.४३	७९.१५.२९	श्रीनगर से तीस मील दूर
	ब	३०.१६.००	७९.१२.००	(१८०८ ई०)
२०–कन्नौज		२७.०३.००	७९.५८.००	
२१–कराची		२४.५१.००	६७.०४.००	
२२–कलकत्ता		२२.३८.००	८८.२१.००	
२३–कलुंग [नाला पानी]		३०.२०.००	७८.०६.००	गढ़वाल में किला हरद्वार से २६ मी० अक्टूबर १८१४ ईसवी में जनरल जिलेस्पी ने आक्रमण किया। ३०.११.१८१४ ई० को शत्रु ने किला खाली किया।

स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
२४–कांगड़ा		३२.०५.००	७४.२४.१५	
२५–कांगरा		३०.५३.००	७७.०१.००	
२६–काठमाण्डू		२७.४२.००	८५.१२.००	
२७–कानपुर		२६.२६.००	८०.०२.००	
२८–कालका		३०.५०.००	७६.५६.००	
२९–कालसी		३०.३२.२०	७७.५१.२६	
३०–काशी-बनारस	अ	२५.१५.००	८३.०३.००	
	ब	२५.१६.००	८३.०३.००	
३१–कुण्ड [मोरी]		३०.३०.००	७८.०५.००	
४०–केदारनाथ	अ	३०.४५.१५	७९.३२.३०	श्रीनगर से ६१ मील N. E.
११८६.७'	ब	३०.४४.१५	७९.०६.३३	बदरीनाथ की सीधी दूरी ९७-९८
कैपटिन वैड	स	३०.५३.००	७९.१८.००	मील पश्चिम उत्तर पश्चिम
१८१८				
१८२९ ईसवी में स्किनर पहुँचा				१ भोज परेदार ने १०१९ ईसवी में मरम्मत
				२ कुमार पाल ने दुर्दशा देख खसापति की भर्त्सना कर अपने मंत्री बागभट द्वारा बनवाया ११६४ ई०
				३ अहिल्याबाई ने १७८५ ईसवी में मरम्मत करवाई।
४१–अ कोटद्वार		२९.४३.००	७८.३३.००	
४१–ब कोटलगढ़		२९.२४.३०	८०.०१.०५	पिथौरागढ़ जिले में कत्यूरियों ने
४२– गंगोली हाट		२९.३९.३०	८०.०५.२४	४०० ईसवी में बसाया

	स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
४३–	गंगोत्री		३०.५८.१०	७८.५४.३०	श्रीनगर से ६२ मील उत्तर पूरब,
	[१८०८]		३१.०४ ००	७८.५५.००	कैपटिन रेपर का हिन्दू मुन्शी ५–५–१८०८ ईसवी में पहुँचा।
४४–	गढ़वाल समस्थान [रायचूर दक्षिण हैदराबाद में]		१६.१४.००	७७.०३.००	राजा सोमदेव ने १७१० ईसवी में बनवाया।
	गया [बौद्ध विहार]		२४.४१.००	८५.०२.००	
४५–	गया	अ	२४.४५.००	८५.००.००	
		ब	२४.४६.००	८५.०१.००	
४६–	ग्वालियर [य]		२६.१४.००	७८.१०.००	दौलतराव सिन्धिया जन्म १७८० ईसवी राज्य १२.१.१७९४ ई० मृत्यु २१.३.१८२७ ई०।
४७–	गिर्दवा सहारनपुर		२९.३७.००	७८.२०.००	१६०५ ईसवी में बसाया गया।
४८–	गुजडूगढ़		२९.४७.००	७९.०५.१५	
४९–	गुरौन वाला		३२.१०.००	७४.१४.००	
५०–	गुप्त काशी		३०.३१.४५	७९.०५.००	
५१–	गोरखपुर		२६.४५.००	८३.२४.००	
५२–	घाट		३०.१५.३०	७९.२७.००	
५३–	चकराता		३०.४३.००	७७.५४.००	
५४–	चण्डीगढ़		३३.४४.००	७६.५३.००	
५५–	चन्दौसी		२८.२७.००	७८.४९.००	
५६–	चम्पावत=चम्पावती	अ	२९.२०.११	८०.०५.५०	काली कुमाऊँ=कूर्माञ्चल संज्ञा प्राचीन राजधानी। १८१० में
	१८१०	ब	२९.२८.००	७९.५५.००	भी दो सौ तीन सौ घर
	कनिंघम	स	२९.२०.११	८०.०७.१४	अल्मोड़ा से १६ मील दक्षिण-पूरब १५९७ ईसवी में लक्ष्मणचन्द ने त्याग दी। अल्मोड़ा से १५९७ से

	स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
					१६२१ तक राज्य किया। चम्पावती से १५६५ ईसवी से १५९७ ईसवी तक, १५८१ ईसवी में श्रीनगर गढ़वाल नृपति मानशाह ने पयनु दुर्ग युद्ध में लक्ष्मणचन्द को पराजित किया।
५७.	चम्बा [टिहरी]		३०.२३.४२	७८.००.५२	
५८–	चांदपुर		२९.०८.००	७८.२०.००	
५९–	चांदपुर गढ़ [वाल्टन अल्मोड़ा गजेटियर पृष्ठ १८५,१८६]	अ	३०.०४.००	७८.००.५२	निर्माण १४२५ ई० १५०० ईसवी के बीच। ज्ञान चन्द द्वारा १७०७ ईसवी में ध्वस्त।
		ब	३०,१०,००	७९,१२,००	[कनिंघम]
६०–	चित्तौड़ [रा]		२४,५४,००	७४,५२,००	
६१–	चोपता		३०,२९,००	७९,१४,३०	
६२–	चौखुटिया		२९,५३,००	७९,२१,००	
६३–	जम्बू [का]		३२,४४,००	७४,५४,००	
६४–	जलियानवाला		३२,४०,००	७३,३९,००	
६५–	जालंधर		३१,१९,००	७५,१८,००	
६६–	जूनागढ़ [गु]		२१,३१,००	७०,३६,००	
६७–	जैपुर [रा]=ज्ञानगढ़		२६,५५,००	७५,५२,००	
६८–	जोधपुर [रा]		२६,१८,१०	७३,०४,००	
६९–	ज्योतिमंठ=जोशीमठ	अ	३०,३४,००	७९,३५,०० ७९,३२,२०	१०१० ईसवी में सौ–डेढ़ सौ घर [प्राचीन]
	[श्री मठ]	ब	३०,३३,२४	७९,३६,२४	[कनिंघम

	स्थान		अक्षांश	देशान्तर	टिप्पणी
			० । ॥	० । ॥	
		स	३०,३३,००	७९,४०,00	प्राचीन नाम कार्तिकेयपुर वासुदेव कुशाण प्राचीन राजधानी बदरी-नाथ यहां से उन्नीस मील।
७०–	टिहरी=त्रिहरि	अ	३०,२८,१८	७८,२६,००	१८१५-१८१८ ई०
		ब	३०,२२,५९	७९,३१,१८	[कनिंघम]
		स	३०,२२,५४	७८,३१,१८	
७१–	डभार=पँवालिया		३0.२८.५0	७९.0४.३०	'हिमालय की आत्मा' श्री चन्द्र कुँवर–निर्माण स्थान
७२–	डुभलोट	द	२९.५४.३१	७९.0३.३५	
		ज	२९.५६.00	७९.0६.३0	
७३–	डूँडा		३0.४२.२२	७८.२१.00	
७४–	ढौंढ		२९.५६.00	७९.0४.00	
७५–	तारकेश्वर		२९.५0.२0	७८.४७.३0	
७६–	थली सैण		३0.0१.१५	७९.0२.00	
७७–	दरभंगा		२६.१0.00	८५.५७.00	
७८–	द्वाराहाट		२९.४६.५0	७९.२५.४५	
७९–	दिल्ली		२८.३८.00	७७.१२.00	
८०–	दीवारवाल		२९.४७.00	७९.0२.00	
८१–	देवप्रयाग	अ	३0.0८.४८	७८.३६.00	अलकनन्दा–भागीरथी संगम पर प्राचीन तीर्थ, अपने गर्भ में गढ़वाल इतिहास की विपुल सामग्री छिपाये है। श्रीनगर से बारह मील महाराष्ट्र व दाक्षिणात्य ब्राह्मणों की बस्ती। मन्दिर मरम्मत १९0३ ई0 में सिंधिया दौलतराम ने की।
		ब	३0.0९.00	७८.३३.00	
		स	३0.0८.00	७८.३९.00	
		द	३0.१0.00	७९.३९.00	

	स्थान		अक्षांश O । ॥	देशान्तर O । ॥	टिप्पणी
८२–	देवलगढ़ =दिलगोड़		३०.१३.०४	७८.५१.४०	जगतगढ़ भी नाम रहा। सिद्ध तीर्थ वाम पार्श्व के श्री शैल तपस्थली, शक्तिपीठ, नाथ तीर्थ गुप्तकालीन मूर्तियां शंकराचार्य की जीवनी में वर्णन आता है सत्य नाथ से उनका शास्त्रार्थ हुआ जन्म [१६४७ ई०]
८३–	देहरादून	अ	३०.१९.०३	७८.०२.००	उड़ासी माधुरामराव १६४७ सन् १६७६ ईसवी में यहाँ बसे, १६८७ ई० में उनकी मृत्यु हुई। उनकी पत्नी पंजाब कौर के समय १६९९ ईसवी में गुरुद्वारा बना।
		ब	३०.१९.०३	७८.०५.००	
		स	३०.१९.००	७८.०४.००	
८४–	दोगड्डा		२९.४८.२५	७८.३६.५०	दुगड्डा भी कहलाता है। गढ़वाल के पतन क्षेत्र का एक कस्बा
८५–	धनौली		३०.२५.३०	७८.१५.००	
८६–	धरासू				‘सू’ तिब्बती भाषा का शब्द है देवता शिव के अर्थ में आता है।
८७–	धार [प्र]		२२.४०.००	७५.०५.००	
८८–	धौलपुर		२६.४५.००	७७.५८.००	
८९–	नजीबाबाद		२९.३७.००	७८.२१.००	नजीब द्वारा १७५५ ई० में बसाया गया।
९०–	नन्द प्रयाग [१८१०]	अ	३०.१९.५६	७९.१९.३०	वर्तमान स्थान पर १८९४ ईसवी में विरही बाढ़ पश्चात् बसाया गया। श्रीनगर से ३८ मील पूरब-उत्तर-पूरब।
		ब	३०.२०.००	७९.१८.००	
९१–	नरवर [म० प्रा०]		२५.३५.००	७७.५६.००	
९२– अ	नरेन्द्र नगर		३०.०९.००	७८.१२.२३	उड़ाथली नाम था। नरेन्द्र शाह ने अपना नाम देने के लिये उड़ाथली कहने वालों को दंडित किया।
ब	नवलगढ़		२७.५१.००	७५.१८.००	

	स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
९३—	नागणी		३०.१९.२०	७८.२१.२०	
९४—	नीति	अ	३०.४६.४०	७९.५५.००	देवा से व्यापार सम्बन्ध स्थापित करने १८१८ ईसवी में कैपटिन Webb वेब व्यापारी के रूप में नीति पहुँचा।
	[१८१०]	ब	३७.४७.००	७९.५६.००	
९५—	नीलंग [११३१०]		३०.०६.३०	७९.०३.०५	
९६—	नैनीताल [१८४० ई०]		२९.२५.००	६.२७.००	
९७—	पटना		२५.३५.००	८५.१०.००	
९८—	पटियाला		३०.२०.००	७६.२५.००	
९९—	प्रयाग [इलाहाबाद]	अ	२५.२१.००	८१.५१.००	
		ब	२५.२८.००	८१.५२.००	
		स	२५.२८.००	८१.४४.००	[औक्सफोर्ड]
१००—	पाटन [बड़ौदा]		२३.५२.००	७२.१०.१०	
१०१—	पाण्डुकेश्वर		३०.३७.५९	७९.३५.३०	
१०२—	पानीपत		२९.२३.००	७७.०१.००	
१०३—	पिथौरागढ़		२९.३५.००	८०.१५.००	
१०४—	पिन्नाथ [बारा मंडल]		२९.५०.४५	७९.३५.००	
१०५—	पिहानी [श्रीनर]		२७.३७.००	८०.१२.००	
१०६—	पीपल कोटी		३०.२०.५०	७९.२८.२०	
१०७—	पुरोला		३०.५२.३०	७८.०४.४०	
१०८—	पूना	अ	१८.३१.००	७३.५२.००	

	स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
		ब	१६.०१.००	७२.५५.००	
१०६–	पेशावर	अ	३४.१५.००	७१.२५.००	
		ब	३४.०२.००	७१.३१.००	
११०–	पोखरी [बुघाणी]		३०.१२.२८	७८.५२.५५	
१११–	पोखरी [नागनाथ]		३०.११.००	७६.१२.००	
११२–	पौड़ी १३५०' [१८४०]		३०.०६.५०	७८.४६.००	
११३–	पौनली		३०.२३.१०	७८.४४.४०	
११४–	फतेहगढ़	अ	२७.२३.००	७६.४०.००	
		ब	२७.२३.००	७६.४४.००	
११५–	फतेहपुर सीकरी		२७.०६.००	७७.४२.००	
११६–	फरूखाबाद		२७.२४.००	७६.३७.००	
११७–	फैजाबाद		२६.४७.००	८२.१२.००	
११८–	बड़कोट		३०.४८.३०	७८.१२.४०	
११६–	बड़ौदा		२२.००.००	७३.३०.००	
१२०–	बदरीनाथ [कनिंघम]	अ ब	३०.४८.३६ ३०.४४.२६	७६.५५.०० ७६.३२.०१	पादरी अंड्राडे श्रीनगर बदरीनाथ होते उपरांग १६२४ ईसवी में गया, शिव-शक्ति पीठ।
१२१–	बम्पा		३०.४४.००	७६.५२.०६	
१२२–	बम्बई	अ	१८.५५.००	७२.५४.००	
		ब	१८.५८.००	७२.४६.००	
१२३–	बरमदेव		२६.०६.३०	८०.११.३७	

	स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
१२४–	बराली [चलन स्यूं]		३०.१२.२३	७८.५३.३०	
१२५–	बरेली	अ	२८.२८.०६	७६.२६.३६	
		ब	२८.२२.००	७६.२६.००	
१२६–	बाँगघाट		२६.५२.००	७८.४१.२०	
१२७–	बागेश्वर		२६.५६.१५	७६.४८.५२	
१२८–	बिजनौर		२६.२३.००	७८.११.००	
१२६–	विष्णु प्रयाग		३०.३४.००	७६.४०.००	
१३०–	बीकानेर	अ	२८.०१.००	७३.२३.००	(ग)
		ब	२८.०२.००	७३.१६.००	
१३१–	वृन्दावन		२७.३३.००	७७.४४.००	
१३२–	बीरोंखाल		२६.५०.३०	७६.०२.००	
१३३–	बैजरौ		२६.५५.१०	७६.०२.००	
१३४–	बैजनाथ=वैद्यनाथ		२६.५४.२४	७६.३८.२८	
१३५–	भरतपुर	अ	२७.२३.००	७७.३२.००	
		ब	२७.१६.००	७७.५०.००	
१३६–	भवाली		२६.२३.०५	७६.३०.५५	
१३७–	भीमताल		२६.२०.४०	७६.३६.१६	
१३८–	भैंसखेत		२६.४०.००	७६.३५.३०	
	भोपाल (म०प्र०)		२३.१६.००	७७.३६.००	
१३६–	मंगलौर [रुड़की]		२६.४८.००	७७.५५.००	

	स्थान		अक्षांश	देशान्तर	टिप्पणी
			० ' "	० ' "	
१४०–	मंसूरी टिप्पा		३०.२७.१०	७८.०६.३०	
१४१–	मंसूरी कैमल हिल		३०.२७.१०	७८.०५.१५	
१४२–	मद्रास		१३.०४.०६	८०.१४.५०	
१४३–	मथुरा		२७.२८.००	७७.४१.००	
१४४–	मलारी		३०.४१.००	७९.५६.००	नीति घाटी में, १८१८ ईसवी में चालीस घर रेपर ने १८०८ ईसवी में डेढ़ सौ घर देखे।
१४५–	माणा	अ	३०.४५.०२	७९.२७.००	
	=मणिभद्रपुर	ब	३०.४८.००	७९.३९.००	
१४६–	मालकोटी		३०.१०.००	७९.५९.००	'हिमालय की आत्मा' श्री चन्द्र कुँवर-जन्म स्थली
१४७–	मालवा		२३.४०.००	७५.३०.००	
१४८–	मुरादाबाद		२८.५१.०६	७८.४८.३५	
१४९–	मेरठ	अ	२९.००.४१	७७.४३.०३	
		ब	२९.०१.००	७७.४५.००	
१५०–	मैसूर	अ	१२.१८.००	७८.४२.००	
		ब	१२.२०.००	७६.३९.००	
१५१–	मोरध्वज		२९.४०.००	७८.२६.००	
१५२–	यमुनोत्री	अ	३०.५९.००	७८.३५.००	
		ब	३१.०१.००	७८.२८.००	
१५३–	रतनगढ़	अ	२९.०६.००	७८.२३.००	
	=आजमगढ़				
	रथ बडाल	ब	२९.४०.०५	७८.५१.२०	

	स्थान		अक्षांश ० । ॥	देशान्तर ० । ॥	टिप्पणी
१५४–	रानीखेत		२९.३७.४०	७९.१८.००	
१५५–	रामनगर	अ	२९.१८.००	७९.१८.३०	
		ब	२९.१८.००	७९.१७.३०	
१५६–	रामपुर		२८.४८.००	७९.०३.०३	
१५७–	रिखणीखाल		२९.४६.२०	७८.५२.२५	
१५८–	रुड़की		२९.३२.००	७७.५३.००	
१५९–	रुद्रप्रयाग	अ	३०.१७.२०	७८.५९.००	
		ब	३०.१८.००	७८.५९.००	श्रीनगर से १९ मील पूरब
		स	३०.१९.००	७८.५९.००	
१६०–	लंढौर	अ	२९.४८.००	७७.५६.००	मंगलौर परगना, रुड़की तहसील
		ब	२९.५१.००	७७.५५.००	राजा राम दयाल मृत्यु १८१३ ई०
१६१–	लखनऊ		२६.५१.००	८०.५९.००	
१६२–	लखनौटी		२९.४६.००	७७.१२.००	गंगोह, सहारनपुर
१६३–	लछमन झूला		३०.०७.३०	७८.२०.००	
१६४–	लालडांग		२९.५०.००	७८.१३.००	हरद्वार से ५५ पूरब करीब १० मील
१६५–	लाहौर	अ	३१.३४.००	७४.२१.००	[ग]
		ब	३१.५५.००	७४.१७.००	
		स	३१.२७.००	७४.१७.००	
१६६–	लोहबा		३०.०३.००	७९.२०.००	
१६७–	व्यासघाट		३०.०४.००	७८.३६.००	
१६८–	सतपुली		२९.५५.०७	७८.४२.३५	
१६९–	सहस्र धारा		३०.२३.००	७८.०३.००	
१७०–	सहारनपुर		२९.२८.१५	७७.३५.१५	[कनिंघम]
१७१–	सिप्री [ग्वालियर]		२५.२५.००	७७.४१.००	

	स्थान		अक्षांश ° । ॥	देशान्तर ° । ॥	टिप्पणी
१७२–	सिरकंडा		३०.२५.००	७८.१७.३०	
१७३–	सुलाड़ी [कठुलस्यूं] =सूरमढ़ी		३०.१२.०५	७८.४६.००	
१७४–	सोमेश्वर		२९.४६.२५	७९.३६.३०	
१७५–	शाहजहांपुर		२७.५४.००	७९.५७.००	
१७६–	शिमला		३१.०६.००	७७.१३.००	
१७७–	शिवपुरी		३०.०८.२०	७८.४७.३०	
१७८–	श्रीनगर [काश्मीर]		३४.०६.००	७४.५१.००	
१७९–	श्रीनगर [गढ़वाल]	अ–	३०.१३.२५	७८७.४.३०	
		ब–	३०.१५.००	७८.४८.००	
	[१८१८]	स–	३०.११.००	७८.४४.००	हरद्वार से ३८ मील उत्तर पूरब
		द–	३०.००.१३	७८.४८.१५	[कनिंघम]
१८०–	हरद्वार [हरिद्वार]	अ–	२९.५८.००	७८.१३.००	
		ब–	३०.००.००	७८.००.०९	
१८१–	हल्द्वानी		२९.१३ ००	७९.३४.००	
१८२–	हिमाचल प्रदेश		३०.००.००	७८.००.०९	

साहित्य-खण्ड

विकासोन्मुख गढ़वाली भाषा

—कैप्टन ठाकुर शूरवीरसिंह पंवार

सरकारी सेवा से निवृत्त होने पर, जब १९६७ ई० में, एक लम्बे समय के पश्चात् अपनी जन्म-स्थली टिहरी लौटने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो यहाँ के वातावरण में उत्साहवर्द्धक-साहित्यिक जागरण पाकर, मैं आनन्द-विभोर हो उठा। यहाँ के प्रतिष्ठित विद्वान एवं श्रेष्ठ चिंतक पंडित महावीर प्रसाद गैरोला एडवोकेट के नेतृत्व में, साहित्य-प्रेमियों की एक प्रबुद्ध मंडली, साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में निष्ठा पूर्वक निमग्न थी। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की जनपदीय शाखा के माध्यम से भी साहित्य सेवा सम्बन्धी विविध महत्वपूर्ण कार्यक्रम विधिवत् आयोजित होते रहते थे। स्वयं पंडित महावीर प्रसाद गैरोला/इस संस्था के प्रधान थे। श्री मोहनलाल नेगी एडवोकेट जो विद्यार्थीकाल में गैरोला जी के प्रिय शिष्य रह चुके थे भी, इस संस्था के एक प्रमुख कार्यकर्ता थे। राष्ट्र भाषा हिन्दी की सेवा के साथ-साथ गढ़वाली लोक-साहित्य की सेवा में भी यह मंडली तन्मय थी, जिसके फल-स्वरूप ही, श्री मोहनलाल नेगी का सुप्रयास, गढ़वाली साहित्य की दस श्रेष्ठ कहानियों के संग्रह का प्रकाशन, "जोनिपर छापु किलै ?" हमारे समक्ष विद्यमान है। श्री मोहनलाल नेगी ने ग्रंथ के प्रारम्भ में ही प्रस्तावना-रूप "द्वी बात लेखक की तरफ सि" शीर्षक में इस पुस्तक के प्रकाशन की पृष्ठ भूमि के इतिहास पर सूक्ष्म प्रकाश डाला है, जिसमें अपने पूज्य माता-पिता से विरासत में साहित्य सम्बन्धी ज्ञान, एवं जेष्ठ भ्राता से प्रोत्साहन प्राप्ति के प्रति आभार प्रकट करने के साथ, पंडित महावीर प्रसाद गैरोला, जिनसे लोक साहित्य के इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के सृजन एवं प्रकाशन की उन्हें प्रेरणा प्राप्त हुई, तथा सर्व श्री मोहनलाल बाबुलकर, मालचन्द रमोला एवं आनन्द सिंह विष्ट से जो प्रोत्साहन और सहयोग मिला, उनके प्रति भी आभार प्रकट किया है। ग्रंथ की इन दस कहानियों में गढ़वाली जन-जीवन के विभिन्न पहलुओं का मनोरम एवं शिक्षाप्रद-वर्णन संगृहीत है। कहानियों की रचना लोक-भाषा में होने के कारण, इनकी उपयोगिता और भी अधिक हो गयी है। लोक के हित के लिए लोक-साहित्य की उन्नति परम आवश्यक है।

मध्यकालीन युग में हमारे देश भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ऐतिहासिक उथल-पुथल होने के कारण, लोक-साहित्य के प्रति आस्था में, उस समय कुछ शिथिलता आ गयी थी। भारत पर अंग्रेजी शासन की स्थापना होते ही विद्वान अंग्रेज-अधिकारियों का ध्यान तुरन्त यहाँ के जन-साहित्य अर्थात् लोक-साहित्य के अध्ययन एवं संकलन की ओर गया। सर्व प्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने 'एनल्स एण्ड ऐंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान' (Annals and Antiquities of Rajasthan) १८२९ ई० में लिखकर प्रकाशित कराया। तब, इनके चरण-चिह्नों पर चलते हुये, अन्य अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने उन्नीसवीं शती में आगे, देश के विभिन्न प्रांतों एवं क्षेत्रों के लोक-साहित्य संकलन करने के पश्चात् आंग्ल भाषा में रूपान्तर कर, प्रकाशित कराया। यहाँ तक भी हुआ, कि अपने ईसाई धर्म के प्रचार हेतु कुछ पादरियों ने अपनी धर्म पुस्तकों के अनुवाद लोक-भाषाओं में करा कर प्रकाशित कराये, जिनके उदाहरण गढ़वाली

भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (१) मन्ती रचित-सुसमाचार (भारत लंका बाइबिल समिति बंगलौर द्वारा प्रकाशित), (२) 'जीवन को बाटो' (दि बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया, बंगलौर द्वारा प्रकाशित), (३) 'सचो वचन' एवं (४) 'हरचा अर मिल' (The Scripture Gift Mission, Banglore द्वारा प्रकाशित) तथा (५) 'सचो बाटो' (Evangelical Literature Depot Calcutta द्वारा प्रकाशित), आज भी प्रचलित हैं। उन्नीसवीं शती के अन्त तक देश में लोक-साहित्य के कुछ मौलिक संग्रह अंग्रेज अधिकारियों द्वारा प्रकाशित किये गये। बङ्गाल की विशेषता यह रही कि इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने का दायित्व प्रबुद्ध वंगवासियों ने स्वयं अपने हाथों में ले लिया। इस तरह बंग-साहित्य के विशाल भंडार को प्रकाश में लाने के साथ-साथ, वंग भाषा में श्रेष्ठ सामयिक साहित्य का सृजन भी किया जाने लगा। कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर के उदय के पश्चात्, तो बंग-साहित्य का परिपूर्ण विकास हुआ, और बंग भाषा के साहित्य की धाक समस्त विश्व पर छा गयी।

उच्च शिक्षा-प्राप्त गढ़वालियों का ध्यान भी, स्वभावतः, बीसवीं शती के प्रारम्भ से इस ओर आकर्षित हुआ। यह भी एक शुभ-संयोग था, कि विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने इसी दौरान, हमारे प्रांत की यात्रा की। उत्तराखण्ड में भी इनके आगमन-सम्बन्धी कार्यक्रम होने की सूचना प्राप्त होने पर, गढ़वाल के तत्कालीन अग्रणी विद्वान एवं यशस्वी संपादक पंडित तारादत्त गैरोला (पंडित महावीर प्रसाद गैरोला एडवोकेट के ताऊ जी) ने स्व-सम्पादित मासिक पत्रिका 'गढ़वाली' के अक्टूबर १९१४ ई० के अंक पृष्ट ८८ पर, जगत विख्यात महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर की इस यात्रा के समाचार का स्वागत करते हुये, इसके महत्व पर प्रेरणात्मक सम्पादकीय टिप्पणी प्रकाशित की। देश में लोक-साहित्य सम्बन्धी जागरण से प्रभावित होकर, हमारे गढ़वाली साहित्यकार भी गढ़वाली लोक-साहित्य के संकलन, संग्रह एवं प्रकाशन के कार्य में जुट गये। हमारा गढ़वाली लोक-साहित्य, गीत, मंत्र, तंत्र, रखवाली, जागर, लोकोक्ति पहेली, वुझौवल, बाजूबंद, कथा, कहानी, नाटिका एवं स्वांग के रूप में विद्यमान हैं। ऐतिहासिक घटनाओं से प्रभावित, विभिन्न संस्कृतियों की तहें, गढ़वाली लोक-जीवन से ओत-प्रोत हैं। नाथ, सिद्ध और निर्गुण पंथियों ने भी गढ़वाली लोक-साहित्य के माध्यम से ही गढ़वाली लोक-जीवन को प्रभावित किया है। उपर्युक्त वर्णित सभी साहित्यिक सामग्री के संकलन, अध्ययन, संग्रह एवं प्रकाशन का कार्य, प्रारम्भ में कुछ गणमान्य गढ़वाली विद्वानों द्वारा अपने हाथों में लिया गया। पिछली पीढ़ी के विद्वानों में, पंडित तारादत्त गैरोला, पंडित आत्माराम गैरोला, पंडित चन्द्रमोहन रतूड़ी, पंडित गिरिजादत्त नैथाणी, पंडित शशि शेखरानन्द सकलानी, पंडित सूरदत्त सकलानी, पंडित रूपमोहन सकलानी, पंडित योगेन्द्रकृष्ण दौर्गादति, पंडित जयकृष्ण दौर्गादत्ति, पंडित हरिकृष्ण दौर्गादत्ति, पंडित सत्यशरण रतूड़ी, पंडित विश्वम्भर दत्त चन्दोला, पंडित ब्रह्मानन्द थपल्याल, पंडित शालिगराम वैष्णव, डॉक्टर पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, पंडित विश्वम्भरदत्त उनियाल 'रत्न', महन्त श्री योगेन्द्रपुरी शास्त्री एवं श्री शिवनारायण सिंह बिष्ट के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। सर्वप्रथम, पंडित सत्यशरण रतूड़ी ने अपनी गढ़वाली श्रेष्ठ-काव्य रचना— "उठा गढ़वालियों" द्वारा गढ़वालियों को जागृत होकर आगे बढ़ने के लिए आह्वान्वित किया। इनकी यह रचना 'गढ़वाली' मासिक पत्रिका के मई १९०५ ई० के अंक में प्रकाशित हुई थी। इसके पश्चात जून १९०६ के 'गढ़वाली' में प्रकाशित पंडित हरिकृष्ण दौर्गादत्ति की रचना 'चेतावनी' एवं १९१० अक्तूबर के 'गढ़वाली' में प्रकाशित पंडित सूरदत्त सकलानी की रचना 'चेतावनी' द्वारा इसी प्रकार गढ़वालियों का आह्वान किया गया।

बीसवीं शती के प्रथम दशक से तीसरे दशक के मध्य गढ़वाली साहित्य के प्रकाशन एवं विकास के लिए गढ़वाल की चार प्रमुख पत्रिकाओं 'गढ़वाली', 'पुरुषार्थ', 'विशाल कीर्ति' एवं 'गढ़वाल समाचार' द्वारा महत्वपूर्ण कार्य किये गये। इन पत्रिकाओं में पर्याप्त मात्रा में गढ़वाली पद्य एवं साहित्य की सामग्री, समालोचनाओं सहित

प्रकाशित होती रहती थी। प्रसंगवश यहां 'विशाल कीर्ति' पत्रिका के संयुक्तांक अगस्त-सितम्बर-अक्तूबर १९१३ ई० के पृष्ठ ३-४ पर प्रकाशित 'लोकोक्ति' शीर्षक एक लेख का अंतिम वाक्य पाठकों के मनोरंजनार्थ उद्धृत करता हूँः— "मण्डी जौलो लोट्या लौ लौ, नान परोठा तेरि क्या रैगे।" इसी अंक के पृष्ठ ४६ से ४९ तक प्रकाशित "गढ़वाली ठाठ" शीर्षक ठेठ गढ़वाली जन-भाषा में जो कहानी प्रकाशित हुई है, उससे कुछ अंश भी उद्धृत हैः— "कैकी पकोड़ी कैकी सकोड़ी, वोर वख दान्त ही टूटि गैं छया। विचारी की दाल दुदलि करीं ही छई। बस, विना तेल, या दाल, छुस्सछास्स तवा मा उन्ने डामे, अर वी पकोड़ा वणि गैने।"

× × × ×

"गणेशु कौंका भितर स्वांला पकोड़ौं की खूब गदर-बदर मचीं छ। एक तरफ मिट्ठो भात (खुश्का) भी उडणू छ। खनारा भी खूब जुड़यां छन। लोखु की खूब घपल-चौदस मचीं छ। खनारों की एक पंगत [पंक्ति] उठणी, दूसरी—बैठणी छ। अभी हौरी कितना बैठदान उठदान, कुछ मालूम नी।"

× × × ×

"नत्थू ! द्यू बालन को समय ह्वैगे, दियो बाल। गणेशु कख छ। तैसणि भि यखमु बैठाल। वै गुन्दुरु सणिभि धै लगौ। आवा, सब यखमु बैठा। आखर बोला।"

× × × ×

आगे इसी अंक के पृष्ठ ४९ पर प्रकाशित 'गढ़वाली ठाठ' की एक कविता का यह अंश भी द्रष्टव्य है—

"धार मा रतब्योण्या ऐगे। कुर्बुर कुर्बुर रात खुलन लगिगे।"

× × × ×

१९१३ ई० से पहले की उपर्युक्त ठेठ बोल चाल की भाषा, एवं इससे ५५ वर्ष पश्चात की प्रकाशित पुस्तक "जोनि पर छापु किलै ?" की भाषा और रचना शैली में पूर्ण साम्य है। इससे यह स्पष्ट है कि गढ़वाली भाषा एक समृद्ध-जीवित भाषा है तथा इसका अपना परंपरागत सशक्त शब्द प्रवाह है। अतः यह कहना सही नहीं है कि, "जोनि पर छापु किलै ?" पुस्तक की रचना गढ़वाली में किसी नवीन शैली के आधार पर हुई है। पर्वतीय भूभाग होने के कारण गढ़वाल के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संपर्क में कुछ बाधाओं के कारण गढ़वाली भाषा के बोलचाल के शब्दों के लहजे में जो कहीं कुछ स्वाभाविक क्षेत्रीय अंतर दीखती है, उसका आवश्यक समाधान कर, गढ़वाली भाषा साहित्य के लेखन एवं पाठन को परिष्कृत करना परम आवश्यक है। अच्छा होगा कि गढ़वाली भाषा के साहित्यकार इस ओर शीघ्र ही ध्यान दें। गढ़वाली भाषा के शोधार्थियों द्वारा इस दिशा में कुछ ठोस कार्य हो भी रहा है। हमारी पिछली पीढ़ी ने हमारे लोक-साहित्य के संकलन, अध्ययन एवं संग्रह की सेवा का बीड़ा उठाने का महत्वपूर्ण कार्य किया था, जिसके फलस्वरूप हमारे अनेक साहित्य सेवी इस पुण्य कार्य के लिए आगे आये। गढ़वाली भाषा के शास्त्रीय अध्ययन पर उपयोगी साहित्य तैयार भी किये गये हैं। पंडित सालिगराम वैष्णव, डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, पंडित राधाकृष्ण शर्मा, पंडित अम्बादत्त शर्मा एवं श्री भजन सिंह "सिंह" द्वारा गढ़वाली पखाणा लोकोक्तियों पर महत्वपूर्ण

साहित्य तैयार किया गया है। डॉ० गुणानन्द जुयाल, पंडित भुवनेश्वर जुयाल, पंडित वाचस्पति डोभाल, पंडित अबोध बंधु बहुगुणा एवं पंडित रामप्रसाद ने गढ़वाली भाषा के व्याकरण पर शोधपूर्ण साहित्य प्रकाशित किया है। पंडित मोहनलाल बाबुलकर कृत ग्रन्थ 'गढ़वाली-लोक-साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन' हमारे संपूर्ण लोक-साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन पर अत्यंत उपयोगी पुस्तक है। डॉक्टर जनार्दन प्रसाद काला, डॉक्टर गोविन्द 'चातक' एवं डॉक्टर हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' ने भी गढ़वाली भाषा पर महत्वपूर्ण शोध ग्रन्थ लिखे हैं। पंडित बलदेव प्रसाद नौटियाल एवं श्री जगतचन्द रमोला द्वारा महत्वपूर्ण गढ़वाली शब्द-कोश ग्रन्थों की रचना की गई है। श्री जगत चन्द रमोला कृत ग्रन्थ की विशेषता यह है कि गढ़वाली भाषा के शब्दों का हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में रूपान्तर किया गया है। यह ग्रन्थ पाण्डुलिपि अवस्था में तीन वृहत् भागों में मेरे संग्रह में सुरक्षित है। इनके अतिरिक्त गढ़वाली भाषा में नाथ-पंथी एवं तंत्र-मंत्र के साहित्य की अनेक पोथियाँ लोगों के संग्रह में 'सावरी ग्रन्थ' के नाम से अब तक रखी हुई है। इसका कुछ साहित्य मेरे संग्रह में भी सुरक्षित है। गढ़वाली साहित्य की विशेष महत्वपूर्ण निधि 'ढोल सागर' का साहित्य भी यत्र तत्र कुछ लोगों के संग्रह में अप्रकाशित पड़ा हुआ है। इनका वैज्ञानिक अध्ययन एवं प्रकाशन किया जाना परम आवश्यक है। हमारे बहुत से बुजुर्गों की जिह्वा पर भी मौखिक-संपदा के रूप में, हमारी साहित्यिक सामग्री अभी तक जो कुछ विद्यमान है उसको लिपिबद्ध करने के लिए भी हमें तुरंत भरपूर प्रयास करना चाहिये।

श्री मोहनलाल बाबुलकर ने गढ़वाली साहित्य के संकलन एवं संरक्षण हेतु, समय समय पर, अपने लेखों एवं स्वरचित ग्रन्थों द्वारा अत्यंत उपयोगी सुझाव दिये हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण सुझाव विश्वविद्यालय में गढ़वाली लोक-साहित्य को भी अध्ययन का विषय स्वीकृत किये जाने के विषय में है।

हमें बंग साहित्य के सृजन एवं विकास के इतिहास से भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। हमारे बीच भी आज ऐसे श्रेष्ठ विचारक एवं साहित्य सेवी विद्वान विद्यमान हैं, जो निष्ठापूर्वक साहित्य निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। हमारे टिहरी नगर के श्रेष्ठ साहित्यकार एवं महान चिंतक पंडित महावीर प्रसाद गैरोला एडवोकेट द्वारा, अपने विद्वान पूर्वजों की परंपरानुसार अब तक गढ़वाली भाषा में अनेक उत्कृष्ट पद्य एवं गद्य साहित्य की रचना की जा चुकी है। गढ़वाली भाषा में रचित इनकी एक श्रेष्ठ सामाजिक महत्व की कृति 'पारवती', हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० गोविन्द 'चातक' के पास पहुँच चुकी है। इसके प्रकाशन की योजना तैयार की जा रही है? श्री गैरोला जी द्वारा रचित गढ़वाली भाषा के पद्य साहित्य का विशाल एवं अमूल्य संग्रह भी शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। वर्तमान समय में पंडित महावीर प्रसाद गैरोला ही टिहरी के इस क्षेत्र में हमारे अग्रणी हैं, तथा निस्सन्देह इसी अग्रणी रूप में साहित्यिक एवरेस्ट की चोटी [शिखर] पर पहुँचने के लिए हमारे पथ-प्रदर्शक भी होंगे।

---

१. यह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

हिमवन्त-प्रतिभा*

—शम्भुप्रसाद बहुगुणा
ऋषिकेश

"तरुण हो गयीं अब रवि किरणें, गलने लगी हिमानी,

सरिताओं में लगा गरजने, हिम से धूमिल पानी।"

महोदय तथा बन्धु वर्ग;

तरुण हिमालय ने इस परिषद में निमंलित कर मुझे भी बोलने का अवसर दिया है उसका मैं कृतज्ञ हूँ, आप सब के बीच अपने को पाकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। आर्थिक दृष्टि से विपन्न होने से अर्थ सहयोगी रूप में मैं आपके अधिक काम का नहीं किन्तु अपने अनुभवों और विचारों तथा लेखों से तरुण हिमालय के लिये भी कुछ न कुछ उपयोगी तो सिद्ध हो ही सकता हूँ ऐसा मुझे विश्वास है।

परिषदों के आयोजन होते हैं वे धन साध्य हैं। चाहने पर भी किराये की वृद्धि और मार्ग की कठिनाई के कारण अनेक सच्चे अनुसन्धानकर्ता ऐसे आयोजनों में भाग नहीं ले पाते। 'तरुण हिमालय' के सामने आज इस आयोजन के समय जून १६७५ ईसवी में यह कठिनाई भले ही न हो पर आगे भी नहीं आवेगी यह नहीं कहा जा सकता।

'तरुण हिमालय' का आर्थिक आधार कितना दृढ़ है, मनोबल में कितनी ओजस्विता है, आत्मशक्ति कितनी प्रखर है, निष्ठा कितनी सत्य है इसका आभास भी मुझे नहीं है। निमंलण पत्र के साथ आये कागजों ने विश्वास उत्पन्न किया इसलिये यहाँ इस समय आपके सम्मुख अपने भाव अपने विचार शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर रहा हूँ।

मैं इतना जानता हूँ कि थोड़े भी कर्मनिष्ठ और लगन के लोग विषय परिस्थितियों में भी चमत्कारी कार्य कर लेते हैं और अधिक से अधिक लोग सब तरह की सुविधा होने पर भी कुछ भी ठोस कार्य वर्षों तक नहीं कर पाते। १८५० ईसवी से १६५० इसवी तक गिने चुने कर्मठ लोगों ने जितना महत्व का अनुसंधान कार्य हिमवन्तीय विषयों के बारे में किया है उतना १६५० ईसवी से आज १६७५ ईसवी तक अधिक सुविधाएं होने पर भी बहुसंख्यक

---

*तरुण हिमालय परिषद, ऋषिकेश के १३, १४, १५ जून, १६७५ के अवसर पर दिया गया भाषण।

लोग नहीं कर पाये हैं। इस दिशा में जो कुछ किया गया है उसमें कम कार्य ठोस हैं और वही अनाहत है, अधिकांश छलाव है और वही आहत है।

"इच्छाओं का अन्त कहाँ है ! कहाँ लोभ की सीमा !

बहती गर्जन कर तृष्णा की नदी भयङ्कर भीमा !!"

मनुष्य की आन्तरिक वृत्ति जब तक ठीक नहीं तब तक अनुसन्धान के नाम पर दिखावे का काम तो बड़ी तेजी से चल सकता है, चलता है पर सार उसमें कुछ भी नहीं होता। दिखावे के काम की भी अपनी उपयोगिता है पर भूसे की जैसी ही। अन्न के दाने की तरह है ठोस काम और भूसे की तरह है दिखावे का काम। भूसा खा कर जानवर जिन्दा रह सकते हैं मनुष्य नहीं। मनुष्य को तो अन्न का दाना चाहिये। तरुण हिमालय ज्ञान की खेती लम्बे समय तक बूढ़ा हुए बिना कर सके तो श्रेयष्कर होगा।

मनुष्य कटु अनुभवों के कारण किसी नयी योजना के प्रति आसानी से आश्वस्त नहीं होता। 'तरुण हिमालय' अपनी एक पत्रिका निकालना चाहता है। आर्थिक और व्यावहारिक पहलुओं के अलावा और भी कठिनाइयां हैं। लेखक परिश्रम से एक पत्रिका हेतु लेख तैयार करता है। उसे प्रकाशनार्थ भेजे कैसे ? आठ पन्ने के लेख को भेजने के लिये डेढ़ दो रुपया खर्च करे। जैसी स्थिति हैं उसमें लेखक को यह भी पता नहीं चलता उसका लेख यथा स्थान पहुँच गया है या नहीं। छपेगा या नहीं। छप जाता है तो लेखक को पारिश्रमिक भले ही मिल जाय, प्रकाशित लेख का अंक नहीं भेजा जाता, उससे आशा की जाती है वह उसे बाजार से खरीदे। और बाजार में पत्र को बेचने की व्यवस्था भी नहीं की जाती। पत्र यदि भेजा भी जाता है तो डाकखाना या अन्य कोई उसे उड़ा ले जाता है। लेखक टापता ही रह जाता।

विश्वविद्यालय शोधकर्ता से माँग करते हैं कि वह घोषणा करे कि ज्ञान को, क्या उसकी मौलिक देन है। इस विडम्बना का कोई अन्त नहीं।

गढ़वाल से मूर्तियाँ, शिलालेख, ताम्र पत्र, हस्त लिखित ग्रन्थ बाहर निकलते चले जा रहे हैं और गढ़वाल विश्वविद्यालय सूची बनाने हेतु सूचना देने के विज्ञापन स्थानीय पत्रों में प्रकाशित करवा देने में ही अपने इस दिशा के कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेता है। गढ़वाल विश्वविद्यालय में ऐसे भी प्रवक्ता विद्यमान हैं जो लोगों के बीच हवा बाँधे हैं कि वे श्रीचन्द्र कुंवर वर्त्वाल व्यक्तित्व कृतित्व पर शोध कार्य कर रहे हैं। इनके शोध कार्य समाघोषी कविता समेट कुछ लेख पत्र पत्रिकाओं में छपे हैं। अगस्त सितम्बर १९७२ ईसवी की इंडियन प्रेस इलाहाबाद से छपने वाली मासिक पत्रिका सरस्वती में छपा। इन भद्रपारखी जन महोदय का लेख इस विषय का लेख देखने योग्य है। प्रकाशित रचनाओं से बिना हवाला दिये सामग्री समेटी गयी है और दावा किया गया है यह इनका मौलिक शोध है। इन सज्जन की षड्यंत्रकारी गर्हित मनोवृत्ति का परिचायक ही सरस्वती में छपा उक्त लेख है।

पंडित मुकुन्दराम बड़थ्वाल के योग्य शिष्य देवप्रयागी श्री चक्रधर जोशी (समाज सेवी, साधक, वैद्य, ज्योतिषी) के महत्वपूर्ण सराहनीय कार्य (देवप्रयाग स्थित लक्ष्मी विद्यालय, हिमालयी ज्योतिष शोध संस्थान तथा वेधशाला) की ओर तरुण हिमालय का ध्यान जाना चाहिए। अपने गुरु जी की कुछ कृतियों का हिन्दी रूपान्तर श्री चक्रधर जोशी ने किया है।

गढ़वाल ने अपना राहुल सांकृत्यायन श्री मोहनलाल बाबुलकर के रूप में पाया है। पिछले दस वर्षों में गढ़वाल जीवन साहित्य सम्बन्धी उच्च स्तर का जितना काम मोहनलाल बाबुलकर ने अकेले किया है उतना दस विश्व विद्यालयों के दस शोधकर्ता दस वर्ष तक नहीं कर सकते।

भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार को अपनी सत्ता भर से मतलब है देश और राष्ट्र जावे चूल्हे में। विद्यमान शासन में प्रपञ्ची फूलते फलते हैं पुरुष्कृत होते हैं सच्चे राष्ट्र सेवी, सच्चे साहित्यकार, खरे कलाकार राज सत्ता की चाटुकारी तो कर नहीं सकते इसलिये उन्हें हर तरह से रोज-रोज की यातनाएं भुगतनी पड़ती हैं। राजनीति वेश्याङ्गना की भाँति विविध रूपा होती ही है।

तरुण हिमालय यदि साधन सम्पन्न है, यदि उसमें सत्यनिष्ठा और दृढ़ संकल्प, कार्य पटुता आदि शक्तियाँ पर्याप्त रूप में विद्यमान हों और अनुसन्धान का कार्य उसके लक्ष्य का परम आवश्यक अंग हो तो दो ग्रन्थों के वैज्ञानिक सम्पादन से कार्य आरम्भ किया जा सकता है, ये दो ग्रन्थ हैं—'दुर्गा सप्तशती' और 'ढोल सागर'। डॉक्टर पुरुषोत्तम डोभाल, डॉक्टर लक्ष्मी विलास डबराल को 'दुर्गा सप्तशती' का सम्पादन कार्य सौंपा जा सकता है और 'ढोल सागर' सम्पादन कार्य श्री केशव अनुरागी को। केदार खंड केदार कल्प के वैज्ञानिक सम्पादन की आवश्यकता है। अधिकारी विद्वान इन दो ग्रन्थों के सम्पादन हेतु ढूँढ़ने होंगे।

ऋषिकेश में विद्यमान छिपी प्रतिभाओं में आचार्य सत्य प्रसाद डबराल तथा डॉक्टर रमेशचन्द्र नैथाणी हैं। डॉक्टर नैथाणी को 'हिमप्रान्त में नागवंश का इतिहास' लिखने के काम पर लगाना उपयुक्त होगा। भूगोल वेत्ता, कवि, निबन्धकार तथा कुशल प्रशासक वे हैं हीं। इतिहास विद भी बन जाँय तो क्या बुरा है। उनके कुल देवता नागराज उनसे इस कार्य के लिये विशेष प्रसन्न होंगे और इस प्रकार वैष्णव नाथ साहित्य की पर्याप्त सामग्री भी प्रकाश में आ जावेगी।

आचार्य सत्यप्रसाद डबराल को आचार्य ललिताप्रसाद डबराल से आरम्भ कर डबराल विद्वानों के सम्पूर्ण साहित्य का परिचयात्मक ग्रन्थ लिखने का काम सौंपना आवश्यक होगा।

हिमवन्त के सन्त महात्माओं सिद्ध पुरुषों के जीवन व्यापार को प्रस्तुत करने का काम पंडित गोविन्द प्रसाद डिमरी केदारनाथ, पंडित गोविन्दप्रसाद उपरेती वकील पौड़ी, डॉक्टर शान्ति प्रसाद चन्दोला बनारस आदि अनेक व्यक्तियों में बाँटा जा सकता है या कोई भी इस कार्य के लिये अधिकारी उपयुक्त व्यक्ति मिले उसे दिया जाना चाहिए।

'तरुण' हिमालय के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आता हो तो ऐसे लोगों को या उनके परिवार के विपन्न लोगों को सम्मानित किया जाना चाहिये जिन्होंने वास्तविक रूप में जन जीवन के सुख दुःख में भाग लिया है। अपने साहित्य से जनता को अनुप्राणित किया है। जनता के बीच उसके अभिन्न अंग बन कर जी रहे हैं। द्रौपती नन्दन बड़थ्वाल, दिवंगत कवि श्री चन्द्र कुंवर बर्त्वाल, पंडित बालकृष्ण शास्त्री, पंडित देवकीनन्दन ध्यानी, पंडित भोलादत्त चन्दोला, पंडित विशाल मणि उपाध्याय (गुप्त काशी-देहरादून), पंडित गंगाधर मैठाणी गुप्त काशी, महन्त योगीन्द्रपुरी, मोछंग के कवि पंडित चक्रधर शास्त्री देहरादून, नागेन्द्र अबोध दिल्ली, बल्लभ डोभाल दिल्ली, कवि 'सुकुमार' पंडित भगवतीप्रसाद चन्दोला देहरादून, पंडित विश्वम्भर दत्त चन्दोला देहरादून, गणित ज्योतिष के असाधारण पंडित मुकुन्द राम बड़थ्वाल की ओर संकेत किया जा सकता है।

सामान्य विद्यालयों के अध्यापक और विद्यार्थी लगन, दिशा दर्शन और उत्साह वर्द्धक प्रेरणा प्राप्त करने पर थोड़े समय में ही चमत्कारी कार्य कर दिखा सकते हैं।

सुविधा कार्यकर्ता के लिये हो सके इसके लिये हरिद्वार, ऋषिकेश आदि स्थानों पर हिमालय सम्बन्धी सभी प्रकाशित ग्रन्थ-पत्र पत्रिकाएँ आदि उपलब्ध हो सके, शोध-कर्ताओं के टिकने, भोजन आदि की व्यवस्था हो ऐसे पुस्तकालय-आवास सत् कामना, सहयोग और श्रीमन्तों की सदेच्छा से हो सके तो श्रेयस्कर होगा।

पिछले दस पन्द्रह वर्षों से उत्तराखंड की संस्कृति और गढ़वाल का इतिहास तथा चित्रकला लोक नृत्य आदि के नाम पर मिथ्याचारी प्रपञ्ची व्यापार में खूब वृद्धि हुई है। इस प्रकार के प्रकाशनों की निर्भीक खरी आलोचना करने का कार्य तरुण हिमालय को अपने हाथ में लेना ही चाहिए। ऐसे प्रकाशनों तथा लेखकों की जितना अंश उनमें महत्व का है उसके लिये जी भर कर सराहना की जानी चाहिए, जितना गर्हित है उसके लिये उतनी ही तीव्र उनकी कुत्सा भी की जानी चाहिए। सत्य की रक्षा के लिये जीवन को तेजस्वी बनाने के लिये यह कार्य अविलम्ब और सतत किया जाना परम आवश्यक है। काम थोड़ा हो पर विश्वसनीय हो।

केदार खण्ड में यक्ष पूजा

—भास्कर भट्ठ
बी-२ ए-७ जनकपुरी, नई दिल्ली–११००५८

आज का भारतीय धर्म, दर्शन, कला और संस्कृति मुख्य रूप से आर्यों की देन है। किन्तु इसमें आर्येतरांश भी बड़ी मात्रा में विद्यमान है। भारत में आर्य ज्यों-ज्यों चारों ओर फैलते गये त्यों-त्यों वे स्थानीय मान्यता, परम्परा और लोक-विश्वास से प्रभावित होते गये। यह प्रभाव यहाँ तक बढ़ा कि कभी आर्यों के प्रसिद्ध देवता इन्द्र, वरुण और अर्यमा भी यक्ष रूप में पूजे जाने लगे। केदारखण्ड में यक्ष-पूजा की परम्परा इसी आर्येतरांश का अवशेष है।

यक्ष शब्द का प्रयोग अतिमानवीय शक्ति के लिए ऋग्वेद, ब्राह्मण साहित्य और उपनिषदों में अनेक बार किया गया है। ऋग्वेद (४/३/३) में यक्ष मृत व्यक्ति को आत्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है। यक्ष शब्द का अर्थ कुबेर का सेवक भी बताया गया है। पोटर्सबर्ग के प्रकाशित प्रसिद्ध संस्कृत कोश में यक्ष का अर्थ supernatural being or a ghost-like appearance तथा पालिटेक्स्ट सोसाइटी द्वारा प्रकाशित पालिकोश में non-human being, a spirit, a ghost बताया गया है। विमान वत्थु टीका में यक्ष को व्युत्पत्ति और परिभाषा निम्नशः दी गयी है—

'यजन्ति तत्थ बलिं उपहरन्ति ति यक्खा।' (पृ० २२४)
'पूजनीयो भवतो यक्खो ति उच्चति।' पृ० ३३३)

यक्ष शब्द के प्रयोग के लिए वैदिक साहित्य के निम्न अंश अवलोकनीय हैं—

Vedic Index, II. 182;
शतपथ ब्राह्मण, (१४/८/५/१);
तैत्तिरीय ब्राह्मण, (३/१२/३/१);
कौषीतकि उपनिषद् (६५) और
केनोपनिषद् (३/२-१२)।

जातक साहित्य में यक्षों से सम्बन्धित विस्तृत सूचना मिलती है। ईसा से चार-पांच शताब्दी पूर्व जनसाधारण में यक्षों के कारण भय और आंतक की भावना व्याप्त थी। लोगों का विश्वास था कि यक्षों की आँखें निश्चल होती और उनकी परछाईं भूमि पर नहीं पड़ती थी। वे क्रूर स्वभाव के होते और मनुष्य तथा पशुओं का मांस खा जाते थे। बीहड़ वनों और मरुकान्तारों में उनका निवास माना जाता था। यक्षणियां अपने रूप, रस,

गन्ध और स्पर्श के द्वारा पुरुषों को लुभा कर उनका मांस क्रूरतापूर्वक खा जाती थी। मनुष्य यक्षों से आविष्ट भी हो उठते थे। वैश्रवण को यक्षों का राजा माना जाता था। (रतिलाल मेहता, प्रिबुद्धिस्ट इंडिया, पृ० ३२४, बम्बई, १६३६)।

जैन साहित्य में यक्षों का वर्णन जातकों में चित्रित रूप जैसा क्रूर नहीं है। उत्तराध्ययन सूत्र (१६/१६) में वाराणसी के गंडितिंदुग नामक यक्ष का वर्णन किया गया है। अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या और पूर्णिमा को यक्षों की पूजा की जाती। स्त्रियां उनकी पूजा करती हुई उनसे सन्तान प्रप्ति की कामना करती थीं। पाणिनि (अष्टा० ५/३/८४) के अनुसार प्रतीत होता है कि उन दिनों स्त्रियां पुत्र प्राप्ति के लिए शेवल, सुपरि, विशाल वरुण और अर्यमा की पूजा करती थी। इनमें तीन यक्षों के नाम हैं और अन्तिम वरुण और अर्यमा–दोनों वैदिक देवता यक्ष मण्डली में सम्मिलित किए गये हैं। शेवल की पूजा धन-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से की जाती थी। इन यक्षों के प्रसाद से प्राप्त बच्चों का नामकरण भी इनके नाम पर होता था। विशाल नामक यक्ष को महाभारत के सभापर्व (१०/१६) में कुबेर का पार्षद बताया गया है। उसके प्रसाद से प्राप्त पुत्र का नामकरण विशालदत्त किया जाता था। उपर्युक्त पाणिनीय सूत्र के अनुसार विशालदत्त का संक्षिप्त रूप विशालिक, विशालिय और विशालिल होता है। ईसा से चार-पांच शताब्दी पूर्व ऐसे नाम उत्तरी भारत में प्रचलित थे। केदारखण्ड में बिशालदत्त, विशालदेव और विशाल मणि जैसे नामों की बहुलता से ऐसा प्रतीत होता है कि कभी वहाँ विशाल नामक यक्ष का बड़ा महत्व था और उसकी पूजा का बड़ा प्रचलन था। यक्षों की पूजा रक्षक के रूप में भी होती थी। मणिभद्र नामक यक्ष ने अपने भक्त की माता के रोग से रक्षा की थी। उन दिनों मणिभद्र और पूर्णभद्र की पूजा का मगध और अंग में व्यापक रूप से प्रचलन था। केदारखण्ड में बदरीनाथ से दो-तीन मील ऊपर मणिभद्र यक्ष का वास माना गया है। आजकल यह स्थान माणा ग्राम के नाम से हमारी तिब्बत से मिली सीमा पर अन्तिम गाँव है। यक्ष लोगों के सिर पर भी चढ़ जाते और झाड़-फूंक कर उन्हें दूर किया जाता था। ऐसा भी विचित्र विश्वास लोगों प्रचलित था कि यक्ष स्त्रियों से मैथुन करते थे। समाज में अन्त्यज जातियों के यक्ष अलग होते थे। यक्षों की पूजा में भेड़-बकरी, कुक्कुट और सुअर का बलिदान किया जाता था। (डॉ० मोतीचन्द्र, काशी का इतिहास, पृ० ३३, बम्बई १९६२)। केदारखण्ड में आज भी छल आदि की पूजा में कुक्कुट, भेड़-बकरी (दोनों नर) सूअर और कूष्माण्ड की बलि का विधान है। श्री मोहनलाल बाबुलकर जी ने अपनी नवीनतम रचना 'हिमालय में मत-मतान्तर' में इसे केदारखण्ड में खस-संस्कृति का प्रभाव माना है। किन्तु हमारे विचार से यह यक्ष संस्कृति का प्रभाव प्रतीत होता है। शुङ्गों और कुषाणों के युग तक उत्तरी भारत में यक्ष-पूजा का प्रचलन व्यापक रूप में रहा। भारहुत की कला में यक्षों का चित्रण किया गया है। मथुरा से यक्षों की विशालकाय मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। सभी स्रोतों से प्रसिद्ध यक्षों के नामों की लम्बी सूची बन सकती है। संयुक्त निकाय (I, p. 207), जातक (II, 16) के अनुसार गया में सूचीलोम (सूई जैसे उठे हुई रोमों वाला) नामक यक्ष का निवास माना गया है। राजगृह में इन्द्रकूट नामक पहाड़ी पर खर नाम यक्ष और पाटलिपुत्र में मणिमाल और अजकलापक नामक यक्षों का निवास माना गया था। चैत्य और श्मशानों में इनका निवास माना जाता था।

गुप्त युग तक पहुँचते-पहुँचते उत्तरी भारत में यक्ष-पूजा का स्थान शिवपूजा ने ग्रहण कर लिया। मत्स्य-पुराण [१८०/६-२०] में इस घटना का मनोरंजक वर्णन किया गया है। हरिकेश पूर्णभद्र नामक यक्ष का पुत्र था।

वह यक्षों के कुल क्रमागत धर्म को त्याग कर शिव का भक्त बन गया था। पिता ने क्रुद्ध होकर उसे घर से निकाल दिया था। तब उसने वाराणसी में एक सहस्र वर्षों तक कठोर तपस्या करके शिव को प्रसन्न किया। शिव ने प्रसन्न होकर उसे वरदान मांगने को कहा। किन्तु हरिकेश ने यही वरदान मांगा कि आज से भगवान् शिव नित्य काशी में वास करें। तब से शिव नित्य काशी में वास करते हैं और उन्होंने हरिकेश को काशी का क्षेत्रपाल नियुक्त किया। उन्होंने त्र्यक्ष, दण्डपाणि, उद्भ्रम और सम्भ्रम नामक यक्षों को हरिकेश का सहायक नियुक्त किया। मत्स्यपुराण [१८३/६२/१६] में शिवगणों में अनेक यक्षों के नाम परिगणित किये गये हैं। उनमें कुछ के नाम हैं—विनायक, कूष्माण्ड, गजतुण्ड, जयन्त और मदोत्कट हैं। इनकी आकृति कुबड़ों और बौनों जैसी और मुंह बाघ जैसा बताया गया है। नन्दी, महाकाल, चण्डघण्ट, महेश्वर, दण्डचण्डेश्वर और घण्टाकर्ण भी शिव के गणों में कुछ प्रसिद्ध नाम हैं। ये उन्नतोदर यक्ष वज्र और शक्ति धारण कर काशी में शिव के अविमुक्त तपोवन की रक्षा करते हैं। कुषाण युग की रचना 'महामायूरी' से विदित होता है कि दूसरी शताब्दी के आस-पास महाकाल यक्ष को काशी का क्षेत्रपाल माना जाता है [महामायूरी जर्नल, यू० पी० हि० सो० १५, २६ श्लोक १२]। केदारखण्ड के गांव-गांव में क्षेत्रपाल की पूजा होती है। प्रायः कोई न कोई यक्ष क्षेत्रपाल के रूप में ग्राम का रक्षक माना जाता है। प्रत्येक नव-विवाहित दम्पति विवाह के उपरान्त क्षेत्रपाल का पूजन करते हैं। शीतला निकल आने पर क्षेत्रपाल की पूजा विशेष रूप से की जाती है।

उत्तरी भारत में तुर्कों का शासन स्थापित होने के पश्चात् १४वीं शताब्दी तक यक्ष धर्म की कल्पना लगभग मिटने लगी थी। भारत में इस्लाम के आगमन का परिणाम महत्वपूर्ण रहा। इस सम्बन्ध में यह तथ्य ध्यातव्य है कि भारत का वह विशाल जनसमुदाय जो आर्यों की वर्ण-व्यवस्था के अन्तर्गत नहीं समा पा रहा था वैदिक कर्मकाण्ड और वर्ण-व्यवस्था के विरोधी बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसमें वयनजीवी जाति [जुलाहा] और अन्य श्रमजीवी जातियों की संखया प्रमुख थी। तुर्कों के शासन में उनके सामने इस्लाम स्वीकार करने या तलवार उठाने का विकल्प रखा गया। इन शान्तिप्रिय श्रमजीवियों ने तलवार आज तक उठाई नहीं थी। उन्हें विवश होकर इस्लाम स्वीकार करना पड़ा। देखते ही देखते पेशावर से चट्टग्राम तक समस्त वयनजीवी जातियां सामूहिक रूप से इस्लाम में धर्मान्तरित हो गईं। अब तक वे बौद्धों और नाथ-सिद्धों के अनुयायी होते हुए भी वे यक्ष-पूजा से विरत नहीं हुईं थी। किन्तु इस्लाम स्वीकार करने पर उनके सम्मुख विषम समस्या खड़ी हुई। पुरानी परम्परा को एक ही झटके में मिटा पाना उनके लिए सम्भव नहीं था और इस्लाम में यक्षों के लोकधर्म को कोई स्थान नहीं था। ऐसी स्थिति में उन्होंने बड़ी चतुरतापूर्वक अपनी मान्यताओं और लोक विश्वासों को इस्लाम का आवरण प्रदान किया। यक्षों के रूप में पूजे जाने वाले वीर पीर बन गये और तुर्क शासक इसे सचमुच ही पीर पूजा समझते हुए उन पर कोई अत्याचार नहीं कर पाये। इन नव दीक्षितों ने सुदीर्घ काल तक प्रच्छन्न रूप से नाथ-सिद्धों की परम्परा को जीवित रखा। सन्त कबीर इसी परम्परा के उज्ज्वलतम रत्न थे। हजारों वर्ष बीत जाने पर भी वैदिक कर्मकाण्ड को न मानने वाले इस वर्ग के द्वारा वाराणसी से थोड़ी दूर मझुआ में आज भी हरिकेश यक्ष की हरसू बरम के नाम से पूजा होती है। स्त्रियां उनसे सन्तान प्राप्ति की कामना करती हैं। हरसू बरम स्त्रियों के सिर पर चढ़ कर भूत-भविष्य की बातें बताते हैं। [डा० मोतीचन्द्र, काशी का इतिहास, पृ० ३६]

विष्णु धर्मोत्तर पुराण में मणिभद्र, पूर्णभद्र, दीर्घभद्र, यक्ष भद्र और स्वभद्र—इन पांच प्रसिद्ध यक्षों को पंचवीर की संज्ञा दी गयी है। इन्हीं पंचवीरों के अनुकरण पर आगे भागवतों के द्वारा पंच वृष्णि वीरों की कल्पना की गयी। पांच वृष्णिवीर हैं—संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, साम्ब और अनिरुद्ध। वायुपुराण [अध्याय ९७] में इनका वर्णन निम्नशः है—

संकर्षणो वासुदेवः प्रद्युम्नः साम्ब एव च।
अनिरुद्धश्च पञ्चैते वंशवीराः प्रकीर्तिताः ॥

[अवलोकनीय Epigraphia Indica, Vol. XXIV pp. 196-198]

डा० वेणी माधव वरुआ ने यक्ष पूजा का मूल रूप वीरपूजा [hero worship] का अवशेष माना है। यक्षों की वीरमण्डली में समय-समय पर अन्य यक्षों को भी सम्मिलित किया जाता रहा। बुल्ला वीर [विपुल वीर] और लहुरा-वीर [लघुवीर] ऐसे ही नव-सम्मिलित वीर प्रतीत होते हैं। यक्ष-पूजा के ताने-बाने गढ़वाल में पूजे जाने वाले घंडियाल और ब्यूंराल देवता में ढूंढे जा सकते हैं। इन दोनों यक्षों का केदारखण्ड के लोकधर्म में विशेष महत्व है। *घंडियाल घंटाकर्ण के संक्षिप्त रूप घंटिक से व्युत्पन्न प्रतीत होता है। केदारखण्ड में भूत-प्रेताविष्ट व्यक्ति को उससे मुक्त करने के लिए घडियाली का प्रचलन है। घडियाली का मूल सम्बन्ध भी घंडियाल की भान्ति घंटाकर्ण नामक यक्ष से ही प्रतीत होता है। घडियाली केदारखण्ड में भूत-प्रेत को भगाने वाले मान्त्रिक—जागरी और धामी का आरकेस्ट्रा (Orchestra) है। डमरू और कांसे की थाली बजाते हुए भूत को मन्त्रों द्वारा भगाया जाता है। सम्भवतः अपने मूल रूप में घडियाली द्वारा पीड़ित व्यक्ति को घडियाल [घंटाकर्ण यक्ष] से मुक्ति दिलाई जाती रही हो परन्तु कालान्तर में अन्य सभी भूत-प्रेतों को भगाने के लिए भी घडियाली की सहायता ली जाने लगी। ब्यूंराल का सम्बन्ध विपुल नामक यक्ष से है। काशी में आज भी यह बुल्ला वीर के नाम से पूजा जाता है। बुल्ला वीर और लहुरा वीर [लघुवीर] यक्षों पर स्वर्गीय डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने निबन्धों में पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। ब्यूंराल की व्युत्पत्ति निम्नशः सुझाई जा सकती है—

विपुल > विउल > ब्युल > ब्युंर [ब-व और र-ल का अभेद तथा अनुस्वार का आगम]। ब्युंर + आल = ब्युंराल, ब्यूंराल। आजकल केदारखण्ड में ब्यूंराल को सैय्यद के रूप में पूजा जाता है। ब्यूंराल से आविष्ट होने पर व्यक्ति की आंख की पुतलियां फैल जाती हैं। आकृति विद्रूप और भयंकर हो उठती है।

---

*घंडियाल और घडियाल—घंटाकर्ण > घंटिक [संक्षिप्त रूप] > घंडिय, घडिय। आल प्रत्यय के योग से घंडियाल और घडियाल शब्दों की सिद्धि। घंडियाल और ब्यूंराल को समझने के लिए गढ़वाली भाषा में आल/वाल प्रत्ययों का ज्ञान सहायक होगा। आचार्य पाणिनि ने 'नड' और 'शाद' शब्दों से ड्वलच् प्रत्यय जोड़ कर 'नड्वल' और 'शाद्वल' शब्दों की तथा 'शिखा' से वलच् प्रत्यय जोड़कर शिखावल [=मोर] शब्द की सिद्धि की है [अष्टा० ४/२/८८-८९] गढ़वाली के आल/वाल प्रत्यय इन्हीं प्रत्ययों से प्रभावित हैं। आल/वाल प्रत्ययों के योग से निर्मित्त कुछ शब्द निम्नशः हैं—

डंगवाल [मूलार्थ-डांग नामक स्थान का निवासी। सम्प्रति केदारखण्ड में ब्राह्मणों की एक उपजाति]।
बड़थ्वाल [मूलार्थ-बडेथ " " । " " " " "]।
थपल्याल [मूलार्थ-थापली नामक " " । " " " " "]।
नौट्याल [" नौटी " " " । " " " " "]।

इन प्रत्ययों के सम्बन्ध में प्रयाग के प्रयागवाल और गया के गयावाल ब्राह्मणों का इतिहास भी उपयोगी है। ब्राह्मणों की इन दोनों उपजातियों के नाम १०-११वीं शताब्दी के पश्चात् अभिलेखों में मिलने लगते हैं। हिन्दी का 'वाला' प्रत्यय इन्हीं वलच् और वाल प्रत्ययों से सम्बन्धित प्रतीत होता है।

ब्यूंराल का इस्लामीकरण १४-१५वीं शताब्दी में उत्तरी भारत पर तुर्कों का शासन छा जाने पर ही हुआ होगा। हम ऊपर बता चुके हैं कि वैदिक वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार न करने वाले बौद्ध और नाथ-सिद्धों के अनुयायी गृहस्थ जब विवशतापूर्वक इस्लाम में धर्मान्तरित हुए तो उन्होंने अपने परम्परागत यक्ष-वीरों को पीरों के रूप में चतुरतापूर्वक पूजना आरम्भ किया। इस परिवर्तन का प्रभाव केदारखण्ड के ब्यूंराल पर भी पड़ा। पाठकों को जिज्ञासा होगी कि केदारखण्ड कभी भी मुस्लिम शासन में नहीं रहा तो यह प्रभाव कैसे पड़ा ? इस सम्बन्ध में हमारा अनुमान है कि १५वीं और १६वीं शताब्दी में केदारखण्ड में घूमने वाले घुमक्कड़ नव-मुस्लिम कबीरपन्थी साधुओं के प्रभाव से ब्यूंराल की पूजा सैय्यद और पीर के रूप में की जाने लगी होगी। पीड़ित व्यक्ति ब्यूंराल से मुक्त करने के लिए मान्त्रिक सैद्वाली [सैय्यदवली, सैय्यदा स्तुति] द्वारा *मैमंदा वीर [इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद का वीर=सैय्यद] की स्तुति करता है। लोक विश्वास है कि इस प्रकार ब्यूंराल से आविष्ट व्यक्ति उससे मुक्त हो जाता है। ब्यूंराल के उतरते ही मान्त्रिक 'मोहम्मदियो गयो' चिल्लाते हुए पीड़ित व्यक्ति और उसके परिजनों को आश्वस्त करता है।

हमें इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि केदारखण्ड में प्रचलित ब्यूंराल पूजा का अपने मूल अर्थ में इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं था। ब्यूंराल शब्द ही अरबी भाषा का न होकर अपने भारतीय मूल की सूचना स्वयं दे रहा है। यह केदारखण्ड में यक्ष पूजा का अवशेष है। विशालकाय भोजन भट्ट की 'जग्स' संज्ञा और यत्र-तत्र फैले हुए जाख, जाखणी जैसे नाम के अनेक स्थानवाचक शब्द तथा स्वयं को जखमोला बताने वाली उपजातियां इस क्षेत्र में विद्यमान यक्ष पूजा की व्यापकता का प्रमाण देती हैं।

*इस सूचना के लिए मैं श्री अबोधबन्धु बहुगुणा जी के प्रति कृतज्ञ हूँ।

नाथ सम्प्रदाय

—लक्ष्मीचन्द्र त्रिपाठी
शिक्षा प्रसार विभाग, इलाहाबाद

नाथ पंथियों की मान्यता है कि नाथ सृष्टि ब्रह्मा की सृष्टि से भिन्न है। इन लोगों के विचार से ब्रह्मा विष्णु की उत्पत्ति सलिल से होती है, विष्णु से ब्रह्मा और ब्रह्मा से नर-नारी सम्बन्धत्व से मैथुन सृष्टि की उत्पत्ति होती है। इनके विश्वास के अनुसार सृष्टि का आविर्भाव नाद से हुआ है। उसके अनादि देव आदिनाथ शिव हैं। शिव के पश्चात् नामसक्ति की आहूति से क्रमशः उदयनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, कनकापिनाथ, भूषिकापिनाथादि का प्राकट्य होता है। नाथ सृष्टि का कार्य ब्रह्मा के जीवों का परित्राण करना है। ये योगी जगज्जीवों के उद्धारक हैं।

इस पंथ में नवनाथों का विशेष महत्व है। परन्तु मतवैभिन्य के कारण नवनाथों की सही जानकारी असंभव प्रतीत होती है क्योंकि विभिन्न परम्पराओं के लोग उनका अलग-अलग नामकरण करते हैं। नवनाथों का अर्थ नये नाथ भी किया जाता है। अन्य मत के अनुसार शरीर के नवद्वार भी नवनाथ माने जाते हैं। गोरख सिद्धांत संग्रह में नवनाथों के क्रम नाम इस प्रकार हैं :—

(१) आदिनाथ,
(२) मत्स्येन्द्रनाथ,
(३) दण्ड नाथ,
(४) मत्स्यनाथ,
(५) सन्तोषनाथ,
(६) कूर्मनाथ,
(७) भवनार्जिनाथ और
(८) गोरखनाथ।

गोरक्षरिला से प्रकाशित 'नवनाथ कथा' (वि० सं० २००८) में नवनाथों का स्वरूप कुछ अलग ही है :—

ज्योतिस्वरूप ओंकार महेश्वर	—	आदिनाथ
धरणी स्वरूप पार्वती, विख्यात	—	उदयनाथ
जल स्वरूप ब्रह्मा	—	सत्यनाथ
तेज स्वरूप विष्णु	—	सन्तोषनाथ
वायु स्वरूप शेषनाग	—	अचलनाथ
आकाश स्वरूप गणेश	—	गजकंथड़िनाथ

वनस्पति स्वरूप चन्द्रमा	—	चौरंगीनाथ
माया स्वरूप करुणामय	—	मत्स्येन्द्रनाथ
अलक्ष्य स्वरूप अयोनिशंकर	—	त्रिनेत्र गोरक्षनाथ

नवनाथों के अतिरिक्त नाथ पंथ में द्वादश सिद्ध, चौरासी सिद्ध, अनन्त सिद्ध, बारह पन्थ तथा अनेक योगी सम्प्रदायों की विशेष मान्यता है। नाथ पन्थ को गुरु परम्परा का क्रमबद्ध निर्णय करना कठिन है। इन बारह पन्थों के प्रवर्तक निम्न हैं--

१.	सत्यनाथ	—	सत्यनाथी पन्थ
२.	रामनाथ (रामचन्द्र)	—	रामपन्थ या रामनाथी पन्थ
३.	धरमनाथ (युधिष्ठिर)	—	धर्मनाथी पन्थ
४.	लक्ष्मणनाथ (लक्ष्मण)	—	नटेश्वरी पन्थ या लक्ष्मणनाथी पन्थ
५.	दरियानाथ	—	दरियानाथी पन्थ
६.	गंगानाथ (भीष्म)	—	गंगानाथी पन्थ
७.	वैरागनाथ, विचारनाथ भर्तृहरि	—	वैरागी या वैरागनाथी पन्थ
८.	रावल, नागनाथ	—	रावल पन्थ
९.	जलन्धरनाथ	—	जालन्धर पन्थ
१०.	आईनाथ (विमला)	—	आई पन्थ
११.	कपिलनाथ (कपिलमुनि)	—	कपिलानी पन्थ
१२.	धजनाथ (हनुमान)	—	धजनाथी पन्थ

अन्य परम्परा में उपर्युक्त क्रम में परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होता है। जैसे गोरखपुर की परम्परा में क्रमांक ५, ८, ९ के स्थान पर कन्हड़, मन्नाथी तथा पागलपन्थ का उल्लेख किया गया है। पंजाब में झेलम स्थित टिल्ला की अनुश्रुति के अनुसार १८ श्रेणी के शैवपन्थी तथा १२ श्रेणी के गोरखपन्थियों में द्वन्द्व उपस्थित होने से गोरख ने दोनों के क्रमशः १२ और ६ पन्थों को तोड़कर छः छः पन्थों को लिया जो आधुनिक बारह पन्थी शाखायें हैं।

ये छः छः पंथ निम्न प्रकार से हैं :—

शिव द्वारा प्रवर्तित पंथ

१. कच्छ प्रदेश कंठर नाथ
२. पेशावर और रोहतक के पागलनाथ
३. अफगानिस्तान के रावल
४. पंख
५. मारवाड़ के बन पंथ
६. गोपाल के, राम के।

गोरखनाथ द्वारा प्रतिपादित पंथ—

१. हेठनाथ
२. विमलादेवी के आईपंथी कोलीनाथ या चोलीनाथ
३. चांदनाथ कपिलानी
४. जयपुर के पावनाथ
५. बैराग रतननाथ
६. धजनाथ (महावीर)।

उक्त बारह पंथों के अतिरिक्त कान्हिया के कालोलियन योगियों का पंथ भी माना जाता है। गोरखनाथ द्वारा कान्हिया को किसी भोज में शाप दे देने के कारण उनकी गणना बारह पंथो में नहीं को जाती है। कोई-कोई उनके पंथ की आधा गणना कर देते हैं। इस प्रकार पूरे बारह पंथ के स्थान पर साढ़े बारह पंथों की गणना की जाती है।

सत्यनाथ शाखा का प्रधान मठपुरी और पाताल भुवनेश्वर में हैं। सत्यनाथ स्वयं ब्रह्मा का नाम है। अतः सत्यनाथी ब्रह्मा के योगी भी कहलाते हैं।

रामनाथी योगियों का मुख्य मठ दिल्ली और गोरखपुर में हैं। कहते हैं कि सूर्यवंशी राजा रामचन्द्र ने गोरक्षनाम जी से वर प्राप्त कर उन्हीं की आज्ञा से दक्षिण में रामनाथ तथा उत्तर में गोरक्षनाथ की स्थापना की तथा दिग्विजयी हुए। गोरखपुर में दशहरे के दिन इस उपलक्ष में बड़ा भारी उत्सव मनाया जाता है।

धरमनाथी पंथ, यह पंथ सतनाथी राजा धरम द्वारा प्रवर्तित कहा जाता है। अनुश्रुति के अनुसार पांडुपुत्र युधिष्ठिर ही धर्मनाथ अथवा धरमनाथ हैं। इनके द्वारा स्थापित स्थान दुर्लभ [ढुल्लु] नेपाल में अब भी विद्यमान है। कच्छ प्रदेश का प्रसिद्ध धीणोधर मठ धर्मनाथ द्वारा प्रतिष्ठित बताया जाता है।

लक्ष्मणनाथी योगियों का मुख्य स्थान पश्चिम पंजाब [पाकिस्तान] में है। ये सब टिल्ले के योगी कहलाते हैं। ये योगी टिल्ले पर वास करते हैं और नीचे दरिया बहती है। टिल्ला सात कोस की चढ़ाई का पहाड़ बताया जाता है। टिल्ले की अनुश्रुति के अनुसार बालनाथ ही नटेश्वरी दरिया पंथों के आदि आचार्य हैं।

दरियानाथी योगियों का मुख्य स्थान सिन्ध [पाकिस्तान] में है। यहाँ के सन्यासी बैरागी ओर तुअरवंशी राजपूत गृहस्थ तथा ठाकुर या पुजारा [एक जाति] गृहस्थ दरियानाथी पंथ के अनुनयायी हैं। ये गृहस्थ लालनाथ को गुरु और टिल्ले के बालनाथ को तथा गोरखनाथ को दादा गुरु मानते हैं। इस पंथ के अनुयायी सुशिक्षित हैं। ये अधिकांशतः दफ्तर, कचेहरियों में नौकरी करते हैं।

गंगानाथी पंथ, कपिलमुनि के शिष्य गंगानाथ द्वारा प्रवर्तित बताया जाता है। एक अन्य परम्परा की मान्यतानुसार गंगानाथ को भीष्म पितामह भी कहते हैं। रतननाथी और कामनाथी भी से सम्बन्धित हैं। गुरुदासपुर [पंजाब] में इनका मुख्य स्थान है।

वैरागी भर्तृहरि या विचारनाथ द्वारा प्रवर्तित माना जाता है। अजमेर के पास पुष्कर और पंजाब में सरगोधा इनके मुख्य स्थान हैं। काबुल में भी वैरागपंथ का भी पीठ स्थान है।

रावल शाखा का मुख्य क्षेत्र पंजाब है। इस शाखा के योगी मुसलमान हैं। रावलपिंडी इनका मुख्य स्थान है।

जालन्धर पंथी पावपंथी भी कहलाते हैं। ये योगी अपनी परम्परा जालन्धरनाथ और गोपीचन्द से मानते हैं। इनके मुखय स्थान अम्बाला, दिल्ली, जयपुर और जोधपुर में इनके मठ तथा पीठ स्थान हैं।

गोरख शिष्या विमलाबाई को आई पंथ का संस्थापक कहा जाता है। आई पंथियों के मुख्य मठ और पीठ स्थान पंजाब में रोहतक, हरिद्वार, गोरखकुइँ दिनाजपुर जिला, बंगाल तथा पूर्व बंग (पाकिस्तान) में हैं।

कपिलानी शाखा के प्रवर्तक गोरखनाथ के शिष्य कपिलमुनि कहलाते हैं। कलकत्ते में दमदम के पास इनकी प्रसिद्ध गद्दी है। गंगा सागर में इनका एक आश्रम है। कपिलानी योगियों की एक शाखा पंजाब में भी पायी जाती है।

धजपंथी योगी अपना सम्बन्ध बंकनाथ हनुमान, हरावंत से जोड़ते हैं। ये योगी ध्वजाधारी होते हैं। पेशावर, अम्बाला, मुलतान और दक्षिण में, सिंहल में इनके स्थान हैं।

पागलपंथियों का मूलस्थान (बोहर) रोहतक है। जिन पर अब आई पंथियों का आधिपत्य है। कहावत है कि शाप के कारण इस पंथ के योगी केवल ढाई ही होते हैं।

गढ़वाल में सांस्कृतिक जागृति

—मुकन्दीलाल बैरिस्टर

[स्वर्गीय श्री मुकन्दीलाल बैरिस्टर साहब द्वारा, 'देवप्रयाग में १५ जून १९५९ को आयोजित, "देवप्रयाग सांस्कृतिक-सम्मेलन" के अवसर पर दिये गये, अध्यक्षीय भाषण का, सार-संक्षेप ।]

भारतीय प्राचीन संस्कृति में गढ़वाल का स्थान

देवप्रयाग देवभूमि उत्तराखण्ड का प्रवेश द्वार है । आप लोगों ने इस भागीरथी और अलकनन्दा के संगम पर गढ़वाल की सांस्कृतिक योजना का बीड़ा उठाया है । यह बड़े दायित्व का काम है । इसे निबाहना होगा । यहाँ पर इस पर्वतीय प्रदेश की पहाड़ी कला साहित्य और सभ्यता के उपासक और गुणग्राहक मनीषियों और विद्वानों की धारणा है कि भारतीय संस्कृति (सभ्यता) और वैदिक साहित्य की रचना भूमि यह हमारा गढ़देश है । कम से कम यह तो मानना ही पड़ेगा कि एकान्त निवास और साधना तथा कल्पना और विचार विमर्श के हेतु हिमालय की कन्दराओं में वैदिक काल अर्थात् आज से चार हजार वर्ष पहले से समय-समय पर विचारवान मनीषी आते थे । पुराण और महाभारत में उल्लिखित कतिपय घटनायें इसी देश से सम्बन्धित हैं । इसके अतिरिक्त मानव आकृति, रूप-रंग इत्यादि से पता लगता है कि यह ऐतिहासिक अनुसंधान सही है कि आर्यों के अलावा किन्नर, हूण, साक्य और खस इत्यादि जातियाँ समय-समय पर यहाँ आकर बस गईं । अस्तु जब हम गढ़वाल की संस्कृति का जिक्र करते हैं तो हमें यह बताना होगा कि हम किस सभ्यता का उल्लेख करना चाहते हैं और यह भी देखना होगा कि इस पर्वतीय देश की संस्कृति क्या है ।

गढ़वाल का नाम

यह विचारणीय है कि इस पर्वतीय प्रदेश का नाम "गढ़वाल" कब और किसने रखा और इस मुल्क का पुराना नाम क्या था ? प्राचीन काल में इस पर्वतीय प्रदेश को उत्तराखंड, केदारनाथ, बद्रिकाश्रम, देवभूमि, हिमांचल इत्यादि नामों से संकेत करते थे । इस विषय में मैंने जो जो खोज की है उससे मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इस पर्वतीय प्रदेश की पहाड़ियों की चोटियों पर कई गढ़ [किले] देखकर बाहर से यहाँ आने वालों ने हमारे इस मुल्क को "गढ़वाला" मुल्क कहा । खासकर जब सन् १७९० ई० [1790] में गोर्खा गढ़वाल के कई गढ़ों पर चढ़ाई करते हुए भैरोंगढ़ के पास पहुँचे और इस गढ़ को न जीत सके तो हार मानकर वह इस गढ़ों वाले मुल्क को छोड़कर वापिस चले गये । गोर्खा सैनिक इस बावन गढ़ों के प्रदेश का नाम गढ़वाल रख गये । पहले इस देश को गढ़वाल नहीं कहा जाता था । सातवीं सदी में जगत् विख्यात बौद्धयात्री ह्यून्त्सांग ने हमारी पुरानी राजधानी श्रीनगर को ब्रह्मपुर और इस मुल्क को ब्रह्मदेश के नाम से संकेत किया । यहाँ तक कि जब सन् १७९६ ई० [1796] के अप्रैल माह में कैप्टन हीर्डक [पहला अंग्रेज] कोटद्वार के रास्ते गढ़वाल में आया और श्रीनगर तक आया । वहाँ राजा प्रद्युम्न शाह [१७८५-१८०४] से मिला । उसने लौटकर

अपनी यात्रा का विवरण लिखा तो उसको शीर्षक [नाम] दिया "श्रीनगुर यात्रा का वृत्तान्त"[1] उसकी रचना का शुरू का फिक्रा यह है :—"कुछ दिन हुये मैं सीरीनगुर के पहाड़ी मुल्क में गया था"[2] अर्थात् कैप्टन होर्डक को किसी ने यह नहीं बताया कि इस पहाड़ी देश का नाम "गढ़वाल" था। उसने इस पर्वतीय प्रांत को सीरीनगुर का मुल्क लिखा है। इसी तरह जब एक अंग्रेज "फेरष्टर" नाम का यात्री तुर्क के वेश में गढ़वाल के राजा जयकृत शाह [१७८०–१७८५ ई०] के राज्य के पहाड़ों के नीचे के भाग बिजनौर [लालढोंग] और देहरादून के इलाके में सन् १७८३ में आया तो उसने भी हमारे पहाड़ी प्रांत को केवल "सीरीनगुर" के राजा का मुल्क बताया। उस समय लालढोंग का जो इस वक्त बिजनौर जिले में है गढ़वाल के राजा की सल्तनत था और देहरादून भी गढ़नरेश के राज्य में था। मि० फोरेष्टर ने अपनी भ्रमण पुस्तक में लिखा है कि देहरादून में सीरीनगर के राजा का डिप्टी [गवर्नर] रहता था।[3]

मोलाराम [सन् १७४३-१८३३ ई०] ने गढ़वाल को अपने गढ़राजवंश इतिहास में "गढ़राज" कहा है।

मोलाराम के पूर्वज गढ़वाल में

कवि, चित्रकार मोलाराम के पूर्वज श्रीनगर में सन् १६५८ मई में सुलेमानशिकोह के साथ दिल्ली से आये थे। इसके विषय में मोलाराम ने अपने ऐतिहासिक काव्य में लिखा है—

"श्यामदास अरु हरदास हो। पिता पुत्र दोउ राखे पास हो।
तुंवर जान दिवान हो माने। राखे हित सौं अत मन माने॥
तबसौं हम गढ़मांझ रहाये। हमरे पुरवा या विद आये॥
तिनके बंस हम जनम धारा। मोलाराम नाम हमारा॥

1—एशियाटिक सोसायटी की पत्रिका भाग ६ के पृष्ठ ३०९—३१७

—"Narrative of a journey to Srinagar" Vol. VI Asiatic Society of Bengal P. 309—317.

2—"Having Sometime ago visited the mountaneous Country of Srinagar.

3—"On 28th February 1783 at Dayrah [Dehradun] the residence of the deputy of the Siring nagur Rajah. This small town which is populous and neatly built may be called the Capital of the lower division of Srinagur". अर्थात् २८ फरवरी, १७८३ को दयरा [देहरादून] में [मुकाम] जहाँ सीरीनगुर के राजा का हेडक्वार्टर है। यह छोटा सा कसबा साफ-सुथरा घनी बस्ती का है। इस इलाके की राजधानी है।

शामदास और हरदास पिता पुत्र के पांचवीं पुस्त में मोलाराम का जन्म १७४३ ई० में हुआ था। मोलाराम ने एक और स्थान पर अपने काव्य में गोर्खा गवर्नर हस्तिदल से, सन् १८०४ में श्रीनगर में कहा था—

गढ़माहि जाके जयती कीनो।
जिनस सब हजरत की लीनी॥
सलेमा शाह को पातक लाग्यो।
तुम आये इत गढ़पति भाग्यो॥[1]

मोलाराम के समकालीन कवि भूषण और गुमानी ने गढ़वाल को "गढ़राज" के नाम से संकेत किया। उन्होंने भी साफ तौर से हमारे पर्वतीय प्रांत को "गढ़वाल" नहीं कहा।

साफ तौर से हमारे जिले को "गढ़वाल" नाम से अंग्रेज लेखकों और शासन कर्ताओं ने उन्नीसवीं सदी में पुकारा। इनमें विख्यात और उल्लेखनीय हैं मिस्टर फ्रेजर, जिसने सन् १८१५ ई० में अंग्रेजों ने अलकनन्दा गढ़वाल में भ्रमण किया। उसके बाद कैप्टन स्कीनर सन् १८२६ में देहरादून मसूरी होकर पर के प्रदेश को जम्नोत्तरी गया। जब वह एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर चढ़ा तो उसने सामने के गढ़वाल गढ़वाल नाम दिया को "घुर्डवाल्ल" कहा। उसकी अंग्रेजी इबारत[2] का हिन्दी अनुवाद है :—

"जब हम एक खड़खड़े [नंगे] ऊबड़-खाबड़ पर्वत की चोटी पर पहुँचे, नीचे हमारे जमुना को, दाहिनी ओर [उस पार] घुर्डवाल्ल के पहाड़ थे।"

मेरी अब तक की खोज [अनुसन्धान] से यही पता लगता है कि हमारे इस पर्वतीय प्रदेश का "गढ़वाल" नाम नंदा है जो उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण में प्रचलित हुआ और यह गढ़ों वाला मुलक "गढ़वाल" नाम पहाड़ों की चोटी पर के कतिपय [५२] गढ़ों को देखकर ही बाहर वालों ने रखा। यह स्वाभाविक है कि किसी का भी नाम बाहर वाले लोग ही रखते हैं। बच्चों का नाम पेट से उनके माथे पर लिखा नहीं आता है। माँ-बाप और रिस्तेदार ही बालकों का नाम रखते हैं। इसी तरह हमारे गढ़ों के देश को आगन्तुक लोग "गढ़वाल" नाम से संकेत करने लगे।

1—मोलाराम के कथनानुसार जब औरंगजेब ने गढ़नरेश प्रतिपत शाह [१६४६—१६६० ई०] को सुलेमान शिकोह को उसके हवाले करने को विवश किया तो राजा ने सुलेमान शिकोह को अपनी सेना का सेनापति बनाकर पाटलीदूण में औरंगजेब की फौज से लड़ने को भेजा। उसकी धन-दौलत को अपने कब्जे में कर लिया और शामदास और हरिदास को भी रोक लिया।

2. On reaching the Sumit of a rough and rugged mountain, looking prependicularly to the Jamuna below, we beheld the hills of Ghurduall on our right". Excursions in India Vol. I to 262.

संस्कृति के चिह्न अथवा लक्षण

प्रत्येक देश की सभ्यता के चिह्न अथवा लक्षण हैं—उस देश के रीति-रिवाज, रहन-सहन, साहित्य, लोकगीत, पवाड़े (भड़वाली), पहेलियाँ, लोकनृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, त्योहार, पर्व, पोशाक और धर्म। उक्त लक्षण समयानुसार समय-समय पर बदलते रहते हैं। परन्तु प्रत्येक देश और जाति की संस्कृति के कुछ लक्षण ऐसे हैं जो चिरस्थायी हैं। यथा हमारी महिलाओं का पहिनाव और उनके जेवर। हमारे गढ़वाल में स्त्रियों के कुछ ऐसे गहने हैं जो आज से तीन हजार वर्ष पहले भारतवर्ष के अन्य भागों की रमणियाँ पहनती थीं। उनमें से कुछ अब देश में नहीं दिखायी देते परतु हमारे गढ़वाल में अब भी मौजूद हैं।

हमारे सामाजिक जीवन में कुछ ऐसी प्रथायें तथा आचरण हैं, जिनको हमें अब भी बर्तना चाहिये। यथा माता-पिता के प्रति प्रेम और भक्ति, उनकी सेवा, गुरु का आदर, गुरु-आज्ञा पालन, अध्यापक का सम्मान। ये गुण हमारे देश भारतवर्ष की बहुत बड़ी देन हैं। हम इसका अभाव आज अपने यहाँ देख रहे हैं। यह बड़े खेद का विषय है।

गढ़वालियों की वीरता

गढ़वालियों की वीरता प्राचीन समय से विख्यात है। जब राजा पाण्डु अपनी दो स्त्रियों से स्वयं संतति उत्पन्न न कर सका तो यहाँ पाण्डुकेसर में आया और वहाँ उसने गढ़वाल के भड़ों से मदद ली और युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव कुंती और मादरी से उत्पन्न करवाये। पाँचों पांडव वास्तव में गढ़वाली थे। बनवास और गुप्तवास के लिए वे अपनी मातृ-भूमि गढ़वाल में आये। यही कारण है कि यहाँ पांडवों को इतना मानते हैं और पांडव नाच हमारे यहाँ अब भी होते हैं। द्रौपदी भी गढ़वाली कन्या थी। उसने अपने मायके जौनपुर के रिवाज के अनुसार पाँच भाई पांडवों की पत्नी होना स्वीकार किया।

हमारे पवाड़े और भड़वाली गाथा, गढ़वाली वीरों की कीर्ति के स्तम्भ हैं। जीतू बगड़वाल का नाटक तो पांडव नाच से कम नहीं, हम जिनको आछरी कहते हैं। वे हमारी पर्वतीय अप्सरा थीं।

आधुनिक समय में योरोप के रणक्षेत्र में दोनों लड़ाइयों में गढ़वाली सिपाहियों ने कितना नाम कमाया। दो गढ़वाली वीर गबरसिंह और दर्वान सिंह को सर्वश्रेष्ठ उपाधि विक्टोरिया क्रॉस मिला।

अपने देशवासियों पर अंग्रेजों के अनुसार गोली चलाने से इनकार करने वाले गढ़वाली सिपाही ही थे। जिन्होंने चन्द्रसिंह गढ़वाली के नेतृत्व में भारतीय सेना में १९३० में एक नयी बात की। उक्त घटना जो पेशावर में हुई, और जिस पर प्रकांड हिन्दी लेखक राहुल सांकृत्यायन जी ने एक अवलोकनीय पुस्तक "चन्द्रसिंह गढ़वाली" लिखी है। उसके बाद सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में सन् १९४३-४४ में सिंगापुर में तीन सहस्र गढ़वाली सिपाही और अफसरों ने स्वतंत्र भारत की आजाद फौज में भारत की आजादी के लिए संग्राम किया। द्वितीय महायुद्ध में २५००० गढ़वाली नवयुवक पल्टन में भर्ती हुए। सारे भारत वर्ष में ऐसा कोई जिला नहीं मिलेगा जहाँ एक ही छोटे से जिले से पच्चीस हजार जवान पल्टन में एक ही युद्ध के लिए भरती हुए हों। रण कुशलता और वीरता गढ़वाल की विशेषता है।

स्वदेश प्रेम

स्वदेश प्रेम भी गढ़वाल की संस्कृति का एक विशेष लक्षण है। हमारे यहाँ एक कहावत है—"ध्वैड़क् अपणों चांघ प्यारो" अर्थात् ध्वैड़ (जंगली बकरी) को अपना नंगा चट्टानी पहाड़ ही प्यारा है। यह पहाड़ी मृग हरे-भरे मैदानी जंगलों के बदले नंगे, ऊँचे चट्टानों में ही रहना पसन्द करते हैं। हम लोगों को

अपने इस पहाड़ी मुल्क से उसी ध्वैड़ [मृग] की तरह प्रेम है। एक गढ़वाली नवोढ़ा को खेत में फसल काटते वक्त एका-एक अपने मायके की याद आयी। उसने फसल लैना [काटना] छोड़ दिया और दराँती और दोनों हाँथों को मय अनाज की बालों के अपने साँका [गले] पर लगा लिया और गीत गाने लगी—

ऊँची डाडौं नीसा ह्वै जावा ।
ऊँची कुलौ नीसी ह्वै जाव ॥
देखराादेवा बुवा जी को गाँव ॥

उक्त कल्पित खुदेड़ ब्वारी का चित्र एक गढ़वाली चित्रकार शिवानन्द नौट्याल ने खींचा है। हम अपने जिरने से बाहर विवश होकर आजीविका उपार्जन के लिए मजबूरन जाते हैं। और जहाँ भी जाते हैं अपने गढ़वाली क्लब और संघ बना लेते हैं। और अपने जिले की उन्नति की चेष्टा और चर्चा करते रहते हैं। इस स्वदेश-प्रेम का प्रदर्शन दिल्ली प्रवासी गढ़वालियों ने अच्छे रूप में किया है। कई लाख रुपया चन्दे से जमा कर गढ़वाल भवन का निर्माण कर रहे हैं।

पर्वतारोहण

गढ़वालियों में पर्वतारोहण प्रवृत्ति जन्म से पहाड़ी मुल्क और हिमाच्छादित चोटियों के निकट होने के कारण है। हमारे माणा और नीति घाटियों में रहने वाले गढ़वाली प्रतिवर्ष १८ से २० हजार फीट ऊँची पहाड़ी चोटियों को पार कर तिजारत के लिए तिब्बत जाते हैं। भारत वर्ष में सबसे पहला पर्वतारोहण, ऊँचे से ऊँचे हिमाच्छादित शिखर पर चढ़ने वाला एक गढ़वाली नवयुवक ही हुआ है। जो बाल्यावस्था से ही जब वह दून स्कूल में पढता था तभी से अपने अंग्रेज मास्टरों के साथ ऊँचे हिमालयों की चोटियों पर चढ़ने जाया करता था। खेद है कि वह वीर पर्वतारोहकों का शिरोमणि मेजर नरेन्द्रधर जुयाल आज हमारे बीच नहीं है। वह हिमालय की गोद में वीरलोक को सदा के लिए चला गया। आशा है हमारे गढ़वाली युवक उसका अनुकरण करेंगे और गढ़वालियों की इस विशेषता को कायम रखेंगे।

अपने देश की संस्कृति के प्रति हमारा दायित्व

केवल संस्कृति की योजना करना या उसका डंका बजाने से काम नहीं बनेगा। समय और आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके हमको अपने देश की सभ्यता का प्रादुर्भाव करना होगा। किन्तु इस बात का खयाल रहे कि नवीनतम और प्रगतिशीलता के नाम से हम अपनी संस्कृति की विशेषता को मिट्टी में न मिला दें। यदि हम ऐसा करें तो जो प्रशंसा भारतीय कला, चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्य और संगीत की अन्य देशों में हुई है और हो रही है, उसे खो बैठेंगे और संसार हमारी सांस्कृतिक देन से वंचित रहेगा। हमारे देश की चित्रकला चाहे वह अजन्ता की हो या राजस्थानी हो या मुगलकालीन हो या पहाड़ी हो या बङ्गाल की आधुनिक कला हो। सभी भारतीय कलायें निराली हैं। ऐसी कला सिवाय भारतीय कलाकार के अन्य किसी देश का कलाकार नहीं बना सकता है। हम संसार को कला में देन तब ही दे सकते हैं, जब रूप-रंग, भाव और आदर्श में हमारी कला भारतीय हो।

हर्ष का विषय है कि आप लोगों ने सांस्कृतिक उत्थान का बीड़ा उठाया है। राष्ट्र की संस्कृति को चिरस्थायी रखने का यह वास्तविक और यथोचित उद्योग है। इसको पूरा करने में हम संसार के सभ्य समाज की सेवा करेंगे और अपनी सभ्यता का प्रादुर्भाव का बाहर और भीतर करेंगे।

वेधशाला-खण्ड

Astronomical Observatory of Devaprayag

—K. N. Prabhakar

During the last week of March 1967, I went to Devaprayag (60 miles from Hardwar on the way to Badrinathji) along with two friends from Saharanpur after receiving an invitation from Acharya Pt. Chakradhar Joshi. Devaparyag is place much favoured by holy men from immemorial times. Even Brahma, the Creator, it is said, came here to mediate, when the world was young. Here too, Sri Rama settled in his old age for the same purpose and an image of Him is installed in the temple known as Raghunath Temple. Sage Kanva had his Ashrama or hermitage in the same holy spot.

The point where the two sacred rivers (Bhagirathi, *i. e.*, Ganga Mai which is not an earthly river but a celestial stream and Alaknanda supposed to be coming from Alakapuri) meet is known as Devaprayag. The junction of the streams at Devaprayag is round an islet that wears the aspect of an almost triangle. No confluence is deemed holier than this at Devaprayag. Pilgrims come here from every nook and corner of India. They bathe, not merely for the purpose of physical purity but as a sacrament symbolising the cleansing of their sin-soiled souls.

About half a mile above from the road-side near the dak bungalow on the hill called Dasrathachal, the first Indian Astronomical Observatory is situated at a height of 2,123 feet (647 meters) from the sea-level at 30° 8′ N. and 78° 35′ E. The idea came first to Acharya Pt. Chakra Dhar Joshi to build such like Ved-Shala about 40 years ago. After a long struggle and due to the grace of Bhagwan Badrinathji, the foundation-stone of the Observatory was laid by the late Srimati Ratan Devi Joshi respected mother of the Acharya on 10th August, 1946 and now three-fourths of the project is completed. In the Observatory there are two telescopes and several other Yantras. The major telescope has been imported from Germany having

two lenses each of 6 inches diameter and the length about 6 feet. The other telescope is a smaller one of a three-inch lens imported from U. K The aim of establishing this Observatory is to do research on astronomical bodies for Panchang Shodhana and such other works.

Acharyaji publishes the observations on celestial bodies. He also does research through Dhruva-Yantra, Jalghati-Yantra, Dwadasangula-Sanku, Souraya Yantra, Yantra Raja and several other ancient instruments.

This Observatory is a part of the 104 years old astrological institution named Shree Laxmi Dhar Vidya Mandir. This institution was started by the late Pt. Laxmi Dhar Joshi, a learned man of his time and respected father of the Acharya. The late Pt. Lakshmi Dhar Joshi studied astrology and other subjects from his revered father the late Pt. Venkatacharya Joshi. In the Library room of Shree Laxmi Dhar Vidya Mandir, there are more than six thousand printed books on Vedanga and Ayurveda. More than two thousand works are in manuscript form, still unpublished. All the publications on astrology are in Sanskrit, Telgu, Tamil, Gujrati, Marathi, Bengali and Hindi. Recently all the books of the library of Pt. Chandi Prasad, the Gurudeva of the Acharya including *Bhrigu Samhita* and several such unique treaties on astrology, Ayurveda and Mantras have been donated to the Library according to the will. This library is said to be one of the biggest libraries in India. Aid from the Government India is also being received.

The Acharya has also founded the Himalyan Astrological Research Institute. Pt. Mukand Daivagya, the revered Gurudeva of the Acharya, is Kulapati (Chancellor) of this Institute. Two publications (*Jyotish Tatwam* — one of the biggest of treaties on Trisakanda Jyotisha of 1,600 pages and *Gadawali*, the first book written in Sanskrit with Hindi translation on Medical Astrology) have been brought out. The next publication *Jyotish Sabdakosha* is under print with the aid of the Government of India.

Under the guidance of Acharya Mukand Daivagya, the Himalayan Astrological Research Institute and the Indian Astrological Research Bureau of Saharanpur will soon publish an astrological journal *Ved-Chakshu* Acharyaji told me that he is much greatful to late Dr. Rajendra Prasad, the

late Mr. Mavlankar, the late Sri V. B. Patel, the Mr. Datar, Mr. Morarji Desai, Kaka Kalekar, Mr. Keshavlal Veerchand Seth, Mr. Ramniklal Samil Dass Parikh, Mr. Vadilal Mohanlal Shah, Mr. Vithal Dass Narain Dass, the late Mr. Naveen Chander Mafatlal and members of his family, Mr. R. B. Gujjar Mal Modi, H. H. the Mother of Arvindashram, Padma Bhushan Surya Narain Vyas, Pt. Hardev Sharma Trivedi, Dr. Girdhari Lal Goswami, Dr. Kailash, Dr. K, K. Dole and member of the Indian Merchants Chamber of Bombay and several other well-wishers for their timely help for construction of the Observatory.

देवप्रयाग स्थित नक्षत्र वेधशाला

—तरुण विजय

बदरीनाथ यात्रा में देवप्रयाग एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान है। बद्रीनाथ तक पैदल मार्ग (जिसे अब प्रयोग नहीं किया जाता) तथा मोटर मार्ग दोनों ही इस स्थान से गुजरते हैं। कहते हैं कि श्री राम के रावण वध के फलस्वरूप लगे ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्त होने के लिये यहीं पर तपस्या की थी। यहाँ रघुनाथ जी का बहुत प्राचीन व सुन्दर मन्दिर भी है। परन्तु यहाँ का सब प्रमुख आकर्षण भागीरथी तथा अलकनन्दा नदियों का मनोहारी संगम है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस संगम के बाद से ही भागीरथी व अलकनन्दा के सम्मिलित प्रवाह को गंगा नाम से पुकारा जाता है। जहाँ भक्तजन संगम में स्नान कर स्वयं को पुण्यवान करते हैं वहीं देश के कोने-कोने से विद्वज्जन आकर यहाँ स्थित नक्षत्र वेध-शाला में शोधकार्य कर सरस्वती के पुण्य प्रवाह में अवगाहन करते हैं।

शायद जानकर आश्चर्य होगा, परन्तु गढ़वाल के अन्तर में स्थित पौराणिक तीर्थ स्थल को आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में गौरवशाली महत्व देने वाली इस नक्षत्र वेध-शाला द्वारा बिना किसी विशेष प्रचार व प्रदर्शन के, ऐसा कार्य किया जा रहा है जिसका प्रभाव भारतीय ज्योतिष गणनाओं में पड़ रहा है।

वेधशाला के निदेशक सुविख्यात ज्योतिर्विद आचार्य चक्रधर जोशी हैं। आपने १९४६ ई० में हिमालय ज्योतिष अनुसंधान संस्थान तथा नक्षत्र वेधशाला की स्थापना की थी। तब से निरन्तर शोधकार्य में व्यस्त रहते हुए आचार्य जोशी गणित व फलित ज्योतिष से सम्बन्धित पंचांगों की प्राचीन गणनाओं का आधुनिकतम विधियों से संशोधन कार्य कर रहे हैं। आचार्य जोशी ने बताया कि आर्य भट्ट व भास्कराचार्य सदृश विश्वविश्रुत भारतीय खगोल व ज्योतिष शास्त्र के महापण्डितों द्वारा उस समय प्रचलित विधियों के अनुसार पचांग निर्मित किये जाते थे, जिनके आधार पर समस्त गणनाएँ की जाती थीं। उसी परम्परा का सफल निर्वहन १४४२ शकाब्द तक प्रख्यात

ज्योतिर्विद पण्डित गणेश देवज्ञ द्वारा संशोधित पचांग तक किया गया। इसके पश्चात् किसी ने यह संशोधन कार्य उतनी प्रामाणिकता से नहीं किया। पं० गणेश देवज्ञ द्वारा विरचित महान ग्रन्थ गृहलाघव के आधार पर ही अभी तक पंचांग निर्मित किये जाते रहे हैं। कांची काम कोटि-पीठ के वर्तमान शंकराचार्य ने अब अद्यतन काल-गीत की सापेक्ष गणनाओं में संशोधन कार्य किया है।

आचार्य जोशी ने बताया कि इसी दिशा में वे अपनी नक्षत्र वेध-शाला के माध्यम से कार्य कर रहे हैं। यह पूछे जाने पर कि प्राचीन काल की गणनाएँ मात्र नेत्रों की दृष्टि पर ही आधारित होने के बावजूद शुद्ध होती थी तो अब ऐसा सम्भव क्यों नहीं है, आचार्य जोशी ने कहा कि—दृष्टि के विश्वास में शिथिलता आने से सूक्ष्म यन्त्रों का सहारा लेना आवश्यक हो गया है।" उन्होंने भारत में ज्योतिष गणनाओं की अप्रामाणिक स्थिति पर दुःख व क्षोभ प्रकट करते हुए कहा कि सस्ते प्रचार व जादू टोने के प्रसार के कारण इस विद्या का अपरिमित ह्रास हुआ है। जब कि विदेशों में आज इसे एक विज्ञान के रूप में समादृत किया जाता है।

नक्षत्र वेधशाला देवप्रयाग

—हजारीलाल जोशी 'स्नेही'
एम० ए० (ट्रिपल) पत्रकार

देवप्रयाग-सुदर्शन क्षेत्र के समीपवर्ती दशरथाचल पर्वत की ओट में; सुन्दर खुले वातायन में, आचार्य पं० चक्रधर जोशी ने ग्रह-नक्षत्रमण्डल के अध्ययन, अनुशीलन और गवेषणा एवं तत्उपलब्ध परिणामों के शोध-प्रकाशन के लिए "नक्षत्र वेधशाला" संस्थान की सन् १९४६ में आधारशिला रखी।

कालान्तर में सन् १९४९ में बम्बई में अपने मित्र श्री रमेश भाई रावल के सहयोग से प्रसिद्ध ज्योतिर्विद "पद्मभूषण" स्व० सूर्यनारायण व्यास के बम्बई आने पर "वेधशाला" निर्माण पर वार्ता एवं सभा हुई, जिसमें एक समिति का गठन किया गया और आचार्य श्री को ही इस कार्य को आगे बढ़ाने का प्रस्ताव पारित कर यह गुरुतर भार उन्हें सौंप दिया गया।

"नक्षत्र-वेधशाला" निर्माण विषयक आचार्य जी के लेख "बम्बई समाचार" और "विकास" बम्बई तथा "संदेश" [अहमदाबाद] से प्रकाशित हुये और "पॉयनियर" प्रभृति कई पत्रों ने वेधशाला से सम्बन्धित समाचार प्रकाशित किए। आचार्य जी के अनुसार इस "वेधशाला" निर्माण का उद्देश्य—"भारतीय ज्योतिर्विज्ञान के विषय में आज जो विभिन्न मत दृष्टिपथ में आ रहे हैं, उन्हें देखकर प्रत्येक विचारशील भारतीय मस्तिष्क अनुभव कर रहा है कि सभी मतभेदों को दूर कर मतैक्य साध्य किया जाय। इस विषय में आज यह परमावश्यक है कि तटस्थरूप से पक्षातीत वैज्ञानिक संशोधन द्वारा यह निर्णय किया जाये, इसके लिए जब तक ग्रहों की गतिविधि का प्रत्यक्ष ज्ञान न हो और उसके साधन उपलब्ध न हों, तब तक यह समस्या सुलझनी संभव नहीं है।"

इसी आशय को लेकर श्री रमेश भाई रावल [यन्त्रों के प्रसिद्ध व्यापारी बम्बई] के सहयोग से "पद्मभूषण" स्व० सूर्यनारायण व्यास की अध्यक्षता में बम्बई में एक सभा हुई और निर्णय हुआ कि [आचार्य जी के शब्दों में]—"भारतीय पञ्चागों की विविधताओं के कारण जनता में फैलने वाले भ्रम निरसनार्थ तथा ज्योतिष जैसे प्रत्यक्ष विज्ञान के विषय में आशंकाओं के निवारण कार्य के लिए सर्वप्रथम पक्षातीत होकर पञ्चागों का एकीकरण और संशोधन आवश्यक है। इसके लिए प्राचीन और अर्वाचीन उपकरणों के साथ सर्वप्रथम एक वेधशाला [Observatory] का निर्माण करना जरूरी है। यह वेधशाला हिमालय के उस गिरिश्रृङ्ग पर स्थापित होनी चाहिए जहाँ भारत सरकार भी, वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए संस्था स्थापित करने के लिए यत्नशील है।" स्व० आचार्य चक्रधर जोशी जी को ही इस प्रस्ताव को कार्यान्वित करने का भार एवं समस्त अधिकार सभा द्वारा सौंप दिये गये। इसके कार्यान्वयन के लिए उन्होंने समुद्रतल से ६४७ मीटर [२१२३ फीट] की ऊँचाई पर ७८°, ३५', ४४", ७४"∠ [रेखांश] तथा अक्षांश—३०°, ०८', ४५", ७६'∠ पर 'नक्षत्र-वेधशाला' का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया। और धीरे-धीरे आवश्यक उपकरण भी जुटाये गये। वर्तमान में इसमें प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों ही प्रकार के उपकरण उपलब्ध है, जिनकी सहायता से ग्रहयुति, ग्रह-संभरण, ग्रह युद्ध, ग्रहों की पारस्परिक दूरी एवं प्रभाव और उनका पृथ्वी एवं मानव जीवन पर प्रभाव, लग्न, इष्टकाल निर्धारण, भावों की स्थिति और उनका पारस्परिक प्रभाव आदि का सम्यक अध्ययन किया जाता है। यह "वेधशाला", "आस्ट्रोलॉजी" और 'आस्ट्रोलॉजी' के साथ खगोलशास्त्रियों के लिए भी विशेष उपयोगी है।

वर्तमान में इस वेधशाला में प्राचीन और अर्वाचीन यन्त्रों में—जलघटी, सूर्यघटी, ध्रुवघटी और द्वादशांगुल शंकु [ये सभी समय ज्ञान के यन्त्र हैं], लग्नमापक यन्त्र [लग्न ज्ञान करने का आधुनिक उपकरण], कुतुबुनुमा [दिशा निर्देशक यन्त्र], बैरोमीटर [मौसम मापक यन्त्र], मोनोमीटर [समय का सूक्ष्मतम ज्ञापन कराने का यन्त्र], सोलर सिस्टम [सूर्य से पृथ्वी, चन्द्र, भौम आदि ग्रहों की दूरी, उन ग्रहों के अपने चन्द्रमा, उनकी गति और पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात करने वाला यन्त्र], राशि बोध नक्षत्र मण्डल चार्ट [इसमें विभिन्न महीनों में कौन सी राशि किस स्थान पर सौर मण्डल में होगी, नक्षत्रों की स्थिति तथा उनका भ्रमण चक्र, सप्त ऋषि [लघु एवं गुरु] आदि की ध्रुव से स्थिति का ज्ञान होता है] षड्ऋतु चार्ट-नक्शे [इनमें विभिन्न ऋतुओं में तारक मण्डल की स्थिति, विषवत रेखा की स्थिति, नक्षत्र, ग्रहों की स्थिति बतलाई गई है], सौर मण्डल चार्ट [इससे सौर मण्डल स्थित सूर्य से बुध, पृथ्वी, चन्द्रमा, मङ्गल, वृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेप्चून और प्लूटो, साथ ही लघुग्रहों की स्थिति उनके स्वरूप का परिचय मिलता है], इनके अतिरिक्त छोटी-छोटी दूरबीनें, दो छोटे टेलिस्कोप एवं दो विशाल टेलिस्कोप इस वेधशाला में संग्रहीत हैं, जो हजारगुना बढ़ाकर किसी भी वस्तु का सूक्ष्मतम अध्ययन और मीलों दूरी की स्थिति को भी अति निकट कर सकने में सक्षम हैं जो सौर मण्डल के अध्ययन—ग्रहों की गति, उनका मार्ग, स्थिति, पारस्परिक प्रभाव, सम्बन्ध, ग्रहयुति आदि का सूक्ष्मतम अध्ययन करने में विशेष उपयोगी हैं।

आचार्य जी का इसी वेधशाला में 'प्लेनेटोरियम' व 'डोम' बनाकर यन्त्रों को उसमें स्थित करने का सङ्कल्प केवल विचार मात्र ही रह गया। काश! उन्हें दो वर्ष भी ईश्वर ने हमें मार्ग-दर्शन, आशीर्वाद देने इस धरती पर रखा होता यह स्वप्न-विचार न रहकर मूर्त रूप ले चुकता।

'श्री लक्ष्मीधर-विद्या मन्दिर' नामक पुस्तकालय व संस्थान के अन्तर्गत, यह वेधशाला है। इस पुस्तकालय में ज्योतिष, कर्मकाण्ड, वेद, उपनिषद्, संहिता, ब्राह्मण, पुराण, रस रसायन, दर्शन, कोश, साहित्य नाटक, काव्य,

निबन्ध, लेख] इतिहास, भूगोल-पर्यटन, तंत्र, मंत्र, आयुर्वेद, जीवनियाँ आदि विभिन्न विषयों पर लगभग २०,००० पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त प्राचीन पांडुलिपियाँ दुर्लभ ग्रन्थ, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन की पुस्तकें, पत्रिकायें आदि सुरक्षित हैं। इस पर अलग से कार्य की आवश्यकता है। यह पुस्तकालय आचार्य जी की बहुविध ज्ञान का परिचायक, सुरुचि संपन्नता, व्यक्तित्व, उनके ज्ञान का परिचायक तो है ही, विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे शोधार्थियों, पिपासुओं के लिए अति उपयोगी है। इसीलिए गढ़वाल विश्व विद्यालय ने इसे शोध केन्द्र के रूप में भी मान्यता दी है। आवश्यकता इसके रक्षण एवं उपयोग की है।

समाचार पत्रों से

ज्योतिषाचार्य पं० चक्रधर जोशी के असामयिक निधन पर भारत के प्रख्यात दैनिक, साप्ताहिक और मासिक समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं की नाम सूची, जिनमें आचार्यवर के असामयिक निधन के समाचार और शोक-प्रस्ताव प्रकाशित हुए

१–नवभारत टाइम्स [दिल्ली] २–टाइम्स आफ इन्डिया [दिल्ली] ३–हिन्दुस्तान [दिल्ली] ४–अमर उजाला [कानपुर] ५–कर्मभूमि [कोटद्वार] ६–पर्वतीय [नैनीताल] ७–हिन्दू [मद्रास] ८–हिन्दू [हरिद्वार] –अमृत प्रभात [इलाहाबाद] १०–Northern India Patrika [Allahabad] ११–नवजीवन [लखनऊ] १२–स्वतंत्र भारत [लखनऊ] १३–पायोनियर [लखनऊ] १४–सरहदी [लखनऊ] १५–सत्यपथ [कोटद्वार] १६–मातृपद [श्रीनगर गढ़वाल] १७–तरुण हिन्द [ऋषिकेश] १८–युगवाणी [देहरादून] १९–सहारनपुर संदेश [सहारनपुर] २०–गढ़वाल मण्डल [पौड़ी गढ़वाल] २१–Astrological Magazine [Saharanpur] २२–पाञ्चजन्य [नई दिल्ली] २३–All India Radio [DELHI] All India Radio [LKO] All India Radio [Nazebabad] २४–National Herald [LKO] २५–ज्योतिष मार्तण्ड [जयपुर] २६–ज्योतिर्विज्ञान [मराठी] पूना २७–ज्योतिर्विज्ञान [गुजराती, बम्बई]

कुछ अन्य—

सन् १९८०	विक्रमी २०३७	शक १९०२
२२ अगस्त	६ भाद्रपद, शुक्रवार	३१ श्रावण

साप्ताहिक गढ़वाल मण्डल

आचार्य चक्रधर जोशी का निधन

देवप्रयाग (गढ़वाल) अन्तर्राष्ट्रीय लब्ध-ख्याति के ज्योतिर्विद तथा संस्कृत-कर्मकाण्ड के सुप्रसिद्ध विद्वान् समाजसेवी, नक्षत्र-वेधशाला (देवप्रयाग) के संस्थापक-संचालक आचार्य चक्रधर जोशी का ७१वें वर्ष में हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया।

श्री जोशी स्वास्थ्यलाभ के लिए १० अगस्त को मसूरी (मोदीभवन) गये थे कि अचानक ही जल-वायु, (ऊँचाई) के असर से उनका रक्तचाप बढ़ गया। तत्काल ही १५ अगस्त को उन्हें कम्यूनिटी हास्पिटल में दाखिल किया गया, जहाँ सुयोग्य डाक्टरों के अथक प्रयत्न के बावजूद उन्हें जीवनदान नहीं दिया जा सका और अपने पीछे बिलखते ४ पुत्र, धर्मपत्नी, दो विवाहित तथा एक अविवाहित पुत्री को छोड़कर हजारों-लाखों को रुलाते, वे इस जगत से अन्तिम विदा ले गये।

१७ अगस्त सायं उनके शव को लेकर जेष्ठ पुत्र सुधाकर, मँझला पुत्र प्रभाकर, धर्मपत्नी विद्यावती देवी भागिनेय रामकुमार अन्य इष्टमित्रों के साथ देवप्रयाग पहुँचे। जैसे ही यह हृदय विदारक समाचार ज्ञात हुआ हजारों अश्रुपूरित नर-नारी, बच्चे, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मजदूर, कर्मचारी, अधिकारी वर्ग, व्यापारी सभी हतप्रभ हो अन्तिम दर्शनों के लिए उमड़ पड़े। अलकनन्दा–भागीरथी के पवित्र संगम पर सायं ७ बजे उनकी चिता लगाई गई। और यह पार्थिव शरीर भी नष्ट हो गया! शेष रह गई उनकी याद, उनका कृतित्व, सदा थिरकती हास्य लहर की याद, सदाशयता, दीन वत्सलता और स्वयं का समष्टि हेतु समर्पण।

आचार्य जोशी आजकल प्रसिद्ध उद्योग समूह·मफतलाल ग्रुप्स के सहयोग से 'देवप्रयाग महाविद्यालय भवन' के निर्माण कार्य में व्यस्त थे। राजकीय आर० के० इण्टर कालेज का साइंस ब्लाक भी उनके ही आशीर्वाद का प्रतिफल है। वे समाज कल्याण संगठन (रजि०) देवप्रयाग के संस्थापक संरक्षक थे—जिसके अन्तर्गत महिला सिलाई केन्द्र, बाल वाटिका संस्थायें चल रही हैं एवं सैकड़ों विद्यार्थियों, विधवाओं, अपंग अनाश्रितों की भी सेवा कर रहा है। संप्रति आप 'प्राच्य विद्या संस्थान' की योजना के कार्यान्वयन में भी व्यस्त थे।

उनके द्वारा स्थापित श्री लक्ष्मीधर विद्यामन्दिर का पुस्तकालय अपने में ही एक संस्था है। हजारों व्यक्तियों

को छात्रवृत्ति, रोजगार व अन्य तरह से सहायता करने वाले सतत् किसी न किसी निर्माण में व्यस्त रहने वाले, अध्ययन, संस्कृति परोपकारी ऐसे व्यक्ति का उठ जाना उत्तराखण्ड व देश के लिए कष्टकारक है।

यहाँ आज शोक में समस्त शिक्षण संस्थायें, बाजार बन्द रहा।

× × ×

दैनिक देहात

सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य आचार्य पं० चक्रधर जोशी का निधन

सहारनपुर हिमालय के वयोवृद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य

× × ×

युगवाणी–३१ अगस्त १९८०

ज्योतिर्विद आचार्य पं० चक्रधर जोशी का निधन

देवप्रयाग (गढ़वाल)–अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध ज्योतिर्विद

× × ×

दैनिक जागरण, ८ अगस्त १९८०

ज्योतिषाचार्य चक्रधर जोशी का निधन

नन्द प्रयाग, ८ सितम्बर (हि०स०)। प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं नक्षत्र वेधशाला के संस्थापक व संचालक श्री चक्रधर जोशी का गत दिनों ७१ वर्ष की आयु में निधन हो गया।

× × ×

पौड़ी टाइम्स, १८ अगस्त १९८०

श्री चक्रधर जोशी का देहावसान

× × ×

युगवाणी देहरादून, २४ अगस्त १९८०

श्री चक्रधर जोशी का निधन

× × ×

कर्मभूमि, २६ अगस्त १९८०

ज्योतिष शिरोमणि

पत्रकार श्री जोशी का निधन

वर्तमान समय में गढ़वाल मण्डल के प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य श्री चक्रधर जोशी देवप्रयाग निवासी का १६ अगस्त को अपनी वेधशाला देवप्रयाग में निधन हो गया। वे ७१ वर्ष के थे। वे देवप्रयाग पंडा समाज में एक ख्यातिलब्ध विद्वान् थे; ज्योतिष में उनकी पकड़ बहुत बड़ी थी। उन्होंने कई वर्ष पूर्व देवप्रयाग में ज्योतिष सम्बन्धी एक वेधशाला का निर्माण किया। उनका वहाँ एक बहुत अच्छा पुस्तकालय है। स्वयं भी उन्होंने एक दर्जन पुस्तकें ज्योतिष पर लिखी हैं। वे स्व० मुकुन्द दैवज्ञ जी के प्रमुख शिष्य थे। उनके गुरु भी एक धुरन्धर विद्वान् थे। उन्होंने ज्योतिष तत्व सम्बन्धी एक पुस्तक लिखी थी जिसे चक्रधर जी ने ही छपाया था, उसका मूल्य उस समय ५०) था। वैसे उनके गुरु जी के ४४ ग्रन्थ ज्योतिष पर छप चुके हैं। मुकुन्द कोश जिसके १०७ खण्ड हैं अप्रकाशित हैं।

श्री चक्रधर जोशी जी बम्बई क्षेत्र के धनी-मानी लोगों में बहुत ख्याति प्राप्त व्यक्ति रहे हैं। उन लोगों के सहयोग से उन्होंने वेधशाला का निर्माण किया था। देवप्रयाग विद्यालय के विकास में जोशी का बड़ा सहयोग रहा। जोशी जी के निधन से गढ़वाल मण्डल का पण्डित ज्योतिषी चल बसा, उसकी पूर्ति सहसा कठिन है। ईश्वर उन्हें उच्च गति दे। सम्बन्धित लोगों को धैर्य दे। हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

× × ×

कर्मभूमि-सत्यपथ

शोक सभा

इलाहाबाद की प्रख्यात साहित्यिक संस्था "नवज्योति युवक संघ" के अध्यक्ष डॉ० लालजी द्विवेदी की

अध्यक्षता में ४ सितम्बर, ८० को आचार्य चक्रधर जोशी के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया। 'प्रक्षालन' के सम्पादक श्री मोहनलाल बाबुलकर ने आचार्य जी के निधन को राष्ट्र के लिए अपूर्णीय क्षति निरूपित किया। उपस्थित जनसमूह ने दो मिनट का मौन रखकर ज्योतिष शिरोमणि आचार्य जी को अपनी शोक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

—लालजी द्विवेदी, अध्यक्ष
नवज्योति युवक संघ
१, एलनगंज, इलाहाबाद

× × ×

गढ़वाल मण्डल, २६ अगस्त १९८०

शोक सभा

दिनांक १६ अगस्त, १९८० को डॉ० जितेन्द्रचन्द्र 'भारतीय' के निवास स्थान गोदानिकुञ्ज महानगर में उनके भानजे एवं प्रसिद्ध खगोल शास्त्री आचार्य चक्रधर जोशी के आकस्मिक निधन पर पर्वतीय बन्धुओं ने शोक सभा में शोक संवेदना प्रकट की। दिवंगत आत्मा को शोक श्रद्धांजलि अर्पित करके शान्ति और पारिवारिक व्यक्तियों के धैर्य धारण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

वी० के० शर्मा, शक्तिपीठ
१०६५ सी० गोदानिकुञ्ज महानगर, लखनऊ

× × ×

सत्यपथ, १६ से २३ अगस्त, १९८०
गणतन्त्र विशेषांक

आचार्य चक्रधर जोशी का देहावसान

× × ×

समाज कल्याण संगठन (रजि०) देवप्रयाग गढ़वाल

"आज दि० १८-८-८० को समाज कल्याण संगठन एवं उसके अन्तर्गत चलने वाले सिलाई केन्द्र तथा बालवाड़ी के समस्त संचालक, कर्मचारी, शिक्षक एवं छात्र संस्था के संरक्षक आचार्य श्री चक्रधर जी जोशी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हैं, और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार को इस दुःसह दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें। इस दुःसह दुःख में संस्था के समस्त विद्यालय ३ दिन के शोक में बन्द रहेंगे।

× × ×

श्री रघुनाथकीर्ति राजकीय इण्टर कालेज, देवप्रयाग

"आज दि० १८-८-८० को श्री रघुनाथकीर्ति राजकीय इण्टर कालेज, देवप्रयाग, गढ़वाल के समस्त विद्यालय परिवार के सदस्य आचार्य प्रवर श्री चक्रधर जोशी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुये परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति एवं शोक सन्तप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।"

× × ×

श्री रघुनाथ महोत्सव समिति, देवप्रयाग

"आज दि० १८-८-८० श्री रघुनाथ महोत्सव समिति, देवप्रयाग के सदस्य समिति के संस्थापक आचार्य पं० चक्रधर जी जोशी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हैं।"

× × ×

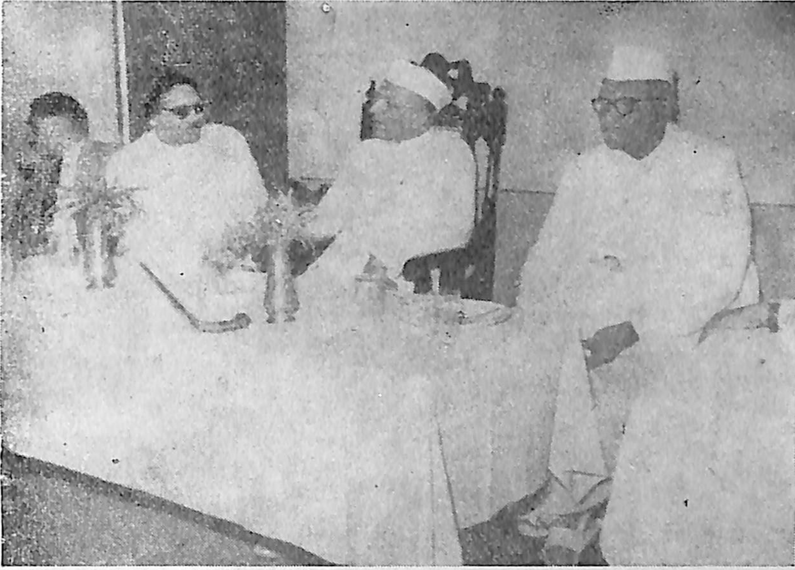
वेधशाला में शोक सभा सम्पन्न

(देवप्रयाग २८ अगस्त) आचार्य स्व० चक्रधर जोशी की त्रयोदसी पुण्य तिथि पर उनके निवास स्थान देवप्रयाग नक्षत्र वेधशाला में देश के विभिन्न भागों से आये अतिथियों ने एक शोक सभा का आयोजन कर स्व० जोशी जी को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। मुख्य अतिथियों में भारतीय ज्योतिष अनुसंधान संस्थान सहारनपुर के संस्थापक श्री केदारनाथ प्रभाकर ने स्व० जोशी जी के निधन को ज्योतिष जगत की भारी क्षति बताते हुए कहा कि देवप्रयाग में कठिनाइयों में रह कर उन्होंने ज्योतिष की साधना की जब कि कई धनी लोगों ने उन्हें बम्बई जैसी महानगरी में व्यवस्थित करने के लिए आमंत्रित किया। श्री एस० एस० सजवाण ने श्रद्धाञ्जलि पढ़ कर सुनाई एवं डा० योगेन्द्र नाथ 'अरुण' ने इस अवसर पर स्वर्गीय जोशी जी पर लिखी एक कविता वाचन की।

श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने वालों में सर्व श्री डी० एस० शर्मा, डा० सत्येन्द्र कुमार, प्रो० ओ० पी० गौड़, हरमेन्दर लाल बब्बर, सर्वेश्वर प्रभाकर, विश्वनाथ भाटिया, डा० वी० एन० शुक्ल, नरेश चन्द्र गुप्ता, सुधाकर जोशी, हजारी लाल जोशी, रामकुमार, गोविन्द कोटियाल, सुधीर पंच भैया, पं० काशीनाथ आदि प्रमुख थे।

दिव्य-दर्शन

(चित्रावली)



बम्बई, स्वतन्त्रता-दिवस १९५३ आचार्य पंडित चक्रधर जोशी, भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई, मुख्यमन्त्री महाराष्ट्र तथा श्री पाटिल जी के साथ।



उज्जैन। आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी पद्मभूषण स्वर्गीय श्री सूर्य-नारायण जी व्यास के साथ।



बम्बई, १९५६। आचार्य पंडित चक्रधर जोशी, महाराष्ट्र के तत्कालीन गवर्नर डॉ० हरेकृष्ण मेहताब की विदाई के अवसर पर, श्री पाटिल जी के साथ।



देवप्रयाग, १९५१। उत्तराखण्ड राजनीतिक सम्मेलन, देवप्रयाग के सभापति राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन और श्री गोविन्द बल्लभ पंत के पार्श्व में खड़े आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी।



बम्बई, स्वतंत्रता-दिवस १९५० । स्वतंत्रता-दिवस बम्बई के मुख्य अतिथि आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी का माल्यार्पण-दृश्य ।
उनके साथ हैं, श्री पाटिल ।



दो महापुरुषों का मिलन । एक प्रसिद्ध संत के साथ, आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी ।



देवप्रयाग । आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी के साथ, देवप्रयाग महाविद्यालय के शिलान्यास के अवसर पर भूतपूर्व उच्च-शिक्षा मंत्री डॉ० शिवानन्न नौटियाल तथा पीछे श्री हजारीलाल जोशी 'स्नेही', पत्रकार ।



नक्षत्र वेधशाला । आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी के साथ श्री केदारनाथ प्रभाकर [सहारनपुर ।



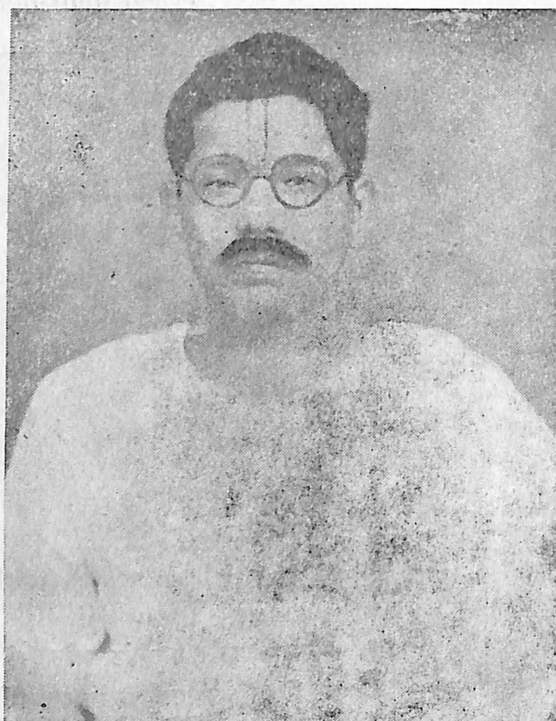
अलकनन्दा और भागीरथी का संगम, देवप्रयाग। इसी संगम से आगे अलकनन्दा भागीरथी को गंगा का नाम मिला है।



चरणपादुका। नीलकंठ पर्वत (श्री बदरिकाश्रम) की उपत्यका में स्थित चरणपादुका में, आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी का साधना स्थल और "तम्बू"।



आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी ।



आचार्य पण्डित चक्रधर जोशी की
युवावस्था का एक दुर्लभ चित्र ।

श्रीहरि:

"जयहिन्द"

स्वतन्त्र-प्रभात
चरणपादुका
बदरीनाथ
१५-८-४७
३१ श्रावण सं. २००४

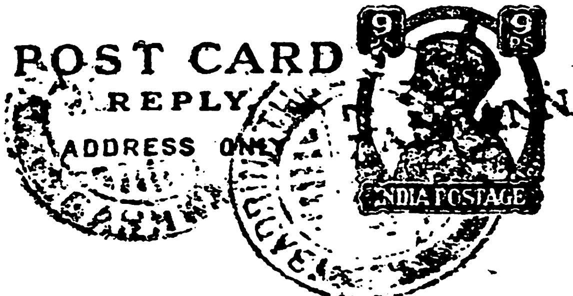
प्रियबन्धु,..   सस्नेह शुभाशी:।

आज भारत को वो ऐतिहासिक दिन के शुभ अवसर प्राप्त करने का काल अनेक शताब्दियों से ... कुटिल ... अपनी-अपनी ... अनुसार प्रत्येक विचारवान् भारतीय ... करता रहे। हम महान् भाग्यशाली बनें कि हमारा जीवन का यों स्वर्णिम प्रभात प्राप्त होवें. अंग्रेज सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बनें। अब विश्व की कोई शक्ति हमारा यह जन्मसिद्ध अधिकार छीन नहीं सकती।

तुम लोगों की त्याग तपस्या का ही यो उज्वल परिणाम है।

शेष शुभ-स्नेह। इस पवित्र ऐतिहासिक दिन पर बधाई।

शुभैषी — चक्रधर जोशी



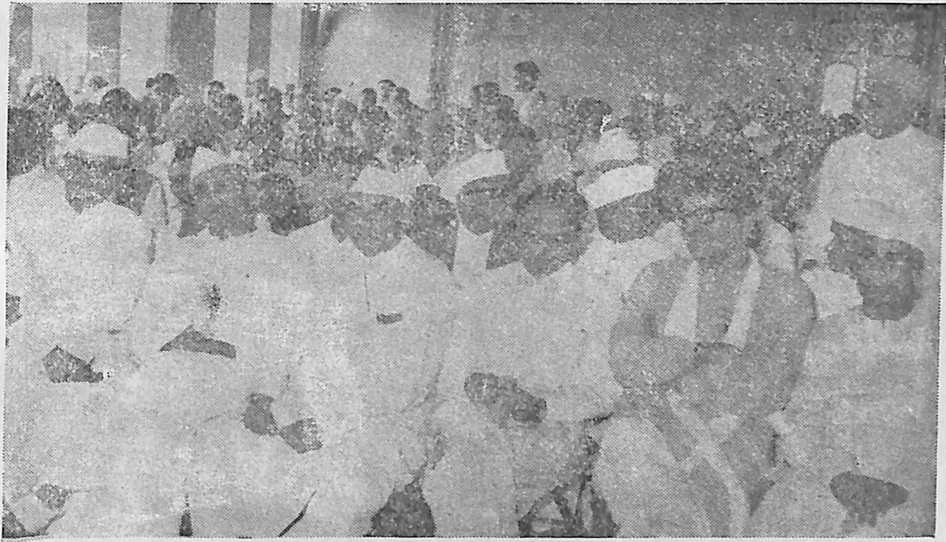
श्री. पं. श्रीलालजी थपलियाल

देवप्रयाग

(गढ़वाल)

॥ श्री श्रीलाल जी थपलियाल के सौजन्य से प्राप्त ॥

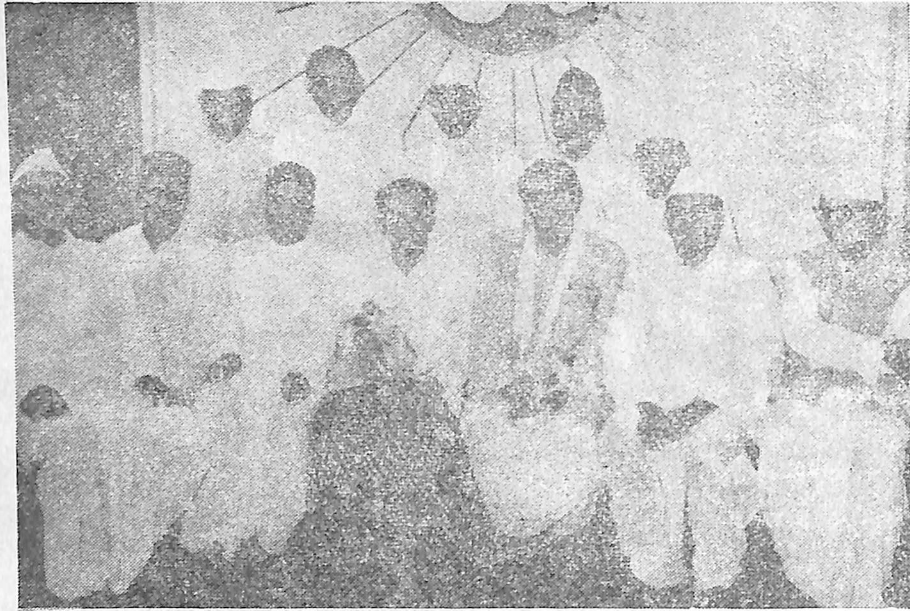
स्वतंत्र प्रभात–चरणपादुका, श्री बदरीनाथ १५ अगस्त ४७। श्री श्रीलाल थपलियाल को १५ अगस्त ४७ के दिन चरणपादुका श्री बदरीनाथ से प्रेषित, पोस्ट कार्ड की प्रतिलिपि, आचार्य पं॰ चक्रधर जोशी महोदय की हस्तलिपि में। पत्र-सौजन्य–श्री श्रीलाल थपलियाल, देवप्रयाग।



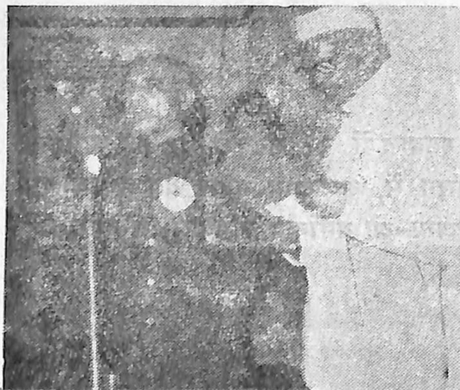
बम्बई। ज्योतिर्विज्ञान के २१वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर।
बाँयें से—४, श्री हितेन देसाई और ५, आचार्य पं० चक्रधरजो शी



श्रीनगर, गढ़वाल। श्रीनगर, गढ़वाल में २१ जनवरी ७९ को आयोजित गढ़वाल मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन में, अध्यक्षीय भाषण देते हुए आचार्य पं० चक्रधर जोशी। चित्र सौजन्य—श्री धर्मानन्द उनियाल, श्रीनगर



बम्बई। ज्योतिर्विज्ञान का १७वाँ वार्षिकोत्सव।
बैठे हुए : १–पं० हरिकृष्ण रेवाशंकर याज्ञिक (स० ज्योतिर्विज्ञान), २–पं विष्णुदत्त शुक्ल, ३–प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री सोमरा शास्त्री, ४–वैद्य चन्द्र शेखर, ५–आचार्य पं० चक्रधर जोशी, ६–मेवालाल ७–लक्ष्मी प्रसाद लारोर (जन्म भूमि पंचांग)। पीछे लाइन में–सर्व श्री आर० पी० शुक्ल, हितेन देसाई, एम० जी० डागर तथा एम० यू० शुक्ल। चित्र-सौजन्य–पं० हरिकृष्ण रेवाशंकर याज्ञिक।



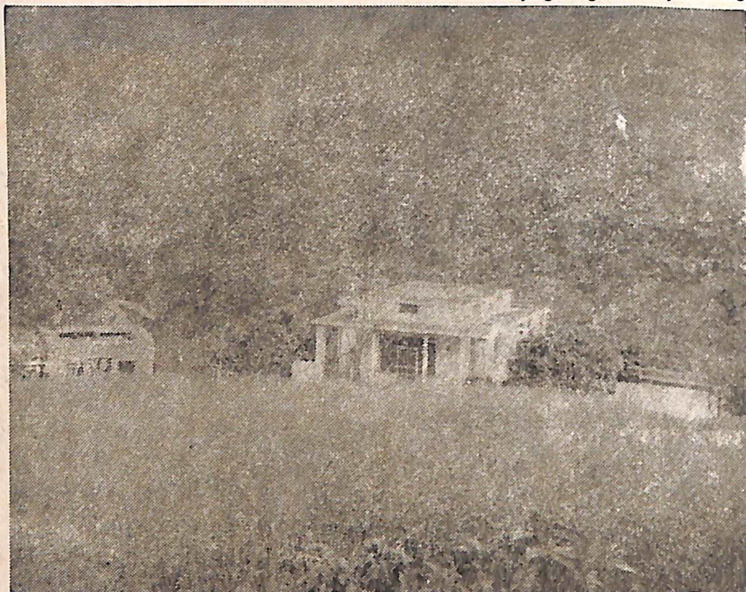
श्रीनगर, गढ़वाल। आचार्य पं० चक्रधर जोशी के साथ डॉ० महावीर प्रसाद लखेड़ा को विशिष्ठ वक्ता के रूप में गढ़वाल मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था। डॉ भाई पं० महावीर प्रसाद लखेड़ा (अब स्वर्गीय) इस अवसर पर आमंत्रित श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए। चित्र सौजन्य–श्री धर्मानन्द उनियाल, श्रीनगर।



नक्षत्र वेधशाला। आचार्य पं० चक्रधर जोशी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती विद्या देवी जोशी के साथ।
चित्र सौजन्य-श्री के०एन० प्रभाकर, सहारनपुर।



पूना। आचार्य पं० चक्रधर जोशी के साथ
श्री बसन्त राव तुरीले
चित्र सौजन्य-श्री बसन्त राव तुरीले।



नक्षत्र वेधशाला, देवप्रयाग। समुद्रतल से ६४७ मीटर की ऊँचाई पर स्थित नक्षत्र वेधशाला का विहंगम दृश्य। चित्र सौजन्य–श्री के० एन० प्रभाकर, सहारनपुर।



नक्षत्र वेधशाला, देवप्रयाग। आचार्य पं० चक्रधर जोशी, नक्षत्रों का अवलोकन करते हुए। चित्र सौजन्य–श्री के० एन० प्रभाकर, सहारनपुर।